॥ श्रीः ॥

त्रैवर्णिकानां

नवरत्नविवाहपद्धतिः ।

लोकोपकारार्थं

श्रीराजधानीकर्पूरस्थलनिवासिगौतमगोत्र (शोरि) अन्व-
यालंकृतश्रीदेवज्ञदुनिचन्द्रात्मजश्रीयुतपण्डितविष्णुद-
त्तवैदिककृतनवरत्नप्रकाशिकाटीकासहिता ।

मुम्बय्याम्

श्रीकृष्णदासात्मज-

गंगाविष्णु, खेमराजगुप्ताभ्यां

स्वकीये

"श्रीवेंकटेश्वर" यन्त्रालये

मुद्रिता ।

प्रथमसंस्करणम् ।

संवत् १९४९

श्रीः ।

विशेष सूचना ।

विदितहो कि इस श्रीवेङ्कटेश्वर यन्त्रालयमें हमारी बना-ईभई रामगीता भाषाटीकात्रयोपेता तथा उपनयनपद्ध-तिभाषाटीकासहित उपस्थितहै । इन सर्व नवरत्नविवा-हपद्धति आदिपुस्तकोंका पुनर्मुद्रणादि सर्व अधिकार श्री-कृष्णदासात्मज गङ्गाविष्णु, खेमराजकूं दे दिया है यहाँसे कोई मतलबलेके दुसरेने छापना नहीं.

दैवज्ञ दुनिचन्द्रात्मज (शौरि)

पं॰विष्णुदत्त शर्म्मा

वैदिक

कपूरथला ।

विज्ञापना।

विदित हो की हमारे आर्य्यावर्त भारतखण्डमें अतिचिरसे वर्धित अधर्मरूप यवन राज्यकें प्रताप (संताप) से नित्य आनंदरूप शीतलस्वभावसंपन्न सगुणनिर्गुणात्मक पूर्वोत्तर तटयुक्त और वेद ४ पुराण १४ न्याय २ मीमांसा २ धर्मशास्त्र १८ शिक्षा १ कल्प २ व्याकरण ८ निरुक्त १ छंद ३ ज्योतिष ६ काव्य २ नाटक १० चंपू १ आख्यायिका इतिहास कोश ५२ अलंकार नीती मंत्र २ तंत्र चिकित्सा ८ गणित २ वेदान्त सांख्ययोग कर्मकाण्डादिक रूप विकसित जो अनेक कमल उनपर लोभायमान भृंगरूप विद्वद्वृंद और आनंदमग्न कविरूप हंस चक्रवाक पारावत क्रौंचादियोसे शोभायमान वेदविद्यारूप नदीके किञ्चित् शुष्कप्राय होनेपर तदनंतरही सर्वान्तर्यामि कृपालुपरमेश्वरकी कृपा दृष्टि और अखण्डप्रताप श्रीमती महाराज राजेश्वरी श्रीविकटोरीयाजीके राज्यप्रतापरूप अरुणोदय होनेपर और धर्मरूप चारो तरफ वृष्टिके होनेसे वही सनातन वेदविद्यारूप नदी सगाध होकर वहने लगी उस्को अशुद्धिरूप मलनिवृत्ति कर्नेकेलिये हमारे भ्रातृगण क्षत्री वैश्य शूद्रादि तनमनधनसे अति उद्यत होनेपर बौद्ध चरक जैन अनार्य्यादि नूतनमलके निवृत्त होनेसे वही हंसादिरूप विद्वान् निर्मलजलपान कर्तेहे तथापि विना कषाय पदार्थ हरीतक्यादि भक्षण विन जैसे जलका मधुरगुण (मिठास) मालुम नहीं होतो तद्वत् विना अर्थ विनियोगके वेदविद्याका फलरूप गुण मालुम नहीं होता इस्में श्रुति प्रमाणभीहे

यजुर्वेदसंहिता (वाजसनेयी) सर्वानुक्रमणिका
याज्ञवल्क्य शिक्षासहित दूसरे मोटे टैपमें शुद्धता-
पूर्वक उत्तम छपीहै　कीमत ३ रु०

गीता चिद्घनानंदस्वामिकृत गूढार्थदीपिकासहित
मूल अन्वय पदच्छेदसहितभाषाटीका किमत ८ रु०

गीता आनंदगिरिकृतभाषा टीकास०　कीमत ३ रु०

शिवस्वरोदय भाषाटीकासह　कीमत १२ आ०

वेदांतरामायण भाषाटीकासह　कीमत १॥ रु०

श्रीरामगीता भाषाटीका पदप्रकाशिका अनु-
वाद समुच्चय और विषमपदी सहित कीमत ८ आ०

वेदान्तग्रंथपंचकम् वाक्यसुधारस,हस्तामलक,गीर्वाण-
पंचक मनीषापंचकम् इमे सटीकाःआत्मबोधकीमत ८ आ०

श्रीमहाभारतसटीक अतिउत्तम बडे अक्षरका
मजबूत कागज गणपतकृ०छापेका अनुक्रम-
णिका सहित　कीमत ४० रु०

श्रीमद्भागवत श्रीधरी टिप्पणीसह
अक्षरमोटा परमोत्तम है कीमत १५ रु०

श्रीमद्भागवतभाषाटीकासह५००दृष्टांतो सहित कि० १२रु०

भागवत विजयध्वजीटीकासह माध्वसंप्रदायी ग्रंथसंख्या
८००००होगा कीमत १२ रु०

वाल्मीकिरामायण सटीक　कीमत ९ रु०

श्रीमद्भागवत श्रीधरीटीका चूर्णिका टीका सह कीमत९रु०

ब्रह्मवैवर्तपुराण संपूर्ण चारोंखंड कीमत ८ रु०

मार्कण्डेयपुराणजिसमेंसप्तशती शान्तनवीटीकासहितहै
कीमत५रु०

अध्यात्मरामायण सटीक चिकना कागज कीमत ४ रु०

गर्गसंहिता नयी शुद्ध दशखंड कीमत ४ रु०

भागवत दशमस्कंद भाषाटीका कीमत ४ रु०

श्रीमद्भागवताद्यपद्यव्याख्या शतक
(जन्माद्यस्य श्लोकके सो अर्थ) कीमत २ रु०

भागवतलीलाकल्पद्रुम (श्रीमद्भागवतकेसब
चरित्र जन्माद्यस्य इस श्लोकमें) कीमत १॥ रु०

कालिकापुराण शाक्तजनोंको अवश्य ग्राह्य कीमत ४ रु०

नंदमहोत्सव कथा करनेवालोंको अवश्यलेने योग्य की० ८आ०

एकादशीमाहात्म्य भाषा टीका सह कीमत १ रु०

कार्तिकमाहात्म्य भाषाटीका सह कीमत १२ आ०

ब्रह्मवैवर्त्तपुराणका ब्रह्म,प्रकृति और गणेशखंड कीमत ४रु०

मनुस्मृती सान्वय भाषाटीका कीमत ३ रु०

व्रतराज टिप्पणसिहित कीमत ३॥ रु०

विवादार्णवसेतुः धर्मशास्त्र व न्याय राजनीति कीमत २ रु०

ब्राह्मणोत्पत्ति मूल संस्कृत और भाषाटीकासह कीमत३॥रु०

संस्कारभास्कर यजुर्वेदी सब संस्कारोंकी विधिहै की० ३रु०

पूजापंकजभास्कर कीमत २ रु०

श्राद्धविवेक कीमत १२ आ०
उपाकर्मपद्धति (श्रावणीयजुर्वेदकी) कीमत १२ आ०
वेदोक्तवास्तुपद्धति कीमत ६ आ०
वैवाहपद्यावली (नोतनी अर्थात् विनतीमें कहने योग्य दोनो पक्षके श्लोक)भाषाटीकासह कीमत १२आ०
व्याकरणमहाभाष्यम् कैय्यटकृतभाष्यप्रदीपसहित और बालशास्त्रिकृत टिप्पणी समेत कीमत १२ रु०
लघुशब्देन्दुशेखर काशीके छापेका कीमत ५ रु०
सिद्धांन्तकौमुदी अष्टाध्यायी,गणपाठ, धातुपाठ, लिंगानुशासन पा०अक्षर मोटा जिल्द अति उत्तम कीमत ४॥ रु०
सिद्धांतचंद्रिका सुबोधिनीटीका और तत्वदीपिकास.की०४रु०
सिद्धातकौमुदी तत्त्वबोधिनी टीकासहित जिल्द काशीका कीमत ७ रु०
सिद्धांतचंद्रिकाउत्तरार्ध सुबोधिनी और तत्वदीपिकासह. कीमत २ रु०
तर्कसंग्रह दीपिका नीलकंठी टीकासहित कीमत१२ आ०
कारकावली मुक्तावली रामरुद्रीदिनकरी काशीकी की० ५रु०
गीतगोविंद संस्कृतटीका और भाषाटीका की० १। रु०
माघकाव्य (शिशुपालवध) संपूर्ण कीमत २॥ रु०
पद्यावली अनेमहानुभावोंके संगृहीतश्लोक कीमत ८ आ०
सुभाषितरत्नाकर कीमत २ रु०

अष्टांगहृदय (वाग्भट) भाषाटीका अत्युत्तम
वैद्यकग्रंथ संपूर्ण छपके तैयारहै कीमत १० रु०

शार्ङ्गधर निदानसह भाषाटीका पं०दत्तराम
चौबे मथुरानिवासीका बनाया कीमत ३ रु०

माधवनिदानभाषाटीका कीमत २॥ रु०

चर्य्याचंद्रोदय भाषाटीका(व्यंजनबनानेका ग्रंथ) की०२रु०

वीरसिंहावलोकन ज्योतिषशास्त्रादिकर्मविपाक
चिकित्सा नवीन टाईपमें अति उ० कीमत १ ॥ रु०

न्यायप्रकाश परमोत्तमचिद्घनानंदस्वामिकृत कीमत ७ रु०

तुलसीकृत रामायण सटीक पंडित ज्वालाप्रसादजी
कृत भाषाटीका अतिउत्तम संपूर्ण क्षेपकोंके अर्थ
और माहात्म्य तुलसीदासजीकाजीवनचरित्रसहित कीमत८रु०

तुलसीकृतरामायण बडे टाईपका अतिउत्तममये
(श्लोकार्थ, गूढार्थ, प्रसंगार्थ, लवकुशकांड-
सहित.इतिहास तुलसीदासजीका जीवन चरित्र
और पंचीकरण, रामचंद्रजीके वनवासका तिथि-
पत्र व दृष्टांत सहित ३८००टिप्पणीके जिसमें
संपूर्ण क्षेपक हैं) ग्लेज ५ रु० और रफ् ४रु०

तुलसीकृत रामायण क्षेपकसह मझले टाईपका अति-
उत्तम मये (श्लोकार्थ व गूढार्थ वप्रसंगार्थ व लवकुश
कांडसहित इतिहास व दृष्टांत सहित ३८००टिप्पणी
के जिसमें संपूर्ण क्षेपक हैं) ग्लेज २॥ रु० रफ् १॥।रु०

यथा (स्थाणुरयं भारहारःकिलाभूदधीत्य वेदं न विजानाति योर्थम् ।योर्थज्ञऽइत् सकलं भद्रमश्नुते नाकमेतिज्ञानविधूनपाप्मा) इसलिये सर्वोपकारके लिये विवाह पद्धतीका मैने वेदभाष्य सायन उवट महीधरादी देख और श्रीनिबाहूरामकृत संस्कृत टीका तथा ब्राह्मणसर्वस्व हरिहरभाष्य आदि ग्रंथोंका सार ले तथा अनेक विवाहपद्धति गृह्यसूत्रसे मिलाय पाठ शुद्धकरा है और जो मंत्र पद्धतियोंमें अप्रचारसे अशुद्ध थे वह यजुर्वेदादि संहितासे मिलाय शुद्धकरे साथ वेदका प्रमाण अध्याय मंत्रांक भी लिखेहै और मंत्रोंको ऋषि छन्द देवतादिसे सुशोभितकर कर्तव्यता मंत्रार्थ भावार्थ गूढार्थ युक्त नव प्रकरण संयुक्त भाषामें टीका बनाई (रची) है इस लिये सज्जन पुरुष इस पुस्तकको स्वीकार कर मुझकेपरिश्रमकोसफल करे और इसपुस्तकमे जो वर कन्याके प्रति उपदेश आचार दोषगुण कहेहै वह उपदेशकरे ऐसे कर्नेसे लोक परलोकमें यशकी धर्मकी प्राप्ति होगी ॥ इसपरिश्रमसे सर्वांतर्यामि परमेश्वरश्रीरामचन्द्र प्रसन्नहों ॥ श्रीः ॥

राजधानी कर्पूरस्थल निवासी

गोतम गोत्र (शोरी) अन्वयालंकृत

दैवज्ञ दुनिचन्द्रात्मज.

पण्डित-विष्णुदत्त शर्म्मा वैदिक.

विवाहपद्धतिस्थितविषयनिरूपण

(प्रथमप्रकरणज्योतिषशास्त्रमें)

जिस्में स्त्रीप्रशंसा. दैवज्ञपूजन. विवाहप्रश्न. प्रश्नसे शुभाऽशुभविचार. वैधव्ययोगका व्रत शांति आदिसे परिहार. सावित्रीव्रतविधान. पिप्पलविवाह. कुंभविवाह. अच्युतविवाहविधान. प्रश्नसे कन्यास्त्रीपुत्रविचार. मंगलशब्द. अशुभशब्द । बालकवरण नक्षत्र । कन्यावरणविधि । कन्यापरिणयनकाल । चैत्रादिमासनियम व्यवस्था । ज्येष्ठमें विवाह निषेध । पुत्र विवाहके अनंतर कन्या विवाह निषेध और विधान । मुण्डनविचार । विवाहके मुहूर्त पुरुषस्त्रीराशिचक्र । वर्णचक्र । योनिचक्र । गणचक्र । लत्तापात । युतिवेध । चरणवेध । जामित्र । बुधपंचक । सर्व देशमें एकार्गल चक्र । यह सभदोषपरिहारसहित । उपग्रह । क्रांतिसाम्य । दग्धातिथि । दशयोग । पंगवंधकाणलग्नविचार । ग्रहनैसर्गिकमैत्रीचक्र । दुष्टभकूट । लग्नशुद्धि । गोधूली लग्न । वधूप्रवेश । द्विरागमन मुहूर्त । शुक्रविचार परिहारसहित. । यह सभ भाषाटीका सहित प्रथम प्रकरणमें लिखे हे ॥

(द्वितीयप्रकरण कर्मकाण्डविषयमें)

यथार्थगृहचित्र । मण्डपाचित्र । तिलकमण्डलचित्र । सर्वतोभद्रचित्र पञ्चाग्निकुण्ड । आज्यस्थाली । चरुस्थाली । प्रणीतापात्र । पुरोडाशपात्र । स्रुव । उपभृत्स्रुक् । ध्रुवास्रुक् । पुष्करस्रुक् । अग्निहोत्रहवणी । वैकंकतस्रुक् । उलूखल । मुसल । शूर्प । शम्या ।

स्फ्यः। शृतावदान। उपवेष। कूर्च। दृषत्। उपल। षड्वर्त। अ-भ्रि। अरणी। चोत्तरारणी। मोविली। प्रमन्थ। नेत्र। अन्तर्धानकट। हविर्धानपात्री। प्राशित्रहरण। चमसा। इडापात्री। यजमानासन। पत्न्यासन। होत्रासन। ब्रह्मासन। यजमानपात्री। पत्नीपात्री। कृष्णाजिन। इनसर्वके प्रमाणसहितचित्र। कात्यायनोक्तपात्रोंके लक्षण। विनियोगवर्णन। ऋषिछंददेवतालक्षण। छ-न्दसंख्या गायत्रीछन्दभेद।यह सर्व श्रेष्ठतासेद्वितीयप्रकरणमे लिखेहै॥

(तृतीयप्रकरणकात्यायनोक्तशांतिमें)

जिसमें प्रमाणसहित स्वर संयुक्त अतिशुद्धकर वेदोंकेमंत्र। स्वस्ति-वाचन। गणपत्यादिपूजन। रक्षाविधान। आचार्यादिवरण। वेद-स्वरूप। आशीर्वादमंत्र। कलश। वास्तुपूजन। योगिनी। ब्रह्मा। विष्णु। शिव। इंद्रादि दशदिक्पाल। नवग्रहपूजन। बलिदान। संकल्प। शांति। सामग्रीहै।

(चतुर्थप्रकरणसंकल्पादिभेदमें)

विवाहसामग्री। चतुर्थीकर्मसामग्री। कन्योद्वाहमें यजमानकर्तृकप्र-तिज्ञासंकल्प। यजमानकर्तृक शुभ्रचोलशाटिकासंकल्प। कन्या पितृकर्तृक वेदीदानसंकल्प।यजमानकर्तृकचतुर्थीदानसंकल्प।यजमानकर्तृक उपाध्यायदक्षिणासंकल्प। यजमानकर्तृककन्यायज्ञ अंतमें भूरिअन्नद्रव्यदानसंकल्प। यजमानकर्तृक विवाहप्रतिज्ञासंकल्प। वरकर्तृकपत्नीप्रतिग्रहगोदानसंकल्प। अभावे सुवर्णमयी गोदानसंकल्प। उपाध्यायदक्षिणासंकल्प। यजमानकर्तृकख-

द्वादानसंकल्प । जलवेष्टन । गोत्रोच्चारण । अतिविस्तृतकन्यासंकल्प । संक्षेपसेकन्यासंकल्प । परिभाषा । सूर्यादिनवग्रहमंत्र । इन्को पूजनीयता । षोडशोपचारपूजा । ज्योतिषबोधकनवग्रहमंगलाष्टक पारस्करोक्तकुशकंडिकामें विवाहसूत्र ।

(पंचमप्रकरणम्)

विवाहपद्धतिप्रारम्भ । मंगलाचरण ग्रंथकर्तुःप्रशंसा । वाग्दानविधि । बालकवरण । वेदोच्चारण । गणेशस्तुति । ऋषिसृष्टि । शिवसंकल्प । शांतिपाठ यह सभ अत्युत्तम भाषाटीका सहित साथप्रमाण स्वरयुक्त मंत्र है ॥

(षष्टप्रकरणविवाहविधिमें)

(तत्र कन्याहस्तेन) इहाँसे आदिले (प्राङ्मुखौ वधूवरौ स्थितौ भवतः) इस पर्यंत अर्थात् संपूर्ण पद्धति अनेक पद्धातियोसे मिलाय संस्कृत शुद्धकर ऋग्वेदादि चतुर्वेदोसे मंत्र निकाल और जिसवेदका जो मंत्र उस्का प्रमाण तथा स्वरसहित अतिशुद्ध कर विनियोगोंके सहित लिखेहै ॥ इस्की टीका महीधरभाष्य सायन भाष्य उवटभाष्य ब्राह्मणसर्वस्व गृह्यसूत्र हरिहरभाष्य ॥ तथा. निवाहुरामकृतटीका जिस्को पाश्चालदेशीय महाविद्यानिकरके मुख्य संस्कृताध्यापक श्रीपंडित गुरुप्रसादजीने शुद्ध किया ॥ इत्यादि अनेक वेदार्थबोधक ग्रंथोंसे मंत्रोंके अर्थ साथ मन्वादि प्रमाण देकर सभकी समझमें आनेवाली मनभाविनी अतिसुंदर भाषाटीका में करेहैं इसी प्रकार साथ प्रमाणोंके विवाहपद्धति के पद २ का अर्थ स्पष्टभाषाटीकामें लिखाहै ॥

(सप्तमप्रकरणमें)

चतुर्थीकर्म अतिविस्तृत भाषाटीकासहित है ।

(अष्टमप्रकरणस्त्रीआचारमें)

धर्म शास्त्रादि अनेक शास्त्रोक्त विवाहानंतर जो स्त्री मात्रको पति सेवा आदि प्रतिदिन कर्तव्य है वह अतिविस्तारसे निरूपण करा है ॥

(नवमप्रकरणरजस्वलाकृत्यमें)

अर्थात् जिस समय स्त्रीयोंको ऋतु आते है उस दिनसे तीन-दिन पर्यन्त स्त्री रक्षा भोजन शयनासनादि व्यवस्था जिससे गर्भा-शय शुद्ध रहनेसे अति शौर्य बल बुद्धि संपन्न और दुराचारसे दु-ष्ट कुकर्मी संतान होती है ॥ यह सभ धर्म्मशास्त्र कर्मकाण्ड ज्यो-तिष चिकित्सासे शुद्ध कर अतिसुंदर निरूपण करा है ॥ इति ॥ तथा प्रकीर्णाऽध्यायलिखा है ॥

(प्रार्थना)यद्यपि अनेक विवाहपद्धति मूल और संस्कृतटी-कासंवलितसें कार्य सिद्ध था तथापि वेद मंत्रोंमें अशुद्धिका सन्देह और संस्कृतटीकाको सर्वोपकारक ना होनेसे तथा विना विवाह प्रकरणअन्य स्थानोंमें मंत्रार्थ कर्तव्यताकी इच्छा लग्नशुद्धि कात्या-यनी शांति संकल्प आदिकी आवश्यकता विचार कर संस्कारकी शुद्धि और लोकोपकारार्थ की जिस्को पढकर सामान्य विद्यासंपन्न भी पुरुष अति सुगमरीतीसे समझकर आनंदपूर्वक निर्वाह करे इस लिये मैनेअत्युत्तम भाषाटीका सहित विवाहपद्धतिका पुस्तक नव प्र-

करणमें अति परिश्रमसे बनायाहै ॥ इस्को महाशय जन स्वीकार कर प्रचरित करे ॥ और जो मुझकी अशुद्धिहो वह क्षमा करे ॥

पुष्पाञ्जलिः—यदशुद्धमसम्बद्धमज्ञानाच्चकृतंमया ।
विद्वद्भिःक्षम्यतांसर्वंबालत्वादयमञ्जलिः ॥

(कर्पूरस्थलनिवासि—दैवज्ञ· दुनिचन्द्रात्मज (शोरी)
पण्डित विष्णुदत्तशर्मा—वैदिक·

विशेषद्रष्टव्य

यथाह सुश्रुते भगवान् धन्वन्तरिः ॥ अथास्मै पंचविंशतिवर्षाय द्वादशवर्षां पत्नीमावहेत् । पित्र्यधर्मार्थकामप्रजाः प्राप्स्यतीति ॥ किञ्च— ॥ तद्वर्षाद्द्वादशात्कालेवर्तमानमसृक्पुनः । जरापक्वशरीराणांयातिपंचाशताक्षयम् ॥ ऊनषोडशवर्षायामप्राप्तःपञ्चविंशतिः । यद्याधत्तेपुमान्गर्भं कुक्षिस्थःसविपद्यते ॥ जातोवानचिरंजीवेज्जीवेद्वादुर्बलेन्द्रियः । तस्मादत्यन्तबालायांगर्भाधानंनकारयेत् ॥ अयमेवाशयमालम्ब्यभावमिश्रोपिभावप्रकाशेवयोधिकांनिंदन्बालांस्तौति ॥

यथा—पूतिमांसंस्त्रियोवृद्धाबालार्कंतरुणंदधि । प्रभातेमैथुनंनिद्रासद्यःप्राणहराणिषट् ॥ वृद्धोपितरुणीं गत्वातरुणत्वमवाप्नुयात् । वयोधिकांस्त्रियंगत्वातरुणःस्थविरायते ॥ अत्याशितोऽधृतिःक्षुद्वान्सव्यथाङ्गःपिपासितः । बालोवृद्धोन्यवेगार्तस्त्यजेद्रोगीचमै

थुनम् ॥ लिंगिनींगुरुपत्नींचसगोत्रामथपर्वसु । वृद्धांचसंध्ययोश्चापिगच्छतोजीवनक्षयः ॥ विंशते श्चैवमैथुनमित्याद्यनेकवचनप्रामाण्यात्तद्ग्रंथाऽवलोकनाच्चस्त्रियावरोद्विगुणोऽभावेसाद्धोवास्त्रीत्वयवीयसीएवविधेयाइतिमेप्रतिभात्यतश्चेहलौकिकपारलौकिकहितेप्सुभिःपुरुषैरस्यप्रचारःकर्तव्यइतिशम् ॥

प्रार्थनेयंदे० दुनिचन्द्रात्मजकपूरस्थलीय पंडित

विष्णुदत्तवैदिकशर्मणः ।

(अवशिदेखिये देखनयोगू)

सुश्रुतमें भगवान धन्वंतरि स्वयं लिखतेंहै कि पचीस २५ वर्षके बालकको द्वादश १२ वर्षकी स्त्रीसे विवाहकर्नेसे धर्म अर्थ काम संयुक्त पिताको हित दीर्घायुवाली संतान प्राप्तहोतीहैं ॥ और स्त्रीको द्वादशवर्षसे ले ऋतु पचास वर्षपर्यन्त रहतेहै और षोडश १६ वर्षसे न्यून (कम) स्त्रीको यदि पचीसवर्षसे कम (न्यून) पुरुष प्राप्तहो उससे जो गर्भहो वह स्रवजाताहै अर्थात् गिरजाताहै । वा उत्पन्नहोकर चिरकाल जीवत नहीं रहता यदि रहताहै तो दुर्बलशरीर (नताकत) असमर्थ इंद्रियवाला चिरजीवताहै॥ इस कारणसे अतिबालकोंका गर्भाधान नाकरावें ॥ अर्थात् २५ पचीसवर्षका पुरुष औ १६ वर्षकीस्त्री । वा १४ वर्षकीस्त्री औ २० वीसवर्षका पुरुषहो इससे न्यून नाहीं॥और इसी आशयको लेकर भावमिश्रजी भावप्रकाश ग्रंथमें वृद्धा (बडी) स्त्रीका निषेध

और बालास्त्रीका स्वीकार करहतेहै ॥ जैसे सदा मांस । वृद्धस्त्री । लाल दधि । बादिनमे बनायाहुआ दधि॥प्रातःकाल स्त्रीसे संभोग । और प्रातःकाल निद्रा यह शीघ्र बलको नष्टकर्तेहै । वृद्धपुरुष यौवनवती स्त्रीको प्राप्तहोय युवा होताहै और अपनेसे बडीस्त्रीको यदि युवानपुरुष प्राप्तहोय तो शीघ्रही वृद्ध (बूढा) होजाताहै ॥ और बहुतअन्न भोजनकर धैर्यरहित क्षुधायुक्त पीडायुक्त तृषायुक्त और बालक अर्थात् वीस २० वर्षसे न्यून (कम) और वृद्ध (अशीति८०वर्षसे) ऊपर पुरुष ॥ और रोगातुर और जो एकसे संभोगकर चुकाहो यह ७ पुरुष मैथुन ना करे यदि यह करे तो प्रत्यक्ष फलको प्राप्तहोतेहै । इसीप्रकार संन्यासयुक्तस्त्रीसे वा गुरुकी स्त्रीसे और अपने गोत्रकी स्त्रीसे वा कन्यासे और पर्वकाल अष्टमी अमावस एकादशी आदिमें और वृद्धास्त्रीसे तथा संध्याकालमें संभोगकर्नेसे जीवनका क्षयहोताहै ॥ इसलिये विंशति अर्थात् वीस २० वर्षकेउपर पुरुषको मैथुन कर्नाचाहिये इत्यादि अनेकवचन निदर्शनसेसिद्ध यह भयाकी स्त्रीसे बालक द्विगुण अर्थात् दुगुण (दूना) होनाचाहिये ॥ जैसे स्त्री बारह १२ वर्षकी और पुरुष २५ वर्षका यदि ऐसा योग्य गुणयुक्त वरनामिले तो द्वादश १२ वर्षकी लडकीको वर विंशति २० वर्षका अवश्य होनाचाहिये और कन्या वरसे सदैव न्यूनहोनी चाहिये ।ऐसेकर्नेसे इस लोकमें यश परलोकमें अनंत सुखप्राप्त होताहै इस लिये संसारभीरु धर्मनिष्ठपुरुषोंको इस्का प्रचार तनमन धनसे अवश्य कर्नाचाहिये ॥

प्रार्थनेयं दैवज्ञदुनिचन्द्रात्मज (शोरिकपूरस्थलीय- विष्णुदत्तकशर्मणः ।

॥ श्रीः ॥

अथ नवरत्नविवाहपद्धतिः भाषाटीकासहिता

ॐ स्वस्ति श्रीगणेशाय विघ्नहर्त्रे नमोनमः

अथ मुहूर्तचिंतामणौ विवाह (उपयमन) प्रकरणम् ॥

भार्य्यात्रिवर्गकरणंशुभशीलयुक्ता शीलंशुभं
भवतिलग्नवशेनतस्याः॥ तस्माद्विवाहसमयः
परिचिंत्यतेहितन्निघ्नतामुपगताः सुतशीलधर्माः १॥

मंगलाचरणम्,

शिवंशिवकरंगौरीं रामंसीतासमन्वितं ॥
नत्वालग्नविशुद्ध्यर्थं टीकांकुर्वेमनोहराम् ॥

भा०टी० भार्या अर्थात् जिससे विवाह होय वह स्त्री शुभशीलसे युक्त धर्म अर्थ कामका साधन होती है ॥ वह शुभशीलता लग्नद्वारा होनेसे विवाहका समय प्रथम चिंतना कर्ते है ॥ भावार्थ यह है कि यदि लग्न दशदोषादिरहित शुद्ध होय तो उस्में पाणिग्रहण कर्नेसे स्त्री दुष्ट भी श्रेष्ठ (अच्छी) और वंध्यायोगवाली पुत्रवती और पापिष्ठ धर्मयुक्त लग्नके प्रभावसे हो जाती है ॥ १ ॥

आदौसंपूज्यरत्नादिभिरथगणिकंवेदयेत्स्वस्थचित्तं
कन्योद्वाहंदिगीशानलहयविशिखेप्रश्नलग्नाद्यदीन्दुः ॥

दृष्टोजीवेनसद्यः परिणयनकरोगोतुलाकर्कटाख्यंवा
स्यात्प्रश्नस्यलग्नंशुभखचरयुतालोकितंतद्विदध्यात् २ ॥

भा०टी०प्रथम रत्न सुवर्ण रजतादिसे गणितविद्यानिपुण ज्योतिषी स्वस्थचित्त बैठको भेटकर कन्याका विवाह निवेदन (कथन) करे इहा रत्नादिसे यह प्रयोजन है जितनेसे संतुष्ट हो जाय उतना द्रव्य देना वा यथा शक्ति अनुसार देना ॥और साथ यह कहनाकी में कन्याका विवाह कर्ना चाहता हे ॥ यदि उसकाल विवाहप्रश्नसे दशम १० एकादश ११ तृतीय ३ सप्तम ७ पंचम ५ स्थानमें चन्द्रमा होय और पूर्णदृष्टि नवम ९ पंचम ५ से बृहस्पति चंद्रमा को देखे वा वृष तुला कर्क यह प्रश्नके लग्न होय और शुभग्रह युक्त होवे वा देखे तो शीघ्रही विवाह होताहै २

विषमभांशगतौशशिभार्गवौ तनुगृहंबलिनौ यदिपश्यतः।
रचयतोवरलाभमिमौ यदा युगलभांशगतौ युवतिप्रदौ ३ ॥

भा०टी०यदि शुक्रचंद्र विषम (मेष. मिथुन. सिंह. तुला. धन कुंभ राशिके नवांशेमें बलयुक्त प्राप्त होकर प्रश्नलग्नको देखे तो यह वरकी प्राप्ति कन्याको कर्तेहे ॥ यदि शशि शुक्र समराशि के नवांशमें हो और बलयुक्त प्रश्नलग्नको देखे तो कन्याकी प्राप्ति बालक को कर्तेहे ॥ ३ ॥

षष्ठाऽष्टस्थःप्रश्नलग्नाद्यदीन्दुर्लग्नेक्रूरःसप्तमेवाकुजः
स्यात् । मूर्ताविन्दुःसप्तमेतस्यभौमोरंडासास्यादष्ट
संवत्सरेण ॥ ४ ॥

भा०टी० प्रश्नलग्नसे षष्ठ ६ अष्टम ८ इनस्थानोंमें चंद्रमा होय औलग्नमे क्रूर ग्रह होवै यह एक योग है ॥ १ ॥ वा प्रश्नलग्नसे षष्ठ ६ अष्टम ८ इनस्थानोमे चंद्रमा होय और प्रश्नलग्नसे भी सप्तम ७ स्थानमे मंगल होवे यह द्वितीय योग है ॥ २ ॥ अथवा लग्नमे चंद्रमा और सप्तम ७ स्थानमे मंगल होवे यह तृतीय योग है ॥ फल इन्का ऐसे होने से आठ वर्षके अंतर वह कन्या रंडा होती है ४

प्रश्नतनोर्यदिपापनभोगाःपंचमगोरिपुदृष्टशरीरः ।
नीचगतश्चतदाखलुकन्यासाकुलटात्वथवामृतवत्सा ५॥

भा०टी० प्रश्नलग्नसे पापीग्रह अर्थात् क्षीणचंद्रमा सूर्य मंगल शनैश्चर और इन्के साथ युक्त बुध यह पापीग्रह लग्न पंचमस्थानमे होय और लग्नमे स्थितहो शत्रुग्रह उसको देखे ॥ वा नीचगत होय तो निश्चयसे वह कन्या व्यभिचारिणी वेश्या कुलिटा होती है ॥ अथवा मृतवत्सा अर्थात् नारहणेवाली संतान वाली होती है ॥ प्रमाण बृहज्जातकका पापी नीच उच्च ग्रहोमे यथा (क्षीणेन्द्व-र्क महीसुतार्कतनयाः पापा बुधस्तैर्युतः। अज वृषभ मृगांगना कुलीरा झषवणिजौ चदिवाकराक्षितुंगाः। दश १० शिखि ॥३॥ मनुयुग् २८ तिथी १५ न्द्रियांशे ५ त्रिनवक २७ विंशति २० भिश्च ते ऽस्तनीचाः) अर्थात् मेषके १० अंश सूर्य्य उच्च औ तुला-के १० अंशनीच इसप्रकार वृषके ३ अंश चंद्रमा उच्च औ वृश्चि-कके ३ अंशनीच ॥ औ मंगल मकरके २८ अंश उच्च औ कर्कके २८ अंश नीच औ कन्याके १५ अंश बुध उच्च औ मीनके १५ अंशनीच होताहे और बृहस्पति कर्कके ५ अंश बृहस्पति उच्च

औ मकरके ५ अंशनीच ॥ शुक्र मीनके २७ अंश उच्च औ कन्याके २० अंशनीच। शनैश्वर तुलाके २० अंश उच्च औ मेषके २० अंशनीच होताहै ॥ ५ ॥

यदिभवतिसितातिरिक्तपक्षेतनुगृहतःसमराशिगः शशांकः। अशुभखचरवीक्षितोऽरिरंध्रेभवतिविवाहविनाशकारकोऽयम् ॥ ६ ॥

भा०टी० यदि लग्नगृहसे कृष्णपक्षमे समराशिगत चंद्रमा होय और षष्ठ ६ अष्टम ८ इनस्थानमे स्थितहो पापी ग्रह देखे तो विवाहका नाश कर्नेवाला होता है ॥ ६ ॥

जन्मोत्थंचविलोक्यबालविधवायोगंविधाय्यव्रतम् ।
सावित्र्याउतपैप्पलंहिसुतयादद्यादिमांवारहः ॥
सल्लग्नेऽच्युतमूर्तिपिप्पलघटैः कृत्वा विवाहं स्फुटं ।
दद्यात्ताञ्चिरजीविनेऽत्रनभवेद्दोषःपुनर्भूभुवः ॥ ७ ॥

भा०टी०प्रश्नलग्नसे जैसे विधवा योग विचारा इसीप्रकार जातकशास्त्रसे जन्म लग्नसे उत्पन्न विधवा योग विचारकरे (जैसेलिखा भी है—बाल्ये विधवा भौमे पति संत्यक्तादिवाकरेऽस्तस्थे। सौरे पापैर्दृष्टे कन्यैव जरां समुपयाति) अन्यच्च (उत्सृष्टारविणा कुजेन विधवा बाल्ये ऽस्तराशिस्थिते) अर्थात् यदि मंगल स्त्रीके जन्मलग्नसे सप्तम स्थान स्थितहो तो स्त्रीको बाल विधवा योग होता है यदि सप्तम स्थान सूर्य स्थितहो तो पति स्त्रीको त्याग देता है ॥ यदि कन्याको जन्म कुंडलीमे शनिश्चर पापदृष्टी युक्त सप्तम स्थि-

तहो तो कन्याही वृद्धहो जातीहै अर्थात् विवाह नहि होता ॥ और भी लिखाहै (लग्नेव्यये चपाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे । कन्या भर्तृविनाशाय भर्ता कन्याविनाशकः)अर्थात् जन्मलग्न चतुर्थ ४ सप्तम ७ द्वादश १२ अष्टम ८ इनस्थानोमे यदि कन्याके मंगल होय तो पतिका नाशकर्ता है यदिपुरुषके इनस्थानोमे मंगल होय तो स्त्रीनाशकर्ता है ॥ इत्यादि योगोसे अच्छीतरह बालविधवा योगको विचार आगे कहना जो वैधव्यनाशक सावित्रीका तब्र-पिता कन्यासे विधिपूर्वक करवावें ॥ यदि भर्ताके स्त्रीनाशक औ स्त्रीके भर्तानाशक योग पडा होय तो उन दोनोका विवाह कर्ना श्रेष्ठ होता है औ वैधव्यकारक योग नहि रहता ॥ इसमे दृष्टान्त यह है कि जैसे दोनो अंगार आपसमे युद्धकरे तो घातसे दोनोही निस्तेज हो जाते है औ सर्प दोनो युद्धकरे तो उस्की विष उ-स्को उस्की विष नहि बाधा कर्ती ॥ और केवल स्त्रीके ही विधवा योग होय तो एकांतमे कन्याका पिता कन्यासे सावित्री व्रत कर-वाय पश्चात् पिप्पलसे वा घट अथवा सुवर्णमयी विष्णुमूर्तिसे यथोक्त विधिसे विवाहकर पीछेसे चिरायुवाले वरसे विवाह करे तो पुनर्भूदोष नहि होता ॥ प्रमाणभी जैसे व्रतखंडमे लिखाहै (सावित्र्यादिव्रतादीनि भक्त्या कुर्वन्ति याः स्त्रियः ॥ सौभाग्यञ्च सुहृत्त्वञ्च भवेत्तासां सुसन्ततिः) यह सभ अष्टम प्रकरण स्त्रीयोके आचारमे अच्छीतरह आगे लिखाहै ॥ ७ ॥

(अथ पिप्पलव्रत ज्ञानभास्करोक्त लिखतेहै)

बलवद्विधवायोगेबाल्येसतिमृगीदृशाम् ।

पितारहसिकुर्वीततद्भङ्गंशास्त्रसम्मतम् ॥
सुदिनेशुभनक्षत्रेचन्द्रताराबलान्विते ।
अवैधव्यकरैर्योगैर्लग्नेग्रहबलान्विते ॥
व्रतारम्भंप्रकुर्वीतबालवैधव्यनाशकम् ।
सुस्नातां चित्रवसनांकन्यांपितृगृहाद्बहिः ॥
नीत्वाऽश्वत्थशमीस्थानेयद्वाबदरिकाश्रमे ।
आलवालं प्रकुर्वीतयादिवामृदुकार्पितम् ॥
कुमार्य्याचार्य्यनिर्दिष्टंकृत्वासंकल्पमादरात् ।
करकाम्बुप्रमाणेनसिंचनंप्रतिवासरम् ॥
चैत्रेवाश्विनमासेवातृतीयाऽसितपक्षतः ।
यावत्कृष्णातृतीयान्यामासमेकंयथाविधि ॥
ब्राह्मणानांतथास्त्रीणांपूजनंचसमाचरेत् ।
तदाशिषाप्नुयात्कन्यांसौभाग्यञ्चसुखान्वितम् ॥
प्रतिमांपार्वतीनाम्नी वैष्णवेभाजनेऽर्चयेत् ।
चंदनाक्षतदूर्वाद्यैर्बिल्वपत्रैर्यथाविधि ॥
उपचारैर्यथाशक्त्यानैवेद्यैःप्रतिवासरम् ।
एवंव्रतप्रभावेणबालवैधव्यनिष्कृतिः ॥
जायतेकन्यकानाञ्चततःपाणिग्रहक्रियाः ।
इति अश्वत्थव्रतविधानम् ॥

भा०टी० भावार्थ यह है कि बलिष्ठ स्त्रीको विधवा योग पडने से एकांत स्थानमे पिता शास्त्रोक्त उस्का भंग वक्ष्यमाण शुभदिन शुभनक्षत्रोंमे करे ॥ कन्याको स्नान करवाय वस्त्रभूषण पहनाय घर

(गृह) से बाहिर अश्वत्थ (पिप्पल) के स्थानमे कन्याको साथले पिप्पलकी आलवाल (आढ) चारो तरफ कर कन्या संकल्प पूर्वक जो चतुर्थ प्रकरण मे लिखाहै ॥ प्रतिदिन जलसे सिंचन करे फिर चैत्र वा आश्विन शुक्लतृतीयासे कृष्णतृतीयापर्यन्त ब्राह्मण औ स्त्रीयोका कन्या पूजनकर उन्के आशीर्वाद कन्या ग्रहण करे ॥ और सुवर्णपात्रमे पार्वतीजोको षोडशोपचार वक्ष्यमाणसे पूजन करे इस व्रतके प्रभावसे कन्योका बालवैधव्य योग नाश होता है पीछेसे चिरायुवाले वरसे विवाह देवे ॥

(अथ अश्वत्थविवाहविधिः)

सूर्यारुणसंवादोक्तोलिख्यते ॥

सुहृद्द्विजगुरून्नारीमङ्गलोच्चारणैःसमम् ।
आहूयोद्वाहकालेचरम्यभूमौचमण्डपे ॥
गत्वाप्रणम्यगौरीञ्चगणनाथंचभूरुहम् ।
भवानींचैवमन्थानींपितामंत्रमुदीरयेत् ॥
उद्वाहयिष्येविधिवदश्वत्थेनमनोहराम् ।
कन्यांसौभाग्यसौख्यार्थहेतवेऽहंद्विजोत्तमाः ॥
नमस्तेविष्णुरूपायजगदानंदहेतवे ।
पितृदेवमनुष्याणामाश्रयायनमोनमः ॥
पूर्वजन्मकृतंपापंबालवैधव्यकारकम् ।
नाशयाशुसुखंदेहिकन्यायाममभूरुह ॥ इति ॥

भा०टी०भावार्थ यह है कि अश्वत्थव्रतके अनंतर मित्र द्विज

गुरु स्त्री मंगल शब्दके साथ विवाह कालमे इन सर्वको साथ लेकर सुंदर मण्डप भूमिमे प्राप्त होय गौरी गणेश पिप्पल भवानी मंथानी इन्को प्रणाम कर इस मंत्रसे प्रार्थना कन्याका पिता करे ॥ हे ब्राह्मणगण आपके प्रत्यक्ष सौभाग्य सुख अर्थके लिये अपनी कन्याको अश्वत्थके साथ विवाह कर्त्ता है जगत्-आनंद हेतु विष्णु-रूप औ पितर देव मनुष्योका आश्रय इस अश्वत्थको वारंवार नमस्कार कर साथ प्रार्थना कर्तें है भो अश्वत्थदेव पूर्वजन्मकृत जो बालवैधव्यकारक पाप इन्को नाश करो और मेरी कन्याको सुख सौभाग्य देवो ॥ इति ॥ यह प्रार्थनाके मंत्र है और विवाह-विधि वक्ष्यमाण यथावत् मंत्रोंसे कर्नी चाहिये ॥

(अथ कुम्भाविवाहः)

सूर्यारुणसंवादे ॥

विवाहोक्तेनमंथन्याकुम्भेनचसहोद्वहेत् ।
विवाहात्पूर्वकालेतुचंद्रताराबलेशुभे ॥
पितासंकल्प्यवाद्यश्चविवाहविधिपूर्वकम् ।
सूत्रेणवेष्टयेत्पश्चाद्दशतन्तुविशेषतः ।
कुंकुमालंकृतंदेहंतयोरेकान्तमन्दिरे ॥
ततःकुम्भंविनिस्सार्य्यप्रभज्यसलिलाशये ।
ततोऽभिषेचनंकुर्यात्पञ्चपल्लववारिभिः ॥
तत्सर्वंवस्त्रपूजाद्यंब्राह्मणायनिवेद्यच ॥
कन्यालंकारवस्त्राद्यंब्राह्मणायनिवेदयेत् ॥

१ दशतन्तुविधानत इत्यपिपाठः ।

प्रार्थना

वरुणांगस्वरूपत्वंजीवनानांसमाश्रय ॥
पतिजीवयकन्यायाश्चिरंपुत्रान्सुखवंरम् ॥
देहिविष्णुवरानन्दंकन्यांपालयदुःखतः ॥

इति कुम्भविवाहः

भा०टी० भावार्थ यह है कि विवाहके प्रथम शुभदिनमे विवाहोक्त विधिसे मन्थानी कुंभसे संकल्पपूर्वक विवाह करे पीछे से दशतंतुसूत्रसे वेष्टन कर कुंकुम (केशर) लगाय एकान्तमे फिर कुंभको निकाल सलिल स्थानमे प्रक्षेपकर (फैंक) पंचपल्लवसे अभिषेक कन्याको करे अनंतर संपूर्ण कुंभपूजनकी सामग्री ब्राह्मणको दे कन्याकेभी वस्त्रभूषण ब्राह्मणको देवे ॥ और वरुणकी प्रार्थना करे हे जीवनके आश्रय वरुणस्वरूप घट कन्याके पतिको चिरंजीवी करो हे विष्णो कन्याकी पालना कर सुख सौभाग्यको देवो ॥ इति ॥ इस प्रकार सुवर्णमयि चतुर्भुज विष्णु की मूर्ति बनाय विवाह कर यथावत् विधिसे ब्राह्मणको मूर्ति देवे॥ दानका प्रकार जैसे वहाही लिखाहै यथा ॥

शुभेमासेसितेपक्षेसानुकूलग्रहेदिने ॥
ब्राह्मणंसाधुमामंत्र्यसंपूज्यविविधार्हणैः ॥
तस्मैदद्याद्विधानेनविष्णोर्मूर्तिंचतुर्भुजाम् ॥
शुद्धवर्णसुवर्णेनवित्तशक्त्याथवापुनः ॥
निर्मितांरुचिरांशंखगदाचक्राब्जसंयुताम् ॥

दधानांवाससीपीतेकुमदोत्पलमालिनीं ॥
सदक्षिणांचतांदद्यान्मंत्रमेतमुदीरयेत् ॥
यन्मयापूर्वजनुषिघ्नन्त्यापतिसमागमं ॥
विषोपविषशस्त्राद्यैर्हतोवातिविरक्तया ॥
प्राप्यमानंमहाघोरंयशःसौख्यधनापहम् ॥
वैधव्याद्यतिदुःखौघनाशायसुखलब्धये ॥
महासौभाग्यलब्ध्यैचमहाविष्णोरिमांतनुम् ॥
सौवर्णनिर्मितांशक्त्यातुभ्यंसंप्रददेद्विज ॥
अनघात्वहमस्मीतित्रिवारंप्रवदेदिति ॥
एवमस्त्वितिविप्राशीर्गृहीत्वास्वगृहंविशेत् ॥
ततोवैवाहिकंतातोविधिंकुर्यान्मृगीदृशाम् ॥
इतिविष्णुप्रतिमादानविधिः ॥

(भावार्थ)

भा०टी०सानुकूल ग्रहदिनमे ब्राह्मणको बुलाय सुवर्णनिर्मित चतुर्भुज शंख चक्र गदा पद्म युक्त पीत वस्त्र वनमाला सहित साथ दक्षिणाके प्रतिमा देय यह मंत्र पढे कन्या की जो मेने पूर्वजन्ममे पतिसमागम नाशकर्नेसे वा विष उप विष शस्त्रसे पतिको मारा उससे उत्पन्न जो वैधव्य योग उसके नाशके लिये और सुख प्राप्तिके लिये यह सुवर्णमयी महाविष्णुकी मूर्ति हे ब्राह्मण तुमको दान कर्ती है इससे मैं पापरहित भई यह तीन वार कहे एवमस्तु ऐसे ब्राह्मण-वाक्यके अनंतर गृहमें आवे तव पितावर के साथ मंगल शब्द पूर्वक विवाह करै ।

शास्त्रार्थ

यदि कोई महाशय शंका करे की विष्णुमूर्ति कुंभ-पिप्पल इन्मेसे एकके साथ विवाह कर फिर द्वितीयवार मनुष्यके साथ विवाह कर्नेमे पुनर्भूदोष स्त्री को होना चाहिये ॥ उस्का उत्तर यह है कि जो एक मनुष्यके साथ विवाह कर फिर द्वितीय पुरुषके साथ विवाह किया जाय वह स्त्री पुनर्भू कहलाती है। इस्मे हम प्रमाण देते है। याज्ञवल्क्यस्मृति अध्याय १ प्रथम (यथा- अक्षता च क्षता चैव पुनर्भूः संस्कृता पुनः) अर्थात् पतिके मरजाने पर वा जीवत पर जो फिर दूसरे मनुष्यसे संस्कृत विवाही जाय वही पुनर्भू होती है ॥ यदि पिपलादि विवाहके अनंतर मनुष्यके साथ विवाह होनेसे पुनर्भू दोष है तो याज्ञवल्क्यजीने अक्षता च क्षता यह शब्द किसलिये कथन करा (ऐसे लिख देना था की पुनर्भूः संस्कृता पुनः) और अक्षता च क्षता इन शब्दोको अर्थ मिताक्षर में यह लिखा है पति अक्षत हो अर्थात् जीवत हो वा (चक्षता) क्षतहो अर्थात् मरगया हो ॥ फिर संस्कार कर्नेसे पुनर्भू संज्ञा होती है॥ इसलिये पिप्पल देवादि विवाहसे पुनर्भूदोष नहि है हम औरभी प्रमाण देते है की जो घटादिविवाहसे पुनर्भू दोष नाहो।।प्रमाण विधान व्रतखंडका जैसे (स्वर्णाम्बुपिप्पलानाञ्च प्रतिमा विष्णुरूपिणी।तयासह विवाहेच पुनर्भूत्वं न जायते।अन्यच्च लक्ष्मीरूपासदा कन्या हरिरूपं सदा जलं। हरेर्दत्तश्च यद्दा दातुःपापहरं सदा ॥ अथ सुवर्ण घट पिप्पलकी प्रतिमा मूर्ति विष्णुरूप हो

ती है इन्के साथ विवाह कर्नेसे पुनर्भू दोष नहि होता ॥ और लक्ष्मी सदेव कन्या हरिरूप सदैव जल होता है इसलिये विष्णुकोजो दानदिया जाय वह यजमानके पाप नष्टकर्नेवाला होताहे ॥ इसलिये इन्को साथ विवाह कर्नेसे पुनर्भू दोष नही प्रत्युत(किञ्च) कन्याका वैधव्य नाशक हे॥और वेदमेंभी सोम, सूर्य, अग्नि पालन कर्नेसे स्त्रीके रक्षक लिखे है। और चतुर्थ मनुष्य पति लिखाहे यथा (सोमः प्रथमो विविदे गन्धर्वो विविदउत्तरः । तृतीयो अग्निष्टे पति स्तुरीयस्ते मनुष्यजाः) इस मंत्रका अर्थ विस्तार पूर्वक आगे विवाह प्रकरण में लिखाहे ॥ यदि कोई महाशय अवभी यह आक्षेप करे कि जो वस्तु एक को दानकरवा भोगनेके लिये दी जाय फिर यदि वही वस्तु दूसरेको भोगनेके लिये दी जाय तो वह उच्छिष्ट (जूठ) होती हे और उच्छिष्टका सर्वत्रही निषेध हे ॥ इस लिये प्रथम विष्णु घट वा पिप्पलको स्त्रीदी फिर वही मनुष्यके साथ विवाह दी तो वह भी उच्छिष्ट भई इस लिये मनुष्यको स्वीकार कर्नी नहि चाहिये ॥ उत्तर महाशय मित्रवर आपने युक्तीसे फिर भी वही दोष उच्छिष्ट मान कर लगाया अहो आप बडे निपुण हो और अति चंचल बुद्धिहो परंतु आपको विनयपूर्वक हम यह कहते है कि आप उच्छिष्टका त्याग सर्वत्र कर्ते हो वा आपके पूर्व पूर्व पूरुषोने किया जैसे मधु (शहत) (दुग्ध) यहभीउ च्छिष्ट ही है यह आप किस लिये भक्षण कर्त्ते हो और श्राद्धादि कर्मोसे मधु वातादि मंत्रोसे मधु पितरोके अर्पण कर्ते होवा नहि ॥बस अब चुपहोगये भला जरा सा तो कहिये वस अव नहि कहेगे निरुत्तर भये

अच्छा अपने प्रश्नका तो उत्तर श्रवण कीजिये महात्मन् जैसेमधु मक्षिकासे दुग्ध वत्ससे कमल भ्रमरोसे उच्छिष्टभयाभी देवपितृकर्म मे आता और जगतको पंचगव्यादिसे पवित्र कर्त्ता है उसीप्रकार विष्णु घट पिपलसे संस्कृतस्त्री मनुष्यके साथ विवाह कर्नेके अनंतर पुत्रपौत्रादिसंतानसे शुभलोककी प्राप्ति औ इसलोकमे सुख देती है यथा याज्ञवल्क्यस्मृतिमे लिखा है अध्यायः १ लोकानंत्यं दिवःप्राप्तिः पुत्रपौत्रप्रपौत्रकैः । यस्मात्तस्मात्स्त्रियः सेव्याः कर्त्तव्याश्च सुरक्षिताइति ॥) और विधानखंडमेभी लिखा है यथा (यथालिभुक्तकमलं देवानां पूजनाय वै॥अर्हं भवति सर्वत्र तथा कन्या नृणां भवेत् ॥) इस लिये भास्कराचार्य मंथानीसे कन्याका विवाह यत्नसे कर्त्ता भया ॥और रेणुक महर्षि अश्वत्थसे कन्याका विबाह कर्त्ता भया ॥ प्रमाण अभिधानखण्डका जैसे (मन्थन्या भास्करो यत्नात् कृतवान् दुहितुर्विधिं ॥ रेणुकोपि स्वकन्यायास्तरूद्वाहं चकारसः) इसलिये पुत्रवत् कन्याकीभी जन्मकुण्डली सर्व महाशयजनोको अवश्य बनानी चाहिये ॥ यदि कर्मानुसार जिस्के योग पडाहो उस्का शास्त्रोक्त उपाय करानेसे शांति होजाय तो सुखहो ॥ इत्यलम् ॥

प्रश्नलग्नक्षणेयादृशाऽपत्ययुक्स्वेच्छयाकामिनीतत्र चेदाव्रजेत् । कन्यकावासुतोवातदापण्डितैस्तादृशा पत्यमस्याविनिर्दिश्यते ॥

भा० टी०प्रश्नकालमे जैसी संतान युक्त आपनी इच्छासे उसस्थान आजाय ॥ वा कन्या वा बालक बुद्धिवान् ज्योतिषी ता-

दृश उस्की संतान कहै ॥ अर्थात् जैसी स्त्री कन्या बालक प्राप्त होय वैसेही उस्को स्त्री पुत्रादिक मिलते है ॥

शङ्खभेरीविपंचीरवैर्मंगलंजायतेवैपरीत्यंतदालक्षयेत्।
वायसोवाखरःश्वाशृगालोपिवाप्रश्नलग्नक्षणेरौतिनादंयदि॥

भा०टी०शंख दुंदभी वीणा सतारका शब्द प्रश्नकालमे शुभ होता है ॥ और काक श्वान गर्दभ शृगाल यह प्रश्नकालमे शब्द करे तो निषिद्ध अशुभ है ॥

विश्वस्वातीवैष्णवपूर्वात्रयमैत्रैर्वस्वग्नेयैर्वाकरपीडो
चितऋक्षैः । वस्त्रालंकारादिसमेतैःफलपुष्पैस्सन्तो
ष्यादौस्यादनुकन्यावरणंहि ॥

भा०टी० अव कन्याकावरण लिखते है ज्येष्ठा स्वाती श्रवण पूर्वात्रय अनुराधा धनिष्ठा कृत्तिका अथवा पाणिग्रहणोचित नक्षत्रोमे फल पुष्प वस्त्रालंकारादिसे कन्याको संतुष्ट करपीछेसे वरण करे॥

धरणिदेवोऽथवाकन्यकासोदरःशुभदिनेगीतवाद्या
दिभिःसंयुतः ॥ वरवृतिंवस्त्रयज्ञोपवीतादिभिर्ध्रु
वयुतैर्वन्हिपूर्वात्रयैराचरेत् ॥

भा०टी०अथ बालक वरणालिखते है ॥ ब्राह्मण वा कन्याका भ्राता (भाई) शुभदिनमे गीतादिवाद्यसहित होय वस्त्रयज्ञोपवीतादिसे । उत्तराफाल्गुनी । उत्तराभाद्रपदा । उत्तराषाढा । रोहिणी । कृत्तिका पूर्वाफाल्गुणी पूर्वाभाद्रपदा पूर्वाषाढा इन नक्षत्रोमे वरका वरण करे ॥ इस प्रकार वर वरण कर पीछेसे कन्या-

को वस्त्रालंकारादि श्वशुरगृहसे जो प्राप्त उससे पूर्वोक्त नक्षत्रोमे वरण कर्ना॥

गुरुशुद्धिवशेनकन्यकानांसमवर्षेषुषडब्दकोपरिष्टात् । रविशुद्धिवशाच्छुभोवराणामुभयोश्चंद्रविशुद्धितोविवाहः ॥

भा० टी० गुरुबृहस्पतिजीकी शुद्धिसे कन्याका षट् ६ वर्षके ऊपर अष्टम ८ दशम १० समवर्ष में विवाह शुभ है॥ और सूर्यकी शुद्धिद्वारा वरका विवाह श्रेष्ठ है और वर कन्या दोनोका चंद्रमाकी शुद्धिसे विवाह शुभहोता है भावार्थ यह है की कन्याकी जन्मराशीसे गुरु औ वरकी जन्मराशीसे सूर्य और दोनोको चंद्रमाजीकी शुद्धिसे श्रेष्ठविवाह होता है ॥ इसी आशयको काशीनाथजी कहते॥ वरस्य भास्करबलं कन्यायाश्च गुरोर्बलं ॥ द्वयोश्चंद्रबलं ग्राह्यं विवाहो नान्यथा भवेत् ॥

मिथुनकुम्भमृगालिवृषाजगेमिथुनगेपिरवौत्रिलवेशुचिः । अलिमृगाजगतेकरपीडनंभवतिकार्तिकपौषमधुष्वपि ॥

भा०टी०मिथुन कुंभ मकर वृश्चिक वृष मेष इन राशियोमे सूर्य होय अथवा आषाढके १० दशदिन पर्यंत मिथुन राशिगत सूर्य हो वा वृश्चिक मकर मेषगत सूर्य्य होयतो कार्तिक पौष चैत्रमे भी पाणिग्रहण शुभ है ॥

आद्यगर्भसुतकन्ययोर्द्वयोर्जन्ममासभतिथौकरग्रहः ।

नोचितोथसबुधैःप्रशस्यतेचेद्द्वितीयजनुषोसुतप्रदः ॥

भा० टी० आद्यगर्भ प्रथमगर्भ अर्थात् ज्येष्ट पुत्र वा कन्या होय तो उन दोनोका जन्मके मासमे वा जन्म तिथिमे अथवा जन्म नक्षत्रमे पाणिग्रहण श्रेष्ठ नहि यदि वह दोनो दूसरे गर्भके होयतो जन्म मास तिथि नक्षत्रमे विवाह पुत्रके देनेवालाहै ॥

ज्येष्ठद्वंद्वंमध्यमंसंप्रदिष्टंत्रिज्येष्ठंचेन्नैवयुक्तंकदापि ।
केचित्सूर्यंवन्हिगंप्रोक्तमाहुर्नैवान्योन्यंज्येष्ठयोःस्याद्विवाहः ॥

भा० टी० ज्येष्ठ बालक ज्येष्ठ कन्याका विवाह मध्यम होता है यदि ज्येष्ठका महीना (मास) ज्येष्ठ बालक ज्येष्ठाही कन्या यह तीन ज्येष्ठ कीसी कालमेभी श्रेष्ठ नहि अति निषिद्ध है ॥ कई आचार्योंका यह मतहै की जिसकालपर्यंत कृत्तिका मे सूर्य हो उतना काल ज्येष्ठमास निषिद्ध है ॥ परंतु सिद्धांत मत यही है वरकन्या ज्येष्ठोका आपसमे विवाह श्रेष्ठ नहि ॥

सुतपरिणयात्षण्मासान्तःसुताकरपीडनंनचनिजकुले
तद्वद्वामुण्डनादपिमुण्डनं॥नचसहजयोर्देयेभ्रात्रोःसहोदरकन्यके नसहजसुतोद्वाहोब्दार्धेशुभेनपितृक्रिया ॥

भा० टी० पुत्रविवाहके अनंतर षण्मास ६ के बीचमे कन्याका विवाह शुभ नहि ॥ इसप्रकार अपनी कुलमे मुंडन (चूडाकर्म) के पीछे मुंडन षट् ६ महीने के अन्तर श्रेष्ठ नहि और एकपिताके दो पुत्रोको दो भ्राताकी कन्यासे सहोदर (सके) भाईयोका

विवाह शुभ नहि ॥ यदि एक पिताकी दो कन्या होय तो एकपिता के दो पुत्रोसे विवाह का दोष नहि ॥ सहोदर शब्दका यह अर्थ है कि एकमाता के गर्भसे नाहो और एकपितासे सपत्नीमे उत्पन्न भ्राता सहोदर नहि कहाते ॥ प्रमाण (समानोदर्य्यसोदर्यसगर्भ्यस्तु सनाभयः इत्यमरः) और बालक कन्याके विवाहके अनंतर षट् मास ६ पर्यन्त पितृक्रिया श्राद्धादि शुभ नहि है ॥

वध्वावरस्यापिकुलेत्रिपूरुषेनाशंव्रजेत्कश्चननिश्चयो त्तरं । मासोत्तरंतत्रविवाहइष्यतेशान्त्याथवासूतक निर्गमेपरे ॥

टीका॰ वधूवरके तीन पुरुषमे यदि कोई नाशको प्राप्तहो जाय निश्चयके अनंतर एक मासके अनन्तर विवाह करे । अथवा कुष्मांड शांतिकर विवाह करे । कोई आचार्य सूतक पातक को निवृत्तिके अनंतर कहते है ॥ यदि कन्यादान हो चुकाहो फिर सूतक पातक पडेतो भोजनादि सर्व विवाहांग करनेका दोष नहि ॥

चूडाव्रतंचापिविवाहतोव्रताच्चूडाचनेष्टापुरुषत्रयान्त रे । वधूप्रवेशाच्चसुताविनिर्गमः षण्मासतोवाब्दविभे दतः शुभः ॥

टीका॰ विवाहमे चूडा कर्मचूडा कर्ममे विवाह षण्मासके बीच श्रेष्ठ नहि इस प्रकार वधू प्रवेश से कन्याका निर्गम ६ षट् मासके अन्तर श्रेष्ठनहि । यदि वर्षका भेद होयतो दोषनहि ॥ विवाहमें सूर्य संक्रान्त से वर्षका भेद होनाहै ॥

॥ अथविवाहमुहूर्तानि ॥

निर्वेधैः शशिकरमूलमैत्रपित्र्यब्राह्मांत्योत्तरपवनैः शुभोविवाहः । रिक्ताऽमारहिततिथौशुभेन्हिवैश्वप्रांत्यांघ्रिश्रुतितिथिभागतोऽभिजित्स्यात् ॥

भा०टी०वेध रहित मृगशिर हस्त मूल अनुराधा मघा रोहिणी रेवती उत्तरात्रय ३ स्वाती यह नक्षत्र विवाहमें शुभहै॥ चतुर्थी ४ नवमी ९ चतुर्दशी १४ अमावस ३० इनसे रहित तिथीया श्रेष्ठहै ॥ विवाहमे चंद्र बुध बृहस्पति शुक्र यह वार शुभ होतेहै ॥ उत्तराषाढाका अंतका चरण श्रवणकी ४चारघटी अभिजित् नक्षत्र होताहै ॥ और राशि वर्ण योनि गण षडाष्टक नव पंचक द्विर्द्वादश राशिनाडी चक्र वर्ग लत्तादिकदश १० दोष अवश्य विचारणे योग्यहै इस लिये सारणी बनाकर सभकी समझमें आनेवाली अतिसुगम रीतिसे आगे लिखेहै ॥

अथ राशि चक्रम्.

मेष	वृष	सिंह	धन मकर पू.	चतुष्पद
मिथुन	कन्या	तुला	कुंभ	नर द्विपद
कुं	मीन	मकर पराद्ध	०	जलचर
वृश्चिक	कर्क	०	०	कीटसंज्ञक

पुरुषकी राशि स्त्रीकी राशिसे बलि उचित है और संपूर्ण चतुष्पद द्विपदोंके वश्यहै सिंहके बिना। जलचर भक्ष्यहै सर्पादिक भयदायक है॥

अथ वर्णचक्रम्

मीन	वृश्चिक	कर्क	ब्राह्मण
मेष	सिंह	धन	क्षत्री
वृष	मकर	कन्या	वैश्य
मिथुन	कुंभ	तुला	शूद्र.

वरस्य वर्णतोधिका वधूर्न शस्यते बुधैः अर्थात् वरके वर्ण से अधिक वधू श्रेष्ठ नहिं वरका वर्ण कन्या से अधिक श्रेष्ठ है.

अथ योनिचक्रम्.

अश्विनी	स्वा॰ हस्त	धनि॰ पू॰भा॰	भरणी रेवती	पुष्य कृत्ति	श्रवण पू॰षा॰	उ॰खा॰ ऽभि॰	मृग रोहिणी	नक्षत्र
अश्व (घोडा)	महिष	सिंह	गज	छाग मेंढा	वानर	नकुल	सर्प	योनयः
ज्येष्ठा अनु॰	मूला आर्द्रा	श्लेषा पुनर्व	मघा पू॰फा॰	चित्रा विशा	उ॰फा॰ उ॰भा॰			नक्षत्र
मृग श्वान अनयोर्वैरं		बिला॰ चूहा अनयोर्वैरं		व्याघ्र गौ अनयोर्वैरं		अनयोर्वैरं		योनयः वैरं

वैर वैर वैर वैर

यह योनिचक्र विवाहमे सेव्यसेवक भावमे मैत्री कार्यमें अवश्य विचारणा चाहिये.

अथगणचक्रम्.

म	श्ले	ध	ज्ये	मूला	शत	कृत्ति	चि	वि॰	राक्षस
पू॰फा	पू॰षा॰	पू॰भा	उ॰फा॰	उ॰षा॰	उ॰भा॰	रोहि॰	भर॰	आर्द्रा	मनुष्य
ऽनु	पुन	मृ॰	श्र॰	रेव॰	स्वा॰	ह	अश्व	पुष्य	देवता

अपने गणके साथ परम प्रीति देवन मनुष्योंकी सम देवता राक्षसोंक शुद्ध मनुष्य राक्षसकी मृत्यु गणोंकी आपसमे होती है ॥

अथ षडाष्टकचक्रम्.

मे	वृष	मि	कं	सिं	कं	पुरुषराशिमृत्युः
कं	तु	वृ.	ध.	म	मी	स्त्री राशि मृत्युः

अथ नवपचकचक्रम्.

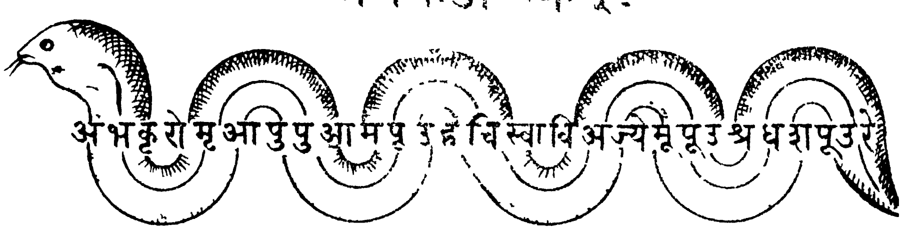
मे	वृ	मि	र्क	सिं	कं	कुं	अन्योन्यपुरुष (सतान हानि)
सिं	क	तु	वृ	ध	म	मिथु	स्त्रीराशिकीकुलि होतीहै

अथ द्विर्द्वादशचक्रम्.

मे	वृ	मि	र्क	सिं	क	वृ	म	मी	दारिद्र्यं
वृ	मि	र्क	सिं	क	तु	ध	कुं	मी	दारिद्र्यं

मृत्युषडाष्टकेज्ञेयोऽपत्यहानिर्नवात्मजे।
द्विर्द्वादशेनिर्द्धनत्वंद्वयोरन्यत्रसौख्यकृत्॥

अथनाडीचक्रम्.



दम्पत्योरेकनाड्यांपरिणयनमसन्मध्यनाड्यांहिमृत्युः

अर्थात् स्त्रीवरका एक नाडीमे स्थित नक्षत्रोमे विवाह अशुभ होता है और मध्यम नाडीमे मृत्यु होनी है॥ इसलिये तृतीय नाडी शुभ है.

अथ वर्गचक्रम्.

गरुड	बिडाल	सिंह	श्वान	सर्प	मूषिक	मृग	मेंढा
अ ॥	क	च	ट	त	प	य	श
इ १	ख	छ	ठ	थ	फ	र	ष
उ ८	ग	ज	ड	द	ब	ल	स
ऋ ६	घ	झ	ढ	ध	भ	व	ह
लृ ६	ङ	ञ	ण	न	म		

अपनं वर्गमें परम प्रीति होती है और अपनं वर्गसे पंचम वर्ग शत्रु होता है और चतुर्थ मित्र औ तृतीय उदासीन होता है इन्का फल वर्ग सदृश है.

अथ राशिस्वामिचक्रम्.

मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	राशयः
मं	शु	बु	चं	सू	बु	शु	मं	बृ	श	श	बृ	स्वामिनः

अथ राशिचक्रम्.

मे	वृ	मि	कं	सिं	क	तु	वृश्चि	धन	म	कुं	मी
चु	इ	का	हि	म	टो	रा	तो	ये	भो	गु	दि
चे	उ	कि	हु	मि	प	रि	न	यो	जजे	गे	दु
चो	ए	कु	हे	मु	पि	रु	नि	भ	जिजे	गो	थ
ला	डो	घे	हो	मे	यु	रे	नु	भि	खख	स	झ
लि	वा	ङ	डा	मो	ष	रो	ने	खि	सि	अे	ञ
ल	वि	छ	डि	टा	ण	ता	नो	ध	खे	सु	दे
ले	वु	के	डु	टि	ठा	ति	या	फा	खो	से	दो
लो	वे	को	डे	टु	पे	तु	यि	ढा	ग	सो	च
अ	वो	हा	डो	टे	पो	ते	यु	भे	गि	द	चि

अथलत्ताचक्रम्.

सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृ॰	शुक्र	शनि	रा॰	विवाह नक्ष॰
पू॰षा	पू॰भा	भर॰	मघा	उ॰भा	पुष्य	शत	उ॰फा॰	रोहि॰
उ॰षा	उ॰भा	कृ॰	पू॰फा	रेवति	श्ले	पू॰भा	ह	मृगशि॰
उ॰भा॰	रो	पुष्य	चि॰	मृ॰	चि	कृ॰	ज्ये	मघा
अश्वनी	आर्द्रा	मघा	ज्येष्ठा	पुन	वि॰	मृ॰	पू॰षा	उत्तराफा
भरणी	पुष्य	पू॰फा	मूला	पु॰	ऽनु	आ	उ॰षा	हस्त
रो	श्ले	ह	उ॰षा	म॰	मृ	पुष्य	ध	स्वाती
आ	पू॰फा	स्वा	ध॰	उ॰फा	उ॰षा	म	पू॰भा	अनुराधा
पुष्य	ह	अनु	पू॰भा	चि	धनि	उ॰फा	रे	मूला
म	स्वा	मू	रे	वि	पू॰भा	चि	भ	उत्तराषाढा
स्वा॰	पू॰षा	श	मृ	उ॰षा	कृ	मृ	पु	उत्तराभाद्रपदा
वि	उ॰भा	पू॰भा	आ	श्र	गे	पू॰षा	पुष्य	रेवती

यह लत्तादोष विवाहादि शुभकार्य्योमें वर्जित है. विशेषकर मालवदेशमे अवश्य वर्जनीय है ॥

अथपातदोषचक्रम्.

वैधृति	हर्षण	व्यतिपात	शूल	गंड	योगानाम्.
अन्ते विवाह नक्षत्रं यथा गंडयोग १५ घटी रेवती ३० वा २५ घटी पातेन पतितं नक्षत्रं विवाहे वर्ज्यं कुरुजांगलदेशे अवश्यं वर्ज्यम् ॥					

अथयुतिदोषचक्रम्.

चं. सू.	चं. मं.	चं. बु.	चं. बृ.	चं. शु.	चं. श.	चं. रा.	युति
दारिद्र्यं	मरणं	शुभं	सौख्यं	सापत्न्यं वैराग्यं	मृति	मृति	फलं

अथवेधचक्रम्

रो	मृ	म	उ.फा	ह	स्वा	ऽनु	मू	उ.षा	उ.भा	रेव.	विवाह नक्ष.
ऽभि	उ.षा	श्र	रे	उ.भा	श	भ	पु	मृ	ह	उ.फा	सूर्योदयः

अथचरणवेधचक्रम्.

ग्र.	ग्र.	ग्र.	ग्र.	नक्षत्रके प्रथम पादमें ग्रह कोविवाहनक्षत्रकेचतुर्थपाद का वेधहै विवाहमे सर्वदेशमे वेधवर्ज्यहै अत्यावश्यक मे चरणवेधवर्जनीयहै. ॥
४	१	२	३	
१	४	३	२	

अथ यामित्रनाक्षत्रचक्रम्.

रो	मृ	म	उ.फा	ह	स्वा	ऽनु	मू	उ.षा	उ.भा	रे	वि.न.
ऽनु	ज्ये	ध	पू.भा	उ.भा	ऽश्वि	कृ	मृ	पु	उ.फा	ह	ग्रहा

लग्नसे चंद्रमासे सप्तम ग्रह यामित्रकारक होना है. अथवा-लग्न नवांशसे वा चंद्र राशिस्थ नवांशसे पंचपंचाशत् ५५ नवमांश मे जो ग्रह होय वह यामित्रकारक होता है शुभ नहि होना ॥

अथ बुधपंचकचक्रम्.

८	२	४	६	१	अंक
रोग	वन्हि	राजा	चौर	मृत्यु	बाण

शुक्लप्रतिपत्से गततिथि लग्नसे युक्त कर नौसे भाग ले शेष रहा अंक बाण जानना ॥ यह दक्षिण देशमें निषिद्ध है ॥

अथ सर्वदेशे बुधपंचकम्.

रोग	वन्हि	राज	चौर	मृत्यु	बाणः ५ दिने
०८ १७ २६	०२ ११ २० २४	०४ १३ २२ ३१	०६ १५ २५	०१ १० १९ २८	सूर्य संक्रांतिसे इनदिनोमे बाण है ॥
सूर्य	भौम	शनि	मंगल	बुध	इनदिनोमे
व्रतमे	गृहगोपमे	नृपसेवा	यात्रामे	विवाहमे	इनकार्य्यमे वर्जित है ॥
रात्रिमे	दिनमे	दिनमे	रात्रिमे	संध्यामे	

एकार्गलचक्रम्.

व्या	गंड	व्यति	वि०	शूल	वैधृति	वज्र	परि	ऽतिगं०

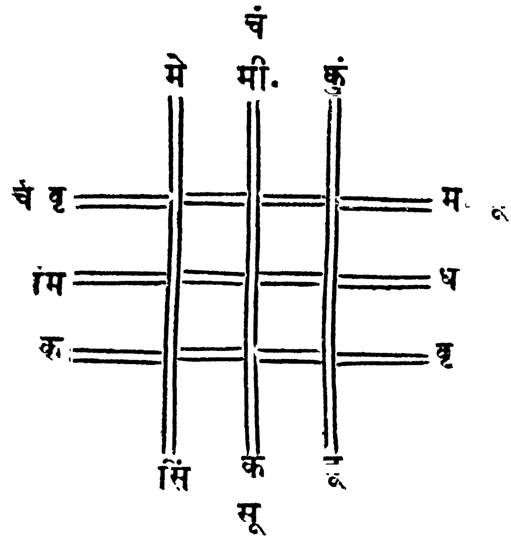
यदि सूर्य नक्षत्रसे विवाह नक्षत्र विषम ऽभिजित् सहित स्थित हो तो एकार्गला योग कुरु बाल्हीक देशमे वर्जित है

अथोपग्रहाः

५	८	१०	१४	७	१९	१५	१८	२१	२२	२३	२४	२५

यदिसूर्यनक्षत्रसे इनअंकोंमे विवाहनक्षत्रहोयतो उपग्रहदोष होता है ॥

(अथक्रांतिसाम्यम्)



अर्थात् चंद्रमा सूर्य अन्योन्य नक्षत्रगत होय सन्मुख स्थित होय तो क्रांतिसाम्य दोष होताहे विवाहमे शुभनहि होता ॥

(अथ दग्धातिथिः)

मीन चैत्र	वृष जेष्ठ	मेष वैशाख	कन्या आश्विन	वृश्चि. मार्गशी.	मकर माघ	मासोमे
२	४	६	८	१०	१२	दग्धातिथिः
धन पौष	कुंभ फाल्गुन	कर्क श्रा	मिथु. आषाढ	सिंह भादो	तुला कार्तिक	मासोमे
२	४	६	८	१०	१२	दग्धातिथि

यह शुभ कर्मोंमें दग्धातिथी वर्जित है ॥

(अथदशयोगाः॥)

सूर्य चंद्र नक्षत्र योगः २७ शेषः ॥									
००	०१	४	६	१०	११	१५	१८	१९	२०
वात	ऽभ्र	ऽग्नि	नृप	चोर	मृति	रोग	वज्र	वाद	क्षिति

यथा सूर्यर्क्ष श्रवण २२ चंद्रर्क्ष धनिष्ठा २३ अनयोर्योगः ४५ भशेषः २७ सप्तविंशति तष्टः १८ वज्रपातयोगः ॥

(अथपंग्वधकाणलग्नानि)

मे	वृ	मि	क	सिं	क	तू	वृ	ध	म	कुं	मी
अंध	अंध	अंध	अंध	अंध	अंध	बधिर	ब०	बधिर	बधिर	पंगु	पंगु
दिन मे	दिन मे	रात्रि मे	रात्रि मे	दिन मे	रात्रि मे	अपराण्हमे	अपराण्हे	अपराण्हे	संध्या मे	सं०	सं०

यह गोड मालव देशमे त्याज्यहै अथवा गुरु दृष्टिसे किसी स्थानमे भी दोष नहि है ॥

(अथग्रहनैसर्गिकमैत्रीचक्रम्)

सूर्य	चंद्रमा	मंगल	बुध	बृहस्प	शुक्र	शनि	ग्रहाः
मं० बृ. चं०	सूर्य बुध	चं० बृ. सूर्य	सूर्य शुक्र	सूर्य मं० चं	बुध शनि	शुक्र बुध	मित्र
बुध	बृ. शु. श. मं.	शुक्र शनि	मं. श. सूर्य	शनि	मंगल बृहस्पति	बृहस्प ति	सम
शुक्र शनि		बुध	चंद्रमा	शुक्र बुध	सूर्य चं.	सू. चं. मंगल	शत्रु

प्रोक्तेदुष्टभकूटकेपरिणयस्त्वेकाधिपत्येशुभोऽथो राशीश्वरसौहृदेपिगदितोनाडयृक्षशुद्धिर्यदि ॥ अन्यर्क्षांशपयोर्बलित्वसखितेनाडयृक्षशुद्धौतथाताराशुद्धिवशेनराशिवशताभावेनिरुक्तोबुधैः ॥

भा०टी०दुष्टभकूटमभी विवाह शुभहोताहै यदि दोनोराशिका स्वामि एकहो अथवा दोनोकी आपसमे मैत्रीहोय ॥

(अथलग्नशुद्धिमाह)

कार्मुकतौलिककन्यायुग्मलवेझषगेवा॥यर्हिभवेदुपयामस्तर्हिसतीखलुकन्या ॥व्ययेश।निः खेवनिजस्तृतीयेभृगुस्तनौचंद्रखलानशस्ताः।लग्नेट् कविग्लौश्चरिपौमृतौग्लौर्लग्नेट् शुभाराश्चमदे च सर्वे॥ त्र्यायाष्टषट्सुरविकेतुतमोर्कपुत्रास्त्र्यायारिगः क्षितिसुतोद्विगुणायगोऽब्जः॥ सप्तव्ययाष्टरहितौज्ञगुरू सितोष्टत्रिद्यूनषड्व्ययगृहान्परिहृत्यशस्तः ॥ त्याज्यालग्नेऽब्धयोमन्दात् षष्ठेशुक्रेंदुलग्नपाः। रंध्रेचंद्रादयःपंचसर्वेस्तेऽब्जगुरूसमौ ॥

भा०टी०धन तुला कन्या मिथुन मीन इन लग्नोमें। वा इनके नवमांशेमे विवाह होवे तो कन्या सती होतीहै। और चरलग्नका नवांशा ना होवे तुलामकरमें चंद्रमा होवे तब चरलग्न भी शुभहै॥ और लग्नसे द्वादश१२स्थानमें शनि दशमे १०मंगल तृतीय३ शुक्र लग्नमें १चंद्रमा मंगल शनिसूर्य शुभनहि होते है॥षष्ठ ६ स्थानमे लग्नेश शुक्र

चंद्रमा शुभ नहि ॥ और अष्टम ८ स्थान चंद्रमा लग्नेश बुध बृहस्पति शुक्र मंगल शुभ नहिहै ॥ और सप्तम ७ स्थानमे संपूर्णग्रह शुभनहि होतेहै । अन्यच्च तृतीय ३ एकादश ११ अष्टम ८ षष्ठ ६ स्थानमे सूर्य केतु राहु शनि श्रेष्ठहै और तृतीय ३ एकादश ११ षष्ठ ६ स्थानमे मंगल शुभहै और द्वितीय २ तृतीय ३ एकादश ११ स्थानमे चंद्रमा शुभहै ७ । १२ । ८ । ३ । ६ । इनस्थान के विन और स्थान बुधगुरु शुक्र शुभहै ॥ अन्यच्च ॥ लग्नमे शनि सूर्य चंद्र मंगल ग्रह नाहोय और षष्ठ स्थानमे शुक्र चंद्रमा लग्नेश ना होय और अष्टम स्थानमे चंद्रमा मंगल बुध बृहस्पति शुक्र नाहोय । सप्तम स्थानमे कोई भी ग्रह ना होय अर्थात् शुद्ध होवे तो शुभहै कई आचार्य सप्तम स्थानमे चंद्रमा बृहस्पति को सम कहते है ॥

(कर्तरीदोषमाह)

लग्नात्पापावृजुनृजूरिष्फार्थस्थौयदातदा ॥ कर्तरी नामसाज्ञेयामृत्युदारिद्र्यशोकदा ॥

भा० टी० लग्नसेद्वितीयस्थान वक्रीग्रह और द्वादश १२ स्थानमे मार्गी ग्रह होयतो कर्तरीदोष होताहै ॥ शुभनहि ॥

(पुष्टिमाह)

त्रिकोणेकेंद्रेवामदनरहितेदोषशतकंहरेत्सौम्यःशुक्रोद्विगुणमपिलक्षंसुरगुरुः॥भवेदायेकेन्द्रेंगपउतलवेशोयदितदासमूहंदोषाणांदहनइवतूलंशमयति ॥

भा० टी० विवाहलग्नसे नवम पंचमप्रथम चतुर्थ दशम यदि बुध होय

तो शत १०० दोषका नाश कर्ताहै यदि शुक्र होय तो द्विगुणशत २०० दोषका नाश कर्ताहै बृहस्पति जो होय तो लक्ष १००००० दोषका नाश कर्तेहै यदि एकादश ११ चतुर्थ सप्तम लग्नदशम स्थानमे यदि लग्नेश ऊन नवमांशेश होय तो दोषो के समूह को जैसे अग्नि तूलके पुंज को क्षणभरमे नाश कर्ताहै तद्वत् नाश कर्ताहै ॥

(अथसंकीर्णजातीनांविवाहः)

कृष्णेपक्षेसौरिकुजार्केपिचवारेवर्ज्येनक्षत्रेयदिवा स्यात्करपीडा। संकीर्णानांतर्हिशतायुःखलुलाभः प्रीतिप्राप्तिःसाभवतीहस्थितिरेषा ॥

भा०टी० कृष्णपक्षमें शनिश्चर मंगल सूर्य वारमे और विवाहमे वर्जित नक्षत्रोमे यदि संकीर्ण शवर किरात निषाद भिल्ल पुलिंद म्लेच्छ यवन प्रभृतीयोका विवाह होयतो आयु सुत प्रीतिका लाभ दायक होता है ॥

(अथगोधूलीलग्नमाह)

पिण्डीभूतेदिनकृतहेमन्तऋतौस्यादर्धास्तेतपसम येगोधूलिः । सम्पूर्णास्तेजलधरमालाकालेत्रेधायो ज्यासकलशुभेकार्य्यादौ ॥

भा०टी० जब नक्षत्रादिक शुद्धि ना होय तव गोधूली समय सर्व कार्यमे शुभ होताहै ॥ जैसेमार्गशिर पौषमे जव पिंडाकार सूर्य होय तो गोधूली समय होताहै (फाल्गुण माघमे भी इसीप्रकार) और (चैत्र वैशाख ज्येष्ठ आषाढमे) अर्द्धसूर्य जव होय तव गोधूली

समय होताहै॥ और श्रावण भाद्रपद (आश्विन कार्तिक मे) संपूर्ण अस्तसूर्य होनेपर गोधूली समय होताहै यह सर्व कार्य्यमे श्रेष्ठहै॥

(अथवधूप्रवेश)

समाद्रिपंचांगदिनेविवाहात् वधूप्रवेशोष्टिदिनांतराले।
शुभःपरस्ताद्विषमाब्दमासदिनेक्षवर्षात्परतोयथेष्टम्॥

भा०टी०विवाहदिनसे। २। ४। ५। ६। ७। ८। ९। १०। । १२। १४। १६। दिनमे इस्के उपर विषम वर्षमे वा मासमे विवाहदिनसे ५ पंचवर्ष उपरंत यथेच्छ प्रवेश करे॥

ध्रुवक्षिप्रमृदुश्रोत्रवसुमूलमघानिले।वधूप्रवेशःसन्नेष्टोरिक्तारार्कैबुधेपरैः॥

भा०टी०हस्त अश्विनी पुष्य अभिजित् उत्तरात्रय रोहिणी मृगशिर चित्रा अनुराधा श्रवण धनिष्ठा मूल मघा स्वाती इन नक्षत्रोमे वधूप्रवेश श्रेष्ठहै और चतुर्थी ४ नवमी ९ चतुर्दशी १४ यह तिथि ना होय और मंगल सूर्य बुध इन वारोके विना वधू प्रवेश शुभहै।

(अथद्विरागमनमुहूर्त्तम्)

चरेदथोजहायनेघटालिमेषगेरवौरवीज्यशुद्धियोगतः शुभग्रहस्यवासरे॥ नृयुग्ममीनकन्यकातुलावृषेविलग्नगेद्विरागमंलघुध्रुवेचरेस्त्रपेमृदूडुभिः॥

भा०टी०विषम वर्षविवाह कालसे अथवा विषम मास कुंभ वृश्चिक मेषगत सूर्य होय और मिथुन कन्या तुला मीन वृष यह लग्नहोय और सूर्य बृहस्पति शुद्धहोय शुक्र बृहस्पति चंद्र बुध

इन दिनोंमें और हस्त अश्विनी पुष्य अभिजित् उत्तरात्रय स्वाती पुनर्वसु श्रवण धनिष्ठा शतभिषा मूला मृगशिर रेवती चित्रा अनुराधा इन नक्षत्रोंमे द्विरागमन शुभ होताहै ॥

(अथ शुक्रविचारमाह)

दैत्येज्योह्यभिमुखदक्षिणेयदिस्याद्गच्छेयुर्नहिशिशुगर्भिणीनवोढा ॥ बालश्चेद्व्रजतिविपद्यतेनवोढाचेद्वंध्या भवतिचगर्भिणीत्वगर्भा ॥

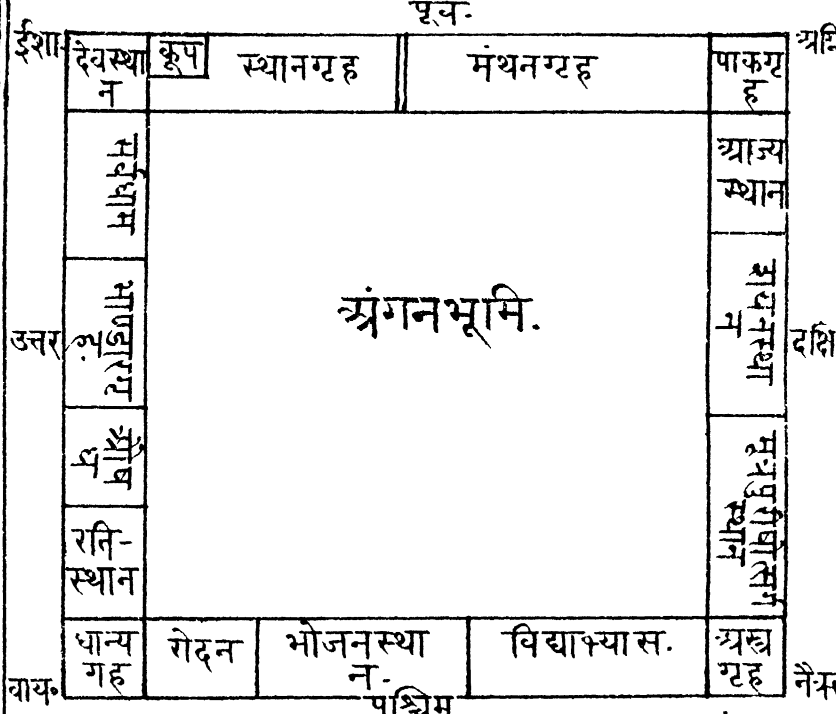
भा॰टी॰ यदिशुक्रजी सन्मुख वा दक्षिण भागमे स्थित होयतो तब बालक गर्भिणी नवीन युवती यह तीन ना जाय यदि बालक यात्राकरे तो मृत्यु को प्राप्त होताहै और यदि गर्भवती स्त्री जाय तो गर्भरहित होतीहै अर्थात् गर्भ स्रव जाताहै और यदि नवीन युवती यात्राकरे तो वंध्या होजातीहै ॥ और वामांग पृष्टमे शुक्र श्रेष्ठ होताहै यात्रामे ॥

(अथापवादमाह)

नगरप्रवेशविषयाद्युपद्रवेकरपीडनेविबुधतीर्थयात्रयोः ॥ नृपपीडने नववधूप्रवेशने प्रतिभार्गवो भवति दोषकृन्नहि ॥ पित्र्ये गृहे चेत्कुचपुष्पसंभवः स्त्रीणां न दोषः प्रतिशुक्रसंभवः । भृग्वंगिरोवत्सवसिष्ठकश्यपात्रीणां भरद्वाजमुनेः कुले तथा ॥ इति श्रीदैवज्ञाऽनंतरामसुतविरचिते मुहूर्तचिंतामणौ विवाहप्रकरणं समाप्तम् ॥

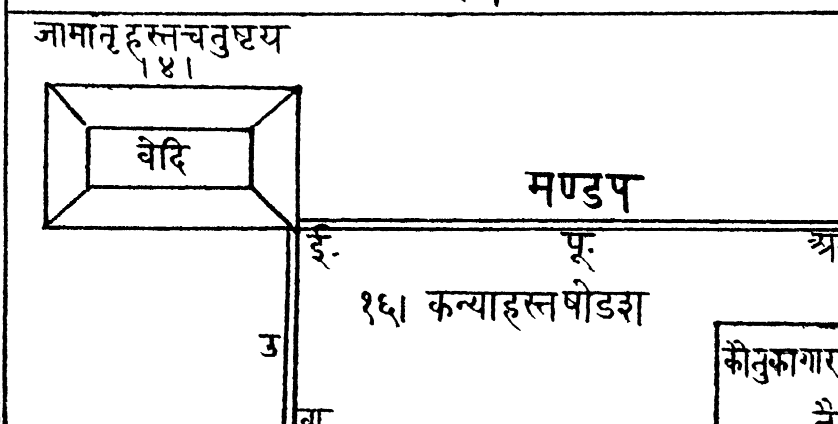
भा० टी० अपने नगरमे एकगृहसे द्वितीयगृहमें प्रवेशकर्ना होय अथवा देशभंग वा राजभंग होय और विवाहमे अर्थात् विवाह को मुख्य रख यात्रामे और देव यात्रा पंचक्रोशी आदि तीर्थ यात्रा गंगादि और नवीन वधूके आगमन मे सन्मुख शुक्र दोषकारक नहि होता प्रमाणभी जैसे बादरायणका (स्वभवनपुरप्रवेशे देशानां विभ्रमे तथोद्वाहे । नूतनवध्वागमने प्रतिशुक्रविचारणं नास्ति ॥ एकग्रामे पुरे वापि दुर्भिक्षे राजविप्लुवे । विवाहे तीर्थयात्रायां प्रति शुक्रो न दुष्यति) और कई आचार्य दीपमाला के अनंतर प्रतिपत् मे आगमन से शुक्रका सन्मुख दक्षिण दोष नहि कहते ॥ प्रमाण (अस्तंगते गुरौ शुक्र सिंहस्थे वा बृहस्पतौ ॥ दीपोत्सवदिने चैव कन्या भर्तृगृहं विशेत् ॥) यदि कन्याके पितृगृहमे कुच पुष्पका संभव हो अनंतर विवाह कर्नेसे शुक्रका दोष नहि होता प्रमाण चंडेश्वर का (पित्र्यागारे कुचकुसुमयोः संभवो वा यदि स्यात्पत्युः शुद्धिर्न भवति सफला सेवितुं स्वामिसद्म॥) और भृगु अंगिरा वत्स वशिष्ठ कश्यप अत्रि और भरद्वाज इनकी कुलमेभी शुक्रकृत दोष नहि होता ।। इतिश्री गौतम गोत्र (शौरि) अन्वयालंकृत श्रीदैवज्ञ दुनिचन्द्रात्मज कर्पूरस्थलनिवासि पण्डित विष्णुदत्त वैदिक संगृहीत विवाहमुहूर्त तत्कृतटीका समाप्तिमगात् ॥ समाप्तश्चायं प्रथमः प्रकर्णः । शुभमस्तु कुलदेव्याः प्रसादात् ॥

अथ यथार्थ गृहचित्र.

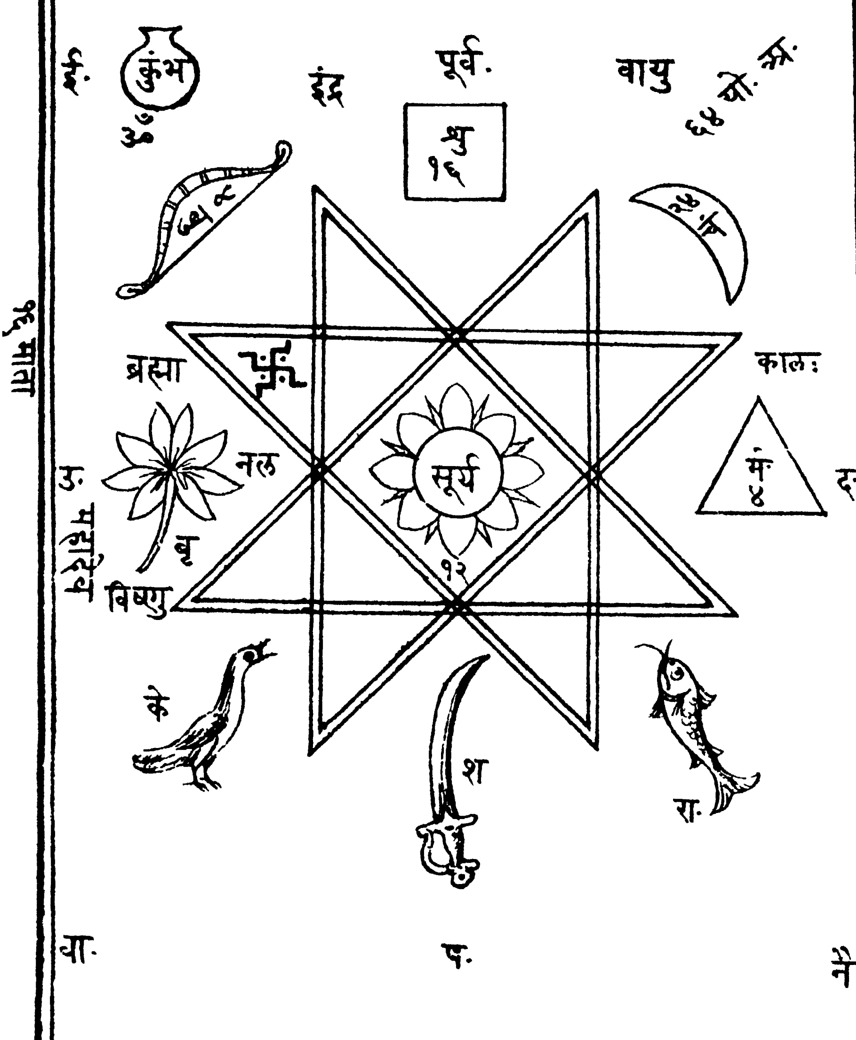


अभावे यथाशक्त्या लग्नादिकं वीक्ष्य शुद्धगृहं विधेयमिति ॥

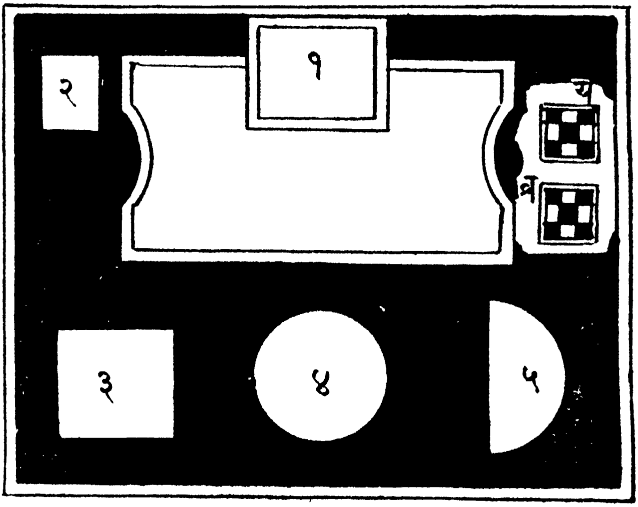
मण्डपचित्र.



अथतिलकनाममण्डलचित्रम्.



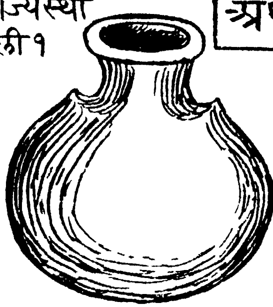
अथ पंचाग्निकुंडचित्रं.



आहवानीयकुण्ड १ आवसथ्यकुं २ सभ्यकुण्डम् ३ गार्हपत्यकुण्ड ४ दक्षिणाग्निकुण्डमिति ५ ब्रह्मासनं. यजमानासनम्

अथ पात्राणामाकृतयः

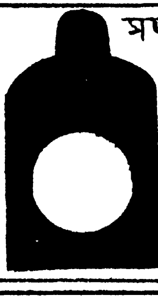
आज्यस्थाली १



चरुस्थाली २

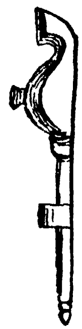
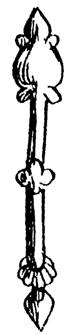
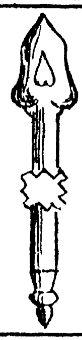
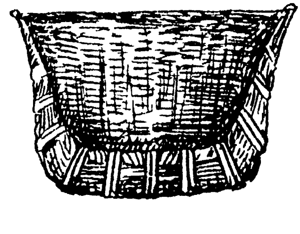


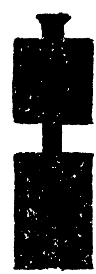
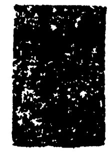
प्रणीतापात्र ३

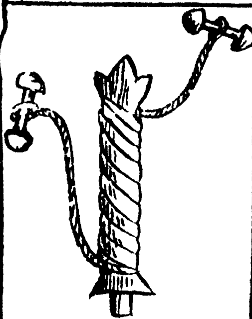
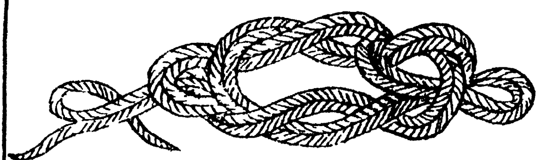


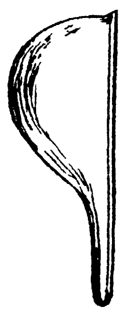
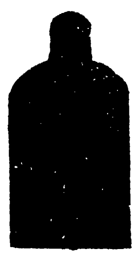
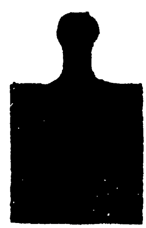
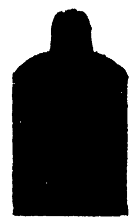
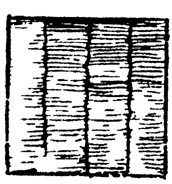
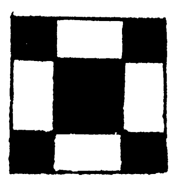
पुरोडाशपात्र ४



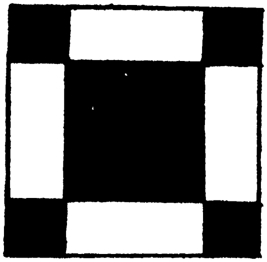
स्रुव ५	उपभृत्स्रुक् ६	ध्रुवास्रुक् ७
		
पुष्करस्रुक् ८	अग्निहोत्रहवणी ९	वैकङ्कतस्रुव १०
		
उलूखलं ११	मुसलं १२	शूर्पम् १३
		

१४ शम्या	१५ स्फ्यः	शृतावदानं १६	उपवेषः (१७)
			
कूर्च १८	१९ दृषत्	२० उपल	२१ षड्वर्त
			
२२ अभ्रि	२३ अरणि	२४ उत्तरारणि	२५ मोविली.
			

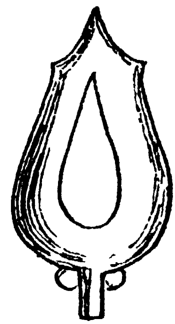
२६ प्रमन्थ.	२७ नेत्रम्
	

२८ अंतर्धानकटः	२९ हविर्धानपात्री	३० प्राशित्रहरणं	३१ चमसाः
			
३२ इडापात्री	३३ यजमानासनं	३४ पल्यासनं	३५ होत्रासनं
			

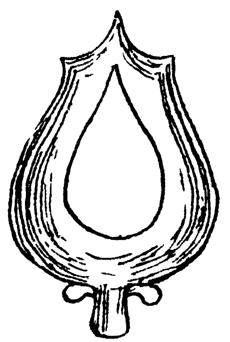
३६ ब्रह्मासनम्



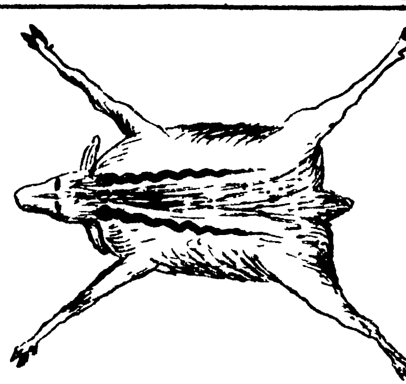
३७ यजमानस्यपात्री.



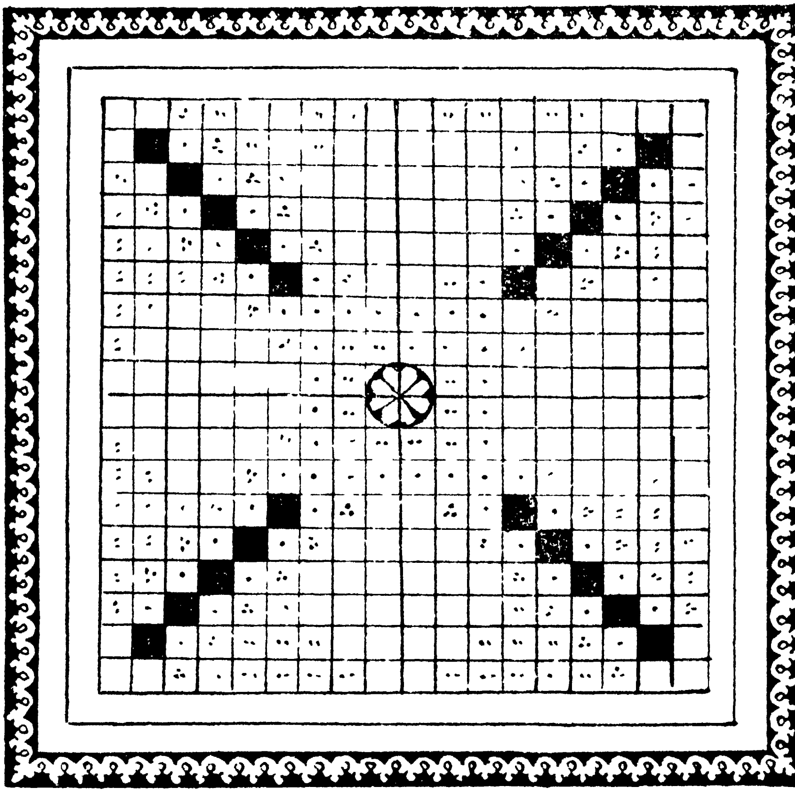
३८ पत्नीपात्री



३९ कृष्णाजिनम्.



सर्वतोभद्र.



यज्ञपात्राणि कात्यायनसूत्रे—ऋचोयजूꣳषिसामा
निनिगदामन्त्रास्तेषांवाक्यं निराकाङ्क्षं मिथः सं
बद्धं—वैकङ्कतानिपात्राणिखादिरः स्रुवःस्फ्यश्चपा
लाशीजुहूराश्वथ्युपभृद्वारणान्यहोमसंयुक्तानिबाहुमा
त्र्यःस्रुचःपाणिमात्रपुष्करास्त्वग्वालाहꣳसमुखप्रसेका
मूलदण्डाभवन्त्यरत्निमात्रःस्रुवोऽङ्गुष्ठपर्ववृत्तपुष्करः
स्फ्योऽस्याराकृतिरादर्शाकृतिःप्राशित्रहरणंचमसा
कृति वा चात्वालोत्करावस्तरेणसञ्चरःप्रणीतोत्क
राविष्टिपु ॥ ३ ॥ विस्तरस्तुतत्रैववासंस्कारभाष्ये
द्रष्टव्यः ॥ विस्तरभयान्नलिखितं ॥ विवाहप्रकरणे
येषांप्रयोजनंतेषांप्रमाणंपृ॰प॰अमुकोपरिलिखितंअ
न्यान्यादर्शमात्राणि॥ ॥इतिश्रीदैवज्ञदुनिचंद्रात्मज
विष्णुदत्तसंग्रहीतंगृहमण्डपपात्रचिन्हंनामप्रकरणं
सप्रमाणंसमाप्तम् शुभम् ॥श्रीः॥

(अथ विनियोगवर्णन)

व्याख्यालिख्यते ॥ विदित होकि आगामि सर्वमंत्रोंका साथ विनियोग दिखाया जावेगा इसलिये प्रथम विनियोग की पुष्टीकर्त्तेहै कि विनियोग उस्को कहतेहै कि ऋषि छंद देवता ओंका स्वर कर्ममे योजनकर्ना अर्थात् इस मंत्रका यह ऋषि और यह देवता अमुकछंद इन्का यथार्थ ज्ञानको विनियोग कहतेहै और वि-

नाविनियोगके मंत्रसिद्धि को प्राप्त नहिहोता इसकारणसे विनियोग की आवश्यकताहै ॥ ऋषि किनको कहतेहै × (द्रष्टारो ऋषयः) अर्थ मंत्रद्रष्टा ऋषि होतेहै जैसे इस मंत्रका गोतम ऋषि वा भरद्वाज वा आङ्गिर इत्यादि ऋषिहै उहा समझनाकि यह मंत्र इस ऋषि को अपने तपोबलसे प्रत्यक्ष स्मरणभया उस्को निश्चय गुरुसेकिया था फिर वही मंत्र वेदसे सदृशमिलनेसे वह ऋषि उस मंत्र का भया कि इसने प्रथम मालूमकिया ॥ १ ॥ और देवता उन्को कहतेहे (स्मर्तारः परमेष्ठ्यादयः) अर्थात् जैसे ब्रह्माने अमुक वेदका स्मरण किया विष्णुने अमुक स्मरणकरा इसप्रकार रुद्र इंद्र अग्नि सूर्य चंद्रादि जिस २ मंत्रोको स्मरण कर्तेभये वह उन २ के देवताभये ॥ २ ॥ अब छंद लिखतेहै (छन्दा गायत्री प्रभृतयः) अर्थात् गायत्रीसे आदिलेकर मंत्रोके छंद होतेहे ॥ अबछंदोको यथावत् लिखतेहे कि जो वेदमंत्रोकेहे ॥ उक्ता १ अत्युक्ता २ मध्या ३ प्रतिष्ठा ४ सुप्रतिष्ठा ५ गायत्री ६ उष्णिक् ७ अनुष्टुप् ८ बृहती ९ पंक्ति १० त्रिष्टुप् ११ जगती १२ अतिजगती १३ शक्वरी १४ अतिशक्वरी १५ अष्टि १६ अत्यष्टि १७ धृति १८ अतिधृति १९ प्रकृति २० आकृति २१ विकृति २२ संस्कृति २३ अभिकृति २४ उत्कृति २५ यह छंदसंख्याहै ॥

(अथगायत्र्यादिछन्दोभेदाः)

	छन्दः	गायत्र्यां	उष्णि.	अनुष्टुप्	बृहती	पंक्ति	त्रिष्टुप्	जगती
१	आर्षी	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४८
२	दैवी	१	२	३	४	५	६	७
३	आसुरी	१५	१४	१३	१२	११	१०	९
४	प्राजापत्या	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२
५	याजुषी	६	७	८	९	१०	११	१२
६	साम्नी	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४
७	आर्ची	१८	२१	२४	२७	३०	३३	३६
८	ब्राह्मी	३६	४२	४८	५४	६०	६६	७२

इसप्रकार सम्पूर्णछन्दोके अनेक भेदहै विस्तारके भयसे लिखते नहि एक गायत्री छन्द उदाहरण मात्र दिखलादियाहै जिनमहाशयोंको और भेददेखने की इच्छाहो वह सभाष्य पिंगलसूत्र छंद शास्त्रसे देखलेवे ॥ श्रीः श्रीः इति श्रीदैवज्ञ दुनिचंद्रात्मज पण्डित विष्णुदत्त कृत ऋषि छंद देवता वर्णनं नाम द्वितीयं प्रकरणं समाप्तं ॥

इति २ प्रकरणम्।

ओंस्वस्तिश्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगुरवेनमः ॥ अथ कात्यायनीशान्तिप्रयोगः ॥ आदौगणपतिंवन्देविघ्नं नाशंविनायकम् । ऋषींश्चदेवजननींग्रहस्थापन मारभे ॥ १ ॥

भा०टी०श्रीगुरुचरणसरोजं नत्वागणपत्यादिदेवांश्च।कात्यायन कृतशान्तेः कुर्वन्नृभाषयाटीका १ काव्यकलापे कुशलाः सन्तिय-द्यपिसर्वभूदेवाः ॥ सर्वजनसुखाप्तिहेतौ क्रियतेविष्णुदत्तेन ॥ २ ॥ श्री विघ्नविनाशक विनायक गणपतिजीको तथा ऋषियोको देव-जननी दुर्गाजी अथवा अदितिजीको वंदन कर प्रथम ग्रहोकी यथा-वत् स्थितिका प्रारंभ कर्ते है ॥ देव जननी इस शब्दसे लक्षण द्वारा ब्रह्मा विष्णु रुद्रादि देवता और ब्रह्मविद्याका ग्रहण होताहै॥

मण्डलंचततः कृत्वासर्वतोभद्रमेवच।व्रतोपनयनेचूडे यत्रशांतिरुदाहृता॥२॥विवाहादौलिखेन्नित्यंतिलकं नाममण्डलम्। द्वादशाङ्गुलमध्यस्थंवर्तुलाष्टदलंरविं। चन्द्रमर्द्धलिखेत्तत्र ह्याग्नेय्यांचतुर्विंशतिः ॥ ३ ॥

त्रिकूटंभूसुतंचैवदक्षिणेचतुरंगुलम् ॥ ४ ॥ धनुषाका रंनवाङ्गुल्यमीशानेचबुधंतथा॥उत्तरेचगुरुः स्थाप्यः पद्माकारोनवाङ्गुलः ॥ ५॥ पूर्वेसंस्थापयेच्छुक्रं चतु ष्कोणंनवांगुलं।खड्गाकृतिंनवाङ्गुल्यं प्रतीच्यांशनिमे वच ॥६॥ नैर्ऋत्यांराहुंसंस्थाप्यमत्स्याकारंनवांगुलं केतुंदीर्घंयथाराहुंवायव्यांदिशिसंस्थितम् ॥७॥ स्व

स्वादिक्षुग्रहाः स्थाप्याः संख्या रेखा भवेद्ध्रुवम् । भा
स्करांगारकौरक्तौश्वेतौशुक्रनिशाकरौ ॥ ८ ॥ सो
मपुत्रोगुरुश्चैवउभौतौपीतकौस्मृतौ । कृष्णवर्णोभ
वेच्छौरीराहुकेतूचधूम्रकौ ॥९॥ ब्रह्माविष्णुश्चरुद्रश्च
उत्तरेचतथानलः ॥ इंद्रोवायुर्भवेत्पूर्वेसर्प्पकालौचद
क्षिणे ॥ १० ॥ ऐशान्यांकलशःस्थाप्यओंकारादी
श्चसर्वशः । मातरश्चोत्तरेस्थाप्याआग्नेय्यांयोगिनीं
न्यसेत् । कनिष्ठिकाप्रमाणेनरेखाः कार्य्याः प्रयत्न
तः ॥ ११ ॥ स्थूलाः सूक्ष्मानकर्तव्यायदीच्छेच्छ्रे
यआत्मनः ॥१२॥ इतिग्रहस्थापनम् ॥

भा०टी० व्रतमें उपनयन चूडाकर्म तथा ग्रहा शांति हो वहा सर्वतोभद्र मण्डल रचना चाहिये, विवाहमे तिलक नाम मण्डल लिखे॥यह मंडल का चित्र पीछे लिखा है इस लिये अर्थ सुगम होने से लिखते नहि ॥ तथापि सूर्यमंगल यह रक्त वर्णसे लिखे बुध गुरु पीतवर्णसे शुक्र चंद्र श्वेत और कृष्णवर्णसे शनि राहु केतु धूम्रवर्ण लिखे ष यदि कल्याण की इच्छा हो तो ना अति सूक्ष्म और ना स्थूललिखे ॥ इति नवग्रहस्थापनविधानम् ॥

अथस्वास्तिवाचनम् ॥

हरिःओम् ॥ शुक्लयजुर्वेदअध्याय २५ कं०मंत्र १९

स्वस्तिनऽइन्द्रोवृद्धश्श्रवाःस्वु

स्तिनं॑ पूषा विश्ववे॑दाः । स्वस्ति नस्ताक्ष्र्यो॒ऽअरि॑ष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पति॑र्दधातु ॥ १ ॥

यजु० अध्याय ३८ ॥ मंत्र ३६

पयः॑ पृथि॒व्यां पय॒ऽओष॑धीषु पयो॑ दि॒व्यन्तरि॑क्षे पयो॑ धाः । पय॑स्वतीः प्र॒दिशः॑ सन्तु मह्य॑म् ॥ २ ॥

शु० यजु० अध्याय ५ मंत्र २१ ॥

विष्णो॑ रराट॑मसि॒ विष्णोः॒ श्नप्त्रे॑ स्थो॒ विष्णोः॒ स्यूर॑सि॒ विष्णो॑र्ध्रु॒वो॑ऽसि । वैष्णवम॑सि॒ विष्णवे॑ त्वा ३

यजु० अध्याय १४ मंत्र २० ॥

अ॒ग्निर्दे॒वता॒ वातो॑ दे॒वता॒ सूर्यो॑ दे॒वता॑ च॒न्द्रमा॑ दे॒वता॒ वस॑वो दे॒वता॑

रुद्रादेवताऽदित्यादेवतामरुतोदेवता
विश्वेदेवादेवताबृहस्पतिर्देवतेन्द्रो
देवतावरुणोदेवता ॥ ४ ॥

यजु० अध्याय ३६ मंत्र १७॥

द्यौःशान्तिरन्तरिक्षᳪंशान्तिःपृथिवी
शान्तिरापःशान्तिरोषधयःशान्तिः।
वनस्पतयःशान्तिर्विश्वेदेवाः शान्ति
र्ब्रह्मशान्तिः सर्वᳪंशान्तिः शान्ति
रेवशान्तिःसामाशान्तिरेधि ५

यजु० अध्याय ३० अनुवाक १ मंत्र ३

विश्वानिदेवसवितर्दुरितानिप
रासुव। यद्भद्रन्तन्नऽआसुव ॥ ६ ॥

यजु० अध्याय १६ अनुवाक ७ मंत्र ४८

इमारुद्रायतवसेकपर्दिनेक्षयद्वीरा

यप्रभंरामहेमतीः॥ यथा शमसं द्विपदेचतुंष्पदेव्विश्श्वंम्पुष्टङ्ग्रामें॰ अस्मिन्ननातुरम्॥ ७ ॥

यजुर्वेद० अध्याय २ मंत्र १२ ॥

एतन्तेदेवसवितर्यज्ञम्प्राहुर्बृहस्प तंयेब्रह्मणे । तेनंयज्ञमंवतेनंयज्ञ पंतिन्तेनमामंव ॥ ८ ॥

यजुर्वेद० अध्याय २ मंत्र १३

मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यंस्यबृह स्पतिर्यज्ञमिमंतनोत्त्वरिष्टंयज्ञ ६ समिमन्दंधातु । विश्वेदेवास ऽइहमादयन्तामोइंप्रतिष्ठ॥ एषवैप्र तिष्ठानाम[1] यज्ञोयत्रैतेनयज्ञेनयज न्तेसर्वमेव प्प्रतिष्ठितंभवति।ॐ३म्

---

१ यह मंत्र ब्राह्मणका है ॥

यजुर्वेद ० अध्याय २३ ॥ मन्त्र १९ ॥

गणानान्त्वा गणपति꣡ꣳ हवामहे प्प्रियाणान्त्वा प्प्रियपति꣡ꣳ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति꣡ꣳ हवामहे वसोमम । आहमजानि गर्भधमात्वमजासि गर्भधम् ॥

शुक्लयजु० अध्याय १६ मंत्र २५ ॥

नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्व्रातेभ्यो व्व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्विरूपेभ्यो व्विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः ॥

ओंसुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः । लंबोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः॥ धूम्रकेतु गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः । द्वादशैतानिनामानियः

हपठेच्छृणुयादपि ॥ विद्यारंभेविवाहेचप्रवेशेनिर्गमेत था । संग्रामेसंकटेचैवविघ्नस्तस्यनजायते ॥ श्रीगण पतयेनमः॥ इति स्वस्तिवाचनम् ॥

भा०टी०यह स्वस्तिवाचन का अर्थ आगे विवाह प्रकरण-के आदिमें लिखाहै इस लिये पिष्टपेषण नहि कर्ते ॥ [मनोजूति इस्का] [अर्थ.] अति वेग युक्त मेरा मन आज्यको सेवन करे इस यज्ञको बृहस्पति जो विस्तृत करे तथा अरिष्टको तथा इस यज्ञकी पुष्टि करे । और विश्वेदेवा १३ नाम देवगण इहा आनंदसे मग्न होवे वा मदयुक्त होवे ॥ [सुमुख श्चेति] यह १२ द्वादश गणेशजीके नाम विद्याके प्रारंभ तथा विवाह में प्रवेश निर्गम संग्राम संकट अर्थात् यहा भीतिहो वहा लेनेसे विघ्नादि सर्व उपद्रव शान्त होतेहै इस लिये आदिमें गणपति पूजन यथोक्त कर्ना चाहिये।

अथततःसंकल्पः॥

ओंतत्सदद्यब्रह्मणोद्वितीयपरार्द्धेश्रीश्वेतवाराहकल्पे जंबूद्वीपेभरतखंडे, आर्यावर्तेवर्तमानकलियुगप्रथम चरणेवैवस्वतमन्वंतरेअष्टाविंशतिमेयुगेऽमुकऋतौअ मुकमासेऽमुकपक्षेऽमुकतिथौअमुकवासरान्वितायां अमुककरणनक्षत्रयोगयुक्तायांश्रुतिस्मृतिपुराणोक्त फलावाप्तिकामःधर्मार्थकाममोक्षार्थेमनोभिलषितप्रा प्तये अमुकगोत्रोऽमुकशर्माऽहममुककर्मनिमित्तक

कात्यायनीशान्तिमहंकरिष्ये ॥ तन्निर्विघ्नपरिसमाप्त येगणपतिपूजनंचकरिष्येइति ॥

भा०टी०संकल्प में यथावत संवत्सरादि नामादि उच्चारण कर्ने चाहिये ॥ और शर्म के स्थान क्षत्रीवर्मा यह पद कहे और वैश्य गुप्त यह पद कहै ॥ प्रमाण. (शर्म ब्राह्मणस्य वर्म क्षत्रियस्य गुप्तेति वैश्यस्य) गृह्यसूत्र । १ । कांडमें ॥

अथगणपतिपूजनम् ॥ ॐगणानांत्वागणपति ँ हवामहेइतिमंत्रेण । ॐभूर्भुवःस्वःभगवन्गणपति देवतइहागच्छइहतिष्टसुप्रतिष्ठवरदोभवममपूजांगृहाण ॥ पाद्यादिभिरर्चयेत् । भगवन्गणपतिदेवएतत्पाद्यादिभिर्गंधाक्षतादिभिश्चपूजितःप्रसन्नोभव॥ पुनः । वक्रतुंडमहाकायकोटिसूर्यसमप्रभ । अविघ्नंकुरुमेदेवसर्वकार्येषुसर्वदा ॥इति॥ अथपंचोपकारपूजनम्॥आवाहयाम्यहंदेवमोंकारंपरमेश्वरं।त्रिमात्रंत्र्यक्षरं दिव्यंत्रिपदंचात्रिदैवकं।त्र्यक्षरंत्रिगुणाकारं सर्वाक्षरमयंशुभं । त्र्यणवंप्रणवंहंसंस्त्रष्टारंपरमेश्वरं । अनादिनिधनंदेवमप्रमेयंसनातनं ॥ परंपरतरंबीजंनिर्मलं निष्कलंशुभम् ॥

भा०टी०गणानांत्वा इस मंत्रसे गणपति का पूजन करे और प्रार्थना करे हे भगवन् गणपति देव इहा आओ और बैठो वर को देवो और पूजा को ग्रहण करो ॥ पाद्य अर्थ आचमनीय इत्या

दिसे आगे लिखे षोडश उपचारसें पूजन करे। इस प्रकार ओंका र के मंत्रोसे ओंकार पूजन कर्ना।

शुक्लयजुर्वेद अध्याय २२ अनुवाक ७ मंत्र२२

ॐआब्रह्मंन् ब्राह्मणो ब्रंह्मवर्च्चसीजांयतामाराष्ट्रेरांजन्यः शूरंइषव्योतिव्याधी मंहारथो जांयतान्दोग्ग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुःसप्तिःपुरंन्धिर्य्योषांजिष्णूरंथेष्ठाःसभेयोयुवांस्ययजंमानस्यवीरोजांयतान्निकामेनिकामेनःपर्ज्जन्योवर्षतुफलंवत्योनऽओषंधयःपच्यन्तांयोगक्षेमोनंःकल्पताम्॥

भा०टी०[मंत्रार्थ]हेब्रह्मन् हे ब्रह्माजी आपकी कृपासे यज्ञको कर्ना कराना पढना पढाना दान लेणा देणा इत्यादि षट्कर्म कर्नें वाले और ब्रह्मतेजवाले ब्राह्मण होमे॥ और हमारे राष्ट्रमे क्षत्री व्याधि

कातताासे रहित शूरवीर महारथ इस यजमान के हो. और इस यजमान की दुग्ध देने वाली गौऊ होमें और शीघ्र गमन वाले घोडे और सुंदर रूप वाले होमे० और पुरुष रथमें बैठने वाले युवान सभा योग्य इस यजमान के संबंधि पुत्रादि होमे और हमारी प्रार्थना से वृष्टिहो और फल युक्त ओषधीया पके हमारे को योग क्षेम होवे ॥

अथरक्षाविधानम् ॥ शुक्लयजु अध्याय ३ मंत्र ३० ॥

ॐमानुःशꣳसोअररुषोधूर्तिःप्र णङ्मर्त्यस्य । रक्षाणोब्रह्मणस्पते ॥

यजु० अध्याय ३४ मंत्र ५२॥

ॐयदाबध्नन्दाक्षायुणाहिरण्यꣳ शतानीकायसुमनस्यमानाः ॥ तन्मआबध्नामिशतशारदायाऽऽयुष्मा ञ्जरदष्टिर्यथासम् ॥ इतिपठन् ॥

भा०टी० [मानः शꣳसः] हे ब्रह्मण्य ते हमारे अनिष्ट चिन्तक परंतु मारणे मेअसमर्थ हमारे शत्रुकी धूर्ति नाम हिंसा आप

मत करे किंतु हमारी रक्षाकरे अर्थात् असमर्थ शत्रुका क्या मारना वह आगे मृत होताहै ॥ [यदाबध्नन्] दक्षकी संतान जो- सुवर्ण शतानीक अर्थात् बहुत सेनायुक्त राजाको बंधतेभये प्रसन्न चित्तहोकर शतजीवनके लिये तिस प्रकार जैसे हम वृद्धाव- स्थाको प्राप्तहोमे तद्वत् बांधते है ॥

अथमातृपूजनम् ॥

गौरी१पद्मा २ शची ३ मेधा ४सावित्री ५विजया६ जया ७॥देवसेना ८ स्वधा ९ स्वहा१० मातरो११ लोकमातरः१२॥हृष्टिः१३ पुष्टि १४स्तथातुष्टि१५ स्तथात्मकुलदेवता १६ ॥ श्री कुलदेव्यंत्तर्गत गौ र्य्यादिषोड शमातृभ्योनमः॥अथ ऋत्विजां वरणम्॥ यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा सर्व्ववेदधरः प्रभुः॥तथा त्वंमम यज्ञेऽस्मि न्ब्रह्माभवद्विजोत्तम ॥ गृहीत्वातु कराङ्गुष्ठं यजमानःपठेदिदम् ॥ अस्यकर्म्मणःप्रतिष्ठापनार्थं त्वंब्रह्मा भव (अहंभवामि ब्रह्मा ब्रूयात्)

भा०टी०गौरी से आदि षोडश १६ मात्रा भिन्न भिन्न अंक- देकर लिखीहै मूलमें॥ उन्की यथावत् षोडशोपचार पूजा कर्नेसे वह संतुष्ट होकर शुभको विधान कर्ती है ॥ ऋत्विक् होता आचार्य ब्रह्मादि वरणमें प्रथम ब्रह्माका वरण होताहै ॥ अर्थ जै- से चतुर्मुखसंपूर्ण वेदविद्याके जाननेवाले ब्रह्माजी है तद्वत् आप

मेरे यज्ञमें ब्रह्मा होमे यह कहे हस्तका अंगुष्ठ पकडकर यजमान इस कर्मकी प्रतिष्ठा के लिये आप ब्रह्माहो। होताहे यह ब्रह्माकहै॥

आचार्य्यस्तुयथास्वर्गेशक्रादीनांबृहस्पतिः । तथा त्वंममयज्ञेऽस्मिन्नाचार्यस्त्वंभवप्रभो॥ गृहीत्वातुकरांगुष्ठंयजमानःपठेदिदम् ॥ अस्यकर्म्मणःप्रतिष्ठापनार्थंत्वंआचार्योभव। अहंभवामि॥ ऋग्वेदःपद्मपत्राक्षोगायत्रयः सोमदेवतः । अत्रिगोत्रस्तुविप्रेन्द्रऋत्विक्त्वंमेमखेभव॥ गृहीत्वातुकरांगुष्ठंयजमानःपठेदिदम् ॥ अस्यकर्णःप्रतिष्ठापनार्थंऋग्वेदीभव । अहंभवामि ॥

भा०टी०जैसे स्वर्ग में इंद्रादिको का आचार्य्य (गुरु) बृहस्पति जी है तद्वत् आप मेरे यज्ञमें आचार्य्य होमें गृहीत्वातु इसका पूर्वोक्त अर्थ है यदि कोईक हे कि आचार्य्य को गुरु कैसे कहतेहे उत्तर जो उपनयन कर शोचता और वेद विद्या पढाने वह आचार्य्य अर्थात् गुरु को कहतेहै प्रमाण भी यास्कजीने निरुक्तमें लिखाहे(आचार्य्यःकस्मा दाचार्यआ दाचारंग्राहयित्वा चिनोत्यर्थान्) याज्ञवल्क्य जी भी लिखतेहे उपनीयदद्वेदमाचार्य्यःस उदाहृतः। इस प्रकार ऋग्वेदादिक चार वेदो का वरण जानना॥ स्वरूप ऋग्वेदका पद्मपत्रवत् नेत्र गायत्री छद सोम देवता अत्रिगोत्र इत्यादि ॥

कातराक्षोयजुर्वेदस्त्रिष्टुभोब्रह्मदैवतः । भारद्वाजस्तु

विप्रेंद्रऋत्विक्त्वंमेमखेभव॥गृहीत्वातुकरांगुष्ठंयजमा॑नःपठेदिदम्॥ अस्यकर्म×णःप्रतिष्ठापनार्थंत्वंमेंजुर्वेदीभव(अहंभवामि)सामवेदस्तुपिंगाक्षस्त्रिष्टुभोविष्णुदैवतः।काश्यपेयस्तुविप्रेंद्रऋत्विक्त्वंमेमखेभव॥गृहीत्वातुकरांगुष्ठंयजमानःपठेदिदम्॥ अस्यकर्मणःप्रतिष्ठापनार्थंत्वंसामवेदीभव(अहंभवामि)

भा०टी० केरता युक्त नेत्र त्रिष्टुप् छंद ब्रह्मदेवता भारद्वाज गोत्र इत्यादि यजुर्वेदका स्वरूपहै॥ और पिंगलवर्ण नेत्र त्रिष्टुप् छंद विष्णुदेवता कश्यपगोत्र इत्यादि सामवेदका स्वरूप छंदादिकहै॥

अथाशीर्वादः॥

ऋग्वेदस्तुयजुर्वेदः सामवेदोह्यथर्वणः।ब्रह्मवाक्यैश्चतेनित्यं हन्यंतांतवशत्रवः॥अपुत्राः पुत्रिणः सन्तुपुत्रिणः सन्तु पौत्रिणः।अधनाः सधनाः सन्तु संतुसर्वार्थसाधकाः॥ विप्रहस्ताच्चगृह्णीयाद्यज्ञपुष्पफलाक्षतान्। चत्वारस्तववर्द्धन्ता मायुःकीर्ति र्यशोबलं॥ अथ कलश पूजनम्। ॐ ऋग्वेदायनमः यजुर्वेदायनमःसामवेदायनमः अथर्ववेदायनमः कलशायनमः वरुणायनमः रुद्रायनमः समुद्रायनमः गंगायैनमः यमुनायैनमः सरस्वत्यैनमः कलशकुंभायनमः॥

भा०टी० ऋक् यजु साम अथर्वण यह ४ वेद ब्रह्मवाक्य पुराणादि सहित तुमारे शत्रुओंको नष्टकरे॥ और जिन्के पुत्र नहि

वह पुत्रयुक्तहै और पुत्रोवाले पौत्रोसे युक्तहो ॥ निर्धन धनवान् हो धनवान् संपूर्ण कामना सिद्धकर्नेवाले हो ॥ यज्ञमें ब्राह्मणके हाथसे पुष्प फल अक्षत ग्रहण करे ४ चार वस्तु आयु १ कीर्ति २ यश ३ बल ४ वृद्धिको प्राप्तहो ॥

ब्रह्मणानिर्मितस्त्वंहिमंत्रैरेवामृतोद्भवः ॥
प्रार्थयामिचत्वांकुम्भवांछितार्थंतुदेहिमे ॥

शुक्लयजु० अध्याय ४ मंत्र० ३६

वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्ज्जनीस्थो वरुणस्यऽऋतुसदन्यसि वरुणस्यऽऋतुसदनमसि वरुणस्यऽऋतुसदनमासीद ॥

भा०टी० (वरुणस्योत्तंभनमसि) अर्थ—हे शम्ये तुम वरुणके जलकी स्तंभन कर्नेवाली हे और वरुणकी तुम शिथिल शम्या २ हौंवे और वरुणके सत्य स्थानमेंहो और वरुणके सत्य स्थान होनेसे आप इहाँस्थित होमें ॥ यह वेद मंत्रार्थ है ॥ १ ब्रह्माजीने अमृतोद्भव मंत्रोसे आपको रचा और हम आपकी प्रार्थना कर्ते-हे की हमारेको वांछित अर्थ देवे ॥

अथ वास्तुपूजा ॥

अथातः संप्रवक्ष्यामि यदुक्तं वास्तुपूजनं॥ येनपूजा

विधानेन कर्मसिद्धिस्तु जायते॥अनंतं पुण्डरीकाक्षं फणाशतविभूषितं। विद्युद्वन्धूकसाकारं कूर्मारूढं प्रपूजयेत्॥

शुक्लयजु० अध्याय १३ मंत्र ६

ॐ नमोऽस्तु सर्प्पेभ्यो येकेच्चं पृथिवीमनुं। येऽअन्तरिक्षे येदिविते भ्यं॑सर्प्पेभ्योनमं॑॥वासुक्याद्यष्टकुलनागेभ्योनमः॥

भा०टी०इसके अनंतर वास्तुपूजा लिखतेहै जिस्के कर्नेसे कर्मोंको सिद्धि होतीहै॥ यह कर्मका अंगहै कमलसदृश नेत्रवाला और शतफणोंसे सुशोभित विद्युत्कांतियुक्त कूर्मदेवपर स्थित अनंत (शेष) की पूजनकरे॥ [नमोस्तुमंत्रार्थ] जो पृथ्वीमें रहतेहै और जो आकाशमें तथा स्वर्गमें सर्प रहतेहै तिन्हो संपूर्णोंके लिये यह प्रणाम वारंवार हो और वह रक्षाकरे यह फलितार्थ है॥

अथ योगिनीपूजा

ॐआवाहयाम्यहं देवींयोगिनीं परमेश्वरीं। योगाभ्यासेन संतुष्टापरध्यानसमन्विता॥ १॥ दिव्यकुण्डलसंकाशा दिव्यज्वाला त्रिलोचना। मूर्तिमती ह्यमूर्ताच उग्राचैवोग्ररूपिणी॥ २॥ अनेकभावसं

युक्ता संसारार्णवतारिणी । यज्ञं कुर्वन्तु निर्विघ्नं श्रेयो यच्छन्तु मातरः ॥ ३ ॥ दिव्ययोगीमहायोगी सिद्धयोगी गणेश्वरी । प्रेताशी डाकिनी काली कालरात्री निशाचरी । हुंकारी सिद्धवेताली खर्परी भूतगामिनी । ऊर्ध्वकेशी विरूपाक्षी शुष्कांगी मांसभोजनी । फूत्कारी वीरभद्राक्षी धूम्राक्षी कलहप्रिया । रक्ता च घोरा रक्ताक्षी विरूपाक्षी भयंकरी । चौरिका मारिका चंडो वाराही मुण्डधारिणी । भैरवी चक्रिणी क्रोधा दुर्मुखी प्रेतवासिनी । कालाक्षी मोहिनी चक्री कंकाली भुवनेश्वरी । कुण्डलाताल कौमारी यमदूती करालिनी । कौशिकी यक्षिणी यक्षी कौमारी यंत्रवाहिनी ॥ दुर्घटे विकटे घोरे कपाले विषलंघने । चतुःषष्टिःसमाख्याता योगिन्योहि वरप्रदाः । त्रैलोक्ये पूजिता नित्यं देवमानुषयोगिभिरिति ॥

भा०टी० परब्रह्ममें खचित योगाभ्यासकर संतुष्ट परमेश्वरी देवाश्रीयोगिनीका आवाहन कर्ते है ॥ १ ॥ दिव्य कुंडलोंसे युक्त तेज युक्त त्रिनेत्र मूर्तिवाली और मूर्तिसे रहित भयानक इत्यादि अनेक भावोंसे संयुक्त संसाररूपी समुद्रके पार उतारनेवाली योगिनी माता इस यज्ञको विघ्नरहित करे और हमारेको कल्याण देवे ॥ यह ६४ योगिनी संकटमें विपत्तीमें अर्थात् यहां भीतिहो वहां स्मरण की हुई वेरको देती संकट दूरकर्तीहै इस कारणसे देव मानुष योगि

जनोकर यह पूजनीयहै अर्थात् संपूर्ण जगत् इन्कीपूजा कर्ताहै ॥

अथ ब्रह्मपूजा

शुक्लयजु० अध्याय १३ मंत्र ३ ॥

ब्रह्मं यज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ता द्विशी
मुतः सुरुचो वेनआवः ॥ सवुध्न्या
ऽउपमाऽअस्यविष्ठाः सुतश्श्च यो
निमसंतश्श्चविवः ॥ इति पाद्यादि
भिर्ब्रह्माणमर्च्चयेत् ॥

अथ विष्णुपूजा

यजु० अध्याय ५ मंत्र २१

ॐविष्णोरराटमसिविष्णोःश्नप्त्रे
स्थोविष्णोः स्यूरसिविष्णोर्ध्रुवो
सि । वैष्णवमसि विष्णवेत्वा ॥

भा०टी०[मंत्रार्थ ब्र०] ब्रह्मसर्वव्यापि सूर्य प्रथम पूर्वदिशामें उदय होताहै फिर अपने प्रकाशसे चारोंतरफ मध्यवर्ती प्रकाश कर्ताहै वह प्रकाशमान लोक वेनमेधावी आदित्य दिशाकोसे जा नाजाताहै इस जगत्‌विद्यमान का अधिष्ठाताहै और अमूर्त अद-

श्यमान जगत् का कारणहै ॥ अर्थात् सूर्य भगवानही संपूर्ण लोकों-
को दिशाको प्रकाश कर्ताहै ॥ विष्णोरराटमसि. इस्काअर्थ आगे
लिखाहै शांतिपाठमें ॥ ॥ इति विष्णुंपाद्यादिभिरर्चयेत् ॥

अथ शिवपूजा

शुक्ल यजुर्वेद अध्याय १६ मंत्र ४१

ओँ नमः शम्भवायं चमयोभवा यंचनमः शङ्करायंच मयस्करायं च नमः शिवायंच शिवतंरायच॥

भा०टी० [नमःशंभवेति] नमस्कारहै शमके देनेवाले तथा
सुख कल्याणादिगुण देनेवाले शंकरजीको ॥

इति शिवंपाद्यादिभिरर्चयेत् ॥

॥ अथेंद्रपूजा ॥ यजु० अध्याय २० मंत्र ५० ॥

ओँ त्रातारमिन्द्रं मवितारमिन्द्रᳬहवेहवे सुहवᳬशूरमिन्द्रंम् । ह्वयामि शक्रम्पुरुहूतमिन्द्रᳬस्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः॥ ओँइंद्रायनमः इति पूजयेत् ॥

भा०टी०[त्रातारमिंद्र] रक्षाकर्नेवाला जिससे इंद्रजीको कहतेहैं बुलावनेमे शोभन शूरवीर वह इंद्र हमारे कर बुलायाभया ना नष्ट होनेवाला धन और स्वस्ति हमारेको देवे हम प्रार्थना कर्तेहे ॥

अथ वायुपूजा ॥ यजु० अ०२७ मंत्र ३२

वायो ये ते सहस्रिणो रथासस्तेभिरागहि। नियुत्वान्त्सोमपीतये॥

यजु० अ०९ मंत्र ७

ॐ वातो वा मनो वा गन्धर्वाः सप्तविंशतिः ॥ ते अग्रेऽश्वमयुञ्जँस्तेऽस्मिन् जवमादधुः ॐ वायवे नमः ॥

इतिपूजयेत्

भा०टी०[हेवायुदेव] योतुमारे सहस्रसंख्यकरथ सदृश रथहै उन्से युक्तहोकर आप सोम पानके लिये आयो हमप्रार्थना कर्तेहे॥

अथ धर्मपूजा यजु०अध्याय ३ मंत्रः १८

ॐ अग्ने सपत्नदम्भनं मदब्धासो अदाभ्यम्। चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय॥ धर्मायनमः ॥इतिपू०

[अग्नेसपत्न] हेभगवन् अग्निदेव तुम शत्रुओंको नाशकर्नेवाले. हमारेको नाहिंसनकर्ते हमारी वृद्धिकरे हेचित्रावसो हेरात्रि ! ना नाशहोनेवाली कल्याणदेवे. (रात्रिर्वै चित्रावसुरितिश्रुतिः) और तुमारे पारको सुखपूर्वक प्राप्त होयाकरे. ॥

अथ यमपूजा ॥ शु० यजु० अध्याय० २९ मं० १४

ॐ असिंयुमो अस्यांदित्यो अंर्वुन्नसित्रितोगुह्येन व्रुतेनं । असिसोमेन समयाविपृंक्त आहुस्तेत्रीणिं दिवि बंधनानि ॥ इति यमपूजा दक्षिणेकार्या ॥

अथ नवग्रहपूजा ॥

शु० यजु० अध्याय ३४ मं० ३१

ॐ आकृष्णेन रजंसावर्तमानोनिवेशयंन्नमृतम्मर्त्यंञ्च ॥ हिरण्ययें न सवितारथेनादेवोयांतिभुवंनानि

पश्यंन् ॥ ॐसूर्यायनमः इतिसूर्यं पूजयेत् ॥

भा०टी०आकृष्णेनेति ॥ सूर्य देव रात्रिरूप रजसे वर्तमान वारंवार भ्रमण कर्ता तथा अपने २ स्थानमें देवताओंको अमृत मनुष्यादिकोंको अन्न देता हुआ सुवर्णके रथसे १४ भुवनो को देखता भया और आरोग्य देता भया फिरताहै ॥ १ ॥ उदय होता है ॥

शुक्लयजु,०अध्याय १० मंत्र १८ ॥

इमंदेवाऽअसपत्न ᳪसुंवद्ध्वम्महतेक्षत्रायंमहतेज्यैष्ठ्यांयमहतेजानंराज्यायेन्द्रंस्येन्द्रियायं॥इमममुष्यंपुत्रममुष्यैंपुत्रमस्यैविशऽएषवोंमीराजासोमोस्माकम्ब्राह्मणाना ᳪराजा॥ॐसोमायनमःइतिपू०॥

भा०टी०इमंदेवा—देवो दानादिति—हे दानशील पुरुषो तुम इस चंद्रमाको शूरवीरताके लिये ज्येष्ठता राज्य ऐश्वर्यादिके लिये

अमुक पुत्र इसकी सेवा करो यह चंद्रमा हम ब्राह्मणोंका राजा है ॥ श्रौतार्थमे हे देवताओ यह संबंध कर्ना ॥

शुक्लयजु० अध्याय ३ मंत्र १२ ॥

अग्निर्म्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या ऽअयम् ॥ अपाᳬरेताᳬसि जिन्वति ॥ ॐ अंगारकाय० इतिपू०

अग्निर्मूर्द्धा—हे अग्निस्वरूप वा अग्नि तत्व मंगल देव स्वर्ग आकाश मे सूर्य रूप होकर मूर्द्धवर्तिहो और ककुत् बडे तेजस्वी और पृथिवी के पुत्र हो और तुमही जलवृष्टि रेतोत्पत्तिमें कारण हे ॥ (श्रौतार्थ मे अग्निस्तुतिमे विनियुक्त है ॥)

प्रमाण बृहज्जातके शिखिभूखपयोमरुद्गणानां वशिनो भूमिसुतादयः क्रमेण ॥

यजु० अध्याय १५ मंत्र ३॥

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते सᳬसृजेथामयञ्च ॥ अस्मिन्त्सधस्थे ऽअध्युत्तरस्मिन्विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत ४ ॐ बुधाय नमः इ० पू०

भा०टी०उद्बुध्यस्व. हे बुध देव अग्निवत् प्रकाशमान आप प्रसन्न हो आप की प्रसन्नता से यह यजमान इष्टमनोर्थको प्राप्त होवे और इस लोकमें ऐश्वर्यादि भोग उत्तर लोकमें देवताओं-के साथ निवास करे यह हम प्रार्थना कर्ते है (श्रोतमें अग्नि)

यजु० अध्याय २६ मंत्र ३

बृहस्पतेऽअतियदुर्य्यो ऽअर्हाद्युम द्विभातिक्रतुंमुज्जनेषु॥यद्दीदयच्छ वंसऽक्रतप्रजातुतदुस्मासुद्रविणन्धे हिचित्रम्॥ॐबृहस्पतयेनमः इ०॥

बृहस्पते—हे बृहस्पति देव अतिशय सें धन अर्थ स्वामिता अर्ह पूजा यज्ञ करनेवाले पुरुषमे धारण करे और बलसे यो रक्षा कर्नेवाले तथा सत्यसे है उत्पत्ति जिनकी वा सत्य प्रजावाले पुरुषोंको अनेक प्रकार चित्र विचित्र धन देंमे यह प्रार्थनाकर्ते है॥

यजु० अध्याय १९ मंत्र ७५॥

ॐ अन्नात्परिस्रुतोरसम्ब्रह्मणाव्य पिबत्क्षत्रम्पयः सोमम्प्रजापतिः ऋतेनसत्यमिन्द्रियव्विपानꣳ शुक्र

मन्धंसुइन्द्रिन्द्रंस्येन्द्रियमिदम्पयो
मृतम्मधुं।६।ॐशुक्रायनमःइति०॥

भा०टी०अन्नात्परिस्रुत÷हविलक्षणरूप अन्नका परिस्रुत रस त्रयी लक्षण ब्रह्मसें व्याप्त और क्षत्रसे व्याप्त सोम प्रजापति संबंधि पय इस सत्यसे युक्त इंद्रकी इंद्रिय अन्न यह शुक्रजीके संबंधसे युक्त हो यह प्रार्थना कर्तें है॥

यजु० अध्याय ३६ मंत्र १२

शन्नोदेवीरभिष्टयऽआपोभवन्तुपी
तये। शँय्योरभिस्रवन्तुनः ॥ ॐ
शनैश्चरायनमः ॥इतिपू०॥

शन्नोदेवी—सुखरूप हमारे कल्याण कारक देव स्वरूप रोग के विनाशके लिये भय के दूर कर्नेके वास्ते शनिदेवको स्तुति और प्रार्थना कर्ते है॥ श्रोतमे वरुण संबंधि स्तुत्यमंत्र है॥

यजु० अध्याय २७ मं ३९॥

कयानश्चित्र ऽआभुवदूतीसदावृ
धः सखा। कयाशचिष्ठयावृता॥
ॐराहवेनमः॥ इतिपू०॥

कंयानाश्चित्र—हे राहु देव किस आगमनसे तुम हमारेको आनंद कर्ते है और किससे हमारेको धन देते है वह हम उपाय करे (पूजा इति शेषः) (श्रौतमें इंद्र)

यजु० अध्याय १५ मंत्र ३ ॥

केतुङ्कृण्वन्नंकेतवेपेशोमर्य्याऽअपेशसे । समुषद्भिरजायथाः ॥ ॐकेतवेनमः ॥ इतिपू०

ॐब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरांतकारी भानुः शशीभूमिसुतो बुधश्च ॥ गुरुश्चशुक्रः शनिराहुकेतवःसर्वेग्रहाःशांति कराभवन्तु ॥ इतिनवग्रहपूजा ॥ त्र्यंबकं यजामहे इति त्र्यंबकपूजनम् ॥ अथकुशकाण्डिका प्रारम्भः॥ ततोहोमार्थं चतुरंगुलोच्छ्रितहस्तमात्रपरिमितां वेदीं कुर्यात् कुशैः परिसमूह्य तान् कुशान् ऐशान्यांपरित्यज्य गोमयोदकेनोपलिप्य खादिरेण स्रुवेण चोल्लेखनंहस्तेनोद्धरणं जलेनाभ्युक्षणं कांस्यपात्रयुगलेन लौकिकंनिर्मथितं वाग्निमानीय स्थापयेत्।ततः पुष्पचंदनतांबूलवासांस्यादाय ॐअद्यकर्तव्यामुक शान्तिहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्म-

१यह मेने उवटभाष्यसे संक्षिप्त अर्थ लिखाहै विशेष अर्थ ब्राह्मण सर्वस्वसे आगे लिखा देखलेगे ॥

कर्तुममुकगोत्रममुकशर्माणमेभिः पुष्पचंदनतां
बूलवासोभिर्ब्रह्मत्वेनत्वामहंवृणे इति ब्रह्माणंवृ
णुयात् ॥ ॐवृतोस्मीति प्रतिवचनम् । यथाविहि
तंकर्मकुर्वित्याचार्येणोक्ते करवाणीतिप्रतिवचनम् ।
ततोग्नेर्दक्षिणतः शुद्धमासनंदत्वा तदुपरि प्रागग्रा
न्कुशानादायास्तीर्य्य अग्निं प्रदक्षिणं कारयित्वा
ऽस्मिन्कर्मणि त्वंमेब्रह्माभवेत्यभिधाय भवानीति
तेनोक्तेतदुपरि ब्रह्माणमुदङ्मुखमुपवेश्य प्रणीता
पात्रं पुरतःकृत्वा वारिणा परिपूर्य्य कुशैराच्छा
द्य ब्रह्मणो मुखमवलोक्याग्नेरुत्तरतः कुशोपरिनिद
ध्यात् ततः परिस्तरणम् बर्हिषश्चतुर्थभागमादाया
ग्नेरीशानांतंब्रह्मणोऽग्निपर्य न्तंनैर्ऋत्याद्वायव्यान्तंअ
ग्नितःप्रणीतापर्यन्तंततोग्नेरुत्तरतःपश्चिमदिशिपवित्र
च्छेदनार्थंकुशत्रयंपवित्रकरणार्थंसाग्रमनन्तर्गर्भंकुश
पत्रद्वयंप्रोक्षणीपात्रंआज्यस्थालीसंमार्जनार्थंकुशत्रयं
उपयमनार्थंवेणीरूपकुशत्रयं समिधास्तिस्रः स्रु
वः आज्यं षट्पंचाशदुत्तराचार्य्यमुष्टिशतद्वयाव
च्छिन्नामतण्डुलपूर्णपात्रं ततःपवित्रछेदनकुशैः
पवित्रेछित्वासपवित्रकरेणप्रणीतोदकंत्रिः प्रोक्षणीपा
त्रेनिधायअनामिकांगुष्ठाभ्यांपवित्रेउत्तराग्रेगृहीत्वात्रि
रुत्पवनंप्रोक्षणीपात्रंवामकरेणादाय । अनामिकां
गुष्ठाभ्यांगृहीतपवित्राभ्यांतज्जलंकिंचित्त्रिरुत्क्षिप्य प्र

णीतोदकेनप्रोक्षणीमभिषिच्य प्रोक्षणीजलेनासादि
तवस्तुसेचनंकृत्वाग्निप्रणीतयोर्मध्येप्रोक्षणीपात्रंनिद
ध्यात् आज्यस्थाल्यामाज्यंनिरूप्याधिश्रयणं त
तःकुशंप्रज्वाल्याज्योपरिप्रदक्षिणंभ्रामयित्वावह्नौत
त्प्रक्षिप्यस्रुवंत्रिःप्रतप्यसम्मार्जनकुशानामग्रैरंतरतो
मूलैर्बाह्यतःस्रुवंसंमृज्यप्रणीतोदकेनाभ्युक्ष्यपुनस्त्रिः
प्रतप्यदक्षिणतोनिदध्यात् आज्यस्याग्नेरवतारणंतत
आज्यंप्रोक्षणीवदुत्पूयावेक्ष्य सत्यपद्रव्येतन्निरसनं
कृत्वापुनःप्रोक्षणीमुत्पूयततउत्थायोपयमनकुशान्वा
महस्तेकृत्वाप्रजापतिंमनसाध्यात्वातूष्णीमग्नौघृता
क्ताःसमिधस्तिस्रःक्षिपेत् ॥ उपविश्यसपवित्रप्रो
क्षण्युदकेनप्रदक्षिणक्रमेणाग्निंपर्युक्ष्यप्रणीतापात्रेपवि
त्रेनिधायपातितदक्षिणजानुःकुशेन ब्रह्मणान्वारब्धः
समिद्धतमेऽग्नौस्रुवेणाज्याहुतीर्जुहोति । तत्तदाहुत्य
नंतरंस्रुवावस्थितघृतशेषस्यप्रोक्षणीपात्रेप्रक्षेपः ।
अथस्रुवपूजनम् ॥ ॐआवाहयाम्यहंदेवंस्रुवंशेवाधि
मुत्तमम्। स्वाहाकारस्वधाकारवषट्कारसमन्वितं ।
अष्टांगुलंत्यजेन्मूलमग्रेत्यक्त्वादशांगुलंकर्तव्यंगोप
दाकारंदंडस्याग्रेतुकंकणं । विष्णोःस्थानंप्रगृह्णी
याद्धूयतेचहुताशनम् ॥ पद्मयोनिंसमादायहोता
सुखमवाप्नुयात् । इतिस्रुवपूजनम् ॥
भा०टी०कुशकंडिका आगे विवाहमे स्पष्टार्थ लिखीहै इसलिये

महाशयो को उचितहै कि विवाहप्रकरणमे देखे ॥ और स्रुवको हस्तमे कंकण बंधकर पूजन कर्ना ॥

अथघृताहुतिः ॥ ॐप्रजापतयेस्वाहाइदंप्रजापतयेइतिमनसा ॐइन्द्रायस्वाहाइदमिंद्राय० ॥इत्याघारौ ॥ ॐअग्नयेस्वाहा इदमग्नये० ॐसोमायस्वाहा इदंसोमाय० इत्याज्यभागौ ॥ ॐभूःस्वाहा इदंभूःॐभुवःस्वाहा । इदंभुवः । ॐस्वःस्वाहा इदंस्वः ॥ एतामहाव्याहृतयः ॥

यजु० अध्याय २१ मंत्र ३

ॐत्वन्नोअग्नेवरुणस्य विद्वान्देवस्यहेडोऽअवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठोवन्हितमःशोशुचानोविश्वाद्वेषांᳬसिप्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा ॥ इदमग्नीवरुणाभ्यां० ॥ ६ ॥

यजु० अध्याय २१ मंत्र ४

ॐसत्वन्नोऽअग्नेवमोभवोतीनेदिष्ठोऽअस्याऽउषसोव्युष्टौ । अवय

क्ष्व नो॒व्वरु॑ण ॒ उरा॑णो॒व्वी॑हि मृ॒ड़ीक
ꣳसु॒हवो॑नए॒धिस्वाहा इदमग्नये० ॥

पा०गृह्यसूत्रे

ॐअयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपाश्च
सत्वमित्वमयाअसि ॥ अयानोय
ज्ञंवहास्ययानोधेहिभेषुजꣳस्वा
हा। इदमग्नये० ॥

पा०गृह्यसूत्रे

ॐयेतेशतंवरुणयेसहस्त्रंयज्ञियाः
पाशावितताम्हान्तः। तेभिर्न्नोअ
द्यसवितोतविष्णुर्विश्वेमुंचंतुमरु
तःस्वर्काःस्वाहा । इदंवरुणायस

वित्रेविष्णवेविश्वेभ्योदेवेभ्योमरु
द्भ्यःस्वर्कैभ्यः० ॥

यजु० अध्याय २१ मंत्र १२

ॐ उदुंत्तमं वंरुणपाशंमुस्मदवा
धुमंविमंध्युमꣳश्रंथाय । स्वथांवु
यमांदित्यव्रुतेतवानांगसोऽअदिं
तये स्यामस्वाहा ।

इदंवरुणाय० । एताःसर्वप्रायश्चित्तसंज्ञकाः ॥ ॐगण
पतयेस्वाहा । इदंगणपतये० । ॐविष्णवेस्वाहा । इदं
विष्णवे० । ॐशम्भवेस्वाहा इदंशम्भवे० । ॐलक्ष्म्यै
स्वाहा इदंलक्ष्म्यै० ॥ ॐसरस्वत्यैस्वाहा इदंसरस्व
त्यै० । ॐभूम्यैस्वाहा इदंभूम्यै० ॥ ॐसूर्यायस्वा०
इदंसूर्याय० ॐचंद्रमसेस्वाहा इदंचंद्रमसे० ॥ ॐ
भौमायस्वाहा इदंभौ० ॥ ॐबुधायस्वहा इदंबु
धाय० ॥ ॐबृहस्पतयेस्वाहा इदंबृहस्पतये० ॥
ॐशुक्रायस्वाहा इदंशुक्राय० ॥ ॐशनैश्चराय-
स्वाहा इदंशनैश्चराय० ॥ ॐराहवेस्वाहा इदंराहवे०
॥ ॐकेतवेस्वाहा इदंकेतवे० ॥ ॐव्युष्ट्यैस्वाहा०

इदंव्युष्टयै० ॥ ॐउग्राय स्वाहा इदमुग्राय० ॥ ॐ शतक्रतवेस्वाहा इदंशतक्रतवे० ॥ ॐप्रजापतयेस्वाहा इदंप्रजापतये० ॥ इतिमनसा प्राजापत्यं। ॐ अग्नयेस्विष्टकृतेस्वाहा इदमग्नयेस्विष्टकृते० । इतिस्विष्टकृद्धोमः । ततःसंस्रवप्राशनं आचमनं ततोब्रह्मणे दक्षिणादानम् ॥

भा०टी०त्वन्नोअग्ने १ सत्वन्नो अग्ने २ येतेशतं ३ अयाश्चाग्ने ४ उदुत्तमं ५ यहपांच मंत्रोका विवाह की कुशकंडिकाके अन्तमे अर्थ लिखाहै इसलिये पुनःपिष्टपेषण नहिकर्ते ॥ और आगेके नामोक्त-मंत्र २१ है इन्मो सूर्यादि नवहै ॥ और प्रजापतये स्वाहा यह मंत्र मनमे उच्चारण कर्ना और सर्व स्पष्ट मुखसे उच्चारण कर्ने ॥

ॐअद्यएतस्मिन्शांतिहोमकर्मणिकृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्मप्रतिष्ठार्थमिदंपूर्णपात्रंप्रजापतिदैवतं अमुकगोत्रायामुकशर्मणेब्रह्मणेदक्षिणांदातुमहमुत्सृजे ॥ ॐस्वस्तीतिप्रतिवचनम् । ततोब्रह्मग्रंथिविमोकः ॥

यजु० अध्याय मंत्र

ततः ॐसुमित्रियानऽआपऽओषधयःसंतु इतिपवित्राभ्यांजलमानीयतेनशिरःसंमृज्य ॐदुर्म्मित्रियास्तस्मैसन्तुयोऽस्मान्द्वेष्टियञ्चवयंद्विष्मः ॥ इत्यैशान्यां प्रणीतान्युब्जीकरणम् ।

भा०टी०आज इस शांतिके होमरूप कर्ममे कर्ना वाना कार्ना इसकी परीक्षारूप ब्रह्माके कर्मकी प्रतिष्ठालिये यह पूर्ण पात्र प्रजा-

पतिसंबंधि अमुक गोत्रब्राह्मणको दक्षिणा देनेलिये देताहुं ॥ स्वस्तिब्राह्मणकहे ॥ ५० ॥ कुशनिर्मित ब्रह्माकी ग्रंथी खोलदेणी. विवाह प्रकरण मे ब्रह्मादि कोका लक्षण लिखाहै (पंचाशतोभवेद्ब्रह्मा) इत्यादि । ओर सुमित्रिया १ दुर्मित्रिया २ इनदोनो मंत्रोका अर्थ भी स्पष्ट विवाह प्रकरणमे लिखा है ॥

ततःस्तरणक्रमेणबर्हिरुत्थाप्यघृतेनाभिघार्यहस्तेनैवजुहुयात् ।

यजु० अ० ८ मं० २१

ॐ देवांगातुविदोगातुम्वित्वागातु मितुमनंसस्पतऽइमंदेवयज्ञᳪं स्वाहाव्वातेधाःस्वाहा ॥

इतिबर्हिर्होमः । तत आचारात्दशदिक्पालेभ्योदधिमाषबलिर्देयः क्षेत्रपालबलिदानंच ॥ ततःस्थालीपाकादिपक्वान्नेनगणपतिप्रमुखसूर्यादिग्रहेभ्यस्तत्तन्मंत्रैर्बलिर्देयः । ततोब्राह्मणभोजनम् ।

भा०टी०स्मरणक्रमसे कुशाग्रहणकर घृतलगाय हाथसे हवन करे ! देवागातु इसमंत्रसे इस्का अर्थ विवाह प्रकरणमे लिखाहै ॥ फिर आचारसे दशदिक्पालोको दधियुक्त माषोकी बलीदेनी दश दिक्पालयहहै । इंद्र १ वन्हि २ धर्मराज ३ नैर्ऋत ४ वरुण ५ मरुत ६ कुबेर ७ ईश ८ और पृथिवी आकाशका स्वामी २ ।

यह १० अनंतर स्थालीपाकसे पकाहुआ पक्वान्नसे श्रीगणेशजीसे आदि सूर्यादि नवग्रह ओंकार सर्व योगिनी अर्थात् जो २ पीछे स्थापन करेहै उनेके मंत्रोसे सबको बलिदान करणी ॥

ॐअद्यकरिष्यमाणब्राह्मणभोजनसांगतासिद्ध्यर्थमिदंदक्षिणाद्रव्यंतेभ्योविभज्यदातुमहमुत्सृजे ततोगुरवे दक्षिणादेया ॥ ततः छायापात्रदानं । तदनंतरंपूर्णाहुतिःतद्यथा स्रुवेणपूगीफलादिकंगृहीत्वा ॥

यजु० अध्याय ७ मंत्र २४

ॐमूर्द्धानंदिवोऽअरतिम्पृथिव्या वैश्वानरऽमृतऽआजातमग्निम् । कविᳯसम्म्राजमतिथिञ्जनानामासन्नापात्रंञ्जनयन्तदेवाः स्वाहा ॥ ततः स्त्रुवेण भस्मानीयदक्षिणानामिकागृहीतभस्मनाॐ त्र्यायुषंजमदग्नेः । इति ललाटे । ॐकश्यपस्यत्र्यायुषम् । इति

ग्रीवायां। ॐ यद्देवेषुत्र्यायुषम् । इति दक्षिणबाहुमूले । ॐ तन्नो अस्तुत्र्यायुषम् । इतिहृदि ॥

भा०टी०प्रथम संकल्प ब्राह्मणो की दक्षिणा का है । पीछे छाया पात्र दान कर्ना अनंतर फल पुष्प स्रुव मे स्थित घृतसे मूर्द्धानं इस मंत्रसे पूर्णाहुति कर्नी । यह मंत्रका अर्थ विवाह प्रकरण में लिखाहै

यजमानपक्षेतन्नोइत्यस्यस्थानेतत्तेइतिविशेषः । ततोऽभिषेकः ॥ तच्चाम्रपल्लवकुशादिकेनकलशस्थजलमानीयआपोहिष्ठेत्यादिमंत्रेणयजमानमाभिषिंचेत् ॥ आचार्यादीनांदक्षिणादेयाततोभूयसींदद्यात् । ॐ आज्येनवर्द्धतेबुद्धिराज्येनवर्द्धतेयशः । आज्येनवर्द्धते आयुर्दर्शनंपापनाशनं । अथविशेषपूजा । ग्रहागावोनरेंद्राश्चब्राह्मणाश्चविशेषतः । पूजिताः प्रतिपूज्यंतेसावधानाभवन्तुते । अथ अग्निविसर्जनम् । गच्छगच्छसुरश्रेष्ठस्वस्थानंपरमेश्वर ॥ यत्रब्रह्मादयोदेवास्तत्रगच्छहुताशन ॥

भा०टी०घृतसे बुद्धि बल यश आयु वृद्धिको प्राप्त होती और पाप नष्ट होते हैं ॥ आयु वृद्धिमे प्रमाण भावप्रकाश चिकित्सा शास्त्रमे जैसे (स्वमाननं घृते पश्येद्यदीच्छेच्चिरजीवितुं) ग्रह गौआ ब्राह्मण राजा यह पूजन कीये हुये विशेष

फल देते है ॥ गच्छ २ इस मंत्रसे अग्निका विसर्जन कर्ना ॥

आगतास्तुयथान्यायंपूजितास्तुयथाविधि । कृत्वा कृपांमयिदेवायत्रासंस्तत्रगच्छत ॥ यजमानहिता र्थायपुनरागमनायच । शत्रूणांबुद्धिनाशाय मित्रा णामुदयायच ॥ यथाशस्त्रप्रहाराणांकवचंवारणंभ वेत् । तद्वद्देवाभिघातानांशांतिर्भवति वारणं ॥ अ थग्रहादीनांविसर्जनम् ॥ यान्तुदेवगणाः सर्वेपूजामा दायमामकीं । यजमानहितार्थायपुनरागमनायच ॥

ॐऋ० प्र० अष्टक० अ० १ मं१

ॐअग्निमीळेपुरोहितंयज्ञस्यदेव मृत्विजं । होतारंरत्नधातमम् ॥

भा०टी०भलीभांति आये हुये और पूजन किये हुये मुझपर कृपा कर अपने २ स्थानको देवगण सिधारे यजमान की कुशल ताकेलिये तथा फिर आवे लिये ॥ जैसे खड्गादि शस्त्रोंके प्रहारसे रक्षा कर्नेवालाकवच (संजोया) होता है तद्वत् संपूर्ण विघ्नोंके दूर कर्ने लिये शांति है ॥ अग्नि मीळे यह मंत्र ऋग्वेदके आदका है ॥

ॐविष्णुस्तत्सदद्यामुकगोत्रोहममुकशर्माहंइदंसमि ष्टंघृतपक्वंविष्णुदैवतंभगवद्विष्णुप्रीतयेयथानामगो त्रायब्राह्मणायाहंददे । ॐअद्यकृतैतत्समिष्टघृतप क्वदानप्रतिष्ठासांगतासिद्ध्यर्थंविष्णुप्रीतयेयथानाम

गोत्रब्राह्मणायदक्षिणांदातुमहमुत्सृजे। ॐअद्यतत्सद्वि
वाहांगत्वेनेदमिष्टघृतपक्कंविष्णुदैवतंकुलदेवताप्रीत
येसौभाग्यताप्राप्तयेयथानामगोत्रायब्राह्मणायाहंददे ।
इतिकन्यापक्षे ॥ ततः सुपूजितंकंकणबंधनं तत
स्तिलकंकुर्यात् । तदनंतरंसूर्यायार्घ्यदानं ॥ इति
श्रीकात्यायनीशान्तिःसमाप्ता ॥ शुभंभूयात् ॥

भा० टी० अमुकगोत्रब्राह्मणको विष्णुप्रीतिलिये घृतपक्व अन्न देता है ॥ और इसकी प्रतिष्ठाके लिये दक्षिणा देताहुं कन्या पक्षमे सौभाग्यतालिये यह पद कहना। फिर पूजन कर कंकण बंधना तिलक कर्ना ॥

इति श्रीकर्पूरस्थलनिवासिगौतमगोत्र (शौरि)
अन्वयालंकृतश्रीअपारमहिमा.पं. घनैयारामतत्पुत्रवै
कुण्ठपीठाधिष्ठितश्रीतुलसीरामतत्पुत्रश्रीसकलजन
वंद्यदैवज्ञदुनिचन्द्रतदात्मजशौर्य्यौदार्य्यधैर्य्याद्यालं
कृतअधीतवेदवेदांगधर्मशास्त्रादिश्रीपंडितविष्णुद
त्तवैदिककृतकात्यायनीशांतिटीका अद्रिवेदां
कभूमिते १९४७ वैक्रमेमाधवेमासिकृष्णदशम्यां
चंद्रवासरेसमाप्तिमगात् ॥ साचशुभावहीस्यात्
श्रीरामचंद्रप्रसादात् ॥

अथशांतिसामग्री

मौली रोला पंचरंग आटा चावल गुड केशर पुष्पधूप दीप नैवद्य

तांबूल सुपारी ७ पतासे महिया घुंगनिया दालां ७ घृत तैल कुशा स्रुव पलाश समिधा पटढी यव तिल गोमय बटना कंकण रेत पत्र ग्रहजप । इति ॥

चतुर्थप्रकरणं

ओंस्वस्तिश्रीगणेशायनमः ॥ ओंवेदपुरुषायनमः ॥ श्रीः अथविवाहसामग्रीलिख्यते ॥ आटा गुड चावल मोली रोला केशर पुष्प नैवेद्य मेवा धूप दीपअटे ७ सुपारिया ११ दूवा चंदन पुष्पमाला २ आम्रकेपत्र १०० पटडीया २ वद १ चंदोया १ खारे २ वाचौंकिया २ घृत प्रणीतापात्र प्रोक्षणीपात्र कांस्यपात्र २ मधुपर्क गौकादुग्ध दधी घृत शहत नालकेर १ धोती उपर्णा बालकनू । अर्घचौल अट्टे २ सिंधूर शूर्प १ लाजा अर्धशेर जंर्डाकेपत्र शण शंख सुवर्ण वीडेपानके २ पूर्णपात्र १ चावल अभिषेककेलिये गागरवाकुंभ वाकोरी १ समिधा पलाश वा बेरीकी १० सेर बटना शिलावट्टा शर्करा वहारी १ साल्गिरा ५ पर्णा १ कुशा समवस्त्र गज ४ स्रुवा १ आसन २ अर्घा हलपजाली मठिया ८ इति अथ चतुर्थदिनमे चतुर्थीकर्मकी सामग्रीलि० आटा गुड मोली चावल कसर धूप दीप नैवेद्य सुपारिया ५ दूर्वा आम्रपत्र १० पटडीया २ चंदोया १ घृत प्रणीता प्रोक्षणी अर्धचावल पृथूदकपात्र कुनाली १ हलपजाली गौदुग्ध अर्धसेर चावलपूर्णपात्र १ वस्त्रगज १० सिंदू

डांगा ४ शण सुवर्ण रेत स्रुवा कुशा समिधा चरुस्थाली इतिचतुर्थीकर्मसामग्री ॥

१ अथकन्योद्वाहेयजमानकर्तृकप्रतिज्ञासंकल्पः ॐवि-ष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्यब्रह्मणोद्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवा-राहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतिमेयुगे कलि-युगेप्रथमचरणे अमुकसंवत्सरेऽमुकगोलेऽमुकायनेऽ-मुकपदेऽमुकमासेऽमुकतिथौनक्षत्रकरणयोगयुक्तेऽमु-कवासरे अमुकगोत्रोत्पन्नोहं जन्मनामतःप्रसिद्धनाम-तश्चामुकशर्माहं कृतकायिकमानसिकसांसर्गिक ज्ञा-ताज्ञातसमस्तदोषपरिहारार्थं श्रुतिस्मृतिपुराणोक्त फलावाप्तिकामःश्रीयज्ञपुरुपनारायणप्रीत्यर्थंतत्प्रसा-दात्कायवाङ्मनोभिर्महापातकादिदोपनिवृत्तिपूर्वकैहि-कामुष्मिकेश्वरप्रसादानुरूपविभवयोगक्षेमप्राप्तयेच अश्वमेधपुण्यजनकताकपुत्रीविवाहात्मकदानमहं क-रिष्ये तन्निर्विघ्नतासिद्धये यथोपलब्धोपचारद्रव्यैः गणपत्यादिनवग्रहपूजनमहंकरिष्ये ॥ इति ॥ पश्चा-त्गणेशादिपूजनंकुर्यात् ॥

२ अथ– यजमानकर्तृकशुभ्रचौलाधोतीपर्णानांदा-न संकल्पः ॥ अद्येत्यादि॰पुत्रीविवाहकर्म्मणि क-न्यादानप्रतिपत्त्यर्थमादाविमानि चतुष्टयवस्त्राणि प-ट्टकापीसादिसंपादितानि मांजिष्ठारिष्टादिनानारं-

जितानि बृहस्पतिदैवतानि कन्यावरयोर्वैवाहिकसमये परिधानयोग्यानि सदक्षिणानि अमुकगोत्रप्रवरायाऽमुकनामशर्मणे विष्णुरूपिणेवरायतुभ्यमहं संप्रददे ॥ इतिशुभ्रचौलादिदानम् ॥

३ अथ—कन्यापितृकर्तृकवेदीदानसंकल्पः ॥ ३ ॥
ॐतत्सदद्येति० नानारागानुरूपयज्ञाधिष्ठातृपरमेश्वरादिविशेषणवतोभगवतः प्रीत्यर्थं तत्प्रसादात् याज्ञिकभूमिदानजन्यनानास्वर्गादिफलप्राप्तये इमानि रजतमुद्रिकानि चंद्रदैवतानिसदक्षिणानिकन्यावैवाहिकचतुष्टयवंशानिर्मितस्तंभवेदिकान्तरभूमिप्रतिनिध्यात्मकानियथानामगोत्राय० इतिवेदी दान संकल्पः ॥

४ अथ— यजमानकर्तृकचतुर्थीदानसंकल्पःॐअद्येत्यादि० कृतेतत्पुत्रीविवाहचतुर्थीकर्मप्रतिष्ठार्थे सांगतासिद्ध्यर्थंचेमांरजतमुद्रिकांसदक्षिणांचंद्रदेवतां अमुकगोत्राय अमुकशर्मणे ब्राह्मणायतुभ्यमहंसंप्रददे० स्वस्तीति प्रतिवचनं सर्वत्र०इतिचतुर्थीदानं ॥

५ अथ— यजमानकर्तृकउपाध्यायदक्षिणासंकल्पः ॥ ॐअद्येत्यादि०कृतैतदग्निष्टोमादिकृतसमपुत्रविवाहयोगमंत्रोच्चारणादिकर्तव्यताककर्म्मप्रतिष्ठार्थं सांगतासिद्ध्यर्थंचेदंद्रव्यंरजतंचंद्रदैवतंअमुकगोत्रायाऽमुकशर्म्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहंसंप्रददे ॥ इति ॥

६ अथ– यजमानकर्तृककन्यायज्ञान्ते अन्नदानभूरिद्रव्यदानसंकल्पः ॥ ॐअद्येत्यादि० श्रीयज्ञपुरुषपरमेश्वरप्रीत्यर्थं तत्प्रसादादवगताऽनवगतसकलदुरितोपदुरितशमनपुरस्सराक्षयफलावाप्तयेच वरवध्वोःपूर्णायुरादिसुखसंपत्तिसिद्धये प्रजापतिकं दास्यमानान्नं तथाभूरिद्रव्यंताम्रंवारजतं सूर्यदैवतं वा चंद्रदैवतं सदक्षिणंयथा २ नाम गोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्यदातुमहमुत्सृजे ॥ इतिकन्यापितृकर्तृकनानाद्रव्यदानसंकल्पः ॥ शुभमस्तु ॥

७ अथ–बालककर्तृकविवाहप्रतिज्ञासंकल्पः ॥ ॐ तत्सदद्येति० जन्मलग्नतो वर्पलग्नतश्च तथा वैवाहिकलग्नतःखेटावेदतानिष्टफलनिरसनोत्तरेष्टफलप्राप्तिपुरस्सरसकलकर्मसिद्ध्यर्थं गार्हस्थ्यनानाकर्म्माधिष्ठानात्मकस्वविवाहकर्माहं करिष्ये ॥ तदंगत्वेनतन्निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं आदौगणपत्यादिनवग्रहपूजनमहंकरिष्ये १ ॥ इति ॥

८ अथ–पत्नीप्रतिग्रहगोदानसंकल्पः ॥ ॐतत्सदद्येत्यादि० श्रौतस्मार्तवैदिकेतिहासपुराणोक्तफलावाप्तिकामः श्रीपरमेश्वरनारायणादिविशेषणविशिष्टभगवत्प्रीत्यर्थं तत्प्रसादात् जन्मराशितोनामराशितश्च जन्मलग्नतोवर्षलग्नतश्च जन्यजननजनिष्यमाणात्मकदोष ८ त्रयनिरसनोत्तरजन्मलग्नतो विवा-

हलग्नतश्चानिष्टखेटावेदिताशुभदुरितक्रमनिवृत्तयेप-
त्नीपाणिग्रहणजन्यप्रतिग्रहविशेषताकपुरस्सरभार्या-
त्रिवर्गकरणमित्यनेनप्रतिपादितधर्मार्थकामप्रति-
पत्तयेचेमांगां सुवर्णरजतवस्त्रैः यथाशक्त्यालंकृतां
कांस्यदोहोपयुक्तां सवत्सां मुक्तालांगूलभूषितां
सुशीलां रुद्रदैवतां अमुकगोत्राय अमुकशर्म
णेब्राह्मणायतुभ्यमहं संप्रददे ॥ ❀ ॥ अथद-
क्षिणासकंल्पः ॥ ॐ अद्यकृतैतद्गोदानप्रतिष्ठार्थं
मिदंद्रव्यं रजतंवासुवर्णं चंद्रदैवतंवाअग्निदैवतं यथा
नामगोत्रायेत्यादि ॥

९ अथ—गोदानाभावे दक्षिणादानसंकल्पः ॥ ॐअ-
द्येत्यादि सर्वं पूर्ववत्० इमांगां इत्यस्यस्थाने गोदा-
नप्रतिनिधिभूतमिदं द्रव्यं अमुकदैवतं यथानामगो-
त्राय ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रदद ॥ दक्षिणापूर्ववत् ॥
१० अथ—उपाध्यायदक्षिणादानसंकल्पः ॥ ॥ ॐअ-
द्येत्यादि० गतानवगत सकलदुरितोपदुरितक्षय
पुरस्सर सकलत्र स्वशरीर कल्याणोत्तर पूर्णायुरा-
दि सुखसंपत्ति सिद्धिकामः कृतैतज्जन्मादि दश सं-
स्कारांतर्गत स्वविवाहात्मक महत्संस्कार मंत्रोच्चा-
रण कारयितव्य कर्तव्यताक कर्म्मप्रतिष्ठार्थंच्च सा-
ङ्गतासिद्ध्यर्थम् इमाममुक द्रव्यमयीमुपाध्यायद-

क्षिणां अमुकदैवतां यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय द
क्षिणां दातुमहमुत्सृजे १ इति०

११ अथ–विवाहे यजमानकर्तृक खट्वादानंसकल्पः।
तत्रकन्यापितासपत्नीकः कृतनित्यक्रियः कृमिजव
स्त्रपरिधानपूर्वकोत्तराभिमुखः । आदौगोधूमचूर्णे
नगणपत्यादीन्विधाय स्वस्तिवाचनपूर्वकं प्रतिज्ञा
संकल्पं कुर्यात् ॥ ॐतत्सदद्येत्यादि देशकालपू
र्वक० श्रुतिस्मृत्याद्युक्तफलावाप्तिपुरस्सराव
गतानवगतसकलदुरितमहापातकक्षयानंतरज्ञाता
ज्ञातकृतकायवाङ्मनःकृतसमस्तपातकोपपातक
जन्मत्रयोपार्जितपापक्षयकामः राजद्वारतो
व्यवहारतश्च सुप्रतिष्ठितैश्वर्यसुखाप्तये च श्रीमद्भगव-
च्चरणारविंदप्रीतिजनक कन्यादेहरोमसमसंख्याक
ल्पावच्छिन्न स्वर्गलोकवासजनककन्योद्वाहांगभू-
तविचित्रवर्णवस्त्राद्याभरणरीतिकांस्यलोहपैत्तल
त्रपु सीसकमाषपिष्टपक्वान्न रजत सुवर्ण रूप्या
द्यनेकभूषण ताम्राद्यनेक द्रव्ययुक्त खट्वादानमहं
करिष्ये ॥ ॥ ततः दक्षिणशिरसमुत्तरपादां तू
लकोपधानादि पुरस्कृतां वस्त्राभरण पात्रादि अ
लंकृतां खट्वां वरकन्यारोहणपूर्वकां पूर्वदिक्पार्श्वे
रक्तसूत्रोपबद्धां कन्यापितापत्न्यासह ग्रंथिबंधनं
कृत्वाखट्वातंतुगंधाक्षतपुष्पजलैः संकल्पंकुर्या

त् ॥ १२ अथ—ॐतत्सदद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्य ० श्रुतिस्मृतिपुराणेतिहासेत्यादि प्रतिपादितफलावाप्तिकामोऽवगतानवगतसकलदुरितोपदुरितक्षयकामश्चनानापटतंतुसंख्यासमानानेककल्पावछिन्न वैकुंठलोकप्राप्तिकामःश्रीलक्ष्मीनारायणप्रीतिजनकबहुअश्वमेधयज्ञफलसूचकस्वपुत्री विवाहाङ्गभूतां इमांसतूलोपधानादिसंस्कृतांखट्वां उत्तानांगिरोदैवतां बृहस्पतिदेवताकासितरक्तपीताद्यनेकविधसुवर्णरजततंतुमिश्रितवस्त्रसंयुतां विश्वकर्मदेवताकैः यथापरिमितैःरीतिकांस्यलोहमयपात्रैःसपात्रितां चंद्राग्निसामुद्रदैवताकअनेकविधविरचितरजतसुवर्णभूषणविभूषितां प्रजापतिदैवताकांविविधपक्वान्नाद्यधिकरणकां सूर्य्यचंद्रदेवताकयथापरिमितताम्ररजतमयैः द्रव्यैस्सदक्षिणाममुकगोत्राय अमुकप्रवरायामुकनाम्ने वराय तुभ्यमहं संप्रददे ॥ स्वस्तीतिप्रतिवचनंवरप्रत्युक्ति र्वा ॥ दक्षिणायाभिन्नसंकल्पः । ॐअद्यकृतैतत्खट्वादानप्रतिष्ठार्थमिदंताम्ररजतद्रव्यंसूर्यचंद्रदैवतं अमुक० ॥

आचारात् कन्यादातासकलत्रःजलेनवरकन्यासहितखट्वांसव्येन वेष्टनंकुर्यात् ततःसपत्नीकोयजमानः खट्वापश्चिमभागेपूर्वाभिमुखःसन् कन्यावरक्षिप्तधान्यानिगृहीगृह्णीयात्सबांधवैः ॥ अथधान्यप्रक्षेपे

मंत्रः॥ॐविश्वामित्रोजमदग्निर्वशिसिष्टोगौतमस्तथा। कश्यपोत्रिर्भरद्वाजोविष्णुब्रह्मादयश्चये । तेसर्वेत्वां प्रयच्छंतुधनधान्यादिसंपदम् १ ॐसनकःसनंदनाद्या श्चधेनवोमातरस्तथा । देवाःसर्वेप्रयच्छंतुधनंधान्यं सदागृहे २ ॐचिरंजीवतुमेमाता चिरंजीवतुमेपिता । चिरंजीवतुमेभ्राता चिरंजीवंतुबांधवाः ३ ॐदि वारक्षतुसूर्योयं रात्रौरक्षतुचंद्रमाः । वंशंरक्षतुभौमश्च धनधान्यादिसंपदाम् ४ पितृवंशंबुधोरक्षेत् मातृ वंशंगुरुस्तथा । बंधुवर्गचरक्षेत्तुभृगुर्दैत्यपुरोहि तः ५ अश्विन्यादीनिऋक्षाणि योगाविष्कंभका दयः । तिथयः प्रतिपद्याद्याः शुभंयच्छन्तुतेसदा ॥ ६ ॐतेजोवृद्धिर्यशोवृद्धिर्वंशवृद्धिस्तथैवच । लोककी र्तिर्भवेत्तात धनधान्यंसदागृहे ॥ ७॥ ॐगंगाद्याः सरितः सर्वाः शोणाद्याश्चनदास्तथा । कृतंपापं प्र शाम्यंतु प्रयच्छन्तुसुखंचते ॥ ८ ॥ ततोयजमा नः श्रीसूर्यायार्घ्यंदद्यात् ॥ इतिखड्वादानविधिः॥

(अथगोत्रोच्चारणम्)

ॐ श्रीमत्पंकजविष्टरो हरिहरौ वायुर्महेन्द्रोनल श्चंद्रोभास्करवित्तपालवरुणाःप्रेताधिपाद्याग्रहाः ॥ प्रद्युम्नो नलकूबरौ सुरगजश्चिंतामणिः कौस्तुभः स्वामीशक्तिधरश्चलांगलधरः कुर्वन्तु वो मंगलम्

१ ॥ श्लोकान्तेगोत्रोमुच्चारयेयुः २ गौरीश्रीकुलदेवताचसुभगाभूमिः प्रपूर्णाशुभा सावित्रीचसरस्वतीचसुरभिःसत्यव्रतारुंधती । स्वाहाजाम्बुवती चरुक्मभगिनी दुःस्वप्नविध्वंसिनी वेलाचांबुनिधेःसमीनमकराः कुर्वंतुवोमङ्गलम्॥२॥गंगा सिंधु सरस्वतीच यमुनागोदावरीनर्मदा कावेरी सरयूर्महेंद्रतनया चर्मण्वती वेदिका ॥ क्षिप्रा वेत्रवती महासुरनदी ख्याता च यागंडकी पुण्याःपुण्यजलैःसमुद्रसहिताःकुर्वंतुवोमङ्गलम् ॥ ३ ॥ लक्ष्मीःकौस्तुभपारिजातकसुराधन्वंतरिश्चंद्रमाधेनुः कामदुघा सुरेश्वरगजो रंभाचदेवांगना ॥ अश्वःसप्तमुखो विषं हरिधनुःशंखोविषं चांबुधे रत्नानीतिचतुर्दशप्रतिदिनं कुर्वन्तुवो मङ्गलम् ॥ ४ ॥ ब्रह्मावेदपतिःशिवः पशुपतिः सूर्योग्रहाणांपतिःशक्रोदेवपतिर्हविर्हुतपतिःस्कंदश्चसेनापतिः । विष्णुर्यज्ञपतिर्बलीरधःपतिःशक्तिःपतीनांपतिः सर्वेतेपतयः सुमेरुसहिताः कुर्वन्तु वो मङ्गलम् ॥ ५ ॥ इतिसर्वोपयोगिगोत्रोच्चारणं ॥ इतिश्रीगौतमान्वयालंकृत (शोरि) दैवज्ञममार्यश्रीदुनिचंद्रसंगृहीतं संकलपप्रकरणं समाप्तं शुभं भूयात् ॥ अथ निवाहुरामटीकायाम् । कन्यासंकलपविधिः ॥ हरिःॐम् ॥ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुःपुनातु अद्यतत्सतब्रह्म अथानन्तवीर्यस्य श्रीमदादिनारा

यणास्याऽचिंत्यापरिमिताऽनंतशक्तिसमन्वितस्य स्वकीयमूलप्रकृतिपरमशक्त्याप्रीक्रडमानस्य सच्चिदानन्दसन्दोहस्वरूपेस्वात्मनिसर्वाधिष्ठाने स्वाज्ञानकल्पितानां महाजलौघमध्ये परिभ्रम्यमाणानामनेककोटिब्रह्माण्डानामेकतमेऽस्मिन्ब्रह्माण्डेऽव्यक्तमहदहङ्कारपृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशादिभिर्दशगुणोत्तरैरावरणैरावृते आधारशक्तिश्रीकूर्मवराहधर्मानन्ताष्टदिग्गजादिप्रतिष्ठितेऐरावतपुण्डरीक वामनकुमुदाऽञ्जन पुष्पदन्तसार्वभौम सुप्रतीकाख्याष्टदिग्दन्तिशुण्डादण्डोत्ताण्डितैतद्ब्रह्माण्डखण्डयोरन्तर्गतभूर्लोकभुवर्लोकस्वर्लोकमहर्लोक जनलोक तपोलोक सत्यलोकाख्यानां सर्वज्ञसर्वशक्तिसमन्वित सर्वोत्तम सर्वाधिपश्रीचतुर्मुखप्रभृतिस्वस्वलोकाधिष्ठातृपुरुषाधिष्ठितानामधोभागेफणिराजस्यशेषस्य सहस्रफणामण्डलैकफणोपरिसर्षपैककणायमानमहीमण्डलान्तर्गतातलवितलसुतलतलातलरसातलमहातलपातालानां स्वस्वाधिष्ठात्रधिष्ठितानामुपरितनेसुमेरुमंदिरमन्दराचल निषध हिमगिरि शृङ्गवद्धेमकूट दुर्द्धर पारियात्रशैल महाशैलमहेंद्र सह्याद्रि मलयाचल विंध्यर्ष्यमूक चित्रकूट मैनाकमानसोत्तर त्रिकूटोदयाचलास्ताचलपर्य्यन्तानेकाभिधानाद्रिगणप्रतिष्ठितायां ज

म्बू प्लक्ष शाल्मली कुश क्रौञ्च शाक पुष्करारव्य सप्तद्वीपवत्यां लवणेक्षुसुरासर्पिर्दधिक्षीर शुद्धोदका रव्यसप्तसागरसमन्वितायां समस्तभूरेखायां कमल कदम्ब गोलकाकारायां वर्तमाने कुवलयकोशान्त र्गतदलवद्विराजमाने उत्तरकुरुहिरण्मयरम्यकभ द्राश्व केतुमालेलावृत हरिवर्ष किम्पुरुष भारता रव्यनवखण्डवति जम्बुद्वीपे सर्वेभ्योप्यतिरिक्तसा रवति देवादिभिरप्यभीष्टसुकृतक्षेत्रभूतहेतुनाभिल षिततमे अङ्ग वङ्ग कलिङ्ग कालिंग काम्बोजसौवीर सौराष्ट्र महाराष्ट्र बङ्गालोत्कल मगध मालव ने पाल केरल चोरल गौड मल पाञ्चाल सिंहल म त्स्य द्रविड द्राविड कर्णाट राटव शूरसेन कौङ्कण टौंकण पाण्डय पुलिंध्यान्ध्य द्रौण दशार्ण विदेहवि दर्भ मैथिल कैकय कोशल कुन्तल मैन्धुव जावल सार्वसिन्धु शालभद्र मध्यदेश पर्वत काश्मीर पुष्टाहार सिंधु पारसीक गान्धार वाल्हीक (हूण) प्रभृतिबहुविधदेशविशेष संपन्ने दण्डकारण्य महा रण्या द्वैतारण्य कामुकारण्य सैन्धवारण्य प्रभृत्य नेकारण्यवति श्रीगंगा यमुना सरस्वती गोदावरी नन्दालकनन्दा मन्दाकिनी कौशिकी नर्मदा सरयू कर्मनाशा चर्मण्वति क्षिप्रा वेत्रवती कावेरी फल्गु मार्कण्डेय रामगंगा शतद्रु विपाशैरावती चन्द्रभा

गा वितस्ता सिन्धु दृषद्वती प्रभृत्यनेकनदनदीव
ति कुरुक्षेत्र हरिद्वार क्षेत्रमाल क्षेत्रादि बहुक्षेत्रा
न्विते भारतखण्डे तत्रापि मध्यरेखाकुरुक्षेत्रादमु
कदिग्भागे अमुकनदीमध्ये श्रीश्वेतवाराहक
ल्पे वैवस्वतमन्वन्तरेऽष्टाविंशेकलौयुगे कलिप्रथम
चरणेआर्य्यावर्ते पुण्यबृहस्पतिक्षेत्रे शुभसंवत्सरेऽ
स्मिन्नमुकायनगतसूर्ये अमुकार्तवाऽमुकमासेऽ
मुकपक्षेऽमुकतिथावमुकवासेर यथायोगकरण
मुहूर्ते वर्तमाने चंद्रताराऽनुकूलेपुण्येऽहनि अ
मुकगोत्रस्य अमुकसूत्रिणोऽमुकशर्मणःप्रपौत्राय ।
अमुकगोत्रस्य यथोक्तप्रवरस्याऽमुकवेदिनोऽमुक
शाखिनोऽमुकसूत्रिणोऽमुकशर्म्मणःपौत्राय २ अ
मुकगोत्रस्य यथोक्तप्रवरास्याऽमुकवेदिनोऽमुक
शाखिनोऽमुकसूत्रिणोऽमुकशर्म्मणःपुत्राय॥ ३ ॥
अमुकगोत्रस्य यथोक्तप्रवरस्याऽमुकवेदिनोऽमुक
शाखिनोऽमुकसूत्रिणोऽमुकशर्मणःप्रपौत्रीं १ अ
मुकगोत्रस्य यथोक्तप्रवरस्य अमुकवेदिनोऽमुक
सूत्रिणोऽमुकशर्म्मणःपौत्रीं २ अमुकगोत्रस्यामुऽक
वेदिनो ऽमुकशाखिनो ऽमुकसूत्रिणो ऽमुकशर्मणः
पुत्रीं ३ इत्येवंगोत्रप्रवरादिनिरूपणपूर्वकप्रपि
तामहादिसंज्ञासंबंधकथनं त्रिरावर्त्यं ३ अ
मुकगोत्राय यथोक्तप्रवरायाऽमुकवेदिनेऽमुकशा

स्विनेऽमुकसूत्रिणे अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय वराय अमुकगोत्रांयथोक्तप्रवरामसुकनाम्नीमिमां कन्यां यथाशक्त्यालंकृतां महद्वस्त्रद्वयावृतां विवाहदीक्षितां प्रजापतिदैवतकां गङ्गावालुकाभिःसप्तर्षि मण्डलपर्यन्तराशीकृतरेणुपुञ्जस्य मध्याद्वर्षस हस्त्रावसाने एकैकवालुकापकर्षणेन सर्ववालुकाप कर्षण संम्मितकालपर्यन्तं सूर्यलोक निवास सिद्ध्य र्थंयवैश्चन्द्रमण्डलपर्यन्तं कृतएव राशितो वर्षसह स्त्रावसाने एकैक यवापकर्षणेन सर्वयवापकर्षण सं म्मितकाल पर्यन्तं चंद्रलोक निवास सिद्ध्यर्थं माषैर्ध्रु वमण्डल पर्यन्त राशीकृत माषेभ्यो वर्ष सहस्त्राव साने एकैकमाषापकर्षण संमितकालं यावद्विष्णु लोक रुद्रलोक ध्रुवलोक निवास सिद्ध्यर्थं गन्धर्वा प्सरागण मण्डित हंसपारावत शुकसारिकारुतना दित किङ्किणीशतसमलंकृत दिव्यविमानेन मनो ऽभिलषित देशगमन पूर्वक गिरि नदी नद सिंधुद्वी प दिव्यदेश नन्दन चैत्ररथ प्रभृति स्थानेषुस्वाभि लषित भोग्य विषयोपभोगार्थं मयासह दशपूर्वेषां दशावरेषां मद्वंश्यानामग्निष्टोमातिरात्रवाजपेय पु ण्डरीकाश्वमेध क्रतुशतफलजन्य ब्रह्मलोक निवा सार्थं पत्नीत्वेन तुभ्यमहं संप्रददे ॥ इतिशंखाव स्थितद्रव्ययुत जलेन सह कन्याहस्तं (सांगुष्ठं)

वरहस्ते दद्यात् ॥ इतिनिवाडुरामटीकाधृत कन्या संकल्पविधानम् ॥ श्रीः ॥ ॥

अथ संस्कारभास्करोक्तः संक्षेपतः कन्यासंकल्पः ततोदाता स्वदक्षिणे पत्न्यासह वरदक्षिणपार्श्वे भागे शुभासने उदङ्मुख उपविश्य आचम्य प्राणा नायम्य संवत्सरादि क्षेत्रादि देशकालौसंकीर्त्य एवं गुणविशेषेणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अस्मि न्पुण्याहे अस्याः कन्याया अनेनवरेण धर्मप्रजया उभयोः वंशयोर्वंशवृद्ध्यर्थं तथाच मम समस्तपितॄ णांनिरतिशयसानंद ब्रह्मलोकावाप्त्यादि कन्यादान कल्पोक्त फलावाप्तये अनेनवरेण अस्यां कन्याया मुत्पादयिष्यमाण संतत्या दशपूर्वान्दशावरान्मांच एकविंशति पुरुषानुद्धर्तुं ब्राह्मविवाहविधिना श्रील क्ष्मीनारायणप्रीतये कन्यादानमहं करिष्ये इति ॥ अत्र सर्वसंकल्पादिषु शर्म इत्यस्यस्थाने क्षत्रिय वैश्यविवाहे वर्मन् गुप्तक्रमेण कथनम् ॥ यत्र अद्येत्यादि॰ दृश्यते तत्रपूर्वमुक्तंसर्वं योजनीयम् ॥ गोत्रोच्चारणं श्लोकान्ते संकल्पविहितं प्रपितामह पूर्विकावंशसंख्या कथनीया इति परिभाषा ॥ अनु क्तंश्लोकतःसर्वंज्ञातव्यम् ॥ श्रीः ॥ ॥

अथ त्रैवर्णिकानां पूजनार्थं शुक्लयजुर्वेदोक्तं सुस्वर सहितं नवग्रहमंत्रविधानं लिख्यते ॥

अथ सूर्यकण्डिका.

आकृष्णेनरजंसावर्तमानोनिवेश यंन्नमृतम्मर्त्यंञ्च ॥ हिरण्ययेनस विताथेनादेवोयातिभुवनानिप श्यंन् ॥ १ ॥ ❋

॥ अथ चंद्रमःकण्डिका ॥

इमन्देवाअसपत्नꣳसुवद्ध्वम्महतेक्ष त्रायंमहतेज्यैष्ठ्यायमहतेजानंरा ज्यायेन्द्रंस्येन्द्रियायं॥ इमममुष्यं पुत्रममुष्यै पुत्रमुस्यैविशऽएषवो मीराजासोमोस्माकम्ब्राह्मणाना ꣳराजा ॥ २ ॥

अथ भौमकण्डिका

अग्निर्म्मूर्द्धादिवः ककुत्पतिः पृथि

व्याऽअयम् । अपाᳬरेताᳬसिजि न्वति ॥ ३ ॥

अथ बुधकण्डिका

उद्बुध्यस्वाग्नेप्रतिजागृहित्वमि ष्टापूर्तेसᳬसृजेथामयञ्च ॥ अस्मि न्त्सधस्थेऽअध्युत्तरस्मिन्विश्वेदेवा यजमानश्चसीदत ॥ ४ ॥

अथ बृहस्पतिकण्डिका

बृहस्पतेऽअतियदर्य्योऽअर्हाद्युम द्विभातिक्रतुमज्जनेषु ॥ यद्दीदय च्छवसऽऋतप्रजाततदस्मासुद्रविं णन्धेहिचित्रम् ॥ ५ ॥

अथ शुक्रकण्डिका

अन्नात्परिस्रुतोरसम्ब्रह्मणाव्यपि

बत्क्षत्रम्पयः सोमम्प्रजापतिः ॥
ऋतेनसत्यमिन्द्रियंविपानंᳬशुक्र
मन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदम्पयोमृ
तम्मधु ॥ ६ ॥

अथ शनिकण्डिका

शन्नोदेवीरभिष्टयऽआपोभवन्तुपी
तये। शंय्योरभिस्रवन्तुनः ॥ ७ ॥

अथ राहुकण्डिका

कयानश्चित्रऽआभुवदूतीसदावृधः
सखा। कयाशचिष्ठयावृता ॥ ८ ॥

अथ केतुकण्डिका

केतुङ्कृण्वन्नकेतवेपेशोमर्य्याअपेश
से।समुषद्भिरजायथाः॥ ९ ॥इति॥

यश्चयस्य यदातुष्टः सतंयत्नेन पूजयेत् । ब्रह्मणै षांवरोदत्तःपूजिताःपूजयिष्यत ॥ ग्रहाधीना नरें

द्राणामुच्छ्रायाः पतनानिच ॥ भावाऽभावौच जगत स्तस्मात्पूज्यतमाग्रहाः इति याज्ञवल्क्यस्मृतौ प्रथ माध्याये ग्रहशांति प्रकरणे उक्तम् । अतः षोडशो पचारैर्गणपत्यादिन् संपूज्य विशेषेण पूजनीयाः ॥ सन्तुष्टाः सन्तश्चतेअनिष्टान् शमयंति ॥ ३ ॥ प्रा र्थनेयं विष्णुदत्तस्य ॥

अथ

षोडशोपचाराणि ज्ञानमालायामुक्तानि ॥ तद्यथा आवाहनम् १ आसनं २ पाद्यं ३ अर्घ्यं ४ आचमनी यम् ५ स्नानम् ६ वस्त्रम् ७ यज्ञोपवीतम् ८ गंधम् ९ पुष्पम् १० धूपम् ११ दीपम् १२ नैवेद्यं मध्ये पा नीयं उत्तरापोशनं हस्तप्रक्षालनं मुखप्रक्षालनं १३ ताम्बूलम् १४ दक्षिणा १५ नमस्कारम् १६ ॥ इति षोडशोपचाराणि एवं गणपत्यादीन्सर्वान्पूजयेत् ॥ अभावेद्रव्यस्य यथाशक्त्योपलब्धवस्तुभिः पुष्पा क्षतादिभिः श्रद्धायुक्तः पूजयेत् ॥

अथ नवग्रह मङ्गलाष्टकानि ॥भास्वान्काश्यपगोत्र जोऽरुणरुचिर्यः सिंहराशीश्वरः षट्त्रिस्थोदशशो भनो गुरुशशीभौमेषुमित्रंसदा । शुक्रोमन्दरिपुः कलिङ्गजनितश्चाग्नीश्वरौ देवते मध्ये वर्तुलपूर्व दिग्दिनकरः कुर्यात्सदामङ्गलम् ॥ १ ॥ चन्द्रः क

केटकप्रभुः सितनिभश्चात्रेयगोत्रोद्भव श्चाग्नेय्यांश्चतु
रस्रवारुणमुखश्चापोप्युमाधीश्वरः । षट् सप्ताग्नि
दशैकशोभनफलो नोरिर्बुधार्कप्रियःस्वामी या
मुनदेशजो हिमकरः कु० ॥ २ ॥ भौमोदक्षिणदिंक्
त्रिकोण यमदिक् विघ्नेश्वरो रक्तभःस्वामी वृश्चिक
मेषयोः सुरुगुरुश्चार्कःशशीसौहृदः । ज्ञोरिःषट् त्रि
फलप्रदश्च वसुधास्कन्दौ क्रमाद्देवते भारद्वाजकुलो
द्भवःक्षितिसुतः कुर्या० ॥ ३ ॥ सौम्योदङ्मुख पी
तवर्ण मगधश्चात्रेयगोत्रोद्भवो बाणेशानदिशःसुहृ
च्छनिभृगुःशत्रुःसदाशीतगुः । कन्यायुग्मपतिर्दशा
ष्टचतुरःषण्नेत्रगःशोभनो विष्णुःपौरुष देवते श
शिसुतःकुर्या० ॥ ४ ॥ जीवश्चाङ्गिरगोत्रजोत्तरमु
खो दीर्घोत्तरासंस्थितः पीताश्वत्थसमिच्च सिन्धु
जनितश्चापोऽथमीनाधिपः । सूर्येन्दुक्षितिजप्रियो
बुधसितौ शत्रू समाश्चाःपरे सप्ताङ्कद्विभवः शुभःसुरगु
रुःकुर्या० ॥ ५ ॥ शुक्रोभार्गवगोत्रजःसितनिभः प्रा
चीमुखःपूर्वदिक्पञ्चाङ्गोवृपभस्तुलाधिपमहाराष्ट्रा
धिपोदुम्बरः । इन्द्राणीमघवानुभौबुधशनीमित्रार्के
चन्द्रौरिपूषष्ठोद्विर्दशवार्जितोभृगुसुतःकुर्या० ॥६॥ म
न्दःकृष्णनिभस्तुपश्चिममुखःसौराष्ट्रकःकाश्यपःस्वा
मीमकरकुम्भयोर्बुधसितौमित्रेसमश्चाङ्गिराः॥स्थानं
पश्चिमदिक्प्रजापतियमौदेवौधनुष्यासनःषट्त्रिस्थः

शुभकृच्छनीरविसुतः कुर्या० ॥७॥ राहुः सिंहलदेशज श्चनिर्ऋतिः कृष्णाङ्गशूर्पासनो यः पैठीनसिसम्भवः श्च समिधोदूर्वामुखोदाक्षिणः । यः सर्पाद्यधिदेवतेचनिर्ऋ तिप्रत्याधिदेवः सदाषट्त्रिस्थः शुभकृच्चसिंहिकसुतः कुर्या० ॥ ८ ॥ केतुर्जैमिनिगोत्रजः कुशसमिद्वाय व्यकोणेस्थितश्चित्राङ्गध्वजलाञ्छनोहिमगुहा योद क्षिणाशामुखः । ब्रह्माचैवसचित्रचित्रसहितः प्रत्या धिदेवः सदाषट्त्रिस्थः शुभकृच्चबर्बरपतिः कुर्यात्सदा मंगलम् ॥ ९ ॥ इत्यतेद्ग्रहमङ्गलाष्टनवकंलोको पकारप्रदं पापौघप्रशमं महच्छुभकरंसौभाग्यसंवर्द्ध नम् । यः प्रातः (शुद्धः) शृणुयात्पठत्यनुदिनं श्री कालीदासोदितं स्तोत्रंमंगलदायकंशुभकरं प्राप्नो त्यभीष्टंफलम् ॥१०॥ इतिनवग्रहमङ्गलाष्टकानि ॥ पारस्करगृह्यसूत्रोक्तं कुशकण्डिकासूत्रम् ॥ अथा तोगृह्यस्थालीपाकानांकर्मपरिसमुह्योपलिप्योल्लि ख्योद्धृत्याभ्युक्ष्याग्निमुपसमाधायदक्षिणतो ब्रह्मास नमास्तीर्यप्रणीयपरिस्तीर्य्याऽर्थवदासाद्यपवित्रेकृ त्वाप्रोक्षणीः संस्कृत्यार्थवत्प्रोक्ष्यनिरूप्याज्यमाधि श्रित्यपर्यग्निः कुर्यात्स्रुवंप्रतप्यसंमृज्याभ्युक्ष्यपुनः प्रत प्य निदध्यादाज्यमुद्वास्योत्पूयावेक्ष्यप्रोक्षणीश्चपूर्व वदुपयमनान्कुशानादाय समिधोभ्याधायपर्युक्ष्यजु

हुयादेएषएवविधिर्यत्रक्कचिद्धोमः ॥ १ ॥ अर्थात् स
र्वत्रहोमएषएवविधिर्ज्ञातव्यइति ॥

[मंत्रार्थ आकृष्णेनेति] सुवर्ण मय रथसे भुवना को देखताभया अर्थात् कर्मभूमिमे स्थित मनुष्यो के पापपुण्य को साक्षि होकर देखता हुआ । कृष्ण मलीन रात्रिसे वर्तमान प्रतिदिन स्तुत्य सूर्य भगवान देवता ओंको और मनुष्यो को परस्पर व्यापार मे प्रेरता हुआ उदय को प्राप्त होता है ॥

[मंत्रार्थ इमंदेवाइति] इहा इम शब्दसे प्रकृत होनेसे सोम का परामर्श है ॥ संपूर्ण देवता गण इस चंद्रमा को उत्पन्न कर्ते भये ॥ कैसे को शत्रु रहित और सौम्यसर्व प्रियको । किस प्रयोनज के लिये उत्पन्न कर्ते भये क्षत्रके लिये अर्थात् लोक पालोको राजभाव के लिये और सर्वोत्तम ताके लिये ओ अतिशय युक्त को इस प्रत्यक्ष दृश्यको (अमुं) नित्य ब्रह्म स्वरूप होनेसे परोक्ष दृश्यको । सूर्यके पुत्रको अर्थात् सूर्यकी किरणोसे चंद्रमा की वृद्धि होनेसे सूर्य पुत्र कहा जाता है ॥ अमुष्य दिशाके पुत्रको अर्थात् पूर्व दिशासे उत्पन्न उदय होनेसे पुत्रता है॥ अत्रि महर्षिजी के चक्षुसे उत्पन्न तेजको दिशाने धारण किया यह पुराणोके अभिप्रायसे युक्तार्थ है ॥ किस लिये यह दिशाने धारण किया. (अस्यैविशे) प्रजा के अनुग्रह अर्थात् अमृत रस की उत्पत्ति कांति आंनदके लिये ॥
(और हय चंद्रमा हम ब्रह्मण जातिका राजा है)

(मंगलमंत्रकाविनियोग)

अग्निर्मूर्द्धा इस मंत्रका विरूपाङ्गिरस ऋषि अग्नि देवता गाय

त्री छंद अग्निके उपस्थानमे विनियुक्त है (मंत्रार्थ आग्निर्मूर्द्धे ति) यह भौम अत्यंत तेजवाला होने से अग्निका मूर्द्ध (मस्तक) है वा अत्यंत रक्तवर्ण होनेसे । और आकाशका (ककुत्) चिन्हहै । और वृष्टि कर्नेमें मुख्यहेतु होनेसे जलका वह स्वामीहै (प्र०चलत्यंगारको वृष्टिरिति) अर्थ मंगलके राश्यंतर होनेसे वर्षा होतीहै और पृथिवीका रेत बीजरूप है अर्थात् अपनि शक्ति से पृथिवी जातको प्रीणन कर्त्ताहै (प्रमा०वृ.जा.अं.२ कालात्मा दिन कृन्मनस्तुहिनगो सत्वंकुजो ज्ञोगिरः) अर्थात् बलका अधिष्ठाता मंगल है ॥

बुधमंत्रकाविनियोग

बुधमंत्रका परमेष्ठि ऋषि अग्निदेवता त्रिष्टुप् छंद चितिके उपस्थानमें विनियुक्तहै ॥ [मंत्रार्थ] हे अग्नेउद्बुध्यस्व अर्थात् प्रकाशहो हे बुधदेव तुम हमारे कर क्रियमाण इस कर्ममें सावधानहों ॥ और बुध अग्नि तुम दोनो इष्टा पूर्त नाम यज्ञमें यजमानके संसर्गकों करें । यह ग्रहयज्ञमें ऋत्विक् की प्रार्थनाहै ॥ और सर्वोत्कृष्ट इस पूजा स्थानमे यह यजमान (और संपूर्ण देवता स्थितहो । सहोपदेनसधसाधयोश्वयो श्चेति इस सूत्रसे सहके स्थानमें सध आदेश भया ।

बृहस्पतिकेमंत्रकाविनियोग

बृहस्पति जीके मंत्रका गृत्समद ऋषि ब्रह्मा देवता त्रिष्टुप् छंदः वार्हिस्यत्य ग्रहणमे विनियुक्त है ॥

अर्थ हे बृहस्पति देव ऋत अर्थात् सत्य नानष्टहोनेवाली प्रजा (संतान) द्रविण (धन) हमको देवों कैसा धन की जिस धनसे ईश्वर की पूजा करे और जो लोकमे प्रकाशहो औरदीप्ति युक्त जिससे यज्ञादि कर्म कि येजाय और जिस्की बलसे रक्षाकी जाय ऐसा गौऊ वस्त्र सुवर्णादि रूप धनको दीजिये ॥ यह प्रार्थना वाक्यहे ॥

शुक्रजीके मंत्रका प्रजापति ऋषि अश्वि सरस्वती इंद्रदेवता जगती छंद सौत्रामणिनाम यज्ञमें पयके ग्रहणमें विनियुक्तहे ॥

अर्थ प्रजापति (ब्रह्मा) हविरूप अन्नसे परिस्रुत रसको पान कर्ता भया। कैसेको क्षत्रको (वा सोमरसको ब्रह्मा पानकर्ता भया) किसद्वारा पानकर्ता भया (ब्रह्मण)प्रपंचरहित मंत्ररूप वेदसे इस अन्नके सोमरूप रसको जो अन्नसे उत्पन्न भया (विपान)ब्रह्माजीका विशिष्टपान वह शुक्रवीजनानाश होनेवाला (इंद्रिय)इंद्रियोकासार देवराज इंद्रकावीर्य्य पय क्षीर अमरमे कारण (मधु) पितृगणकी तृप्तिमे मुख्य हेतु होता भया ॥ परिस्रुतं यह द्वितीयाके अर्थमे प्रथमाविभक्ती है ॥

अर्थ शनिश्चरजीके मंत्रका दध्यङ्ङाथर्वण ऋषि गायत्री छन्दजलदेवता शांतिकरणमे विनियुक्त है ॥

अर्थ याज्ञवल्यादि विहित आदित्य प्रभव अपोंसे अभेदोपचारसे अपशब्दसे शनिका ग्रहण है (आपो देवी)शनिश्चरदेव हमारेको कल्याण हो किस अर्थके लिये वृद्धिद्वारा तृप्ति हेतू पानके लिये औ

र कल्याणके योग्य जल अभिमुखको प्राप्त हो॥ अपशब्दको बहुवचनांतहोनेसे बहुवचनांत विशेषण जानने ॥

अर्थ राहुजीके मंत्रका अग्नि ऋषि दूर्वेष्टका देवता अनुष्टुपूछन्द दूर्वेष्टकाके उपधानसे विनियुक्त है ॥

अर्थ हे दूर्वे प्रति कांड पर्वप्रति परुष ग्रंथियुक्त सर्वतो भावसे उत्पन्न भई तुम हमारेको शतसहस्र संख्यका पुत्रपौत्रादिसे विस्तृत करो।

अथ केतुजीके मंत्रका मधुछंद ऋषि अग्निदेवता निरुक्ता गायत्री छंद केतुके अभिमंत्रणमे विनियुक्त है ॥

अर्थ हे केतुदेव ध्वजरूपको तुम प्राप्त हो किनसे जन्यमान गृहस्थियोसे क्या कर्ता भया मनुष्योको केतुज्ञानको कर्ता हुवा.और (पेश) सौंदर्य ओर सुवर्णको कर्ता भया ॥ निघंटुः—प्रमाण. पेशस्कारी पशसो मात्रामापादयेदिति ॥ कैसे मनुष्योकों जो अज्ञानि ओर निर्धन कुरूप उन्को सुवर्ण रूप सौंदर्य देता भया ॥ कित ज्ञाने इस धातुका केतु रूप है ॥ अकेतवे अपेशसे यह बहुवचनमे एकवचन है ॥

अथपारस्कर गृह्यसूत्रे प्रथमकाण्डे विवाह सूत्रम्॥

तद्यथा

आवसत्थ्याधानंदारकालेदायाद्यकालएकेषांवैश्यस्यबहुपशोर्गृहादग्निमाहृत्यचातुष्प्राश्यपचनवत्सर्वमरणिप्रदानमेकेपंचमहायज्ञाइतिश्रुतेरग्न्याधेयदेवताभ्यःस्थालीपा

क ँ्श्रपयित्वाऽज्यभागावष्टाज्याहुतीर्जुहोति ॥ त्वन्नोऽ आग्नेसत्वन्नोऽअग्ने ऽइमंमेवरुण तत्वायामि येतेशत मया श्चाग्नऽउदुत्तमं भवतन्न इत्यष्टौ पुरस्तादेवमुपरिष्टात्स्था लीपाकस्याग्न्याधेयदेवताभ्योहुत्वाजुहोतिस्विष्टकृतेचाया स्याग्नेर्वेषट्कृतं यत्कर्म्मणोत्यरीरिचं देवागातुविदइति ब र्हिर्हुत्वा प्राश्नाति ॥ ततोब्राह्मणभोजनम् ॥ २ ॥ षडर्घ्याभ वन्त्याचार्यऽऋत्विग्वैवाह्योराजाप्रियःस्नातकइति प्रतिसम्व त्सरार्हयेयुर्यक्ष्यमाणास्त्वृत्विज आसनमाहार्याह साधुभ वानास्तामर्च्चयिष्यामोभवन्तमित्याहरंतिविष्टरंपाद्यंपादार्थ मुदकमर्घ्यमाचमनीयंमधुपर्कंदधिमधुघृतमपिहितंका ँ्स्ये का ँ्स्येनान्यस्त्रिस्त्रिःप्राह,विष्टरादीनि विष्टरं प्रतिगृह्णाति- वर्ष्मोस्मिसमानानामुद्यतामिवसूर्यः । इमन्तमभितिष्ठामि योमाकश्चाभिदासतीत्येनमभ्युपविशतिपादयोरन्यंविष्टर आसीनायसव्यंपादम्प्रक्षाल्यदक्षिणंप्रक्षालयति ब्राह्मश्चेद क्षिणं प्रथमं विराजोदोहोसिविराजोदोहमशीयमयिपाद्यायै विराजोदोहऽइत्यर्घंप्रतिगृह्णात्यायस्थयुष्माभिःसर्वान्कामा न्नवाप्नवानोति निनयन्नभिमंत्रयतेसमुद्रंवःप्रहिणो मिस्वांयो निमभिगच्छतअरिष्टास्माकंवीरामापरासेचिमत्पयऽइत्या चामत्यामागन्यशसास ँ् सृजवर्च्चसातंमाकुरुप्रियंप्रजानाम धिपतिंपशूनामरिष्टिंतनूनामिति मित्रस्यत्वेतिमधुपर्कंप्र तीक्षते देवस्यत्वेति प्रतिगृह्णातिसव्येपाणौकृत्वादक्षिण स्यानामिकयात्रिःप्रयौतिनमःश्यावास्यायांनशनेयत्तऽआ

विद्धंतत्तेनिष्कृन्तामीत्यनामिकाङ्गुष्ठेनचत्रिर्निरुत्क्षपयतित
स्यत्रिःप्राश्नाति यन्मधुनोमधव्यंपरमंरूपमन्नाद्यंतेनाहंमधुनोमधव्येन परमेणरूपेणान्नाद्येन
परमोमधव्योन्नादोसानीतिमधुमतीभिर्वा प्रत्यृचंपुत्रायान्ते
वासिनेवोत्तरतऽआसीनायोच्छिष्टंदद्यात् सर्वम्वाप्राश्नीया
त्प्रागवासंचरे निनयेदाचम्यप्राणान्संस्पृशति वाङ्मऽआ
स्येनसोःप्राणोक्ष्णोश्चक्षुःकर्णयोःश्रोत्रंबाह्वोर्बलमूर्वोरोजोरि
ष्टानिमेंगानितनूस्तन्वामेसहेत्याचांतोदकायशासमादायगौ
रितित्रिःप्राहप्रत्याहमातारुद्राणांदुहितावसूनाꣳस्वसादि
त्यानाममृतस्यनाभिः॥ प्रनुवोचंचिकितुषेजनायमागामना
गामदितिंवधिष्ट ॥ ममचामुष्यचपाप्माहनꣳहनोमीति
यद्यालभेत यद्युत्सिसृक्षेन्ममचामुष्यचपाप्माहतः । ओ
मुत्सृजततृणान्यत्त्वितिब्रूयान्नत्वेवामाꣳसोर्घःस्यादधियज्ञ
मधिविवाहंकुरुतेत्येवब्रूयाद्यद्यप्यसकृत्संवत्सरस्यसोमेनय
जेतकृताघ्र्याऽएवैनंयाजयेयुर्नाकृताघ्र्याइतिश्रुतेः ॥ ३ ॥ च
त्वारःपाकयज्ञाहुतोऽहुतःप्रहुतःप्राशितऽइतिपंचसुबहिःशा
लायां विवाहेचूडाकरणऽउपनयने केशान्तेसोमन्तोन्नयनऽ
इत्युपलिप्तऽउद्धतावोक्षितेग्निमुपसमाधायनिर्मथ्यमेकेविवा
हऽउदगयनऽआपूर्यमाणपुण्याहे कुमार्याःपाणिंगृह्णीयात्त्रिषु
त्रिषूत्तरादिषुस्वातौमृगशिरसिरोहिण्यांवातिस्रोब्राह्मणस्यव
र्णानुपूर्व्येणद्वेराजन्यस्यैकावैश्यस्यसर्वेषाꣳशूद्राणामप्येके
मंत्रवर्ज्यमथैनां वासःपरिधापयति जरांगच्छपरिधत्स्ववासो
भवाकृष्टीनामभिशस्तिपावा ॥ शतञ्चजीवशरदःसुवर्च्चारयिं

चपुत्राननुसंव्ययस्वायुष्मतीदंपरिधत्स्ववासऽइत्यथोत्तरीयं याऽअकृतन्नवयंयाऽअतन्वतयाश्च देवीस्तंतूनभितोततंथ तास्त्वादेवीर्जरसे संव्ययस्वायुष्मतीदंपरिधत्स्ववासऽ इत्य थैनौसमंजयंति समञ्जन्तुविश्वेदेवाःसमापोहृदयानिनौ। सम्मातरिश्वासंधातासमुदेष्ट्रीदधातुनाविति पित्राप्रत्तामादा यगृहीत्वानिष्क्रामति यदैषिमनसदूरंदिशोनुपवमानोवा॥ हिरण्यपर्णोवैकर्णः सत्वामन्मनसांकरोत्वित्यसावित्यथैनौस मीक्षयत्यघोरचक्षुरपतिघ्न्येधिशिवापशुभ्यःसुमनाःसुवर्चाः॥ वीरसूर्देवकामास्योनाशन्नोभवाद्विपदेशञ्चतुष्पदे ॥ सोमः प्रथमोविविदेगंधर्वोविविदऽउत्तरः। तृतीयोऽअग्निष्टेपतिस्तु रीयस्तेमनुष्यजाः ॥ सोमोददद्गंधर्वायगंधर्वोददग्नये। रयिं चपुत्रांश्चादादग्निर्मह्यमथोइमाम्॥ सानःपूषाशिवतमामेरय सानऽऊरूउशतोविहर यस्यामुशंतःप्रहरामशेपं यस्या मुकामाबहवोनिविष्टचा इति ॥ ४ ॥ प्रदक्षिणमाग्निं पर्य्या णीयैकेपश्चादग्नेस्तेजनींकटंवा दक्षिणपादेनप्रहृत्योपविश त्यन्वारब्धआघारावाज्यभागौमहाव्याहृतयःसर्वप्रायश्चित्तं प्राजापत्य ँ स्विष्टकृच्चैतन्नित्य ँ सर्वत्रप्राङ्महाव्याहृति भ्यःस्विष्टकृदन्यच्चेदाज्याद्धविः सर्वप्रायश्चित्तंप्राजापत्यान्त रमेतदावापस्थानं विवाहे राष्ट्रभृतइत्थं जयाभ्यातानांश्चजा नन्येनकर्मणेच्छेदितिवचनाच्चित्तंचचित्तिश्चाकूतश्चाकूतिश्च विज्ञातंचविज्ञातिश्च मनश्चशक्करश्च दर्शश्चपौर्णमासं चबृह च्चरथन्तरंचप्रजापतिर्ज्जयानिंद्राय वृष्णेप्रायच्छदुग्रःपृत

नाजयेषु । तस्मैविशःसमनमंतः सर्वाः स उग्रः सइहव्योबभू
वस्वाहेत्यग्निर्भूतानामधिपतिःसमावत्विन्द्रोज्येष्ठानांयमः
पृथिव्या वायुरन्तारिक्षस्य सूर्य्योंदिवश्चंद्रमानक्षत्राणां
बृहस्पतिर्ब्रह्मणो मित्रःसत्यानां वरुणोपा ᳩसमुद्रःस्रोत्याना
मन्न ᳩसाम्राज्यानामधिपतिस्तन्मावतुसोमओषधीना ᳩ स
वितापसवाना ᳩ रुद्रःपशूनां त्वष्टारूपाणां विष्णुःपर्वता
नांमरुतोगणानामधिपतयस्तेमावन्तुपितरःपितामहाःपरेव
रेततस्ततामहाः । इहमावन्त्वस्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेस्या
माशिष्यस्यांपुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यांदेवहूत्या ᳩ स्वा
हेति सर्वत्रानुपज्जत्यग्निरैतुप्रथमोदेवताना ᳩ सोस्यैप्रजांमु
ञ्चतुमृत्युपाशात्॥तदय ᳩराजावरुणोनुमन्यतांयथेयं ᳩस्त्री
पौत्रमघन्नरादोत्स्वा० ॥ इमामग्निस्त्रायतांगार्हपत्यः
प्रजामस्यैनयतुदीर्घमायुः।अशून्योपस्थाजीवतामस्तुमाता
पौत्रमानंदमभिविबुध्यतामियᳩस्वाहा । स्वस्तिनो अग्नेदि
वापृथिव्याविश्वानिधेह्ययथायदत्र यदस्यांमहिदिविजातंप्र
शस्तंतदस्मासुद्रविणंधेहिचित्र ᳩ स्वाहा ॥ सुगन्नुपन्थांप्रदि
शन्नएहिज्योतिष्मद्धेह्यजरन्न आयुः । अपैतुमृत्युरमृतंम आ
गाद्वैवस्वतोनोअभयंकृणोतुस्वाहेतिपरंमृत्यवितिचैकेप्राश
नान्ते ॥ ८ ॥ कुमार्याभ्राताशमीपलाशमिश्राँल्लाजा
नंजलिनाञ्जलावावपातितांजुहोतिसंᳩहतेन तिष्ठत्यर्यमणंदे
वंकन्या अग्निमयक्षत सनोअर्यमा देवःप्रेतोमुञ्चतुमापतेस्वा
हा ॥ इयन्नार्युपब्रूतेलाजानावपंतिका । आयुष्मानस्तुमे

पतिरेधन्तां ज्ञातयोममस्वाहा ॥ इमाँल्लाजानावपाम्यग्नौसमृ द्धिकरणं तव । ममतुभ्यञ्चसंवननंतदग्निरनुमन्यतामिय ᳪस्वाहा ॥ इत्यथास्येदक्षिणᳪहस्तंगृह्णातिसांगुष्ठं गृभ्णामितेसौभगत्वायहस्तंमयापत्याजरदष्टिर्यथासः ।भगो अर्यमासवितापुरंधिर्मह्यन्त्वा दुर्गार्हपत्यायदेवाः ॥ अ मोहमस्मिसात्व ᳪसात्वमस्यमोऽअहं । सामाहमस्मिऋक्त्वं द्यौरहंपृथिवीत्वं । तावेहिविवहावहैसहरेतोदधावहै । प्रजां प्रजनयावहै पुत्रान्विंद्यावहैबहून् । तेसन्तुजरदष्टयः संप्रियौ रोचिष्णूसुमनस्यमानौ । पश्येमशरदःशतंजीवेमशरदःश तᳪशृणुयामशरदः शतमिति ॥ ६ ॥ अथैनामश्मानमारो हयत्युत्तरतोग्नेर्दक्षिणपादेनारोहेममश्मानमश्मेवत्वᳪस्थिरा भव । अभितिष्ठपृतन्यतोवबाधस्वपृतनायतऽइत्यथगाथां गायति सरस्वतिप्रेदमवसुभगेवाजिनीवति । यांत्वाविश्वस्य भूतस्यप्रजायामस्याग्रतः । यस्यांभूतᳪसमभवद्यस्यांविश्व मिदंजगत् ।तामद्यगाथांगास्यामियास्त्रीणामुत्तमंयश इत्यथ परिक्रामतस्तुभ्यमग्नेपर्यवहत्सूर्यांवहतुनासह ॥पुनःपतिभ्यो जायांदाग्नेप्रजयासहेत्येवंद्विरपरं लाजादिचतुर्थᳪशूर्पकु ष्टया सर्वांल्लाजानावपतिभगायस्वाहेतित्रिःपरिणीतांप्रा जापत्यᳪहुत्वा ७ अथैनामुदीचीᳪसप्तपदानिप्रक्रामयत्ये कमिषेद्वेऊर्जेत्रीणिरायस्पोषायचत्वारिमायोभवायपंचपशु भ्यः षडृतुभ्यःसखे सप्तपदाभवसामामनुव्रताभवविष्णुस्त्वा नयत्वितिसर्वत्रानुषज्जति निष्क्रमणप्रभृत्युदकुंभᳪस्कंधेकृ

त्वा दक्षिणतोऽग्नेर्वाग्यतः स्थितोभवत्युत्तरत एकेषां तत ए
नांमूर्द्धन्यभिषिंचत्यापः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शा
न्ततमास्तास्तेकृण्वन्तुभेषजमित्यापोहिष्ठेतिचतिसृभिरथै
नाऽऽसूर्यमुदीक्षयातितच्चक्षुरित्यथास्यैदक्षिणा ऽऽ समधिहृद
यमालभतेममव्रतेतेहृदयंदधामिममचित्तमनुचित्तंते अस्तु।
ममवाचमेकमनाजुषस्वप्रजापतिष्ट्वा नियुनक्तुमह्यमित्यथै
नामभिमन्त्रयते सुमङ्गलीरियंवधूरिमा ऽऽ समेतपश्यत ।
सौभाग्यमस्यैदत्त्वायाथास्तंविपरेतनेतितांदृढपुरुषउन्मथ्य
प्राग्वोदग्वानुगुप्तागार आनडुहेरोहितेचर्मण्युपवेशयतीहगा
वोनिषीदंत्विहाश्वा इहपूरुषाः। इहोसहस्रदक्षिणोयज्ञ इहपू
षानिषीदंत्वितिग्रामवचनंच कुर्युर्विवाहश्मशानयोर्ग्रामंप्रा
विशतादितिवचनात्तस्मात्तयोर्ग्रामप्रमाणमितिश्रुतेराचार्या
यंवरंददातिगौर्ब्राह्मणस्यवरोग्रामोराजन्यस्याश्वोवैश्यस्या
धिरथऽऽशतंदुहितृमतेस्तमितेध्रुवंदर्शयाति ध्रुवमसिध्रुवंत्वा
पश्यामिध्रुवैधिपोष्येमयिमह्यंत्वादाद्बृहस्पतिर्मयापत्याप्रजा
वती संजीवशरदःशतमिति । सायादिनपश्येत् पश्यामीत्ये
वब्रूयात्रिरात्रमक्षारालवणाशिनौस्यातामधः शयोयाता ऽऽ
सँवत्सरन्नमिथुनमुपेयातां द्वादशरात्र ऽऽ षड्रात्रंत्रिरात्रमन्त
तः ॥ ८ ॥ उपयमनप्रभृत्योपासनस्यपरिचरणमस्तमिता
नुदितयोर्दध्नातण्डुलैरक्षतैर्वाग्नयेस्वाहाप्रजापतयेस्वाहेति
साय ऽऽ सूर्यायस्वाहाप्रजापतयेस्वाहेतिप्रातः पुमा ऽऽ सौमि
त्रावरुणौपुमा ऽऽसाश्विनावुभौ। पुमानिन्द्रश्चसूर्यश्च पुमाऽऽ

संवर्तेतांमयिपुनः स्वाहेति पूर्वांगर्भकामा ॥ ९॥ राज्ञोक्षभे देनद्धविमोक्ष्ये यानविपर्यासेन्यस्यांवाव्यापत्तौस्त्रियाश्चोद्ध हने तमेवाग्निमुपसमाधाय आज्यꣳसंस्कृत्येहरतिरितिजुहो तिनानामंत्राभ्यामन्यद्यानमुपकल्प्यतत्रोपवेशयेद्राजानꣳ स्त्रियंवा प्रतिक्षत्रेऽइतियज्ञांतेनान्वाहार्यमिति चैतयाधुर्यौद क्षिणाप्रायश्चित्तिस्ततो ब्राह्मणभोजनम् ॥ १० ॥

अथ चातुर्थ्यकर्मणिपारस्करसूत्रं

तद्यथा

चतुर्थ्यामपररात्रेभ्यन्तरतोऽग्निमुपसमाधाय दक्षिणतो ब्राह्म णमुपवेश्योत्तरतऽ उदपात्रंप्रतिष्ठाप्य स्थालीपाकꣳश्रपयि त्वाज्यभागाविष्ट्वाज्याहुतीर्जुहोत्यग्नेप्रायश्चित्तेत्वंदेवानांप्रा यश्चित्तिरसिब्राह्मणस्त्वानाथकाम उपधावामि यास्यैपति घ्नीतनूस्तामस्यैनाशयस्वाहा ॥ वायोप्रायश्चिते त्वंदेवानां० यास्यै प्रजाघ्नीतनूस्तामस्यै नाशयस्वाहा ॥ सूर्यप्रायश्चित्ते त्वंदेवानां०यास्यैपशुघ्नीतनूस्तामस्यैनाशयस्वाहा ॥ चंद्र प्रायश्चित्ते०यास्यैगृहघ्नीतनूस्तामस्यैनाशयस्वाहा ॥ गंध र्वप्रा०यास्यैयशोघ्नीतनूस्तामस्यैनाशयस्वाहेतिस्थालीपा कस्य जुहोतिप्रजापतये स्वाहेतिहुत्वा हुत्वैतासामाहुती नामुदपात्रे सꣳस्रवान्त्समवनीयततऽएनांमूर्द्धन्यभिषिंचति यातेपतिघ्नीप्रजाघ्नीपशुघ्नीगृहघ्नीयशोघ्नीनिंदितातनूर्जार घ्नी ततऽएनांकरोमिसाजीर्यत्वंमयासहासावित्यथैनाꣳस्था लीपाकंप्राशयति प्राणैस्तेप्राणान्त्संदधाम्यस्थिभिरस्थी

निमाᳫंसैमाᳫं सानित्वचात्वचमिततिस्मादेवंविच्छ्रोत्रियस्य दारेणनोपहसमिच्छेदुतह्येवंवित्परोभवतितामुदुह्यथर्तुप्रवेशनंयथा कामीवा काममाविजनितोःसंभवामेतिवचनादथास्यैदक्षिणांसमधिहृदयमालभते यत्तेसुशीमे हृदयं दिविचंद्रमसिश्रियं।वेदाहंतन्मांतद्विद्यात्पश्येमशरदःशतंजीवेमशरदःशतᳫंशृणुयामशरदःशतमित्येवमतऊर्ध्वम्॥ ११ ॥

इतिश्री कपूरस्थल निवासी गौतमगोत्र (शोरि) अन्वयालङ्कृत दैवज्ञदुनिचन्द्रात्मजपण्डित विष्णुदत्त वैदिक संगृहीतं चतुर्थं प्रकरणं समाप्तम्॥शुभमस्तुश्रीरामचंद्रप्रसादात्॥

(समाप्तमिदंचतुर्थंप्रकरणम्)

अथ पंचमप्रकरणम्।

ॐनमोगणपतये।

अथविवाहपद्धतिर्लिख्यते। तत्रादौ युग्मकेनमङ्गलाचरणम्॥

संधिविग्रहमन्त्रेन्द्रो रुद्रदेवतनूद्भवः। भूमिपालशिरोरत्नरञ्जितांघ्रिसरोरुहः॥ १॥

भा०टी०ओंस्वस्ति श्रीगणेशाय नमः॥ अथ विवाहपद्धतिकी व्याख्या भाषामें कर्तेहै॥ प्रथम (मङ्गलाचरणं शिष्टाचारात्फलदर्शनात् श्रुतितश्चेति) श्रुत्यादि विहित मङ्गलाचरण कोहोनेसे

विघ्नविनाशनके लिये लिखतेहै ॥ गणेशं गुरुं पद्मनाभं महेशं कुमारं महेन्द्रं रमां शारदाञ्च ॥ ग्रहांस्तुङ्गगान्वीर्ययुक्तांस्तथैव नमस्कृत्य सर्वान्सुटीकां करोमि ॥ १ ॥ याकृता रामदत्तेन निवाहु[1]रामशर्म्मणा। ताम्विलोक्योपकाराय सर्वेषां क्रियते मया ॥ २ ॥ व्याख्यानुगिरया सैवधर्मकामार्थसिद्धिदा । प्रहृत्यरागद्वेषौ (च) द्रष्टव्यासुविचक्षणैः ॥ ३ ॥ यदशुद्धमसम्बद्धमज्ञानाचकृतंमया । विद्वद्भिः क्षम्यतांसर्वं बालत्वादयमञ्जलिः ॥ ४ ॥ विवाहपद्धतेर्व्याख्याकृता यत्नाद्विलोक्यताम् ॥ उल्लसिष्यन्तिदुष्यन्तिसन्तोऽसन्तश्चभूतले ५

सन्धिविग्रहकृच्छ्रीमद्रीरेश्वरसहोदरः । महन्महत्तरः श्रीमान्विराजतिगणेश्वरः ॥ २ ॥ युग्मकं॥

भा०टी० (सन्धिविग्रह इति) सन्धि जो परस्पर मिलावट अर्थात् मेल विग्रह अर्थात् युद्ध इन्का जो मन्त्र सम्यक् विचार तिस्मे इन्द्र ईश्वर अर्थात् तीक्ष्ण बुद्धिद्वारा संधिविग्रहके यथार्थ ज्ञानमे समर्थ रुद्रदेव जो महादेव तिस्कापुत्र. प्रमाण. जैसे अथर्व वे० (नमस्तेऽस्तु लम्बोदरायएकदन्ताय विघ्ननाशिने शिवसुताय वरदमूर्तये नमः) इति. इहा यद्यपि तनूद्भवसे और सपुत्र लियाजाताहै तथापिरूढि (प्रसिद्धि) से क्षेत्रज पुत्रमे भी वर्तताहै सरसिज (कमल) वत् भावयहहै कि सरोवरमे जो उत्पन्नहो वह पाटलि अर्थात् गुलावजो पृथ्विपर पैदाहोताहै इस्कोभी कहतेहै॥ सरसिज (कमल) अक्षरार्थसे कहा जाताहै तथापि प्रसिद्धिसे

---

(१) पद्धत्ति (२) टीका इतिशेषः ॥

प्रमाण जैसे (स्थलारविन्द श्रियम्) फिर कैसेहै भूमिपाल राजा लोक इन्कें प्रति दिनराजकार्य तिन्मे विघ्नकासंदेह उस्के निवृत्त कर्नेके लिये प्रणाम कररहे राजा ओंकेसे मुकट रत्नोंसे विचित्रित हुऐहे चरणकमल जिनके ॥ १ ॥

(संधि इति) तारक दैत्यके वधमे संधि विग्रह कर्णेवाला श्रीमान् वीरेश्वर अर्थात् वीरपुरुषोंका स्वामी और युद्धमे लगाने वाला जो स्वामि कार्तिकजी इन्केभाई और महान् जो व्यास वशिष्ठादि उन्मे जो बडे ब्रह्मादिक उन्का पूज्य और गणोका-स्वामि श्री गणेशभगवान् विराजमान् अर्थात् शोभताहै ॥ २ ॥ (युग्मका लक्षण साहित्य दर्पणमे लिखाहै (द्वाभ्यां तुयुग्मकंज्ञेयं) अर्थ दो श्लोकोंसे एकार्थ कहनेसे युग्म होताहै।

श्रीमतारामदत्तेनमन्त्रिणातस्यसूनुना ।
पद्धतिःक्रियतेरम्याधर्म्या वाजसनेयिनाम् ॥ ३ ॥

भा०टी०श्रीमान् शोभायुक्त संहिता पदक्रम जटा घन और वेदार्थ मे चतुर श्रीगणेशनाम कर स्वपिताके पुत्र रामदत्तजी मे शुक्ल यजुर्वेद माध्यन्दिनी शाखा वाजसनेयी संहिता कात्यायन सूत्रवाले जो त्रैवर्णिक अर्थात् ब्राह्मण क्षत्री वैश्य इनकी धर्म युक्त मनोहरतासे शोभित विवाहकी पद्धति प्रगट कर्तेहै इससे शूद्र का विवाह वेदोक्त मंत्रोंसे नहि चाहिये. प्रमाण याज्ञ० स्मृति ब्रह्म वत्क्य क्षत्रिय विट् शूद्रा वर्णास्त्वाद्यास्त्रयो द्विजाः । निषेकादि श्मशानां तास्तेषां वै मंत्रतः क्रियाः ॥ नतु शूद्रस्य ॥ स्त्रीशूद्रो ऽनुपनीतश्च वेदमंत्रान् विवर्जयेत् ॥

तत्रक्रमः ॥ तावत्पूगीफलोपवीतदानं तत्रकन्याभ्रातापुरोधाअन्योब्राह्मणोवाकश्चित् ॥

भा०टी०(तत्रक्रमः) तिसपद्धतिमे जो शास्त्रक्रम अर्थात् मंत्रपूर्वक ब्राह्मण सूत्र विहित मर्यादा वहोमुख्यहै नहि अपने मुखसे रचित वा न्यून अधिक अन्यथा वेद विरुद्ध होनेसे प्रत्यवाय होताहै ॥ अथकन्यादानका फल लिखतेहै ॥ भूमिदानं वृषोत्सर्गो दानं गजसुवर्णयोः । उभयतो वदनागोश्च तुलाया दानमुत्तमम् ॥ कन्यादानं जीवदानं शरणागतपालनं । वेददानं महाराज महादानानि वै दश ॥ तत्रापि च महाबाहो कन्यादानमनुत्तमम् । कन्यादानात्परं दानं न भूतं न भविष्यति ॥ यह मार्तण्डमे लिखाहै ॥ अर्थ— भूमी १ वृषोत्सर्ग २ हस्ति ३ सुवर्ण ४ ऊर्ध्वमुखीगो ५ तुला ६ कन्या ७ शरणागतकी रक्षा ८ जीवदान ९ वेददान १० यह महादानहे तिस्मेभी कन्यादान अधिकहे ॥ अन्यच्च विधिवत्कन्यकादानं अश्वमेधसमं कलो । गोविंदराज ऐसे कहतेहै ॥ अर्थ अन्य युगोंमे अश्वमेध और कलियुगमे कन्यादान यह दो सदृशहे ॥ अन्यच्च. तिस्रः कोट्योर्धकोटी च तीर्थानां वायुरब्रवीत् । दिविभुव्यंतरिक्षेच कलौ ते सन्ति जान्हवी ॥ वेदतंत्रप्रणीतायायानिमन्त्राणि सर्वशः । वेदमातुर्जपे तेषां फलं प्रोक्तं कलौयुगे ॥ पद्मपुराणमे यह लिखाहे ॥ अर्थ सुगम है ॥ चिंतामणीनां गिरयः कल्पवृक्षाः सहस्रशः । व्रजाश्च कामधेनूनां तत्र गच्छेद्दुहितृदः ॥ कांचनानि च हर्म्याणि नद्यः पायसकर्दमाः

फलान्यमृतकल्पानितत्रगच्छेद्दुहितृदः ॥ यह मार्कण्डेयका वचन है॥ ऐसा महाफलका दाता कन्यादान तीनप्रकारकाहै॥प्रथमवाग्दान अर्थात् सगाई वाकुडमाई द्वितीय कन्यादान अर्थात् पाणिग्रहण वा विवाह तृतीय खट्वादि पारिबर्हदान प्रमाणभी जैसे वृद्धमनुजी, वरंसम्पूज्य खार्जूरं फलं दत्वामुखे तथा । तस्मिन्कालेऽग्निसान्निध्ये पितातुभ्यं प्रदास्यति ॥ इति प्रतिज्ञयायच्च कन्याभ्रात्रादिनाच सा ।वाचायद्दीयते तुल्ये वाग्दानं प्रथमं स्मृतं ॥ वरं संपूज्य विधिना वेद्यमग्निं विधायच। दात्रा प्रदीयते यच्च न्यासंककल्प्य वाग्यतः ॥ द्वितीयं कन्याकादानं तत्तु प्रोक्तं मनीषिभिः।वधूवरौ च खट्वायां मंण्डपे संनिवेश्यच ॥ पारिबर्हं महद्दत्वा जलेन च विसर्जनम् । तृतीयं कन्यकादानं व्यासाद्या मुनयो जगुः॥ अर्थ सुगमहै ॥

तत्रकन्या भ्रातेति] कन्याकाभाई वा पुरोहित अथवा अन्य ब्राह्मण. सगाई करे. मनुजी भी लिखते ॥ ऋत्विक् पुरोहितः पुत्रो भार्य्या भृत्यः सखा तथा । एतद्द्वारा कृतं यच्च तत्कृतं स्वयमेव हि ॥ अर्थ इन् द्वारा जो किया जाय वह आपही किया होताहै ॥

उदङ्मुखः प्रत्यङ्मुखो वा उपाविश्य प्राङ्मुखस्य वरस्य गन्धाक्षतैरर्च्चितस्यमुखदत्तखार्जूरादिफलस्य स्वयंपूगीफलयज्ञोपवीतमादाय ॥

भा०टी० उत्तराभिमुख वा पश्चिमाभिमुख स्थित होकर पूजनकरे इस्में प्रमाण मनुजीका लिखतेहै ॥ पूज्यश्च प्राङ्मुखो यत्रोदङ्मुखःपूजको भवेत् । अर्च्चयेद्देवमाभित इति प्रत्यङ्मुख

श्वसः) यह वाक्य जो है कि (प्रत्यङ्मुखं स्थापयेत्तु देवं पूज्यं तथैव च। पूजकः सन्मुखस्तत्र इति धर्मानुशासनम्) कहते है कि यद्यपि पूज्य होनेसे वरको प्रत्यङ्मुख होना उचितहै तथापि (प्रत्यङ्मुखं स्थापयेत्तु देवं पूज्यं वरं विना॥ वरस्तु प्राङ्मुखः पूज्यः पूजकः स्यादुदङ्मुखः) इस व्यासस्मृति प्रमाणसे तथा (प्रत्यङ्मुखान्पूजनीयदेवांस्तत्संमुखः स्थितः । अर्च्चयेन्नित्यमेवेत्थं विधिरित्येव सम्मतः॥ स्थित्वाचाभिमुखंनार्च्चेच्छम्भुं जामातरं तथा। इंद्रं चोदङ्मुखं स्थाप्य स्वयं प्राङ्मुख संस्थितः ॥ उदङ्मुखोर्च्चयेद्दाता वेदिस्थं प्राङ्मुखं वरम्)॥ यह पराशर जीके वचनसे वरको प्राङ्मुख वैठाय गंधाक्षतसे पूजन कर मुखमे खर्जूर (छुहारे) का फलदेवे (नारिकेलफलं चैव तदन्तर्भक्ष्यमुत्तमम् खर्जूरादि फलं राजन् विवाहे मङ्गलप्रदम् ॥ इस भृगुजीके वचनसे विवाहादिक सब मंगल कार्य खर्जूरादि फल देना सिद्ध होताहै। (स्वयमिति) आप पुगीफल (सुपारी)यज्ञोपवीतको लेकर कन्याका भ्राता वापुरोहितादिमान्य पुरुष जो आगेलिखेंगे वह कहकर वरण करे अर्थात् सगाई वा कुडमाईकरे वरकैसा चाहिये वह लिखतेहै ययोरेव समं वित्तं ययोरेवसमं कुलं। तयोर्विवाहो मैत्रीच न तु पुष्टविपुष्टयोः ॥ यह महाभारतमे लिखाहै अर्थ जिनका धन कुल आचरणादि समहो। उनका विवाहकर्ना चाहिये लक्षण वरके जैसे गोविंदराज जीनेकहेहै (सुशिलश्चारुबुद्धिश्च व्यवहारपटुः क्षमी ॥ उदारो वाक्पटुर्वाग्मी गुणयुक्तो वरो मतः ॥ परस्परातसंबंधकुलजातो महाकविः । का-

न्तःसुलक्षणः श्रीमान् मातृ पितृ युतोवरः ॥(इत्यादि लक्षणसम्पन्नवर चाहिये ॥

तस्मिन्कालेग्निसांनिध्येस्नातःस्नाते ह्यरोगिणि॥अव्यङ्गेऽपतितेऽक्लीबेपितातुभ्यं प्रदास्यतीपठित्वा हस्तेदद्यात्

भा०टी०(तस्मिन्कालेति) तिस प्रसिद्धकाल विवाहसमयमे अग्निके समीप साक्षिद्वारा वाताश्मरी कुष्ट मेहमहोदर भगन्दर इत्यादि रोगरहित—यथा वाताश्मरी कुष्ठमेहमहोदरभगंदराः ॥ अर्शश्च ग्रहणी चैव महारोगाः सुदुस्तराः ॥ इनके भेद चिकित्सा शास्त्रमे लिखे है मूल विरुद्ध होनेसे नहि लिखे जाते है इनसे रहित और व्यंग जो योनिज और जातिज दोप्रकार का उस्से रहित अर्थात् धृता (धरेल) विवाहिता(दासी) यह तीन स्त्री निषिद्ध होतीहै इन्के लक्षण जो विधवा स्त्री प्रीतिपूर्वक सुंदर वाणि और पुष्कल भोजनद्वारा घरमे स्त्रीभावनासे रक्षितहो उस्को धृता (धरेल) कहते है ॥ और जो पूर्व विवाहीहो अतन्तर मरजाने पतिके फिरकन्या भावसे जो विवाहिजाय उस्को विवाहिता स्त्री कहते है ॥अर्थात् पुनर्भु ॥ दासी उस्को कहते है कि प्रथम घरमे भृति (नौकरी) कर्तीहो फिर यौवन सुंदरतासे कामवश होकर जो स्वीकारकी जावे ॥ इन स्त्रियोसे उत्पन्न संततिको अपने कुलमे जो मिलाना वह योनि व्यंग कहाताहै ॥ और अपनि जातिका हीन जातिसे सम्बन्धको जातिव्यङ्ग कहते है ॥ इनसे रहित तुमको और चक्षु चरण कटि इन्का भंग और अंधता पंगु प्रभृतियो देहव्यङ्ग

उन्से रहित और अपतितको ब्रह्महा मद्यपस्तेनस्तथैव गुरुतल्पगः। एते महापातकिनो यश्च तैः सह सम्वसेत् ॥ ब्रह्महत्यादिके पापे जातिभ्रंशकरे तथा। वृषली गमनेत्यर्थं सावित्रीविरहेपि च ॥ अभक्ष्यभक्षणे चैव पतितो भवति ध्रुवम् इत्यादि कालादर्शादि निरूपितपतनादिसेरहित और क्लीब अर्थात् नपुंसकता से रहित को प्र० भस्मनि होमकरणात्षंढेकन्याप्रदानतः। कुलधर्मपरीत्यागान्नरके नियतं वसेत् ॥ याज्ञवल्क्य जी वरके लक्षण मे भी लिखतेहैं ॥ एतैरेव गुणैर्युक्तः सवर्णः श्रोत्रियो वरः। यत्नात्परिक्षितः पुंस्त्वे युवा धीमान् जनप्रियः)इति प्रथमाध्याये ⁕ अर्थ पूर्वोक्तगुणोयुक्त सवर्णी अर्थात् ब्राह्मणीसे ब्राह्मण क्षत्रियाणीसे क्षत्री इत्यादि वेदके जाननेवाला और यत्नसे पुंस्त्वमे परीक्षा कियाहो। युवान् और सर्व प्रियहो ॥ ⁕ इत्यादि दोषसे रहित तुमारे को पिता कन्यादान देवेगा यह प्रतिज्ञा को उच्चस्वरसे कहकर वरके हाथ पूगीफल यज्ञोपवीत कन्याका भ्राता अथवापुरोहित वा ब्राह्मणद्वारा देवे ॥ इति वाग्दानविधिःसमाप्तः॥शुभंभूयात् ॥ श्रीः॥ श्रीः ॥ भावयह है कि कन्याका भाई आप वा पुरोहित से अर्थात् जिसपर अपना दृढ विश्वासहो उस्के द्वारा सगाई करे ॥

और कन्यासे वर दुगणा. अथवा डेढा अर्थात् कन्या ८ वरसकी बालक १६ वरसका होना चाहिये ना मिलनेपर ऐसा तो कन्या ८ वर्ष की बालक १२ वर्षसे कम (न्यून) ना होना चाहिये ॥ अन्यथा जो लोभ मोहादिके वशसे वाधनी देख क-

र आठवर्षके बालकके गलेमे १६ वर्षकी कन्याको चमेडदेवे उस्कोभी प्रत्यक्ष फल मालूम होना चाहिये कि बालक पुष्ट नहीं-होता और शुष्क वदन बलरहित प्रजोत्पादनमे असमर्थ होताहै उस्को संतान उस्से निर्बल होतीहै इत्यादि बहुत दोषहै जि-न महाशयांके देखनेकी इच्छाहो वह मैने एक चिकित्सा शास्त्र-को दिनरात्री ऋतुचर्यादि बहुत प्रकरको युक्त स्वस्थ पुरुष नाम कर ग्रंथ बनायाहै उस्के देखले प्रार्थनेयं वैदिक विष्णुदत्तस्य ॥

यजु०अध्याय १७ मंत्र ३

ॐ ऋतवंस्थाऽऋतावृधा ऋजुष्य स्था ऋतावृधा । घृतश्च्युतोमधु श्च्युतोविराजोनामंकामदुघाऽअक्षी यमाणाः ॥

इतिपठित्वाशिरस्यक्षतादिकंदद्याद्वरः ।भ्रात्र्यतिरिक्तपक्षे पितेत्यत्रदातेत्युच्चारयेत् ॥

भा०टी०(ऋतवस्था इति) भोकन्या के देनेवाले तुम ऋत-नामसत्यमे तिष्ठित होनेवालेहो अर्थात् सत्य प्रतिज्ञा युक्त रहें । (ऋजुष्ये सन्मार्गे तिष्ठन्तीति ऋजुष्यस्थाः) अर्थात् सन्मार्गमे स्थितहो (ऋता सत्या अवधयो मर्य्यादाः समया वा येषांते) [अ-

र्थात् मर्यादा पालक हो ॥ (घृतश्च्युतः) बहुत होनेसे जिस्के घरमे घृत गिरताहै ॥ (मधुश्च्युतः) मधूनि मधुराणि गुडशर्करानि श्रावयन्ति] अर्थात् बहुत मधुर रसवाले तुम होवो ।[विशेषेण राजन्ते इति विराजः] सुशोभितहो (कामदुघा) कामनाके पूर्ण कर्नेवालेहो (नाम) प्रसिद्धहो [अक्षीयमाणाः] नहि नष्टभये धनादि जिनके एसे आपहोवे ॥ इस मंत्रसे वर आशीर्वाद देकर जो वाग्दानकरे उस्के शिरपर अक्षताको धरदे ॥

अथसर्वेभ्योवेदाध्ययनश्रवणक्रियाव्यतिरिक्त क्रियानिवृत्तये ऽक्षतानिदत्वा सहस्तस्वरेणा भावेतारस्वरेण वेदोच्चारणं कुर्य्यात् ॥

भा०टी०(अथसर्वेभ्य इति) ग्रंथके आदमे मंगलकर्ना चाहिये इस शिष्टाचार से अथ शब्दका मंगल और निषेकादि संस्कारोसे अनंतर यहदो अर्थहै ॥ प्रमाण (अथ मंगलानन्तरारम्भ प्रतिज्ञाधिकार समुच्चयेषु) विवाह के आरम्भमे हस्तस्वर सहित वेद उच्चारणकरे प्र० याज्ञवल्क्य शिक्षामे हस्तस्वरेण योधीते स्वर वर्णार्थ संयुतमित्यादि बहुत लिखाहै ॥

अभावमे ऊचेस्वरसे कंठस्वरवा हस्त स्वरसे यथा बुद्धिकरना चाहिये । तारस्वरसे उच्चारण कर्नेभी प्र० याज्ञ वल्क्यमे यथा स्वरस्तु द्विविधः प्रोक्तो वेदो च्चारण कर्मणि । कण्ड स्वरोहस्तस्वरो गौणमुख्यप्रभेदतः ॥ तारस्वरेण तावेवभवेतामिति निश्चयः । वेदस्यो च्चारणं कुर्यात् यथाविधि च वेदवित् ॥

सर्वविघ्नविनाशाय सर्वारम्भेषु सिद्धये ॥ अर्थ. हस्तस्वर और कण्ठस्वर गौणमुख्य न्यायसे दोभेदहै वह दोनो हि ऊचेस्वरसे कहे जातेहै विघ्नकेनाश और सर्वसिद्धिलिये आदिमे वेदोच्चारण कर्ना-चाहिये। अक्षतदेकर अन्यकार्यसे निवृत्तहो वेदभगवान्का उच्चारण और श्रवण कर्ना सर्वपुरुषको चाहिये ।

शुक्लयजुर्वेद० संहिता वाजसनेयी अध्याय २३ मं० १९ ॥

गणानान्त्वा गणपतिꣳहवामहेप्रियाणान्त्वाप्रियपतिꣳहवामहे॥निधीनान्त्वां निधिपतिꣳहवामहेव्व सोमम । आहमजानिगर्ब्भधमात्वमजासि गर्ब्भधम्॥ १ ॥

भा०टी०(गणानान्त्वेति) (हेममवसो) मेरेधन श्रीगणेशदेव (गणानांपतिं) गणाकेस्वामि (त्वां) तुमको (हवामहे) बुलावतेहै(प्रियाणां)इंद्रादि देवताका जो(प्रियपतिं) तारकादिदैत्योंके वधसे प्रियकार्तिकेयादि उनके विघ्नके नाशकर्नेमे समर्थ(त्वां)तुमको (हवामहे) बुलावतेहै [निधीनांनिधिपतिं] निधीजोधनादि उनमेजो निधि अर्थात् अनंतफल देनेवालीयोगसिद्धि उनकेस्वामी तुमको बुलातेहै (हेगणपते अहं त्वया अजानि) हेगणेशदेव मुझको

तुमने उत्पन्नकिया । कैसामैहु (गर्भधं) मातेके गर्भसेपैदाहुआ (अज) हेअनादि (त्वं) तुम (गर्भधमाऽसि) गर्भसेनहींभयेहो। भाव गर्भद्वारा परतंत्रतासेमैजीव और आप गर्भादिरहित स्वतन्त्रतासे प्रकाशहुये ईश्वरहै इसलिये सर्वजगत वनानेमे सामर्थहो इति॥

यजुः शु० अध्याय १६ मन्त्र २५ ॥

ॐ नमो॑ गुणेभ्यो॑ गुणप॑तिभ्यश्च वो॒ नमो॒ नमो॒ व्रातेभ्यो॒ व्रातप॑तिभ्यश्च वो॒ नमो॒ नमो॒ गृत्सेभ्यो॒ गृत्सप॑तिभ्यश्च वो॒ नमो॒ नमो॒ विरू॑पेभ्यो विश्वरू॑पेभ्यश्च वो॒ नमः॑ ॥

भा०टी०[नमोगणेभ्यो]तुम गणनाम समूहोको और गणोके स्वामियाको नमस्कारहे(व्रातेभ्यो)व्रातनाम राशीभूत तुमको और (व्रातपतिभ्यो)राशीभूतोके स्वामि तुमको प्रणामहे॥(नमोगृत्सेभ्यो) नमस्कारहै विन्नके कर्नेवाले याको वा विषयमे लंपटाको वा बुद्धिवालो तुमको (गृत्सपतिभ्योनमः) और उन्के पालनेवाले तुमको प्रणामहे (नमो विरूपेभ्यो) प्रणामहे अनेकरूपवालो वा कुत्सित रूपवालो वा वशिष्ट रूपवालोको (विश्वरूपेभ्यश्चवोनमः) संपूर्णरूपवालो तुमको प्रणामहै ॥ इति गणेशस्तुतिः॥

शुक्ल० यजु० अध्याय० ३४ मन्त्र ४५॥

सुहस्तोमाः सुहछन्दसऽआवृतः सुहप्रमाऽऋषयः सुप्तदैव्याः। पूर्वेषाम्पन्थामनु दृश्यधीराऽअन्वालेभिरे रुथ्योनरश्मीन्॥

भा०टी०[सहस्तोमा](सप्तऋषयः) अर्थात् भरद्वाज १ कश्यप २ गौतम ३ अत्रि ४ विश्वामित्र ५ जमदग्नि ६ वशिष्ट ७ यह सातऋषि (पूर्वेषां) प्राचीनोके (पन्थानं) मार्गको (अनुदृश्य) देखकर (अन्वालेभिरे) सृष्टिको उत्पन्नकर्तेभये कैसे ऋषि (सहस्तोमाः) सृष्टिकर्नेकी इच्छावाले (सहच्छन्दसः) छन्द अर्थात् वेदसहित ज्ञानवान् (आवृतः) आशब्दसे कर्म उससे युक्त अथवा अपने जो कर्म श्रद्धा सत्यप्रधान उनसे युक्त अर्थात् तपरूपकर्मोंके अनुष्ठानकर्नेवाले (सहप्रमाः) यथार्थ ज्ञानयुक्त प्रमाण (यथार्थज्ञानंप्रमा) (दैव्याः) जो ब्रह्माकि प्रथम दैवीसृष्टीहै और ईश्वरतासे सृष्टिकर्नेमे समर्थ (धीराः) ज्ञानसृष्टियुक्त (कथं) कैसे (अन्वालेभिरे) सृष्टिकर्तेभये (रथ्योनरश्मीन्) रथ्य जो सारथि जैसे रश्मियोसे॥ भावहै किउत्तमसारथि वांछितदेशकी प्राप्ति लिये और घोडोके बांधनेलिये रश्मिआको बनाताहै। तैसे वह ऋषि कारणोसे सृष्टि रचतेभये॥ इति मङ्गलस्तुतिः॥

यजु० अध्या ३४ मंत्र ५

यज्जाग्ग्रंतोदूरमुदैति दैवं तदुसुप्तस्य तथैवैति । दूरङ्गमञ्ज्योतिषाञ्ज्योतिरेकन्तन्मेमनः शिवसंकल्पमस्तु॥

भा०टी०[यज्जाग्रतः] जो जाग्रतअवस्थामे इन्द्रियोसे (दूरमुदैति) दूरको जाताहै कैसाहै (दैवं) देवस्वरूप (तदुसुप्तस्यतथैवैति) स्वप्नावस्थामे भी सूक्ष्मेंद्रियोसे स्वरचित विषयोमे भ्रमताहै (दूरंगमं) दूरगामी (ज्योतिषांएकं) इंद्रियोमे प्रधान ज्योतिः प्रकाशकर्नेवाला प्र०भगवद्गीताका. (इन्द्रियाणांमनश्चास्मि) (तन्मेमनः) ऐसा मुझका मन (शिवसंकल्पमस्तु) सत्वप्रधान वृत्तिवाला अथवा ब्रह्मलोकादिकोमे बसनेवाला होवे ॥

यजु० अध्याय ३४ मंत्र ६॥

येनकर्माण्यपसो मनीषिणोयज्ञे कृण्वन्ति विदथेषुधीराः। यदपूर्वंयक्षमंमन्तः प्प्रजानान्तन्मेमनः शिवसंकल्पमस्तु ॥

भा०टी०[येनकर्मोणि] (येन) जिस मनकर्के (अपसो मनीषिणः) अप अर्थात् कर्ममे कुशल प्रमाण निघंटु । २ । १ (अप इति कर्मनाम) (यज्ञेकर्म्माणि कृण्वन्ति)यज्ञमेकर्मोको विस्तृत कर्तेहैं कैसेहै (विदथेषुधीराः) यज्ञादिकोमे जोपण्डित है वा यज्ञ साधन ज्ञानमें(यदपूर्वं)जो अपूर्व अर्थात् नित्य वा अद्भुत(यक्ष्मं) पूजनेयोग्य(प्रजानामन्तः)देहोके अन्तर वर्तनेवाला वह मन शिव संकल्प युक्तहो ॥ ६ ॥

यजु अ० ३४ मन्त्र ७

यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतम्प्रजासु । यस्मान्न ऽऋते किञ्चन कर्म्म क्रियते तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥

भा०टी०[यत्प्रज्ञानमिति] (यत्प्रज्ञानं) जो मन बुद्धिरूप(उत) समुच्चयसे (चेतः) चेतनतासे स्मरणात्मक ज्ञान(धृतिश्च) धैर्य्यरूप (ज्योतिरन्तः) इंद्रियोके प्रकाश कर्नेवाला (प्र० सुखंदुःखं धृतिरधृति संशयं विपर्ययकामःसर्वमनएवेति श्रुतिः) (प्रजासु अमृतं) विनाशि शरीरोमे जो अमृत अर्थात् नित्य (यस्मान्न ऋते किंचिनकर्म क्रियते) जिसकेविना कोईका मनहि कियाजाता वह मेरामन शिव संकल्पवाला होवे ॥

शुक्ल यजुर्वेद० अध्याय० ३४ मन्त्र८

येनेदम्भूतम्भुवनम्भविष्यत्परिगृहीतममृतेनसर्व्वम् । येनयज्ञस्तायतेसप्तहोतातन्मेमनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥

भा०टी०[येनेदमिति] (येनेदम्भूतं भुवनं भविष्यत्परिगृहीतं) जिसने वर्तमान भूतभविष्यत् तीनकालमे संपूर्ण भुवनकोश जानाहै कैसेने (अमृतेन) नित्यने (येनसप्तहोता यज्ञस्तायते) जिस मनने सप्तहै होता जिस्मे ऐसा अग्निष्टोमनाम यज्ञ विस्तृतकरीदा वह मेरामन शिव सङ्कल्पवाला होवे ॥

यजु अध्याय ३४ मंत्र ९ ॥

यस्मिन्नृचः सामयजूᳬषियस्मिन्प्रतिष्ठितारथनाभाविवाराः ।यस्मिंश्चित्तᳬसर्व्वमोतम्प्रजानान्तन्मेमनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥

भा०टी०[यस्मिन्नृचः](सामयजूᳬषि) अर्थात् जिस्मे ऋक् यजु सामवेद (प्रतिष्ठिताः) आश्रितहै (रथनाभौ—आरा—

इव) रथके चक्रकी नाभिये आरकीन्याई (यस्मिन् सर्वं-प्रजानां-चित्तं ओतं) जिसमे संपूर्णप्रजाका चित्त सम्बद्धहै ऐसा मेरामन शिवसंकल्प युक्तहोवे ॥

यजुर्वेद० शु० अध्याय० ३४ मंत्र० १०

सुषा॒र॒थिरश्वा॑निव॒ यन्म॑नु॒ष्या॒न्ने॒नी॒यते॒ऽभीशु॑भिर्वा॒जिन॑ऽइव। हृत्प्र॑ति॑ष्ठं॒ यद॑जि॒रं जवि॑ष्ठं॒ तन्मे॒ मन॑ः शि॒वस॑ङ्कल्पमस्तु ॥ १० ॥

भा०टी०[यन्मनुष्यान्नेनीयते) जो मन मनुष्यलोकसे लैकर सर्वेदेव दानव ऋषि इत्यादि स्थूल सूक्ष्म जीवाको श्रेष्ठ और निषिद्ध कर्ममे लगाताहे किसकीतरह (सुषारथिर्भीशुभिर्वाजिनः अश्वान्इव) श्रेष्ठसाराथि रश्मिसे वेगवाले अश्वाको मार्गसे निवृत्त और जैसे प्रवृत्तकरे (यत्हृत्प्रतिष्ठं) जो मन हृदय गतहै (अजिरं) नित्यहै (यविष्ठं) अतिशय वेगवाला वह मेरामन शिवसङ्कल्प युक्तहोवें ॥ १० ॥ इति शिवसङ्कल्प व्याख्या सम्पूर्ण ॥ शुभम् ॥

अथस्वस्तिवाचनम्।

यजु० अध्याय २५ कं०१८

स्व॒स्ति न॒ऽइन्द्रो॑ वृ॒द्धश्र॑वाः स्व॒स्ति

नं॑÷पू॒षा वि॒श्ववे॑दाः॑ ॥ स्व॒स्ति न॒स्तार्क्ष्यो॒ऽअरि॑ष्टनेमिः॒ स्व॒स्ति नो॒ बृह॒स्पति॑र्दधातु ॥ १ ॥

भा०टी० वडीकीर्तिवाला इन्द्र हमारे आवनाशि शुभको देवे और सर्वधनोका स्वामिपूषा हमको स्वस्तिदेवें नहीं नष्टभई चक्र-धारा वा पक्ष जिस्के ऐसा रथवागरुड हमको स्वस्तिकोदे और देव-ताओंकागुरु बृहस्पतिजी हमको स्वस्ति अर्थात् कल्याणकोदेवे॥

यजु अध्याय ३६ । कंडि ३६ ॥

पयः॑÷पृथि॒व्याम्पय॒ऽओष॑धीषु॒पयो॑ दि॒व्य॒न्तरि॑क्षे॒पयो॑धाः॑ । पय॑स्वती॒ः प्र॒दिशः॑÷सन्तु॒मह्य॑म् ॥ २ ॥

भा०टी० वे अग्निदेव तुम पृथिवीमे पय नामरसको धारणकरो और ओषधी अन्नादिमेभी रसकोदे (ओषध्यः फलपाकान्ता)इ-ति । इसप्रकार स्वर्गमे और अंतरिक्ष आकाशमे रसको स्थितकर परंतु मेरे लिये दिशा और विदिशा पयस्वती नाम रसयुक्त होमे य ह प्रार्थना कर्ताहु ॥

यजु अध्याय ५ कंडि २१॥

वि॒ष्णोर्॒रराट॑मसि॒ विष्णोः॒ श्नप्त्रे॑

स्त्थोव्विष्णोः स्यूरसिव्विष्णोर्द्ध्रुवोसि । वैष्णवमसिव्विष्णवेत्वा ३ ॥

भा०टी०हेदर्भरूपविष्णु तुम हविर्धान मण्डपके ललाटस्थानहो हेरराट्यन्त तुमविष्णुनाम हविर्धान मण्डके (श्नप्त्रेस्त्थः) ओष्ठकी सन्धिरूपहो हेलस्यूजनि अर्थात् बृहत्सूची तुम विष्णुनाम हविर्धान मण्डपकी सूचीहो हेरज्जुग्रन्थि तुम हविर्धानकी ध्रुवनाम ग्रंथिहो हेहविर्धान तुम विष्णुसंबंधिहो इस लिये अर्थात् विष्णुसंबंधि होनेसे आपकोस्तुति कर्ताहुवास्पर्शकर्ताहु ॥ ३ ॥

यजु०अध्याय १४ कंडिका २० ॥

अग्निर्द्देवताव्वातोदेवतासूर्य्योदेवताचन्द्रमादेवताव्वसवोदेवतारुद्रादेवतादित्यादेवतामरुतोदेवताव्विश्वेदेवादेवताबृहस्पतिर्द्देवतेन्द्रोदेवताव्वरुणोदेवता ॥ ४ ॥

भा०टी०हे हविर्धान और जो तुम आग्निवायु सूर्यचंद्रमा वसु ८ रुद्र ११ आदित्य १२ मरुत ४९ विश्वेदेवा १३ बृहस्पति इ

न्द्रवरुण इत्यादि देवता स्वरूपहो इस लिये आपकी स्तुति वा स्पर्श कर्ता हुं ॥

यजु० अध्याय ३६ कंडिका १७ ॥

द्यौःशान्तिरन्तरिक्षꣳशान्तिःपृथिवीशान्तिरापःशान्तिरोषधयःशान्तिःवनस्पतयःशान्तिर्विश्वेदेवाःशान्तिर्ब्रह्मशान्तिःसर्वꣳशान्तिःशान्तिरेवशान्तिःसामाशान्तिरेधि ॥ ५ ॥

भा०टी०स्वर्गरूप जो शांति और आकाशरूप जो शांति पृथिवीरूप जो शांति जलरूप जो शांति औषधीरूप जो शांति वृक्षरूप तथा सर्वदेवरूप और शांतिस्वरूप जो शांति वह मेरेको हे गणेशदेव आपकी प्रसन्नतासे होवे ॥

यजुर्वेद अध्याय ३० । अनु० १ मं० ३ ॥

विश्वानिदेवसवितर्दुरितानिपरासुव ॥ यद्भद्रन्तन्नऽआसुव ॥ ६ ॥

भा०टी०हे अंतर्यामी सूर्यदेव । तुम मेरे संपूर्ण पापको दूर ले

जाओ अर्थात् नष्ट करो और जो कल्याणह वह मुझको देवो ॥ सूर्यभगवान्को अन्तर्यामि होनेमे प्रमाण (आदित्यचन्द्रावनिलोऽनिलश्च द्यौर्भूमिरापो हृदयंयमश्च । अहश्चरात्रिश्च उभेच सन्ध्ये धर्मोपिजानाति नरस्यवृत्तम्) इति नीतौ (सूर्य आत्माजगतस्तस्थुषश्च इतिश्रुतिः)

यजुर्वेद अध्याय १६ अनु ७ मं ४८

इमारुद्रायंतवसे कपर्दिनेक्षयद्वीरा यप्रभंरामहेमतीः ॥ यथाशमसंद्विपदेचतुंष्पदेविश्वंपुष्टङ्ग्रामेऽअस्मिन्ननातुरम् ॥

भा०टी०(तवसे) बलवान् (कपर्दिने) जटिल (क्षयद्वीरा) शूरवीरो युक्त वा शूरवीरोंके नाशकर्नेवाले और (द्विपदे) पुत्रोंके देनेवाले (चतुष्पदे) च पायनाम पशुओंके देनेवाले जोमहादेव उनसे जेसे इस ग्राममे सुख और संपूर्ण लोक सुखी नीरोग होवै तैसे मतिको समर्पण कर्तेहै अर्थात् प्रार्थना कर्ते है ॥ ७ ॥

यजु० अध्याय २ मंत्र १२ ॥

एतन्तेदेवसवितर्य्यज्ञम्प्राहुर्बृह

स्प्पतयेब्रह्मणे ॥ तेनेषुज्ञमंवुतेनंयु ज्ञपंतिन्तेनुमामंत्र ॥ ८॥

भा०टी०हे सर्वान्तर्यामि सूर्यदेव यह किया हुआ यज्ञ तुमारे लिये यजमान लोक कहते है किञ्च तुमारेसे प्रेरित देवोके यज्ञमे जो ब्रह्मा बृहस्पति उस्के लियेभी कहतेहै और अपना जान यज्ञ-रक्षा करो और ब्रह्मारूप जो मै मुझकीभी रक्षा करो ॥ ८ ॥

सुप्रतिष्ठितावरदाभवन्तुदेवाः ॥ १० ॥ इतिस्व स्तिवाचनम् ॥

भा० टी० सत्काराकिये हुए देवता लोकभी वरके दाता होवें ॥ १० ॥ इतिश्री०

ॐकारपूर्वेहियोगोपासनंयानिनित्यानिकर्माणिइत्या दिश्रुतिसेॐपूर्वकसर्वमंत्रोकाउच्चारणकर्नाचाहिये ॥

इति श्रीकर्पूरस्थल निवासी दैवज्ञ दुनिचंद्रात्मज (शोरी) पं० विष्णुदत्तकृतटीकायां पंचम प्रकरणं समाप्तिमगात् ॥

(इति पंचम प्रकरणम्)

अथ विवाहविधौ षष्ठं प्रकरणम् ।

ॐस्वस्ति श्रीगणेशाय नमः॥ अथविवाहः ॥ तत्रक न्याहस्तेनषोडशहस्तपरिमितंमण्डपंविधायतद्दक्षि

णस्यांदिशिपश्चिमांदिशमाश्रित्यमण्डपसंलग्नमुत्तराभिमुखंकौतुकागारंचमण्डपाद्बहिरैशान्यांजामातृचतुर्हस्तपरिमितांसिकतादिपरिष्कृतांवेदीञ्चकारयेत्

भा० टी० स्वस्तिवाचनके अनन्तर विवाहविधि लिखते हैं कि कन्याहस्तपरिमाणके सदृश १६ हाथका मण्डप बनाकर उसकी दक्षिणकोणमे पश्चिमदिशाको लै अर्थात् निर्ऋतिकोणमे उत्तराभिमुख जानाआनेके लिये और कुलरीति करनेके लिये कौतुकागार बनावे और मण्डपके बाहर साथ मिलता ईशानकोणमे जामातृ(जुवाई) के चारहस्त परिमिता तुष (तुह)केश (रोम) शर्करादि निषिद्ध वस्तुयोसे रहित अर्थात् शुद्ध अग्निस्थापनके लिये चारथंभोवाली वेदीको बनवावे ॥ और विवाहमे तिलकनाम मण्डलरचना (विवाहादौ लिखेनित्यं तिलकंनाममण्डलं) इस कात्यायनजीके प्रमाणसे—तिलकमण्डलका लक्षण लिखते हैं॥ (सूर्यादयोग्रहायत्र राजन्ते मध्यसंस्थिताः। इन्द्रादयः प्रतिदिशं स्वस्वभावेष्ववस्थिताः। बहिःशिवसुताद्याश्च सर्वतो भद्रमुच्यते ॥ विघ्नराजो भवेद्यत्र मध्येनान्यस्तुकश्चन। सुमहत्सुन्दरश्चैव तिलकं नाम मण्डलम्। गृहारामप्रतिष्ठायां दुर्गाहोमे नवग्रहे। सर्वतोद्रभकं कुर्य्यान्मण्डपे तिलकं लिखेत् ॥ ३ ॥ इत्यादिवेदी बनानेकेभी वहुत प्रमाणहै परंतु विस्तारके भयसे लिखे नहीं जाते ॥

विवाहदिनेकृतनित्यक्रियेणजामातृपित्रामातृपूजापूर्वकंआभ्युदयिकश्राद्धंकर्तव्यम्॥कन्यापितास्नातःशुचिःशुक्लांबरधरःकृतनित्यक्रियोमातृपूजाभ्युदयि

केकृत्वाअर्हणवेलायांमण्डपेप्रत्यङ्मुखःप्राङ्मुखंवर मूर्द्ध्वजानुंतिष्ठंतंसंबोध्य ॥ ततःस्वस्तिवाचनंगणेश कलशादिपूजनंचकृत्वा ॥

भा०टी०विवाहके दिन वरके पितानेनित्यक्रियासंध्योपासन पंचमहायज्ञादि मातृपूजा पूर्वक आभ्युदयिक (नांदिश्राद्ध) कर्ना चाहिये ॥ कन्याका पिताभी स्नानकर पवित्रहो नित्यक्रिया कर धोतवस्त्र धार षोडशमातृपूजा नांदिमुखश्राद्धकर पूजनकालमे मण्डपमे पश्चिमाभि मुखहो ऊर्द्ध्वजानु प्राङ्मुख बैठे वरको संबोधन कर स्वस्तिवाचन कलश पूजन गणेशादि पूजनकरे ॥ विवाहमें अवश्य नांदिमुख श्राद्धके कर्नेमे प्रमाण (कन्यापुत्रविवाहेषु प्रवेशेनववेश्मनि ॥ चूडाकर्मणिबालानांनामकर्मादिके तथा ॥ सीमन्तोन्नयनेचैव पुत्रादिमुखदर्शने) इत्यादि बहुतप्रमाणहै (सर्ववृद्धौहि पितरःपूजनीयाःप्रयत्नतः) इति शातातपः । इसकी प्रक्रियाश्राद्धविवेकमे लिखीहै ॥ याज्ञवल्क्यजी सूक्ष्मतासे लिखतेहै ॥ एवंप्रदक्षिणावृत्कोवृद्धौ नान्दीमुखान्पितॄन् । यजेत दधिकर्कन्धुमिश्रान्पिण्डान्यवैःक्रियेति ॥ प्रथमाध्याये श्राद्धप्रकरण ।

साधुभवानास्तामितिप्रजापतिर्ऋषिर्ब्रह्मादेवतायजुश्छंदोवरार्चनेविनियोगः।ॐसाधुभवानास्तामर्चयिष्यामोभवंतमितिब्रूयात् ।ॐअर्चयेतिवरणोक्तेवरोपवेशनार्थंशुद्धमासनंदत्वाविष्टरमादायॐविष्टरोविष्टरोवि

---

(१) अर्हणवेलाकासमयज्योतिषशास्त्रोक्तजानना।

ष्टरइत्यनेनोक्ते ॐ विष्टरःप्रतिगृह्यतामितिदातावदेत्। ॐ विष्टरंप्रतिगृह्णामीत्यभिधायवरोविष्टरंगृहीत्वा ॥

भा०टी०साधुभवान् इस मंत्रका प्रजापति ऋषि ब्रह्मादेवता यजुछंद वरके पूजनमे विनियोग है विनियोग विनामंत्रोच्चरणमे दोष लिखतेहै (विनियोगंविनामंत्रः पङ्कैगौरिवसीदति) इसलिये मंत्रोच्चारणके प्रथम विनियोग कर्नाचाहिये इस्का लक्षण जैसे(ऋषिछंदोदेवतानां चकर्मणिविनियोजनं । विनियोगःसआदिष्टो मंत्रेमंत्रे प्रयुज्यते[मंत्रार्थ]आपसाधु—श्रेष्ठवृत्तिवालेहोमे हमतुमारेको पूजन कर्तेहै॥पूजनोय षट्६पुरुष होतेहै जैसे पारस्करजी लिखतेहै(षडर्घ्या भवन्त्याचार्य ऋषित्वग्वैवाह्यो राजा प्रियःस्नातकइति प्रति संवत्सरानर्हयेयुर्यक्ष्यमाणा स्त्वृत्विजइति)याज्ञवल्क्य स्मृतिमे जैसे(प्रतिसंवत्सरंत्वर्घ्या स्नातकाऽऽचार्य्यपार्थिवाः।प्रियोविवाह्यश्चयज्ञंप्रत्यर्त्विजःपुनः)अर्थात् स्नातक१गुरु२राजा३मित्र४वर ५ऋत्विक् ६यह पूज्यहोतेहै ॥ पूजनकरें ऐसे वरकहनेके अनंतर बैठने लिये वरको शुद्धआसनदेकर विष्टरको हाथमेले विष्टरो विष्टरो विष्टरः । ऐसे कहकर विष्टरग्रहणकी जिये दातावरको यह कहे । विष्टरग्रहण कर्ता हु ऐसे वरकह विष्टर हाथमेले आगेका मंत्रपढे ॥ ॥ विष्टरका लक्षणलिखेहै पंचाशताभवेद्ब्रह्मा तदर्धेनतुविष्टरः । उर्द्ध्वकेशोभवेद्ब्रह्मा लम्बकेशस्तु विष्टरः ॥ दक्षिणा वर्तको ब्रह्मा वामावर्तस्तु विष्टरः ॥ विष्टरं सर्वयज्ञेषु लक्षणं परिकीर्तितम् ॥

वर्ष्मोऽस्मीत्याथर्वणऋषिर्विष्टरोदेवताऽनुष्टुप्छन्दःउ

प्रवेशनेविनियोगः ॥ ॐवर्ष्मोऽस्मिसमानानामुद्यतामिवसूर्यः।इमंतमभितिष्ठामियोमाकश्चाभिदासति॥ इत्यनेनआसनेउत्तराग्रविष्टरोपरिवरउपशति ॥

भा०टी० (वर्ष्मोऽस्मि) इसमंत्रका अथर्वणऋषि अनुष्टुप्छन्द विष्टर देवता वरके बैठनेमे विनियोगहै ॥ [मंत्रार्थ] जैसे नक्षत्रतारा गणके मध्यसे सूर्य भगवान् श्रेष्ठहै तद्वत् अपनि जातिसे हम श्रेष्ठ है जो मेरा तिरस्कार कर्नेको यत्न कर्ता है उस्को और इस विष्टर-को पादमे रखकर, स्थित है इस मंत्रसे उत्तराभिमुख विष्टरपर बैठजावे ॥

ओंपाद्यंपाद्यंपाद्यमित्यनेनोक्तेपाद्यंप्रतिगृह्यतामिति दातावदेत् । पाद्यंप्रतिगृह्णामीत्यभिधायवरः । ओंविराजोदोहोऽसिविराजोदोहमशीयमयिपाद्यायैविराजोदोहः ॥ इतिदक्षिणंचरणंप्रक्षाल्यानेनैवक्रमेणवामचरणप्रक्षालनम् ॥

भा०टी०पाद्यं पाद्यं पाद्यं ऐसे अन्यपुरुषके कहने अनंतर पाद्यग्रहणकीजिये यह दाता कहे पश्चात् पाद्यको ग्रहण कर्त्ता हु यह वर कहे ॥ विराजो दोहोऽसि इस मंत्रका प्रजापति ऋषि अ-नुष्टुप्छन्द जलदेवता पादको प्रक्षालनमे विनियोग है [मंत्रार्थ] हे जल तुम विशिष्टदीप्ति परमात्माका दोहनाम रससार रूप हो इस लिये हे जल! आपको ग्रहण कर्तेहै किञ्च हे विराजोदोह अर्थात् मंत्रसंस्कृत जल मेरे चरणके प्रक्षालन योग्यहो ॥ मंत्रपाठ सहित दक्षिपाद धोवे । अनंतर वामपाद धोवे । इहा मंत्रके अंतमें विधान

नहि ॥ और ब्राह्मण वरका प्रथम दक्षिणपाद प्रक्षालन कर्ना (धो-णा) और क्षत्री वैश्योका प्रथम वामचरण प्रक्षालन कर्ना चाहिये, प्रमाण ० गृह्यसूत्रे(सव्यंपादं प्रक्षाल्य दक्षिणं प्रक्षालयति ब्राह्मणश्चेद्द-क्षिणं प्रथमं) और भी (ब्राह्मणो दक्षिणं पादं पूर्वं प्रक्षालयेत्सदा । क्षत्रादिः प्रथमं वाममितिधर्मानुशासनम्) यह पद्मपुराणमे लिखाहै॥

ततःपूर्ववद्विष्टरान्तरंगृहीत्वाचरणयोरधस्तात्उत्तराग्रंवरःकुर्यात् ।ततो दूर्वाक्षतफलपुष्पचंदनयुतार्घपात्रंगृहीत्वायजमानः ॥ ॐअर्घइत्यादिविष्णुर्ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दोविष्णुर्देवताअर्घदानेविनियोगः। ॐअर्घोऽर्घो ऽ र्घइत्युक्तेऽन्येनार्घःप्रतिगृह्यतामितिदातावदेत् । ॐअर्घंप्रतिगृह्णामीत्यभिधाय । वरोयजमानहस्तादर्घंगृहीत्वा । आपःस्थइत्यादिमंत्रस्यसिन्धुद्वीपऋषिरनुष्टुप्छन्दोर्घाक्षतादिधारणेविनियोगः ॥ ॐआपःस्थयुष्माभिःसर्वान्कामानवाप्नुवानीतिशिरसिकिञ्चिदक्षतादिकंधृत्वा ॥

भा०टी०पूर्वोक्तवत् और विष्टरको उत्तराग्र चर्णोके नीचे र-खकर इस्के अनंतर दूर्वा (नवीनतृण) अक्षत तण्डुल चंदन पु-ष्पयुक्त यजमान अर्घपात्रको लेकर ॥ ॐ अर्घ इस मंत्रका वि-ष्णुऋषि त्रिष्टुप्छंद विष्णुदेवता अर्घके दानमे विनियोगहै ॥ यथा र्थज्ञान होनेसे उत्तम दान होताहै इसलिये विष्टर पाद्य अर्घ्य आचमनीय आदिका तीन तीनवार उच्चारण कर्ना चाहिये प्रमाणभी गृह्यसू

र्थमे जैसे लिखाहै (अन्यस्त्रिस्त्रिः प्राह विष्टरादीनि) अर्घ ॥ १ ॥ २ ॥ ॥ ३ ॥ हे यजमानवाक्यके अनंतर अर्घको वर स्वीकार कर यजमानके हाथसे लेकर ॥ आपःस्थ इस मंत्रका सिंधुद्वीपऋषि अनुष्टुप् छंद अर्घ अक्षतधारणमे विनियोगहै ॥ [मंत्रार्थ] हे जलदेवता जिस हेतुसे तुम अमृत दुग्ध दधि मधु फल पुष्प पत्र यव अन्नादि सर्ववस्तुमे व्याप्तहै इस लिये तुमारे आश्रयहो हम संपूर्ण कामनाको प्राप्तहोमे इस मंत्रसे किंचित् शिरमे अक्षतधारण करे ॥

समुद्रंवइत्यादिमंत्रस्याथर्वणऋषिर्बृहतीछन्दोवरुणो देवताऽर्घजलप्रवाहेविनियोगः । ॐसमुद्रंवःप्रहिणोमिस्त्वांयोनिमभिगच्छत । अरिष्टास्माकंवीरामापरासेचिमत्पयः ॥ ४ ॥ इत्यर्घपात्रस्थजलमैशान्यांत्यजन् पठेत् । ततआचमनीयमादाययजमानआचमनीयमाचमनीयमाचमनीयमित्यन्येनोक्तेआचमनीयंप्रतिगृह्यतामितिदातावेदत् ॥ आचमनीयंप्रतिगृह्णामीत्यभिधायवरोयजमानहस्तादाचमनीयं गृहीत्वा ॥

भा०टी० समुद्रंव इस मंत्रका अथर्वण ऋषि बृहती छंद वरुण देवता अर्घजलके गेरनेमे विनियुक्तहै [मंत्रार्थ] हे जलदेवता सिद्ध किया अर्थ जिन्होने ऐसे तुमको समुद्रमे प्राप्त करताहु ॥ अर्थात् कारणताको प्राप्तकर्ताहै इसलिये मेरे करप्रेरित तुम (स्वांयोनिं) अर्थात् समुद्रको प्राप्त होमे किञ्च तुमारे प्रसन्नतासे हमारे भाई शूरवीर और हमारे पुत्र (अरिष्टा) अर्थात् आरोग्य रहे और मेरी पूजाके योग्य जल मत नष्टहो अर्थात् सदा रहे औ-

र मेभी पूजाको प्राप्त होमा ॥ इस मंत्रको ईशानदिक्मे त्यागन कर्ता जलको पढे इस्के अनंतर आचमनीयको यजमान लेकर ॥ आचमनीय इस मंत्रका आपस्तम्ब ऋषि उष्णिक्छन्द जलदेवता आचमनीयके देनेमै विनियोगहै ॥ यह आचमनीयहै३ऐसे अन्य पुरुषके वचनसे आचमनीय ग्रहण करो यह दातावरको कहे ।प-श्चात्वर आचमनीय ग्रहण कर्ता हु यह कहकर यजमानहाथसे आचमनी लेकर ॥

आमागन्निति परमेष्ठीऋषिर्बृहतीछन्दआपोदेवताअपामुपस्पर्शनेविनियोगः ॥ ॐआमागन्यशसासꣳसृजवर्च्चसातम्माकुरुप्रियंप्रजानामधिपतिंपशूनामरिष्टंतनूनां ॥ इत्यनेनसकृदाचामेत्द्विर्तूष्णींआचामेत् । ततोयजमानःकांस्यपात्रस्थदधिमधुघृतानि समादायान्येन कांस्यपात्रेण पिधाय कराभ्यामादाय।मधुपर्केति मधुच्छन्द ऋषि बृहतीछन्दो मधुभुक् देवता मधुपर्कदाने विनियोगः ॥ ॐमधुपर्को मधुपर्को मधुपर्क इत्यनेनोक्ते ॐमधुपर्कःप्रतिगृह्यतामितिवदेत् ॐमधुपर्कं प्रतिगृह्णामीत्यभिधायैववरः । ॐमित्रस्येति प्रजापतिर्ऋषिःपंक्तिच्छन्दो मित्रोदेवता मधुपर्कदर्शने विनियोगः । ॐमित्रस्यत्वा चक्षुषाप्रतीक्ष्य इतिदातृकरस्थमवे मधुपर्कं निरीक्ष्य देवस्यत्वेति ब्रह्माऋषि गायत्रीछन्दः सविता देवता मधुपर्क ग्रहणे विनियोगः ॥

यजुर्वे० अ० ६ मं १

ॐदेवस्यंत्वासवितुःप्रंसवेऽश्विनो र्बाहुभ्यांम्पूष्णोहस्ताभ्यांप्रतिगृण्हामि। इत्यभिधायवरोमधुपर्कं गृहीत्वावामहस्तेकृत्वा॥

भा०टी०आमागन् इस मंत्रका परमेष्ठी ऋषि-बृहतीछंद जल देवता जलके स्पर्शन कर्नेमे विनियोगहै॥ [मंत्रार्थ] हेवरुणदेव तुमारे आश्रित मुझको आप यशस्वि अर्थात् यश संयुक्त करो किंञ्च ब्रह्मतेजसे युक्तकरो अर्थात् क्षत्री वैश्यकोभी स्वतेजसे युक्त करो॥ और महात्मा पुरुषोंकी मित्रतासे तथा पशुओंका मालिक और सुखी करो इस मंत्रसे वर एक आचमन करे फिर दो चुपचाप (तूष्णीसे) आचमनकरे अनंतर यजमान कांस्यपात्रमें दधि मधु घृत को पाकर ऊपरसे अन्यकांस्यपात्रसे बंद कर हाथमे लेवे मधुपर्क इसमंत्रका मधुच्छन्द ऋषि, बृहतीछंद मधुभुग्देवता, मधुपर्कके देनेमे विनियोगहै॥मधुपर्कके बनानेमे पराशरजी लिखतेंहे। कि (सर्पिरेकगुणंप्रोक्तं शोधितंद्विगुणंमधु। मधुपर्कविधौप्रोक्तं सर्पिषा च समं दधि) अर्थात् घृत एक गुणा शहत दो गुण दधि एक गुण होना चाहिये॥ मधुपर्कग्रहण करे, अनंतर ग्रहण कर्ता हू यह वर यजमानसे कहे। मित्रस्य इसमंत्रका प्रजापति ऋषि. पङ्क्तिछंद.

मित्रदेवता. मधुपर्कदर्शनमे विनियुक्तहे [मंत्रार्थ] हे मधुमर्क तुमारेको मित्रदेवके नेत्रोसे देखता हु ॥ इस मंत्रसे दाताके हाथमेहो स्थित मधुमर्कको देखे ॥ देवस्यत्वा. इसमंत्रका ब्रह्मा ऋषि गायत्रीछन्द सूर्यदेवता मधुपर्कके ग्रहण कर्नमे विनियुक्तहै ॥ [मंत्रार्थ] हेमधुपर्क सवितानामदेवता की, आज्ञासे हम तुमारेको, अश्विनीकुमारकी बाहु तथा पूष्णः, अर्थात् सूर्यदेवके हाथोसे ग्रहणकर्ते हे॥आशय यहहे कि सूर्यदेवकी कृपासे, अश्विनीकुमारने दियाहे बली जिनको ऐस बाहुओंसें तद्वत् सूर्यके हाथोसे ग्रहण कर्ताहे ॥ इसमंत्रको पढकर वर मधुपर्क ग्रहण कर वामहाथमें रखकर ॥

ॐनमःश्यावेतिप्रजापतिर्ऋषिर्गायत्रीछन्दःसविता देवतामधुपर्कालोडनेविनियोगः ॥ ॐनमःश्यावा स्यायान्नशनेयत्तआविद्धंतत्तेनिष्क्रून्तामीतिअनामिकयात्रिःप्रदक्षिणमालोड्य अनामिकाङ्गुष्ठाभ्यांभूमौ किञ्चिन्निक्षिप्यपुनस्तथैवद्भिःप्रत्येकंनिक्षिपेत्। ।तत आचारान्मधुपर्ककिञ्चित्कन्यायैद्रष्टुंदद्यात् ॥ ॐ यन्मधुनइत्यस्यकौत्सऋषिर्जगतीछन्दःमधुपर्कोदेवतामधुपर्कप्राशनेविनियोगःॐयन्मधुनोमधव्यंपरमꣳरूपमन्नाद्यं॥ तेनाऽहंमधुनोमधव्येनपरमेणरूपेणान्नाद्येनपरमोमधव्योन्नादोसानि २ इत्यनेनवारत्रयंमधुपर्कप्राशनंप्रतिप्राशनान्तेचैतन्मंत्रपाठः ॥ ततोमधुपर्कशेषमसंचरेदेशेधारयेत् ॥

भा०टी०नमःश्यावेति इस मंत्रका प्रजापति ऋषि गायत्री- छंद सवितादेवता मधुपर्कके आलोडनमे विनियोगहै ।। [मंत्रार्थ] हे जठराग्ने कपिश अर्थात् धूम्रवर्णहै जिस्का और अन्नके पचानेवाले तुमको प्रणाम कर्ते है और जो मेने भोजनकालमे निषिद्ध पदार्थ भक्षणकिया वह निकालताहुं ।। इसमंत्रको पढ अनामिकासे तीनवार प्रदक्षिणा क्रमसे आलोडन कर और अनामिका अंगुष्ठसे पृथिवीपर किंचित् २ तीनवार मधुपर्क गेरे अनन्तर लोकाचारसे मधुपर्क किंचित् कन्याके लिये देखनेको भेजे। यन्मधुन इसमंत्रका कौत्सऋषि जगती छंद मधुपर्कदेवता प्राशनकर्नेमे विनियुक्तहै ।। [मंत्रार्थ] हे देवगणो ! जो मकरंदका परम उत्कृष्टरूप (अन्नाद्यं) अर्थात् अन्नादिवत् प्राणधारक तिसपर उत्कृष्ट अर्थात् शरीरमे व्याप्त सर्वरूपको प्राप्त हुए रसकर्के मैं सभसे श्रेष्ठमधुपर्क के योग्य अन्तके भोगनेवाला होमा ।। इसमंत्रको पढ तीन वार मधुपर्क प्राशनकरे मंत्रपाठके अनंतर प्राशन कर्ना ।। शेष रहा मधुपर्क शुद्धभूमि जिस्पर पाद ना आवे वहा गेरदेवे ।। इस स्थान सूत्रकार के बहुतमतहै कि शेष मधुपर्क जोपूर्वस्त्रीका पुत्रहो उस्को देना वा पूर्वदिशा असंचर स्थानमे गेरदेना वा संपूर्ण आप पीना अथवाशेष अपने विद्यार्थि को देना यथासूत्रं (मधुमतीभिर्वा प्रत्यृचं पुत्रायान्ते- वासिन उच्छिष्टंदद्यात्सर्वं वा प्राश्नीयात्प्राग्वासंचरेनिनयेदिति) ।।

ततस्त्रिराचामेद्वरःवाङ्मअस्येअस्तु ।। नसोर्मेप्राणोऽ स्तुअक्ष्णोर्मेचक्षुरस्तुकर्णयोर्मेश्रोत्रमस्तुबाह्वोर्मेब लमस्तुऊर्वोर्मेओजोऽस्तुअरिष्टानिमेऽङ्गानितनूस्त

न्वामेसन्तु ॥ इतिप्रत्येकंसर्वगात्राणिसंस्पृशेत् ॥

भा० टी० सजलहाथसे अंगन्यासकरे [मंत्रार्थ] वाक् (वाणी) देवता मेरे मुखमे हो और नासिकामे प्राण हो नेत्रोमे चक्षुरिंद्रय हो कर्णोमे श्रोत्रेंद्रिये हो बाहुमे बलहो और उरुवोमे ओजहो तथा मेरे संपूर्ण अंग अरिष्ट अर्थात् अरोग्य हो. इस मंत्रसे एक २ अंगके क्रमसे स्पर्श कर्ना ॥ अब जैसे अंगुलीसे चाहिये वह क्रमलिखते है ॥ कराग्र अंगुली तीन १ तर्जनि अंगुष्ठ २ मध्यमा अंगुष्ठ ३ आनामिकांगुष्ठ० ४ अंगुष्ठकनिष्ठका ५ सर्वांगुलि निमीलन ६ यह क्रमपूर्वक रीतो है ॥

ततोयजमानद्वारागौर्गौर्गौरितिपाठः ॥ अत्रवरयजमानाभ्यांतृणछेदनमाचारोनतुर्विधः ॥ अतएवपद्धतिषु ॥ततोवरस्तृणंयजमानेनसहगृहीत्वाऽग्रिममंत्रंपठेत् ॥ मातारुद्राणामितिमंत्रस्यब्रह्माऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दःशौरिर्देवताऽभिमन्त्रेणविनियोगः ॥ ॐमाता रुद्राणांदुहितावसूना॑स्वसादित्यानाममृतस्यनाभिः ॥ प्रनुवोचंचिकितुषेजनायमागामनागामदितिंवधिष्टममचाऽमुष्यचपाप्माहतः ॥ ॐउत्सृजततृणान्यत्तूद्धृत्योत्सृजेत्इतिब्रूयात् ॥ उत्सृजेत्तुतामितितृणं छिन्द्यादित्युत्सृजेत्त्यजेत् ॥

भा० टी० तदनंतर यजमानद्वारा गौर्गौर्गौ, यह तीनवार कहाना ईहा वर यजमानका तृणछेदन आचार है नहि विधि

इसलिये पद्धतिओमें वरयजमानके साथ अग्रिम मंत्रपढे ॥ मातारुद्राणां इस मंत्रका ब्रह्मा ऋषि त्रिष्टुप्छंद सौरि देवता अभिमंत्रणमें विनियोगहै [मंत्रार्थ]श्री महारुद्रजी नन्दिकेश्वररूप कर ऋषियोंसे भयभीत हुए गौके गर्भद्वारा प्रगटभये इसलिये रुद्रोकी माताहै ॥ देवदानवोको समुद्रमंथनसे श्रांतहुआको देखकर विष्णुने समुद्रमंथनद्वारा उत्पन्नकी । इसलिये विष्णु और विष्णुके अंश होनेसे वसुवोंकि पुत्रीहै ॥ इसलिये वैष्णवी सुरभी माता यह कहते है और नारायणके पुत्र होनेसे आदित्यनाम देवोकी भगिनी है॥ (नारायणाद्द्वादशादित्या इतिश्रुतेः) अमृत दुग्धकी नाभीअर्थात् उत्पत्तिस्थानह॥ और मेरे कर अवध्य गौहै परंतु मेरे और यजमानके पापही नष्टहो । हिंसा करनेमे प्रायश्चित्त लिखाहे । (ब्राह्मणं गां तथा कन्यां हन्यादज्ञानतोपियः । निरये भुज्यते तावद्यावदिन्द्राश्चतुर्दश) इसलिये त्याग देनी चाहिये ॥ ॐ मनमे कह कर (उत्सृजततृणान्यत्तु) यह ऊचे स्वरसे कहे शंका करें है कि गवालम्भभी गौणपक्षहे तो कैसी व्यवस्था चाहिये । इसपर उत्तरकि गवालम्भनको अस्वर्ग्य और लोकविरुद्ध होनेसे और यह वार्ता नाममात्र कहनेसेभी प्रायश्चित्ति होनेसे निषेधहे ॥ प्रमाण. (याज्ञवल्क्य स्मृति । अ. १) अस्वर्ग्यं लोक विद्विष्टं धर्ममप्याचरेन्नतु) अर्थ जो अंतमे दुखदायक और लोकविरुद्ध धर्मको भी ना करे और यह महापातकहे जैसे मनुजी लिखते है(नपरं पातकं घोरं कलौगोहत्ययासमं) नाममात्रसे प्रायश्चित्त पाराशरजो कहतेहै (कलौवाङ्मात्रगोमेधो निरये प्राप्नु-

यान्नरं । पितृभिःसहधर्मात्मा नैवकुर्यादतश्चतम्) और कलियुगमे यह वर्जितहै (गोमेधोनरमेधश्च विवाहेगोर्वधस्तथा । परक्षेत्रेसुतोत्पत्तिः कलावेतानि वर्जयेत् ॥) इस लिये गौको त्यागदो यह तृणको भक्षण करे और हमारेको पुष्टि हो ॥

ततोवेदिकायांतुषकेशशर्कराभस्मादिरहितांचतुरस्र भूमिंकुशैःपरिसमुह्यतानैशान्यांपरित्यज्यगोमयोदकेनोपलिप्यस्फ्येनस्रुवेणवाप्रागग्रप्रादेशमितमुत्तरोत्तरक्रमेणत्रिरुल्लिख्योल्लेखनक्रमेणाऽनामिकांगुष्ठाभ्यांमृदमुद्धृत्यजलेनाभ्युक्ष्यतत्रतूष्णींकांस्यपात्रस्थंविहितंवन्हिंप्राङ्मुखःप्रत्यङ्मुखमुपसमाधायतद्रक्षार्थंकश्चिन्नियुज्यकौतुकागाराद्वरःकन्यामानीय मण्डपउपवेश्यअथैनांवासःपरिधापयति ॥

भा० टी० गोरुत्सर्गानन्तर कुशकण्डिका लिखतेहै—तुषकेश शर्करा (रेत) भस्मादि निषिद्ध वस्तुसे रहित चारो कोणसे हस्तपरिमाण वेदिबना उस्को सवत्सा गोकेगोवरसे लेपन कर खड्ग वा स्रुवेसे पूर्वाभिमुख प्रादेश मात्र दक्षिणसे उत्तरकी तरफ तीनवार लिख और रेखा क्रमसे तीनवार अनामिकाअंगुष्ठसे मृत्तिका निकाल शुद्ध जलसे अभ्युक्षण कर अनंतर कांस्यपात्रमे अग्नि रख कर उपरसे बंद कर तूष्णीं हो प्रत्यङ्मुख बैठ प्राङ्मुख अग्निस्थापन कर उस्के रक्षाके लिये समिधा रखे । और कौतुकागारसे वर कन्याको लेकर मण्डपमे बैठाल कन्याको वस्त्र पहनावे आगेकेमंत्रसे।

ॐजरांगच्छेतिमंत्रस्यप्रजापतिर्ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दस्तं तवोदेवतावस्त्रपरिधानेविनियोगः ॥ॐजरांगच्छपरि धत्स्ववासोभवाकृष्टीनामभिशस्तिपावा । शतंच जीवशरदःसुवर्च्चारयिञ्चपुत्राननुसंव्ययस्वायुष्मती दंपरिधत्स्ववासः ॥ इतिमंत्रेणपरिधानवस्त्रंपरिधाप येत् । वरः ॥ अथोत्तरीयंवासःसमादायवरोऽग्निमम त्रेणपरिधापयेत् । याऽअकृन्तन्नवयन्याअतन्वत याश्चदेवीइत्यादिमंत्रस्यप्रजापतिर्ऋषिर्जगतीछंदोवि धात्र्योदेवतावस्त्रधारणेविनियोगः॥ ॐयाअकृन्तन्नव यन्याअतन्वतयाश्चदेव्यस्तन्तूनभितस्ततंथ । ता स्तादेवोर्जरसेसंव्ययस्वायुष्मतीदंपरिधत्स्ववासः ॥ इतिमंत्रेणअहतवासोधौतंवासौत्रेणाछादयीतेतिश्रु त्यनुसारेणवरोप्येताद्दशवाससीअत्रपरिधत्तेपरिधा स्यैइत्यादिमंत्राभ्याम् ॥

भा०टी०(जरांगच्छ) इस मंत्रका प्रजापतिऋषि त्रिष्टुप्छन्द त-न्तुदेवता वस्त्रके पहनानेमै विनियुक्तहै।[मंत्रार्थ]हे आयुष्मती अर्थात्संपूर्णायुयुक्त तुम हमारे साथ निर्दोष जरा अर्थात् बृढापनको प्राप्तहो ।।और मेरे मनको अच्छी प्रतीत होने वाली हो और क्रूरता कपटताको त्याग श्वशुरादी संबधियोसे संकुचित होकर सौम्यस्व-भाववाली हो वा स्त्रियोंके मध्यसे तुम श्रेष्ठ हो ।। और शतवर्ष अर्थात् पूर्णायु पर्यन्त मेरे साथ प्राणधारण करो यह पूर्वोक्तसे जा-नना चाहिये ।। और पतिव्रताहो धर्मसे बडे तेज वाली होकर

धन और पुत्राको प्राप्त हो ॥यहमेरे करके दिया हुआ वस्त्र धारण कर ॥ इहा परिधत्स्वपद प्रथम आशंसामे दूसरा प्रेरणामे होनेसे पुनरुक्ति दोष नहि ॥ इस मंत्रसे वर कन्याको अधोवस्त्र पहनावे ॥ ० ॥ याअकृन्तन्न इस मंत्रका प्रजापति ऋषि जगती छंद विधात्रीदेवता । वस्त्रके धारणमे विनियुक्तहै [मंत्रार्थ] जो देवि इस वस्त्रको कातती भई औरजो वयति अर्थात् विनती भई और जो २ देवी सूत्रको तनुती भई तुरी वेमादिसे उस २ सामर्थ्यके देने वाली देवीलोग निर्दोष दीर्घकाल जीवनके लिये तुमारेको वस्त्र पहनाति है ॥ इस हेतसे हे आयुष्मति इस वस्त्रको उत्तरीय होनेसे धारण करो ॥ इस मंत्रसे नवीन वस्त्र आप धोता हुआ धारण करावे । न कि रजकादिसे धौत होवे इस श्रुति अनुसार वरभी-अधो वस्त्र उत्तरीय वस्त्रको धारण करे परिधास्यै इत्यादिमंत्रोंसे ॥

परिधास्यैइत्यादिमंत्रस्याथर्वणऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः तन्तवोदेवतावासःपरिधानेविनियोगः । ॐपरिधास्यैयशोधास्यैदीर्घायुत्वायजरदष्टिरस्मि । शतञ्चजीवामिशरदःपुरूचीरायस्पोषमभिसंव्ययिष्ये । इति पठित्वावरःपरिधत्ते(अथोत्तरीयमाच्छादयतीतिसूत्रं ॐयशसेइत्यादिमंत्रस्यप्रजापतिर्ऋषिर्जगतीछन्दोविधात्र्योदेवतावासोधारणेविनियोगः ॥ ॐयशसामाद्यावापृथिवीयशसेन्द्रायबृहस्पतिःयशोभगश्चमाविदद्यशोमाप्रतिपद्यतामितिपठित्वोत्तरीयंपरिधत्ते ॥ ततःकन्यायावरस्यचाद्भिराचमनम् ।

भा० टी०(परिधास्यै)इस मंत्रका अथर्वणऋषि त्रिष्टुप्छन्द तन्तुदेवता। वस्त्रके धारणमे विनियेगहै [मंत्रार्थ] हे वस्त्रदेवता तुमारेको अनेक श्रेष्ठवस्त्र धारणके लिये तथा यशकीर्तिके लिये और निर्दुष्ट चिरकाल जीवनके लिये। तुमारी कृपासे पूर्णायुके भोगने वाला मै बहुपुत्र धनादि युक्त धनके देनेवाले तुमको धारण कर्ताहू और तुमारे संबंधसे शतवर्ष जीवित रहा इसमंत्रका पढकर अधोवस्त्र धारण करे॥ आगेके मंत्रसे उत्तरीय जैसे यशमा इस मंत्रका प्रजापतिऋषि जगतीछन्द विधात्री देवता वस्त्र धारणमे विनियोगहै॥ [मंत्रार्थ] हे वस्त्रदेवता यशसे युक्त आकाश पृथिवी तथा यशयुक्त इंद्र बृहस्पति तद्वत् यशयुक्त सूर्य मुझको जाने और उन्हकर सम्पादन किया यश मुझको प्राप्तहो इसमंत्रसेउत्तरीय धारण करे अनंतर कन्या और वरको दोवार आचमन कर्ना चाहिये एक अधोवस्त्र धारण कर द्वितीय उत्तरीय धारण कर प्रमाण जैसे याज्ञवल्क्यस्मृति अध्याय १८ आचांतःपुनराचामेद्वासो विपरिधायच अर्थ आचमन किया हुआ फिर आचमन करे वस्त्रको धारण करकेभी इति॥

ततःकन्याप्रदेनपरस्परंसमञ्जेथामितिप्रेषितयोःपर स्परंसम्मुखीकरणम्॥ समञ्जन्त्वितिमंत्रस्यअथर्वण ऋषिरनुष्टुप्छन्दोविश्वेदेवादेवतामैत्रीकरणेविनियो गः॥ ॐसमञ्जन्तुविश्वेदेवाःसमापोहृदयानिनौ॥ सम्मातरिश्वासंधातासमुदेष्ट्रीदधातुनः॥इतिवरःपठे-

त् ॥ ततःकन्याप्रदकर्तृकग्रन्थिबन्धनम् ॥ हस्तले पनंशाखोच्चारणम् ॥

भा०टी०अनंतर यजमानद्वारा कन्या वरकी मैत्री कराणि समंजंतु इस मंत्रका अथर्वणऋषि अनुष्टुप्छन्द विश्वेदेवा देवता मैत्री कर्नेमे विनियुक्तहे ॥ [मंत्रार्थ] हे कन्ये संपूर्ण देवता तथा शुद्ध जलसे तुह्मारे हमारे मनको गुणातिशय द्वारा संस्कार करे अर्थात् दुष्टवासनासे रहित शुद्ध करे तद्वत् अनुकूल प्रजापति और उपदेशके कर्नेवाली सावित्री (गायत्री) देवताभी हमारी तुमारी बुद्धि धर्म अर्थ काम मोक्षमे लगावे ॥ इस मंत्रको वर पढे ॥ × शंका कर्तेहै की वरको कन्या इस शब्दसे कहना उचित नहि किउनकी जो पुरुष स्त्रीको माता वा भगिनी वा कन्या कहे उसको प्रायश्चित्त कर्ना लिखाहै। उत्तर यद्यपि तुमारा कथन सत्यहै तथा-इसकाल पर्यन्त और स्त्रीयोंकी वत यहभी कन्याही थी वरकाभी कुछ संबध नाहिथा और वाग्दानके अनंतरभी कन्याही कही जाति है यथा प्रमाण. (वरदानोचिताकन्या) फिर पाणिग्रहणके अनंतर यह वधूशब्दसे कही जावेगी (स्वसत्वनिवृत्तपरसत्वोपादानात्) इस न्यायसे हम प्रमाण सूत्रकारकाभी देते है (सुमङ्गलीरियंवधूरिमाꣳसमेतपश्य तसौभाग्यमस्यैदत्वायाथास्तंविपरे तनेति) और नारदस्मृतिकाभी प्रमाण जैसे (दशवर्षाभवेत्कन्या सम्प्रदानेवधूर्भवेत् । साङ्गुष्ठग्रहणेभार्य्या पत्नीचातुर्थ कर्मणि॥) अनंतर यजमानद्वारा द्रव्य पुष्प अक्षतादि कन्याके वस्त्रमे रखकर बांध वस्त्रसे वरके वस्त्रसे बांधे जिस्को लोक गठचीतन कहते है प्रमाणभी जैसे

योगियाज्ञवल्क्यजोका (कन्यकासुदेशेपार्श्वे द्रव्यपुष्पाक्षतानिच। निक्षिप्यतानिसंबद्धा वरवस्त्रेणसंयुजेत् ॥ वस्त्रैःसंयोज्यतौपूर्वंकन्यादानंसमाचरेत्। दानेनयुक्तयोःपश्चाद्विदध्यात्पाणिपीडनम्) इति। अनंतर हाथोमे कन्याके उद्वर्तन (उवटना लगाना) ॥

अथकन्यादानम् ॥दाताशंखस्थदूर्वाक्षतफलपुष्पचंन्दनजलान्यादाय ॥ अथकन्याप्रदः जामातृदक्षिणकरोपरिकन्यादक्षिणकरंनिधाय ॥ दाताऽहंवरुणोराजाद्रव्यमादित्यदैवतम् ॥ विप्रोसौविष्णुरूपेणप्रतिगृह्णात्वयंविधिः ॥ इतिदातापठेत् ॥ गोत्रोच्चारणंचकुर्यात् ॥ विप्रातिरिक्तपक्षेविप्रोसावित्यत्रवरोसावितिपठेत् ॥ ॐस्वस्तीतिवचनमुक्त्वाद्यौस्त्वाददातुपृथिवीत्वाप्रतिगृण्हात्वितिमंत्रेणकन्याहस्तंवरःप्रतिगृह्णीयात् ॥ ततःकन्याप्रदःअद्यकृतैतत्कन्यादानयथोचितफलावाप्तयेकन्यादानप्रतिष्ठार्थमिदंहिरण्यमग्निदैवतममुकगोत्रायाऽमुकशर्मणेब्राह्मणायवरायदक्षिणांतुभ्यमहंसम्प्रददे इतिदक्षिणांगोमिथुनंवादाद्यात् ॥ ततःस्वस्तीतिवरःप्रतिब्रूयात् ॥

भा०टी०वस्त्रग्रंथि बंधनके अनंतर कन्यादान लिखते हे यजमान शंखमे दूर्वाक्षता फलपुष्प चंदन जल लेकर दाता वरके दक्षिणहाथपर कन्याका दक्षिणहाथराखे पूर्वोक्त (मंत्रार्थ) वरुण रूपमैं यजमान और सूर्य संकल्प रूप यह द्रव्य विष्णुरूप वर यह

विधि ग्रहणकरे इसमंत्रको दाता पढे स्वस्ति हो ऐसे कहे [मं- त्रार्थ) आकाश तुमारेको देताहे और पृथिवी ग्रहण कर्ती हे। इस मंत्रसे कन्याका हाथ वर ग्रहणकरे अनंतर आजकिये कन्या दानकी शास्त्रविहित स्वर्गादि प्राप्तिके लिये य सुवर्ण अग्निदेव संबं धि अमुकशर्मांहि वरको दक्षिणासे देताहै वा गोउ दो वत्ससहित दे ताहै ॥ इसके अनंतर तुमको कल्याण हो एसे वर कहें । और सं कल्पकी विधि बृहत्पाराशरजी लिखते है (कन्यादानसमारम्भेदा ताशङ्खं समाददेत् । दूर्वाक्षत फलं पुष्पं चंदनं जलमेव च। इत्यादि सं पूर्ण विधानको विस्तृतके भयसे नहि लिखते॥और संकल्पपूर्व क न्यादानका लिखा हुआ हे पृ० पत्र में ॥ स्वस्तीति [इसस्थान आचारसे और संबंधि पुरुषभी सुवर्ण कर रजत ताम्र गोउ महिषी ग्राम पृथिवी यौतुक होनेसे कन्याको यथाशक्ति देते है ॥ कइ होमके अनंतर कई २ वधू वरके विसर्जन अनंतर खट्वादि दानकर्ते है ॥ यह सब अपने२देशाचारसे व्यवस्था जाननी जिस देशमे जैसे हो तैसेहो कर्ना(इससे मुनियोके मतभी बहुत लिखते है (कन्याप्रदा नन्तविधायतातस्तद्दक्षिणांगोमिथुनं सुवर्णं ।दत्वाप्रदद्याद्वरणं वरार्थं वस्त्राणिपात्राणिविभूषणानि ॥ तत्रैवदेयानिबहुश्रुताजगुर्वाल्मीकि जाबालिपराशराद्याः । होमान्तआहुर्भृगुनारदाद्या विसर्जनेव्या समरीचिकौत्साः) इत्यादि ॥ और देशाचारमे प्रमाण (ग्राम वचनंच कुर्युर्विवाहश्मशानयोर्ग्रामंप्राविशता) दितिवचनात्तस्मात्तयो र्ग्रामप्रमाणमितिश्रुतेः ॥ अर्थ कि ॥ विवाहकीकर्तव्यतामे और श्मसान अर्थात् प्रेत क्रियामे ग्राममे प्रवेश कर ग्राम वचन करे इस

श्रुतिसे अपने २ देशरीति और कुलरीति और ग्रामरीति परंतु जो धर्मविरुद्ध ना होवे उन्को करे ॥

यजुर्वेद अध्या ७। मूल० मंत्र ४८॥

ॐकोदात्कस्मा॑ऽअदात्कामोदात् कामा॑यादात्। कामोदाताकाम॑÷ प्रतिगृहीताकामैतत्ते॑॥ इतिवरः पठेत्॥

ततस्तांपाणौगृहीत्वा। ॐयदैषिमनसादूरंदिशोनुपवमानो वा। हिरण्यपर्णोवै कर्णः। सत्वामनमनसांकरोतु॥ श्रीअमुकदेवीइतिपठन्निष्क्रामति। ततोवेदिदक्षिणस्यांदिशिवारिपूर्णदृढकलशंऊर्द्धंतिष्ठतोमौनिनः पुरुषस्यस्कन्धेअभिषेकपर्यन्तंधारयेत्। ततःपरस्परंसमीक्षेथां-इतिकन्याप्रेषानंतरं-

ॐअघोरचक्षुरपतिघ्न्येधिशिवापशुभ्यः÷सुमनाःसुवर्चा÷॥ वीरसूर्देवकामास्योनाशन्नोभवद्विपदेशंचतुष्पदे॥

---

१ अघोरचक्षुयहमंत्र. अथर्वणवेद. कांड१४ अनु०२मंत्र१८लिखाहै॥

सोमः प्रथमोविविदेगंधर्वोविविद उत्तरः। तृतीयोअग्निष्टेपतिस्तुरीय स्तेमनुष्यजाः। सोमोददद्गन्धर्वा यंगन्धर्वोददद्ग्नये। रयिंचपुत्रांश्चा दादग्निर्मह्यमथो इमाम्॥

सानः पूषाशिवतमामेरयसानऊरू उशतीविहर। यस्यामुशन्तःप्रहरामशे पंयस्यामुकामाबहवोनिविष्ट्यै। इति वरपठितमन्त्रान्तेपरस्परंतिरीक्षणं।

भा० टी० कोदातेति [मंत्रार्थ] प्रश्न. कोन देताहै उत्तर. काम अर्थात् इच्छाहि देती है ॥ जिससे कामही देता और कामही लेनेवाला इस लिये यह पत्नी प्रतिग्रह उस काम (संकल्प) के लिये है ॥ बली है सर्वसे और धन्यहै कि जो क्षत्रियादि जो दान मरण पर्यंतभी नहि लेते अधिकारके ना होनेसे यह उन्कोभी दान महाकन्यारूपी देतीहै ॥ यह इच्छाकी स्तुतिपर मंत्रहै॥ इस मंत्रको प्रथम वर पढे पीछेसे वधूको हस्तसे ग्रहण कर यदेषि इस मंत्रको

(१) सोमःप्रथमोविविदे-यहमंत्र. ऋग्वेद. मंडल १० सूक्त ८५ मंत्र ॥ ४० है ॥ (२) ऋग्वेद. मं०१० सूक्त. ८५ मंत्र ॥ ४१ ॥

पडे [मंत्रार्थ] प्राच्यादिसे लक्षित वायुकी न्याई तुमारेको पिता गृहसे दूर लेजाताहै वह वायु और हिरण्यवर्ण सूर्य वैकर्ण अग्नि अर्थात् दिक् वायुसूर्य अग्न्यादि देव मुझमे लगाहै हृदय जिस्का ऐसी तुमको करे ।इस मंत्रके अंतमे वर कन्याका नाम लेवे। आत्म नाम गुरोर्नामेति आगे नाम कभी ना ग्रहण करे अनंतर दक्षिण-दिशामे जलपूर्ण कलश स्कंध (कांधेपर) रखकर अभिषेक पर्यन्त दृढ पुरुष स्थित रहे उठकर॥तुम आपसमे देखे यह यजमान कहे (मंत्रार्थ) हे कन्ये तुम सौम्यदृष्टिवाली हो और(अपतिघ्नी)अर्थात् पतिके अर्थके नाशकर्नेवाली मत हो इस विवाह संस्कारके अनंतर पशुवत् जो आश्रित पुरुष उन्मे हित कर्नेवाली हो और प्रसन्न चित्तवाली सुंदर प्रतापवाली । सत्पुत्र और वीरपुत्रोके पैदा कर्नेवाली (देवकामा) देवान् अग्न्यादीन् पूजार्थं कामयति इच्छतीति)अर्थात् देवताओमे तथा पित्रोमे श्रद्धावाली हो (स्योना) सुखी हमारेको कल्याण देनेवाली हों ॥ सिद्धांत यह है कि तुमारेसे हमको सर्वदा लाभहो ॥ (मंत्रार्थ) कन्यास्तुतिका. हेकन्ये प्रथम रक्षाकर्नेवाला चंद्रमा जन्मदिनसे सार्द्धद्वय वर्ष(अर्थात् २ ॥ अढाई वर्षपर्यंत तुमारो पुष्टि कर्ता हुआ तिस्के अनंतर गंधर्व अर्थात् सूर्य पांचवर्ष पर्यंत तुमारेको पडाता हुआ इस लिये सूर्य तुमारा दूसरा पति(पाति रक्षति) इति पतिःअर्थात् रक्षाकरनेवाला अनंतर पांचवर्ष लेकर सातवर्ष तक अग्नि तुमारेको शुद्धता सर्व काममे देता हुआ इससे अग्नि तीसरा पति रक्षाकर्नेवाला भया॥प्रमाण जैसे (पूर्वंस्त्रियःसुरैर्भुक्ताःसोमगन्धर्ववन्हिभिः । प्रतिपोष्याध्या

प्यसंशोध्यपरित्यक्तांनरोभजेत् ॥ अर्थ जन्मदिनसे ले साडेसात वर्षमे अढाई२ ॥ वर्ष क्रमसे सोम चंद्रमा सूर्य अग्नि देवने क्रमसे(भु-क्ताः) रक्षाकी । भुज पालनाभ्यवहारयोः। इस धातुसे क्तप्रत्ययके आनेसे बहुवचनान्त होनेसे भुक्ता यह शब्द सिद्ध होताहै॥ओर क्र-ममे पुष्टकर तथा पढाकर ओर शुद्धकरके त्यागकी हुई स्त्रियोंको नर भजते हे अर्थात् सेवन कर्त्ते हे भजसेवायां इस धातुसे लिङ्ल-कारके आनेसे यासकेस्थानमे इय तिप आदि आनेसे रूप भजेत्ब नताहै॥इस लिये साडेसातवर्षके नंतर ज्योतिषशास्त्रमे दोषालिखाहै विवाह कर्नेका॥ [मंत्रार्थ]चंद्रमा३०मासमे पुष्टकर सूर्यको देता भया सूर्यभी ३० महीनेके अनंतर दक्षता पांडित्यको देकर अग्निके समर्पण कर्ता भया वह अग्निदेव इस स्त्रीको साथ पुत्रोके धनके ध-र्मके शुद्धकर मुझदेताहै प्रमाणभी जैस याज्ञवल्क्यस्मृति अध्याय१ सोमःशौचंददावासांगन्धर्वश्चशुभांगिरं।पावकःसर्वमेध्यत्वंमेध्यावैयो-षितःस्मृताइत्यादि।अर्थ पूर्वोक्तही हे इसलिये ही सर्व स्त्रीको विना पढाये स्त्रीयोको ऐसी चातुर्यता होती है कि जो विद्वान् लोकहे उ नकीभी बुद्धि नष्टकर अपने आधीन करलेती हे ओर नृत्यादि क-लामे ऐसी कुशल होतीहे की जो नहि कही जाती यह विना सू-र्यके अंतःकरणमे उपदेश कर्नेके कैसे होसक्ताहे ॥ अब चन्द्रमा-का कार्य देखे की जो पुरुष गांधर्वविद्यामे दिनरात्र अभ्यास कर्ते हे वहि स्त्रीका स्वाभाविक राग श्रवण कर संकुचित हो जाते हे तो कहिये वह किस गन्धर्वकी शिष्य बनकर शिक्षाको प्राप्त होती हे इत्यादि बहुत गुणहे जो पुरुषको जन्मभरमे भी ना आमे बु-

द्विवान पुरुष सर्व जानते है ॥ इस अपनी तर्कके सिद्ध कर्नेके लिये शास्त्रके प्रमाण देते है 'आहारोद्विगुणःस्त्रीणां बुद्धिस्तासांचतुर्गुणा।षड्गुणो व्यवसायश्चकामश्चाष्टगुणःस्मृतः॥स्त्रीयाश्चरित्रं पुरुषस्यभाग्यंदेवो नजानातिकथंमनुष्यः ॥ स्त्रीणामशिक्षितपटुत्वममानुषीषुसंदृश्यतेकिमुत याः परिबोधवत्यः ॥ प्रागंतरिक्षगमनात्स्वमपत्यजातमन्यैर्द्विजैपरभृताःखलुपोषयन्ति ॥ अर्थ 'दुष्यन्तराजा कहताहै कि विना सिक्षाके चातुर्य्यता जो पशु पक्षियोकी स्त्री है उन्मे देखते है । जैसे कोकिल अपने पुत्रोको कागादिसे पुष्टकरानी है तो हम मनुष्योकीस्त्रीमे क्या कहे यह प्रसंग शकुंनलानाटकमे विस्तारसे है ॥ इति ॥

(मंत्रार्थ. सान इति) जगतका चक्षु सूर्य देव कल्पाणयुक्त इस्को हमारेमे अनुरक्त करे । यह स्त्री हमारेस सुख और पुत्रोकी इच्छा कर्ती भई उरु अर्थात् जंघाको पसारे और हम स्त्रीकी योनिसे सुख और पुत्रोको इच्छा कर्ते भये शेफ अर्थात् लिंगको प्रवेशन करे ॥ जिसमे धर्म पुत्र रतिसुखादिरूप बहुत गुण होते है (निविष्टचै) अर्थात् अग्निहोत्रादि कर्मद्वारा अंतःकर्ण शुद्ध होनेसे मुक्तिके लिये भाव यह है कि धर्म अर्थ काम मोक्षका साधन पतिव्रता स्त्री है (प्रमाण याज्ञयवल्क्यस्मृति अ० १—लोकानंत्यंदिवःप्राप्तिःपुत्रपौत्रप्रपौत्रकैः । यस्मात्तस्मात्स्त्रियःसेव्याः कर्तव्याश्चसुरक्षिता) इति ॥

विशेषद्रष्टव्य—जिनको अर्थमे कुछ भ्रांति हो वह ऋग्वेदके चिन्हसे भाष्य देखे और सूत्र ब्राह्मण मिलावे तो उन्का हमारेपर

अत्युपकार होगा और (दशास्यांपुत्रानाधेहिपतिमेकादशंकृधि) इन्कोभी देखे तो अच्छाही है अन्यथा हमगप्पाष्टक नहिमानते और विस्तारके भयसे बहुत लिखते नहि ॥

क्षेपक

ऋग्वेद मंडल १० सू० ८५ मं० ॥ २५ ॥

इमांत्वमिन्द्रमीढ्वःसुपुत्रां सुभगां कृणु। दशास्यांपुत्रानाधेहिपति मेकादशंकृधि॥

(अर्थ)हे परमेश्वर इस्की सौभाग्ययुक्त साथ पुत्रोंके वृद्धिकरे और इस्मे दशपुत्र उत्पन्न हो उन्को और साथ. १० पुत्रोंकेसहित ११मपातिकी वृद्धि करो धनादिसे ॥ इस अर्थमे जिनको संदेह पडे वह उपर लिखत चिह्नसे ऋग्वेदमें देखे ॥

ततोग्निप्रदक्षिणीकृत्यपश्चादग्नेरहतवस्त्रवेष्टितंतृणपूलकंकटंवानिवेश्यतदुपरिदक्षिणचरणंदत्वावधूंदक्षिणतःकृत्वातामुपवेश्यपुष्पचंदनताम्बूलान्यादाय॥ओंतत्सदद्यकर्तव्यविवाहहोमकर्माणिकृताऽकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्मकर्तुममुकगोत्रममुकशर्माणंब्राह्मणमेभिःपुष्पचंदनताम्बूलवासोभिः ब्रह्मत्वेनत्वामहंवृणे इतिब्रह्माणंवृणुयात् ॥ वृतोस्मीतिप्रतिवचनं॥ यथा

विहितंकर्म्मकुर्वेंतिवरेणोक्तेकरवाणीतिब्रह्माब्रूयात् ॥ ततोवरोऽग्नेर्दक्षिणतः ब्रह्माणमग्निप्रदक्षिणक्रमेणानीयअत्रत्वंमेब्रह्माभवेत्याभिधायकल्पितासनेसमुपवेशयेत् ॥

भा०टी० परस्पर निरीक्षणके अनंतर अग्निको प्रदक्षिणा कर अग्निके पश्चिम भागमे अहत (नादग्ध)वस्त्रवेष्टन कर तृणपूलक वा कट (सक) रखकर उस्के उपर दक्षिणपाद देकर अर्थात् उल्लांघन ना कर वधूको दक्षिण भागमे लेकर उस्का वामपाद रखकर बिठाय पुष्प चंदन तांबूल (पान) हाथमे ले । आज कर्तव्यविवाहके होमकर्मम कर्मकी शुद्धि अशुद्धि की परीक्षा इत्यादि जो ब्रह्माका जो कर्म उस्के लिये अमुक गोत्र अमुक ब्राह्मण ब्रह्मा समझकर आपको वर्ण कर्ता हु ॥ हमने वर्णी लई यह ब्रह्मा कहे । तुम यथावत् कर्म करो ऐसे वर कथनके अनन्तर कर्ता हु ऐसे ब्रह्माजी कहे अनंतर अग्नि प्रदक्षिण क्रमसे ब्रह्माको लेजाय तुम कर्मसाक्षी मुझका ब्रह्मा हो ऐसे कह अग्निसे दक्षिणभागमें आसनपर बिठलावे अर्थात् वरणवृक्षसे वने हुए काष्ठके पीठपर कुशाविछाय पूर्वोत्तर क्रमसे उसपर कर्मके तत्वको जाननेवाले श्रेष्ठ ब्राह्मण बैठावे यदि ऐसा ना मिले तो पचास कुशोका ब्रह्मा रचकर बिठावे ॥

ततःप्रणीतापात्रंपुरतःकृत्वावारिणापरिपूर्यकुशैराच्छाद्यब्रह्मणोमुखमवलोक्यअग्नेरुत्तरतःकुशोपरिनिदध्यात् ॥ ततःपरिस्तरणंबर्हिषश्चतुर्थभागमादायआग्नेयादीशानांतंब्रह्मणोऽग्निपर्यन्तंनैर्ऋत्याद्वायव्या

न्तमग्नितःप्रणीतापर्यन्तंततोऽग्नेरुत्तरतःपश्चिमदिशि पवित्रच्छेदनार्थंकुशत्रयंपवित्रकरणार्थंसाग्रमनंतर्गर्भं कुशपत्रद्वयंप्रोक्षणीपात्रंआज्यस्थालीसंमार्ज्जनार्थंकु शत्रयंसमिधस्तिस्रःस्रुवआज्यंषट्पञ्चाशदुत्तरमुष्टि द्वयावच्छिन्नतण्डुलपूर्णपात्रंपूर्वपूर्वदिशिक्रमेणासा दनीयम् ॥

भा०टी० ब्रह्माजीकी वर्णीके अनंतर प्रणीतापात्रको मुखके बराबर आगे कर जल पूर्ण कुशासे आछादन कर सादी होनेसे ब्रह्माजीको देख अग्निकी उत्तरकोणमे कुशापर स्थित करदे । अनंतर कुशमुष्टिका चौथाभाग ले अग्नि अग्निकोणसे ईशानकोण पर्यन्त ब्रह्मासे अग्निपर्यन्त नैर्ऋतिकोणसे वायुकोणपर्यन्त पूर्वाग्र उत्तराग्र कुशा बिछावे । अनंतर अग्निकी उत्तर तरफ पश्चिममे पवित्र छेदन लिये तीन कुशा।पवित्रकर्नेके लिये साथ अग्रके और मध्यपत्रसे रहित दो कुशपत्र। प्रोक्षणीपात्र आज्यस्थाली संमार्जनके लिये तीन कुशा उपयमनके लिये वेणीरूप तीन कुशा । तीन समिधा स्रुवा घृत पुष्ट ब्राह्मण तृप्तिकारक वा २५६ मुष्टिप्रमाण तंडुलपूर्णपात्र आगे २ पूर्वदिशामे क्रमसे रखने चाहिये ॥ नीचे लिये लक्षण पात्रोंके सर्व जानने ॥

(१) प्रणीताका—लक्षण वरणवृक्षका १२ अंगुलदीर्घ ४ अंगुल विस्तार और खोदा हुआ प्रणीतापात्र होताहै ॥

(२)प्रोक्षणीपात्र–लक्षण देवलोक्त०प्रणीतानैर्ऋतेभागे तद्वायव्यगोचरे । वारणंसंविजानीयात्सर्वकर्मसुकारयेत् ॥ सर्वसंशोधनार्थोदपात्रंवारणमिष्यते। द्वादशाङ्गुलि दीर्घंचक रतलोन्मितखातकं । पद्मपत्रसमाकारंमुकुलाकारमेववा ॥

(३) आज्यस्थालीकालक्षण–तैजसी मृन्मयीवापि आज्यस्थालीप्रकीर्तिता । द्वादशाङ्गुलविस्तीर्णाप्रादेशोच्चा प्रमाणतः ॥

(४)चरुस्थालीकालक्षण–चरुस्थालीतथैवापिदीर्घोच्चा तुप्रमाणतः।नानयोरन्तरंयस्माद्द्रव्यसंस्कारणार्थकइति ॥

(५) संन्मार्जनकुशमेप्रमाण–स्रुवसम्मार्जनार्थन्तुकुशत्र यमुदीरिततम् । इतिव्यासस्मृतौ

(६)उपयमनकुशाकाप्रमाण–उपयमनार्थमाख्यातास्त्रि पणनवमिताःकुशाः। वेणीरूपानिरोधार्थानिरोधेबहुःभिसुखं- इतिभृगुवचनात् ॥

(७) समिधा३मेप्रमाण पालाशजंप्रादेशमात्रंदैर्घ्येणस्थूल ता ।कानिष्ठिकासमंध्यात्वाविधिमग्नौक्षिपेच्चतत्इतिपराशरः

(८) स्रुववाब्रह्महस्तलक्षण-स्रुवस्तुब्रह्महस्ताख्यःस्क न्धान्तोबाहुरुच्यते ।स्वाहाकारस्वधाकारवषट्कारसमान्वि तः ॥ दण्डाकारोभवेन्मूलेस्यादरत्न्यांतुतत्समः । सकङ्कण स्तुदण्डाग्रेहस्ताकारस्ततोबहिः ॥ अष्टांगुलिपरीमाणंमूला भ्यंतरतस्त्यजेत्॥दशाङ्गुलिपरीमाणंमूलाभ्यंततस्त्यजेत् ।

दशांगुलीपरिमाणमारभ्याकङ्कणावधि ॥ हस्तमात्रंभवेद्धस्त स्रुवइत्यभिधीयते ॥ खादिरःशैंशिपोवापिह्यन्योवापुण्यवृक्ष जः ॥ धावकोपिसमाख्यातोहोमार्थंमुनिभिःकृतः ॥ इतिका त्यायनः ॥

(९)घृतलक्षणम्—तथाचस्मृतिः । गव्यमाज्यंजुहुयात् तदभावेमाहिषंस्मृतम् ॥ तथाचश्रुतिःगव्यमाज्यंजुहुया- त्तदभावेमाहिषेयमिति ॥

(१०)चरुलक्षणम्—व्रीहितंदुलसंसिद्धोमुख्यःप्रोक्तःसुर र्षिभिः । इत्याचारचंद्रोदये ॥

(११) पर्यग्निकेलक्षणमेश्रुति--पर्यग्निंकुर्वन्ज्वलदु ल्मुकमादायप्रदक्षिणमाज्यचर्वोःसमंताद्भ्रामयेत्इति ॥ १२समिधालक्षणं-पलाशखदिराश्वत्थशम्युदुम्बरजा समित् । अपामार्गकदूर्वाग्निंकुशाश्चेत्यपरेविदुः॥सत्व चःसमिधःस्थाप्याऋजुश्लक्ष्णाःसमास्तथा । शस्ताद शाङ्गुलास्तास्तुद्वादशांगुलिकास्तुताः ॥ आर्द्राःप क्वाःसमच्छेदास्तर्जन्यंगुलिवर्तुलाः। अपाटिताश्चवि शिखाःकृमिदोषविवर्जिताः ॥ ईदृशीहोमयेत्प्राज्ञःप्रा प्नोतिविपुलांश्रियं ॥ इतिव्यासकात्यायनवसिष्ठगौ तमभरद्वाजाः ॥

अथतस्यामेवदिशिअसाधारणवस्तून्युपकल्पनीयानि तत्रशमीपलाशमिश्राःलाजाःदृषदुपलंकुमारीभ्राता

सूर्यः दृढपुरुषः ॥ अन्यदपितदुपयुक्तमालेपनादिद्र
व्यं ॥ ततःपवित्रछेदनकुशैःपवित्रेछित्वाततःसपवित्र
करेणप्रणीतोदकंत्रिःप्रोक्षणीपात्रेनिधायअनामिकां
गुष्ठाभ्यांउत्तराग्रेपवित्रेगृहीत्वात्रिरुद्दिंगनंप्रणीतोद
केनप्रोक्षणीजलेन यथासादितवस्तुसेचनं ॥ ततोऽ
ग्निप्रणीतयोर्मध्येप्रोक्षणीपात्रनिधानं ॥ आज्यस्था
ल्यामाज्यनिर्वापः ॥ ततोऽधिश्रयणं ॥ ततोज्वलत्तृ
णादिनाहविर्वेष्टयित्वा-प्रदक्षिणक्रमेणवह्नौतत्प्रक्षेपः
पर्यग्निकरणं ॥ ततःस्रुवप्रतपनंकृत्वासम्मार्जनकुशा
नामग्रैरंतरतोमूलैर्बाह्यतः ॥ स्रुवंसंमृज्यप्रणीतोदके
नाभ्युक्ष्यपुनःप्रतप्यस्रुवंदक्षिणतोनिदध्यात् । ततः
आज्यस्याग्नेरवतारणंततआज्येप्रोक्षणीवदुत्पवनं ॥
अवेक्ष्यसत्यपद्रव्येतन्निरसनं ॥ पुनःप्रोक्षणीवदुत्प
वनम् ॥

भा०टी०अनंतर तिस दिशामे और सर्ववस्तु स्थापन कर्नी जे से शमी जंडी पलाशसे युक्त लाजा (फलिया) शिला वट्टा कन्याका भाई देखनेलिये सूर्य मजबूत पुरुष और भी जो कामकी वस्तु हो वहभी पास रखले पवित्र कुशासे पवित्रको छेदन कर फिर साथ पवित्रके हाथसे प्रणीताके जलको तीनवार प्रोक्षणीपात्रमें रखकर अनामिका और अगुंष्ठसे उत्तराग्र पवित्रग्रहणकर तीन-वार ऊपरको जल फैंकना प्रणीता और प्रोक्षणीका जलमिलाय

सर्ववस्तुको सिञ्चन कर्ना अनंतर अग्नि और प्रणीताके मध्यमे प्रोक्षणीपात्र रखना आज्यस्थालीमे आज्यपाना और अग्निपर रखणी जलते तृणसे हविर्वेष्टनकरप्रदक्षिण क्रमसे तृणको अग्निमे गेर देना जलती चमातीसे प्रदक्षिण क्रमसे घृत चरुके चारो पार्श्वमे फेरनी ॥ अनंतर स्रुव तथा संमार्जन कुशाके अग्रभागसे अनंतर मूलसे बाहिरसे स्रुवको पोच प्रणीतोदकसे अभ्युक्षण कर (सिंचन) फिर तपाय दक्षिणभागमे राखे । पुनः घृत अग्निसे उतार आज्यका प्रोक्षणीवत् उत्पवन करना यदि निषिद्धवस्तु हो तो निकाल देनी पुनःप्रोक्षणीवत् उत्पवन कर्ना ॥

ततःउपयमनकुशानादायउत्तिष्ठन्प्रजापतिंमनसाध्यात्वातूष्णीमग्नौघृताक्तास्तिस्रःसमिधःक्षिपेत् ॥ततउपविश्यसपवित्रप्रोक्षणीउदकेनप्रदक्षिणक्रमेणाग्निपर्युक्षणंकृत्वाप्रणीतापात्रेपवित्रेनिधायपातितदक्षिणजानुःकुशेनब्रह्मणान्वारब्धःसमिद्धतमेग्नौस्रुवेणाज्याहुतीर्जुहोति॥ तत्राघारादारभ्यद्वादशाहुतिपुतत्तदाहुत्यनंतरंस्रुवावस्थितहुतशेषघृतस्यप्रोक्षणीपात्रेप्रक्षेपः ॥ ॐप्रजापतयेस्वाहाइतिमनसा–इदंप्रजापतये० ॥ ओमिन्द्रायस्वाहा–इदमिंद्रा० ॥ इत्याघारौ–ओंअग्नयेस्वाहा–इदमग्नये० । ओंसोमायस्वाहा–इदंसोमाय० ॥ इत्याज्यभागौ ॥ ओंभूःस्वाहा इदमग्नये० ॥ ओंभुवःस्वाहा इदंवायवे० ॥ ओंस्वःस्वाहा इदं० सूर्याय० एतामहाव्याहृतयः ॥

भा०टी०अनंतर उपयमन कुशाको लै उठकर मनसे प्रजापति का ध्यान कर्ता हुआ चुपचापसे घृतयुक्त पूर्वोक्त तीन समिधा अ-ग्निमे गेरदेवें ॥ अनंतर वैठ कर साथ पवित्र प्रोक्षणी जलसे प्रदक्षिणा क्रमसे अग्निको पर्युक्षण कर प्रणीतापात्रमे पवित्रे रख दक्षि-णजानु निमाय कुशाद्वारा ब्रह्मासे संयुक्त हो वडी जलती अग्निमे स्रुवसे घृतका आहुति हवन करताहै स्रुवसे लगे हुए घृतको प्रोक्ष-णीपात्रमे फेकना ॥ प्रजापतये०इदं प्र० यह मनमे कर आहुति देणी ॐ इंद्राय०इदमिंद्राय०। यह आघार संज्ञक है ॐअग्न०इदम०सोमा०इदंसो० यह आज्यभाग संज्ञकहै ॥ ॐभूः—इदं अ० ॐभुवः—इदं वा०। ॐ स्वः—इदंसूर्या० यह महाव्याहृति है ॥

शुक्लयजु०अध्याय० २१ मंत्र ३ ॥

ॐत्वन्नोऽअग्नेवरुणस्यविद्वान्देवस्य हेडोअवंयासिसीष्ठाः ॥ यजिष्ठोव ह्नितमःशोशुंचानो विश्वाद्वेषांᳪ सिप्रमुं मुग्ध्युस्मत्स्वाहा॥ इदमग्नी वरुणाभ्याम् ॥

शुक्लयजु० अध्याय २१ । मंत्र ४॥

ॐसत्वन्नोऽअग्नेऽवमोभवोतीनेदिष्ठो ऽअस्याउषसोव्युष्टौ । अवयक्ष्वनो वरुणꣳरराणोवीहिमृडीकꣳसुहवोन एधिस्वाहा । इदमग्नीवरुणाभ्यां० ॥

ॐअयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपा (वा) श्चसत्यमित्व मयाअसि । अयानोयज्ञंवहास्ययानोभेषजꣳस्वाहा। इदमग्नये० ॥

ॐयेतेशतंवरुणयेसहस्रंयज्ञियाःपाशाविततामहान्तः । तेभिर्नोऽद्यसवितोतविष्णुर्विश्वेमुञ्चन्तुमरुतः स्वर्काःस्वाहा॥ इदं वरुणायसवित्रेविष्णवेविश्वेभ्यो मरुद्भ्यःस्वर्केभ्यः० ॥

भा० टी० त्वन्नो और सत्वन्नो इन मंत्रोका वामदेव ऋषि त्रिष्टुप्छंद अग्नि और वरुणदेवता सर्व प्रायश्चित्तमे विनियोगहै ॥ (अयाश्चाग्ने) इस मंत्रका वामदेवऋषि त्रिष्टुप्छंद अग्नीदेवता प्रायश्चित्तहवनमे विनियोगहै॥(येतेशतं)इस मंत्रका शुनःक्षेपऋषित्रिष्टुप्छंद वरुणदेवतावरुणसंबंधि शापके मोचनमे विनियोगहै।।अब इन्के अर्थ क्रम- से लिखते है ॥ (त्वन्नइति) हे अग्ने तुम इस कर्ममे वैगुण होनेसे वरुणदेवके क्रोधको हरण करो कैसे तुम सर्व कर्मम साक्षि चतुर

हो और सबसे उत्तमहो और सबदेवताओंको यज्ञका भाग देनेवालेहो प्रकाशमान हो इस लिये मंदबुद्धिवाले हमको जान हमारेसे की हुई अवज्ञा अनादरको क्षमा कर सर्वप्रकारसे कल्याण देवो ॥ ॥ १ ॥ (मंत्रार्थ-सत्वन्नइति) हे अग्ने तुम सबको पालना कर्नेवाले हे । इस लिये आजदिनके प्रातःकालसे लेकर मुझकी रक्षा करो । नहि केवल रक्षा किंतु हमारे कर बुलाये तुम सुखपूर्वक आकर सुखदेनेवाला चरु यज्ञके मालिक वरुणदेवताको देकर पूजन करो । जिससे वरुण देवभी प्रसन्न हो हमारेको सुखदे ॥ २ ॥

[मं०अयाश्चाग्नइति] हे अग्ने तुम सर्वांतर्यामि और प्रायश्चित्तद्वारा सर्वप्राणीको शुद्ध कर्नेवाले और शुभकेदाता हमारे किये हुए यज्ञको कपाल होनेसे इंद्रादिदेवताओंको देनेवाले इस लिये हमकोभी भेषज अर्थात् सुखके देनेवाला दुःखविनाशक अपूर्व सुखदेवों ॥ ३ ॥

(मंत्रार्थ येतेशतमिति) हे वरुण यज्ञके विघ्नसे पैदाहुये वडे२ भारी महान कठिन जो तुमारे शतसंख्याक और सहस्र संख्याक पाशहै वह पापरूपपाश हमारे सविता सूर्य विष्णुरूप इंद्र और सर्वदेवता और वायु सुंदर हृदयवाले आदित्य हमारे पापोको नष्ट करें।४।

शुक्लयजु०अ० १२ (मूल) मंत्र १२ ॥

उदुंत्तमं वंरुण पाशं मुस्म्मदवांधमं विमंध्यमछ्ँ श्रंथाय । अथांवुय

मांदित्यव्व्रतेतवानांगसोऽअदितये स्यामस्वाहा॥इदंवरुणाय० ।

एताःसर्वप्रायश्चित्तसंज्ञकाः ॥ ५॥

ततोऽन्वारब्धंविनाॐप्रजापतयेस्वाहा । इदंप्रजापतये० ॥ॐअग्नयेस्विष्टकृतेस्वाहा इदमग्नयेस्विष्टकृते० ॥ उदकोपस्पर्शनम् ॥ अथराष्ट्रभृत्यः ॥

भा०टी०उत्तम मध्यम अधम यह तीन वरुणके पाशहै (मंत्रार्थ) हे वरुण जो तुमारा उत्तम पाशहै उससे हमारी रक्षा करो । जो मध्यम पाशहे उससेभी हमारी रक्षा करों पाशको शिथिलकरो हे वरुण हम ब्रह्मचर्यसे तुमारेसे निरपराध होकर दीनतासे रहित होते है ।'दीनतायां दितिप्रोक्ता दितिस्याद्दैत्यमातरि'॥ इस वचनसे दितिनाम दीनताकाभीहै ॥ अनंतर अन्वारब्धविना । प्रजापतये०। इदं प्र०अग्नयेस्विष्टकृते०इदम०स्विष्टकृते०यह दो आहुतिदे जलको हाथ लगावे ॥ इसके अनंतरराष्ट्रभृत्यनाम आहुति लिखते है ॥

तत्र द्वादश मन्त्रा यथा

शुक्लयजु०अध्याय १८ मंत्र ३८

ॐऋताषाड्ड्तधांमाग्निर्गन्धर्व्वःस नंऽइदम्ब्रह्मंक्षत्रम्पांतुतस्म्मैस्वाहा

वाट् ॥ इदमृतासाहेऋतधाम्नेऽग्नये गंधर्वाय० ॥

ॐऋताषाडृतधांमाग्निर्गन्धर्वस्त स्यौषधयोऽप्सरसोमुदोनामंताभ्य ःस्वाहा । इदमोषाधिभ्योऽप्सरोभ्योमुद्भ्यः० ॥

(यजु०अध्याय १८ मंत्र ३९ ॥

सुᳪहितोविश्वसामासूर्य्योगन्धर्वःसनंऽइदम्ब्रह्मंक्षत्रम्पांतुतस्मैस्वाहावाट् ॥ इदᳪसᳪहितायविश्वसाम्नेसूर्यायगन्धर्वाय० ॥

(यजु०अध्याय १८ मंत्र ३९)

सुᳪहितोविश्वसामासूर्य्योगन्धर्वस्तस्यमरीचयोऽप्सरसंऽआयु

वोनामंताभ्यः स्वाहा ॥ इदंमरीचि भ्योप्सरोभ्यआयुवोभ्यः० ॥

यजु० अध्याय १८ मंत्र ०४०

ओ३म्सुषुम्णःसूर्यरश्मिश्चन्द्रमां गन्धर्वःसनंऽइदंब्रह्मंक्षत्रंपातुतस्मै स्वाहा वाट् ॥ इदंसुषुम्णाय सूर्य रश्मयेचंद्रमसेगंधर्वाय० ॥

यजु०अध्याय१८ मंत्र ४ ०

ओ३म्सुषुम्म्णःसूर्यरश्मिश्चन्द्रमां गन्धर्वस्तस्युनक्षंत्राण्यप्सुरसोभे कुरयोनामंताभ्यःस्वाहा॥इदंनक्ष त्रेभ्योऽप्सरोभ्योभेकुरिभ्यः० ॥

यजु०अध्याय १८ मंत्र ४१

ओ३म्इषिरोविश्वव्यंचावातोगन्धर्व

सनंऽइदम्ब्रह्मंक्षुत्रम्पांतुरमैस्वाहा

वाट् ॥ इदमिषिरायविश्वव्यचसे

वाताय० ॥

यजु०अध्याय १८ मंत्र ४१

ॐइषिरोविश्वव्यंचावातोगन्धर्व

स्तस्यापोऽप्सुरसऊर्ज्जोनामंता

भ्यःस्वाहा ॥ इदमद्भ्योऽप्सरोभ्य

ऊर्ग्भ्यः० ॥

यजु०अध्याय १८ मंत्र ४१

ॐभुज्युःसुंपुर्णोयुज्ञोगंन्धुर्व्वःसनंइ

दम्ब्रह्मंक्षुत्रंपांतुतस्मैस्वाहावाट्॥इदं

भुज्यवेसुपर्णाययज्ञायगन्धर्वाय०॥

यजु०अध्याय १८ मंत्र ४१

ॐभुज्युःसुंपुर्णोयुज्ञोगंन्धुर्वस्तस्य

दक्षिणाअप्सुरसंस्तावानांमताभ्यः

स्वाहा॥इदंदक्षिणाभ्योऽप्सरोभ्य

स्तावाभ्यः० ॥

यजु०अध्याय १८ मंत्र ४२

ॐप्रजापतिर्विश्वकर्मामनोगन्ध

र्वःसनंइदंब्रह्मंक्षत्रंपातुतस्मैस्वाहा

वाट् । इदंप्रजापतयेविश्वकर्मणेम

नसेगंधर्वाय० ॥

ॐप्रजापतिर्विश्वकर्म्मामनोगन्ध

र्वस्तस्यंऽऋक्सामान्यंप्सुरसऽए

षंयोनामंताभ्य÷स्वाहा॥ इदंऋक्

सामभ्योऽप्सरोभ्यएषिभ्यः०॥इ

तिराष्ट्रभृत् ॥

भा० टी० इन द्वादश मंत्रोंके अर्थ यथा क्रमसेजानने यह × यह चिन्ह होगा वहा पूर्वोक्त अर्थ समझे ॥ [मंत्रार्थ १] जोसत्य-के सहनेवाला सत्यका स्थान गंधर्वरूप जो अग्नि उस्को दी हुई

आहुति बहुतहो वह अग्नि हमारा ब्रह्मज्ञान और (क्षत्र) वीर्य बलको रक्षा करे ॥

(२)जो सत्यका स्थान सत्यशील गंधर्वरूप अग्नि तिस्की ओषधी अर्थात् यवगोधूममाषव्रीहि मुद्गादि सर्व प्राणिको आनंददायक अप्सराहै तिस अग्नि और अप्सराके लिये सुहुत हो (+)इत्यादि ॥

(३) दिनरात्रिका स्वामी गंधर्वरूप जो सूर्यभगवान् संपूर्ण सामवेदके जाननेवाले उन्के लिये सुहुत हो (+) इत्यादि ॥

(४) रात्रिदिनपति गंधर्वरूपी सूर्यजीकी मिश्रितहोनेवाली मरीचिया (किरणः) रूप अप्सराहै सो (+) इत्यादि ॥

(५) निरंत सदैव आनंदके देनेवाले गंधर्वरूपी सूर्यकिरणोंसे वृद्धिको प्राप्त भये जो चंद्रमा भगवान् जी (+) इत्यादि ॥

(६) तिस गंधर्वरूपी चंद्रमाजीकी (ईकुरी) अर्थात् जो एक पिताकी द्विकन्याका एकही पति हो उन्को ईकुरी कहते है (+)प्रमाणभीजैसेगंगाधरजीलिखतेहै(सपितृकाएकपतिका ईकुर्य्यस्ता उदीरिताः) ऐसे जोनक्षत्र तारका अप्सराहै उस्के पतिजो (+) इत्यादि ।

(७)जो वायु गमन स्वभाव और सर्व गतगंधर्वरूपहै(+)इत्यादि ॥

(८) जो वायुरूप गन्धर्व उन्का सर्व वस्तुके देनेवाला जल अप्सराहै (×) इत्यादि ॥

(९) जो यज्ञरूप गंधर्व है पालन कर्नेवाला और शोभनगतिवाला उस्की जलरूप अप्सराहै उस्के (×) इत्यादि ॥

(१०) जो यज्ञरूप गंधर्व है स्तवनरूप उस्की दक्षिणा नाम अप्सराहै उस्के (×.) इत्यादि ॥

(११) प्रजाका ईश्वर कि जिस्के आश्रय विश्वबनती है ऐसा मनरूप जो गंधर्व है (+) इत्यादि ॥

(१२) जो मनरूप गंधर्व उस्को धर्म अर्थ काम मोक्ष (पुत्रादि) की देनेवाली ऋग्वेद सामवेदरूपी अप्सराहै उस्के लिये सुहुतहो वह मन हमारा व्रत ज्ञान वीर्य्यबल वृद्धि करे इत्यादि क्रमसे अर्थ जानना यह राष्ट्रभृतनामसे हवनहै ॥

अथजयाहोमः ॥ ॐचित्तंचस्वाहा ॥ इदंचित्ताय० १ ॐचित्तिश्चस्वाहा इदंचित्त्यै० २ ॐआकूतंचस्वाहा इदमाकूताय० ३ ॐआकूतिश्चस्वाहा—इदमाकूत्यै० ४ ॐविज्ञातश्चस्वाहा—इदंविज्ञाताय० ५ ॐविज्ञातिश्चस्वाहा—इदंविज्ञात्यै० ६ ॐमनश्चस्वाहा—इदंमनसे० ॐशक्वर्यश्चस्वाहा० इदंशक्वरीभ्यो० ७ ॐदर्शश्चस्वाहा इदंदर्शाय० ८ ॐपौर्णमासश्चस्वाहा—इदंपौर्णमासाय० १० ॐबृहच्चस्वाहा—इदंबृहते० ११ ॐरथंतरंचस्वाहा—इदंरथंतराय० १२ ॐप्रजापतिजयानिन्द्रायवृष्णेप्रायच्छदुग्रःपृतनाजयेषु॥ तस्मैविशःसमनमंतसर्वाःसउग्रःसहइहव्योबभूवस्वाहा १३ इतिजयाहोमः ॥

भा०टी०यह १३ त्रयोदशमंत्र जयानाम होमहै ॥ इन्मे द्वादश (१२) सुगमगहै ॥ [मंत्रार्थ १३ प्रजापति—प्रजाकास्वामि शत्रुओंकि सेनाके नाश कर्नेमे उग्र परमेश्वरजीमें इंद्रको जयानाम-

मंत्रोंका उपदेश कर्ते भये । जिस मंत्रोंके प्रभावसे इंद्र सर्वका राजा और वर्षाके कर्नेवाला सर्वसे मुख्य (अग्रणी) होता भया तद्वत् एसी कृपाशील परमेश्वर मुझकोभी जय देवे॥ओर हमारेसे दि हुई आहुति सहुतहो ॥ १३ ॥ भाव यहहे कि जिन मंत्रोंके उपदेशद्वारा इंद्र ऐश्वर्य्यसे युक्त सर्वसे मुख्य भया इस लिये इन्का जयानाम है। इति ॥

अथाभ्यातानन्नामहोमः॥ओंअग्निर्भूतानामधिपतिःसमावत्वस्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यांपुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यांदेवहूत्याᳪस्वाहा॥१॥इदमग्नयेभूतानामधिपतये०१ ॐइन्द्रोज्येष्ठानामधिपतिः समावत्वस्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यांपुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यामादेवहूत्याᳪस्वाहा ॥इदमिन्द्रायज्येष्ठानामधिपतये०२ ओंयमःपृथिव्याऽअधिपतिःसमावत्वस्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यांपुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यांदेवहूत्याᳪस्वाहा॥ इदंयमायपृथिव्याअधिपतये०३ अत्रणीतोदकस्पर्शः॥ॐवायुरन्तरिक्षस्याधिपतिःसमावत्वस्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यांपुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यांदेवहूत्याᳪस्वाहा॥इदंवायवेऽन्तरिक्षस्याधिपतये० ४ ॐसूर्योदिवाअधिपातिःसमावत्वस्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यांपुरोधायामस्मिन्कर्मण्य

स्यांदेवहूत्या ऽस्वाहा। इदंसूर्यायदिवाअधिपतये ० ५
ॐचंद्रमानक्षत्राणामधिपतिःसमावत्वस्मिन्ब्रह्मण्यस्मि
न्क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यांपुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यांदेव
हूत्या ऽस्वाहा ॥ इदंचंद्रमसेनक्षत्राणामधिपतये० ६
ॐबृहस्पतिर्ब्रह्मणोधिपतिःसमावत्वस्मिन्ब्रह्मण्यस्मि
न्क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यांपुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यां
देवहूत्या ऽस्वाहा॥इदंबृहस्पतयेब्रह्मणोऽधिपतये ० ७
ओंमित्रःसत्यानामधिपतिःसमावत्वस्मिब्रह्मण्यस्मि
न्क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यांपुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यांदे
वहूत्या ऽस्वाहा ॥ इदंमित्रायसत्यानामधिपतये ० ८
ॐवरुणोऽपामधिपतिःसमावत्वस्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन्क्ष
त्रेस्यामाशिष्यस्यांपुरोधायामस्मिन्कर्माण्यस्यांदेव
हूत्या ऽस्वाहा । इदंवरुणायअपामधितपये० ९
ॐ समुद्रःस्रोत्यानामधिपतिःसमावत्वस्मिन्ब्रह्मण्य
स्मिन्क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यांपुरोधायामस्मिन्कर्मण्य
स्यांदेवहूत्या ऽ स्वहा ॥ इदंसमुद्रायस्रोत्यानामधि
पतये० १० ॐ अन्नंऽसाम्राज्यानामधिपतिःसमावत्व
स्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यांपुरोधायाम
स्मिन्कर्मण्यस्यांदेवहूत्या ऽस्वाहा।इदमन्नायसाम्रा
ज्यानामधिपतये० ११ॐसोमओषधीनामधिपतिःस
मावत्वस्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यांपुरो
धायामस्मिन्कर्म्मण्यस्यांदेवहूत्या ऽस्वाहा—इदंसो

मायओषधीनामधिपतये० १२ॐ सविताप्रसवानाम
धिपतिःसमावत्वस्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेस्यामाशिष्य
स्यांपुरोधायामस्मिन्कर्म्मण्यस्यांदेवहूत्या ऽस्वाहा ॥
इदंसवित्रेप्रसवानामधिपतये० १३ ॐ रुद्रःपशूनाम
धिपतिःसमावत्वस्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेस्यामाशिष्य
स्यांपुरोधायामस्मिकर्मण्यस्यांदेवहूत्या ऽस्वाहा॥इ
दंरुद्रायपशूनामधिपतये० १४अत्रप्रणीतोदकस्पर्शः॥
ॐ त्वष्टारूपाणामधिपतिःसमावत्वस्मिन्ब्रह्मण्यस्मि
न्क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यांपुरोधायामस्मिकर्मन्यस्यांदे
वहूत्या ऽस्वाहा॥ इदंत्वष्ट्रेरूपाणामधिपतये० १५ॐ
विष्णुःपर्वतानामधिपतिःसमावत्वस्मिन्ब्रह्मण्यस्मि
न्क्षेत्रस्यामाशिष्यस्यांपुरोधायामस्मिन्कर्म्मण्यस्यां
देवहूत्या ऽस्वाहा ॥ इदंविष्णवेप्रजानामधिपतये०
१६ ॐमरुतोगणानामधिपतयःस्तोमावंत्वस्मिन्ब्रह्म
ण्यस्मिन्क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यांपुरोधायामस्मिकर्मण्य
स्यांदेवहूत्या ऽस्वाहा ॥इदंमरुद्भ्योगणानामधिपति
भ्यः० १७ ॐ पितरःपितामहाःपरेवरेततास्तताम
हाइहमावंत्वस्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यांपु
रोधायामास्मिन्कमर्ण्यस्यांदेवहूत्या ऽस्वाहा ॥ इदं
पितृभ्यःपितामहेभ्यःपरेभ्योवरेभ्यस्ततेभ्यस्तताम
हेभ्यः० १८अत्रप्रणीदतोकस्पर्शः ॥ इत्यभ्यातान
नामहोमः ॥

भा०टी०इन अष्टादश १८ मंत्रोका प्रजापतिऋषि पंक्तिछंद मंत्रोक्तदेवता अभ्याताननाम होममे विनियोगहै ॥ इनका अर्थ यथाक्रमसे जानणा ॥

१ (मंत्रार्थ) सर्वकास्वामि अग्निदेव मुझको वेदादि अध्यपन कर्ममे और बलवीर्य वर्तमान इस विवाहमे तथा आगे होनेवाली वृद्धिमे तथा देवपूजनादिक कर्ममे मुझकी रक्षा करे यह आहुति अग्निके लिये सुहुतहो ॥

(२) सबसे वडे जो बृहस्पतिजी उन्का जो अधिपति राजा होनेसे इंद्र सो मुझको०इत्यादि पूर्वोक्त अर्थ जानना१७मंत्रोमेहो।

(३) मर्त्यलोकके प्राणियोको दण्ड देनेवाला इस लिये पृथिवीका स्वामि जो धर्मराजजी वह मुझको इत्यादि + इहा आहुति देकर हाथ प्रक्षालन कर्ने ॥

(४) आकाशगामी होनेसे आकाशका स्वामि श्रीवायुदेवताजी मुझको + इत्यादि ॥

(५) संपूर्ण अंधकार नाश कर्नेसे दिनके स्वामि सूर्यनारायण वह मुझको + इत्यादि ॥

(६) अश्विनीसे आदि और दाक्षायण्यादि तारका चंद्रमाजी की स्त्री हे इस लिये नक्षत्रोके स्वामि चंद्रमाजी मुझको + इत्यादि ॥

(७)महादेवजीके शिष्यबन अपार व्याकरणादि जान और अत्युत्तम संस्कृत उच्चारणादिसे बृहस्पतिजीको वेदोका पतित्व उचितहै वह मुझको + इत्यादि ॥

(८) सत्यपदार्थका स्वामि जोमित्रदेवताजी वह मुझको + इत्यादि ॥ प्रमाण जैसे (मित्रत्वं जायते सत्यात्सत्यादेवप्रवर्द्धते । सत्यात्प्रफलते नित्यं सत्यहेतुर्हि मित्रता) ॥

(९) जलोका स्वामी वरुणदेवजी मुझको + इत्यादि ॥ प्रमाण जैसे (जलानांजलजन्तूनां पाशीधात्राधिपःकृतः) इति ॥

[१०] स्रोत्यनाम जो नल नदी नाले वहनेवाले ओर गंभीर दुर्वगाह उन्का मालिक समुद्रजी मुझको + इत्यादि ॥

[११] (अद्यते अत्तिचभूतानि इति अन्नं) अर्थात् जिस्को मनुष्यादि भक्षण करे ओर जो मनुष्यादिको भक्षण करे ओर उत्पन्न करे तथा पालन करे ऐसा जो अन्न परमेश्वर हस्ति हय (घोडा) गृह वाग वगीचा इत्यादि सर्ववस्तुका स्वामी वह मुझको + इत्यादि ॥

(१२) सर्वके उत्पन्न कर्नमे सामर्थ्य सविता देवताजी मुझको + इत्यादि ॥

(१३) ओषधीयोका स्वामी सोमदेवजी मुझको कामधेनुके गर्भद्वारा नंदिकेश्वरका अवतार होनेसे महादेवजीको पशुओंके स्वामी कहाजाताहे वह मुझको + इत्यादि ॥

(१४) रूपोकास्वामि त्वष्टादेवजी मुझको०

(१५) पर्व जो अमावास्यादि चंद्रग्रहणादि दर्श पोर्णमासादि यज्ञोका स्वामि विष्णुपरमात्मा परमेश्वरजी मुझको ०

(१७) वलि होनेसे देवगणोके स्वामी वायुदेवताजी मुझको०

(१८) देवऋषि आंगिरस भार्गव ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र ओ

र जो पिता पितामह प्रपितामहादि सनातन पितर अग्निष्वात्तादि और आधुनिक जो हमारे गोत्री वह सर्व मुझको+ इत्यादि॥ईहाभी प्रणीता जलसे स्पर्श कर्ना जिन २ देवताकी आहुतीके अनंतर जलस्पर्श कर्णा चाहिये वह प्रमाण लिखते है ॥ (यमोरुद्रश्चपितरः कालोमृत्युश्चपंचमः । पंचक्रूराविवाहस्य होमेतच्छान्तिमाचरेत् ॥ प्रणीताअप्सुशान्त्यर्थं मनुःस्वायम्भवोऽब्रवीत्)॥

जिन अभ्यातानमंत्रोसे देवता असुराको मारते भये इस लिये इन्की अभ्यातान संज्ञाभई तथाच श्रुतिः) यद्देवा अभ्यातानैरसुरानभ्यातन्वतः इति ॥

अथाज्यहोमः॥ ॐअग्निरैतुप्रथमोदेवतानाꣳसोस्यैप्रजांमुंचतुमृत्युपाशात्।तदयाꣳराजावरुणोनुमन्यतांयथेयꣳस्त्रीपौत्रमघन्नरोदात्स्वाहा । इदमग्नये०॥१॥ ॐइमामग्निस्त्रायतांगार्हपत्यःप्रजामस्यैनयतुदीर्घमायुः ॥ अशून्योपस्थाजीवतामस्तुमातापौत्रमानन्दमभिप्रबुध्यतामियꣳस्वाहा॥इदमग्नये०२स्वस्तिनोऽग्नेदिवापृथिव्याविश्वानिधेह्यऽयथायजत्रा॥यदस्यांमहिदिविजातंप्रशस्तंतदस्मासुद्रविणंधेहिचित्रꣳस्वाहा । इदमग्नये०३ सुगन्नुपंथांप्रदिशन्नएहिज्योतिष्मद्धेह्यजरन्नआयुः । अपैतु[1]मृत्युरमृतंनआगाद्वैवस्वतोनोऽभयंकृणोतुस्वाहा ॥इदमग्नये०॥ ४ ॥ परंमृत्योऽनुपरेहिपंथांयस्तेऽन्यइतरोदेवयानात् । चक्षुष्मतेशृ

---

१ अयैतुमृत्यु रित्यतिपाठः ॥

ण्वतेतेब्रवीमिमानःप्रजाश्शीरिषोमोतवीरान्स्वाहा॥ इदंवैवस्वताय० ॥ ५ ॥ अत्रप्रणीतोदकस्पर्शः ॥ ततोवधूमग्रतःकृत्वा वधूवरौप्राङ्मुखौस्थितौभवतः ॥ ततोवराञ्जलिपुटोपरिसंलग्नवध्वञ्जलिपुटोपरि संलग्नवध्वञ्जलिघृताभिघारितवधूभ्रातृदत्तशमीपलाशमिश्रैर्लाजैर्वधूकर्तृकोहोमः ॥

भा०टी०अग्निरैतु इत्यादिचार मंत्रोका प्रजापति ऋषि त्रिष्टुप्छंद मन्त्रोक्तदेवता घृत होममे विनियोगहे ॥ [मंत्रार्थ] देवताओमे आदि अग्निदेवता आकर इस कन्यामे आगे होनेवाली संतानको मृत्युपाशसे मृत्युसे वचावे वामृत्युपाशको भस्म कर इस्का प्रजापुत्रादि वरुणराजाको आज्ञासे जैसे यह स्त्रीपुत्र संवंधि दुःखमे ना रोदन करे ऐसी प्रजापुत्रादि संतानको देवे ॥ १ ॥

(इमामग्नि) अग्निहोत्र संवंधि अग्नि इस कन्याकि प्रजापुत्रादिको दीर्घायुको प्राप्त करें पुत्रोसे नहि शून्यगोद (अंक) जिस्की वा जीवत् वत्सा हो यह स्त्री पुत्रपौत्रादि संवंधि आनंदको जाने अर्थात् भोगे ॥ २ ॥

[स्वस्तिनो] पूजन कर्नेवालोकी रक्षा कर्नेवाली हे अग्ने पृथिवीसे आदिले स्वर्ग पर्यंत जो कल्याण क्रमको छोड अर्थात् एकदाहि हमारेमे धारणा करो॥और पृथिवी स्वर्गमे पेदाहोनेवाली महिमा वा यश नानाप्रकारके सुवर्ण मोती पद्मराग मरकत प्रवाल रजतादि द्रव्य सर्व मुझको देवो ॥

[सुगान्न) सुखपूर्वक जाना आना जिस्मे ऐसा गृह और

सुखपूर्वक चिरकाल जीवन धर्मदानादि कर्नेसे यशसे मुक्त जरारोगसे रहित आयुदेवो ॥ और अपमृत्य आदि हमारे नष्ट होमें ॥ अमृत आनंद हमारेको मिले धर्मराजभी हमारेको अभय देवे अर्थात् हमारे पापका जो फल नरकादि क्लेश उन्से तुमारी कृपाद्वारा हमको बचावे ॥ यह आहुति अग्निके लिये सुहुतहो ॥

[परंमृत्यो] इस मंत्रका संकर्षणऋषि त्रिष्टुपछंद मृत्युदेवता आज्यहोममे विनियोगहै॥हे मृत्युदेव सर्व व्यापारादिके साक्षि और सुननेवाले जिस कारणसे तुमारा देवमार्गसे भिन्न मार्ग है इस लिये अपने मार्गको जावो और हमोरंसे आहुति पूजाले हमारी पुत्रपौत्र भ्रातादि संततीको मतमारे किंतु प्रसन्न हो रक्षा करो हम आपसे यह प्रार्थना कर्तें है ॥ ५ ॥ इस मंत्रसे आहुति देकर जलस्पर्श कर्ना अनंतर वरके आगे वधूको करें पूर्वकी तरफ मुख कर होमे वर वधू हवनके लिये स्थित होमें ॥ वरकी अंजलीपर वधूकी अञ्जलीरखकर कुमारीके भ्राताने दि हुई जो घृत शमीके पत्रोसे युक्त लाजा (फूलिया) से वधू हवन करे मंत्रपूर्वक ॥

ॐअर्यमणंदेवंकन्याअग्निमयक्षत । सनोअर्यमादेवःप्रेतो मुञ्चतुमापतेः स्वाहा ॥ १ ॥ इयंनार्य्युपब्रूतेलाजानावपंतिका । आयुष्मानस्तुमेपतिरेधन्तांज्ञातयोममस्वाहा ॥ ॥२॥इमाँल्लाजानावपाम्यग्नेसमृद्धिकरणंतव । ममतुभ्यंचसंवननंतदग्निरस्तुमन्यतामियꣳस्वाहा ॥ ३ ॥ अथास्यै दक्षिणꣳ हस्तंगृह्णातिवरः साङ्गुष्ठम् । ॐ गृभ्णामितेसौ

भगत्वायहस्तंमयापत्याजरदष्टिर्यथासः । भगोऽर्यमासवि तापुरंधिर्मह्यंत्वादुर्गार्हपत्यायदेवाः ॥४॥ अमोहमस्मिसात्व ऽसात्वमस्यमोऽहं ॥ सामाहमस्मिऋक्त्वंद्यौरहंपृथीवीत्वम् ॥ ५ ॥ तावेवविवहावहैसहरेतोदधावहैप्रजांप्रजनयावहैपुत्रा न्विद्यावहैबहून् ॥ ६ ॥

भा०टी०अर्यमणंइत्यादि तीनमंत्रोंका दध्यङ्ङाथर्वणऋषि अ-नुष्टुप्छंद अग्निदेवता लाजाहोममे विनियोगहै ॥ (मंत्रार्थ)

(अर्यमणं) यह पूर्वकन्या सूर्यदेवकी पूजनादि कर्ती भई वह सूर्य भगवान् प्रसन्न होकर पितृकुलसे श्वसुर गृहयानेके लिये मो चन करे नहि मुझपतिसे भिन्न करे ॥ १ ॥ यह तीन मंत्र वरक न्यासे कहावे ॥

(इयंनार्य्युप) संतानप्राप्तिके लिये सूर्यदेवको प्रसन्नकर । ला जाको अग्निमे गेरती हुई यह स्त्री पतिको सुंदरवाणीसे कहती है॥ कि मुझका पति वीर्यपुष्टियुक्त चिरायुवाला होवें और मेरे बांधव ज्ञातिके लोक पित्रादि मातुलादि सब वृद्धिको प्राप्त होवें ॥ २ ॥

(इमांल्लाजान्) हे पति तुमारि समृद्धिके लिये यह लाजा अग्नि मे गेरतीहै । और हमारी तुमारी प्रीतिको अग्नि सर्वांतर्यामि अनु मोदन करे अर्थात् तुमारी प्रीति हमसे सदा अवछिन्न रहें ॥ ३ ॥

(अनंतर वर वधूका साथ अंगुष्ठसे हस्तग्रहण करे) (मंत्रार्थ) (गृ भ्णामि) (हेपति तुमारे हाथकोग्रहणकर्ताहै जिस हाथके ग्रहणकर्ने से तुम बहुवर्ष जीवितरहो ॥ शंका × आप किसकीआज्ञासे पाणि

ग्रहण कन्याका कर्तेहै। उत्तर-गार्हपत्यादि कर्माके कर्नेलिये भग-अर्यमा-सविता और संतान तथा आनंदके लिये सुंदररूपवती तुम को मुझे देतेभये इस हेतुसे हम आपको ग्रहणकर्तेहै ॥ ४ ॥

(अमोहस्मि) इस मंत्रका भरद्वाजऋषि उष्णिक्छंद विष्णुदेवता हाथके ग्रहणमे विनियोगहै ॥ अर्थ। हेपत्नि मै अम नाम विष्णु वा वेदत्रयात्मकहू और तुमसानाम लक्ष्मी वा देवीत्रयरूप अर्थात् ब्रह्माणि रुद्राणि वैष्णवीहै। प्रमाण जैसे (ओविष्णुरःशिवःप्रोक्तः प्रपंचे अःस्मृतस्तथा।) (साचलक्ष्मी बुधैःप्रोक्ता) और वेदानांसामवेदोस्मि इस वाक्यसे मुख्यताहोनेसे मै सामवेदहुं ॥ और ऋक् शब्दको स्त्रीलिंगहोनेसे तुम ऋगवेदहो (प्रमाण स्त्रियामृक् सामयजुषी इत्यमरः) और मै आकाशरूप तुम पृथिवी रूपहै ॥ भावार्थ कि जैसे आकाश पृथिवीपर छादितहै तद्वत् मैभी अपने गुणोसे तुमारेपर छादित् रहा अर्थात् तुम हमारे अधीनरहे ॥ और जैसे पृथिवी छेदन भेदनकी हुई और भारसे दबाई हुई अग्निसे दग्धकी हुई शांतिस्वभाव होनेसे कुछनहि कहती तद्वत् मेरेघर तुम श्वश्रु (सास) ननद आदिकर उपालम्भकटु वचनो प्राप्तभई भी उनको कुछनिषिद्धवाणी ना कहे किन्तुउनकी सेवाकरे ॥ इस मंत्रको लेकर दृष्टांतदेतेहै यथा शुश्रूषस्व गुरून्कुरु प्रियजने वृत्तिंसपत्नाजने भर्तुर्विप्रकृता पि रोषणतया मास्मप्रतीपंगमः ॥ भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने भाग्येष्वनुत्सेकिनी यान्त्येवंगृहीणीपदं युवतयोवामाकुलस्याधयः ॥ शकुंतलाको श्वशुरकुलगमनकालमे इस वेदमंत्रका आशयलेकर भगवान्काश्यपजी शकुंतलाको उपदेश क

तेंहै कि हे शकुंतले तुम इहासेजाकर अपने श्वसुर साससौहरा पतीस पतयोंहरा इत्यादि जो २ गुरुजन उन्की सेवाकर्णी और सपत्नीमे भी मित्रता भगनीवत्कर्नी यदि तुमाराभर्ता किसीकारणसे तुमपर क्रुद्धहो दुर्वचनभी कहै तो आपने कुछ नहि कहणा परंतु उस्काक्रोध मधुरवचनोसे निवृत्तकरना और जो परिजन नौकर चाकर दास दासी उन्मेचतुर (चुस्त) रहना (और कोसीकी उन्नतो देख शोचनहि कर्नी) इत्यादिक श्रेष्ठआचारसे स्त्रीया सर्व. वस्तु को मालिकप्रिय होतीहै। व्यतिरिक्तस्त्री कुलोमे एकमानसिकरोगहोती तथा निरादर को प्राप्तहोतीहै इति ॥ आगेभी स्त्रियोका आचरण कहेंगे ॥

(मंत्रार्थ—तावेव) तुम हम विवाह अर्थात् ऋषि वाक्यवेद-द्वारा मंत्रबलसे कन्याको वरके गोत्रमे मिलाना और पतिभाव कर्नेको विवाह करते है इस्को करे ॥ अनंतर विवाहके तुम हम पुत्रोत्पत्ति केलिये वीर्य धारण कर बहुत पुत्रोको प्राप्तहोंमें ॥ ६ ॥

तेसन्तुजरदष्टयःसंप्रियौरोचिष्णूसुमनस्यमानौ ॥ पश्येमशरदःशतंजीवेमशरदः शतꣳशृणुयामशरदःशतमिति ॥ ७ ॥ ॐआरोहेममश्मानमश्मेवत्वꣳस्थिराभव॥अभितिष्ठतपृतन्यतोऽवबाधस्वपृतनायतइति॥ अथगाथांगायाति ॥ सरस्वतीप्रेदमवसुभगेवाजिनीवति॥यांत्वाविश्वस्यभूतस्यप्रजायामस्याग्रतः। । यस्यांभूतꣳ समभवद्यस्यांविश्वमिदंजगत् । तामद्य

गाथांगास्यामियास्त्रीणामुत्तमंयशइति ॥ अथवधूव
रौ अग्निप्रक्रामयतस्तुभ्यमग्रेइतिमंत्रेणेति ॥

ऋ० मं० १० अ० ७ सू० ८५ मंत्र ३८।

तुभ्यमग्रेपर्य्यवहन्सूर्यांवहतुनासह। पुनःपतिभ्योजायांदाअग्नेप्रजयांसहेतिपठन्परिक्रामेत्॥ १०॥

भा० टी० ते संतु इस मंत्रका प्रजापति ऋषि यजुःछंद विष्णुदेवता हस्तग्रहणमें विनियोग हे ॥ मंत्रार्थ वह पुत्रपौत्रादि चिरंजीवि होमें और तुमहम प्रेमयुक्त सुमन पुत्रादि सहित शत १००वर्ष रूपग्रहणमे (देखनेमे) तथा श्रवण कर्नेमे सामर्थ्य जीवित रहे७॥

आरोहेम इस मंत्रका अथर्वण ऋषि अनुष्टुप्छंद वधूदेवता अश्म (शिल) के आरोणहमे विनियोग हैं ॥ [मंत्रार्थ] हे पत्नि तुम पाषाणकीवत निश्चिलहो और हमारे शत्रुकी सेनाको उद्यम वालीको निरुद्यम करो ॥ ८ ॥

कन्याके पाषाणपर स्थित होनेमे गाथा गायन करे वर ॥

सरस्वतिप्रेद इस मंत्रका विश्वावसु ऋषि अनुष्टुप्छंद सरस्वती देवता गाथाके गायनमें विनियुक्त है ॥ (मंत्रार्थ) हेवाणिरूप सरस्वती कल्याण गुण विशिष्ट अन्नादिकेदेनेवाली अन्नपूरणे तुम यह वधूरूप द्वंद्वोकी रक्षा करो तुमकोही इस पृथिव्यादिसर्व प्रपंचजातकी कारणरूप प्रकृति कहते है कि जिस्मे विश्वलयको प्राप्त

होती तथा सृष्टिके आदिमे उत्पन्न होती हैं प्रमाण सांख्यतत्वकौमुदी. कारिका ६२ तस्मान्नबध्यतेऽसौन मुच्यते नापिसंसरतिकश्चित् । संसरति बध्यते मुच्यते च नानाश्रयाप्रकृतिः ॥ अर्थ की पूर्वोक्त जो अनुपकारि पुरुषमे उपकार करनेवाली प्रकृति तिस्के अर्थको नष्ट कर आचरण कर्त्ती है इसलिये पुरुष ना बंधहोता नात्यंत मुक्त होता ना जन्मता मरता है परंतु प्रकृति नानाश्रय मुक्त कर्त्ती बंधन कर्त्ती उत्पन्न कर्त्ती है ॥ (असङ्गोयं पुरुषः) यह सांख्य सूत्रमे भी लिखाहै ॥ विस्तारके भयसे व्याख्यानहि कर्तेहै और हम उस गाथाको गान कर्तेहै जो स्त्रियोकी उत्तम पतिव्रतादि यशहै॥९।

अनंतर तुभ्यमग्रे इस मंत्रसेमे वधू वर अग्निकी परिक्रमा करे ॥ तुभ्यमग्रे इसमंत्रका अथर्वण ऋषि अनुष्टुप् छंद अग्निर्देवता प्रदक्षिणामें विनियोगहै ॥ [मंत्रार्थ]हे अग्ने तुमारे लिये ही सोमादि देवता इस कन्याको ग्रहण कर्ते भये ॥ अर्थात् २ वर्ष चंद्रमा पालन कर सोंदर्यताको दे गधर्वको देता भया वह २ वर्ष पालन कर सुंदर कंठ वाणीको दे तुमारेको देता भया तुमभी तद्वत् पालन कर ६ वर्ष पर्यंत और पवित्रताको देकर मुझको देवे अर्थात् हे अग्ने पालनके अनंतर पुत्रादि दे मुझ भर्ताके साथ मिलामें ॥

एवंपश्चादग्नेःस्थित्वालाजाहोमसाङ्गुष्ठहस्तग्रहणाश्म रोहणगाथागानाग्निप्रदक्षिणानिपुनरपिद्विस्तथैवकर्तव्यानीति ॥ एतेननवलाजाहुतयःसाङ्गुष्ठहस्तग्रहणत्रयेचसंपद्यतेतथाआसनविपर्ययः । ततोऽवशिष्टला

जैः कन्याभ्रातृदत्तैरञ्जलिस्थशूर्पकोणेनवधूर्जुहोति ॥ ॐभगायस्वाहा–इदंभगाय० ॥ अथाग्रेवरःपश्चात्कन्यातूष्णीमेवचतुर्थपरिक्रमणंकुरुतः । ततोवरउपविश्यब्रह्मणान्वारब्धःआज्येनप्राजापत्यंजुहुयात्। ॐप्रजापतयेस्वाहा इदंप्रजापतये०इतिमनसा॥ अत्रप्रोक्षणीपात्रेआहुतिशेषाज्यप्रक्षेपः ॥ ततआलेपनेनोत्तरकृतसप्तमण्डलेषुसप्तपदाक्रमणंवरःकारयेत् । वक्ष्यमाणमंत्रैः ॥

भा०टी०इस प्रकार अग्निके पीछे स्थित हो लाजा हवन साथ अंगुष्ठके हस्त ग्रहण अश्मारोहण गाथाकागान अग्निकी प्रदक्षिणा फिर दोवार कर्नी चाहिये ॥ अर्थात् पूर्वोक्त तीन २ वार कर्तव्यहै ॥ और आसनका बदलाना एकवार चाहिये शेषकन्याके भ्राताने दिहुई लाजोसे शूर्पकी कोनसे वधू हवन करे भगायस्वाहा इसमंत्रसे ॥ फिर आगे वर पीछे कन्या चुपचापसे चतुर्थ परिक्रमण करे ॥ प्रजाप०इस्को मनसे कहे और इस हवनमे आहुति शेष घृतका प्रोक्षणीपात्रमे प्रक्षेप करे अनंतर आलेपन (वटना) से उत्तरोत्तर क्रम सप्तमण्डलको वर आक्रमण करवावे वधूसें ॥

ॐएकमिषेविष्णुस्त्वानयतु ॥ द्वेऊर्ज्जेविष्णुस्त्वानयतु ॥ त्रीणिरायस्पोषायविष्णुस्त्वानयतु । चत्वारिमायोभवायविष्णुस्त्वानयतु।पञ्चपशुभ्योविष्णुस्त्वानयतु । षड्ऋतुभ्योविष्णुस्त्वानयतु ॥ सखेसप्तपदाभवसामामनुव्रताभवविष्णुस्त्वानयतु ॥ ततोऽग्नेःप

श्वादुपविश्यपुरुषस्कंधे स्थितात्कुम्भादाम्रपल्लवे नवजलमानीयतेनवरोवधूमभिषिञ्चति॥ॐआपःशिवाःशिवतमाःशांताःशान्ततमास्तेकृण्वन्तुभेषजमिति। अनेनपुनस्तथैवतस्मादेवकुम्भात्तथैवानीतजलेन।

य०अ० ११ मं० ५

आपोहिष्ठामंयोभुवस्तानंऊर्ज्जेदंधातन॥महेरणांयचक्षसे ॥ योवं÷ शिवतंमोरसस्तस्यंभाजयतेहनं÷ उशतीरिंवमातरं÷ ॥ तस्माऽअरंङ्गमामवोयस्स्यक्षयांयजिन्वंथ॥आपोंजनयंथाचनः॥इतितिसृभिर्वधूमात्मानंचाभिषिञ्चति ॥ इति ॥

भा०टी० विष्णुरूप मै तुमको अन्नादि प्राप्तिके लिये एकपद आक्रमण कराताहै ॥ प्रसन्न हो वधू यहकहै (धनंधान्यंचमिष्टान्नं व्यञ्जनाद्यंचयद्गृहे । मदधीनंचकर्तव्यं वधूराद्येपदेवदेत्)॥ १ ॥ विष्णुस्वरूप हम बलके लिये द्वितीयपद आक्रमण कराते है ॥ फिर वधू यह कहै । कुटुंबंपालयिष्यामि तेसदामञ्जुभाषिणी । दुः

खेधीरासुखेहृष्टा द्वितीयेसाब्रवीद्वरम् ॥ २ ॥ विष्णुस्वरूप हम धन पुष्टिके लिये तुमारा तृतीय पदाक्रमण कर्ते है (अनंतर वधू यह कहे) ऋतौकालेशुचिःस्नाता क्रीडयामि त्वयासह। नाहंपरपतिंया_ यांतृतीयेसाब्रवीद्वरम् ॥ ३ ॥

चतुर्थपदको विष्णुस्वरूप हम सुखकी प्राप्ति लिये आक्रमण कराते है फिर वधू यह कहे। लालयामिचकेशान्तं गन्धमाल्यानुलेपनैः। काञ्चनैर्भूषणैस्तुभ्यं तुरीयेसाब्रवीद्वरम् ॥ विष्णुस्वरूपहम पशुसुख गो महिषी इत्यादिका दुग्ध दधिघृतभक्षणरूप और अश्वादि आरोहणके लिये पंचमपदको आक्रमण कराते है ॥ वधूवाक्यभी यह कहे ॥ सखीपरिवृता नित्यं गौर्य्याराधनतत्परा। त्वयिभक्ताभविष्यामि पंचमे सा ब्रवीद्वरम्॥विष्णु स्व० हम छ(षट्)ऋतुओंके सुख भोगने लिये तुमारा पदा क्रमण कर्ते है वधूवाक्य जैसे-यज्ञहोमेचदानादौ भवेयंतववामतः। यत्रत्वंतत्रतिष्ठामि पदेषष्ठेऽब्रवीद्वरम्।।६।।

मुझकी आज्ञामे होकर पतिव्रतादि धर्मशीलसे तुम सप्तलोकमे प्रख्यात हो जैसे अरुंधति जानकी इत्यादि पतिव्रता हो अद्यपर्यन्त सप्तलोकमें प्रसिद्धहै ।। ७ ॥ इति सप्तपदाक्रमणमैत्रिः ॥

अनंतर पश्चिम अग्निके स्थित हो पुरुष स्कंधस्थितघटसे आम्रपत्रसे जल लेकर वर वधूका मस्तक अभिषिंचन कर्ता है (आपःशिवा इत्यादि मंत्रोसे)आपःशिवा इस मंत्रका प्रजापतिऋषि यजुछन्द जलदेवता अभिषेचनमे विनियोगहै (मंत्रार्थ) कल्याणहेतु अतिशयसे कल्याणकारक और शीतल अतिशयसे शान्ति कर्नें वाले जलदेव तुमारेको आरोग्य करें ॥ ॥ आपोहिष्ठादि तीन-

मंत्रोका सिन्धुद्वीपऋषि गायत्रीछंद जलदेवता मार्जनमें विनियुक्तहै ॥ (मंत्रार्थ) हे जलदेव प्रसिद्ध यश और अनुभव किये तुम मुझको बलके लिये अन्नादि भोगने लिये धारण करे और महान् सुंदर देखने योग्य अत्यंत कल्याणके देनेवाले बलपुष्टि कर्नेवाले दुग्ध घृत स्तन्य पानादिसे माताकी न्याई आपमुझको रस देवें और जिस पापके नाशलिये उत्पन्न कर्तेहै तिसरसके लिये हमशीघ्रजाते है ॥ हे जलदेव आप मोक्षप्राप्तिके लिये योग्य हमको उत्पन्न करो- अर्थात् तुमारी कृपा और आचरणसे शौचादिसे हमको मोक्षहों ॥ प्रमाण जैसे पातंज्जलदर्शन. योगसूत्रमे (शौचात्स्वांगेजुगुप्सापरैर- संसर्गः) इति ॥

तत्सूर्यमुदीक्षसेतिवधूंसंबोधयतिवरः ॥ तच्चक्षुरित्यृचंपठित्वावधूःसूर्यंपश्येत् ॥ मंत्रोयथा ॥

यजु अ० ३६ मंत्र २४

तच्चक्षुर्देवहितम्पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् । पश्येमशरदः शतञ्जीवेमशरदः शतꣳशृणुयामशरदः शतम्प्रब्रवामशरदः शतमदीनाः स्यामशरदः शतम्भूयश्चशरदः शतात् ॥

इतिपठित्वासूर्यंपश्यति ॥ अस्तंगतेसूर्य्येध्रुवमुदीक्षस्वइतिप्रैषानन्तरंध्रुवंपश्यामीतिब्रूयात् । तत्रवरपठनीयोमंत्रः ॥ ॐध्रुवमसिध्रुवंत्वापश्यामिध्रुवैधिपोष्यामयिमह्यंत्वादाद्बृहस्पतिर्मयापत्याप्रजावतीसञ्जीवशरदःशतमितिपठेत् ॥

भा० टी० सूर्य्यको देखो यह वर वधूको कहे तच्चक्षु इस मंत्रको पढ वधू सूर्य्यको देखे तच्चक्षु इस मंत्रका दध्यङ्ङाथर्वण ऋषि अक्षरातीतिपुरउष्णिकछंदः सूर्यदेवता सूर्य्यके उपस्थानमे विनियोगहै ॥

(मंत्रार्थ) स्वाहा स्वधाप्रभृति संपूर्ण देवता और पितर जिस्के उदय होनेसे तृप्त होते है ऐसा देवहित और नेत्रोसे होनेसे चक्षु जो सूर्यभगवान् प्रमाण यजु. अध्याय ३१ (चक्षोः सूर्यो अजायत) अर्थ विराड् भगवान्के नेत्रसे सूर्य जो भये ॥ आदिमे कामादि और अविद्यादि दोषरहित उदयको प्राप्तहो ऊर्ध्वको जाताहै उस सूर्यभगवान्को हम शत १०० वर्ष देखे और जीवतरहे कर्णो से यश श्रवण करे वाणीसे श्रेष्ठस्तुत्यादि करे और अदीन रहकर शत १०० वर्षसे अधिक वीस वर्ष जीवत रहे प्रमाण पूर्णायुमेजैसे बृहज्जातके (समा षष्टिर्द्विघ्नामनुजकरिणांपंचचनिशा) इस प्रमाणसे ॥ १२० ॥ वर्ष और पंचरात्र मनुष्यकी पूर्णायुहै रात्रिमे ध्रुवजीको दर्शन करे वरमंत्रको पढे ध्रुवमसि इसमंत्रका परमेष्ठिऋषि पंक्तिछंद प्रजापतिदेवता ध्रुवजीके दर्शनमे विनियुक्तहै ॥

(मंत्रार्थ) हेध्रुव तुम सदैव रहनेवाले निश्चिल है इसलिये तुमका

दर्शन कर्ते है (भाव) जैसे ध्रुवजी निश्चिलहै तद्वत तुम निश्चिल हो और मेरे पुत्रपौत्रादिके पुष्टिकर्नेवाली हो इस लिये प्रजापति ब्रह्माजी मुझको देते भये मेरेसे युक्त प्रजापति तुम शतवर्षजीवित रहो ॥ यदि वधूकी दृष्टिमे ध्रुव ना आवे तो देखतीहुं यह कह दे ॥

अथवरो वधूदक्षिणांसस्योपरिहस्तंनीत्वातस्याहृदयमालभेत। मंत्रोयथा॥ममव्रतेतेहृदयंदधातुममाचित्तमनुचित्तंतेऽस्तु॥ममवाचमेकमनाजुषस्वप्रजापतिष्ट्वानियुनक्तुमह्यमितिमंत्रेण। अथवधूमभिमन्त्रयतिवरः॥सुमङ्गलीरियंवधूरिमाꣳसमेतपश्यत।सौभाग्यमस्यैदत्वायाथास्तंविपरेतनेति॥अथस्विष्टकृद्धोमः॥ ॐअग्नयेस्विष्टकृतेस्वाहा इदमग्नयेस्विष्टकृते० ॥ अत्रस्रुवावशिष्टाज्यस्यप्रोक्षणीपात्रेप्रक्षेपःअयञ्चहोमो ब्रह्मणान्वारब्धकर्तृकः॥ अथसंस्रवप्राशनं। ततआचम्यपूर्णपात्रंदक्षिणांब्रह्मणेदद्यात् ॥ ॐअद्यकृतैतद्विवाहहोमकर्म्मणिआचार्य्यकर्मप्रतिष्ठार्थंइदंहिरण्यमग्निदैवतद्रव्यम्यथानामगोत्रायाऽमुकशर्म्मणेब्राह्मणायदक्षिणांतुभ्यमहंसंप्रददे ॥ततोब्रह्मग्रंथिविमोकः

भा०टी० वर वधूके दक्षिण अंसपर हस्तको रख हृदयको स्पर्श करे ममव्रते इसमंत्रका परमेष्ठिऋषि त्रिष्टुप्छन्द प्रजापतिदेवता हृदयके स्पर्शमे विनियोगहै (मंत्रार्थ) मेरेशास्त्रविहित नियमाचरणमे तुमारे हृदयको प्रजापति धारण करे और मेरे चित्तके अनुकूल तुमारा चित्तहोवे और मेरे वचनको सुखपूर्वक करो। अनंतर वधूको

अभिमंत्रण करे वर सुमङ्गली इस मंत्रका प्रजापतिऋषि अनुष्टुप्छंद विवाहाधिष्ठातृदेवता अभिमंत्रणमे विनियोगहै ॥ (मंत्रार्थ) हे विवाहाधिष्ठातृदेवता गौरी पद्मा शची प्रभृतया यह सुमंगलयुक्त वधूको मिल इसको दृष्टिसे देखे और इस्को सौभाग्य पुत्रपौत्रादि देकर पुनः आनेके लिये जाओ ॥ॐअग्नये स्विष्टकृते इस मंत्रसे आहुति देकर स्रुवालग्न घृतका प्रोक्षणी पात्रमे गेरना और यह होम ब्रह्माका अन्वारब्ध कर कर्ना संश्रव प्राशन कर्ना अनंतर आचमनकर पूर्ण पात्र दक्षिणा ब्रह्माको देवे संकल्पकर ब्रह्मा स्वास्ति कहे ॥ अनंतर ब्रह्मग्रंथि खोलदेनी ॥

अत्रग्रामवचनंचकुर्युः॥ॐसुमित्रियानआपओषधयः सन्तुइतिप्रणीताजलेनपवित्रेगृहीत्वाशिरःसंमृज्यदुर्मित्रियास्तस्मैसन्तुयोऽस्माद्द्वेष्टियञ्चवयंद्विष्मः॥ इत्यैशान्यांसपवित्रांसजलांप्रणीतांन्युब्जीकुर्यात् ॥ ततस्तरणक्रमेणबर्हिरुत्थाप्यआज्येनावघार्यवक्ष्यमाणमन्त्रेणहस्तेनैवजुहुयात् ॥

य०अ० ८ मं० २१

ॐदेवांगातुविदोगातुंवित्वागातुमित । मनसस्पतऽइमंदेवयज्ञꣳस्वाहावातेधाःस्वाहा ॥ इति बर्हिर्होमः ॥

॥ ततउत्थायवध्वादक्षिणहस्तेनस्पृष्टैःस्रुवस्थघृतपुष्पफलैःपूर्णाहुतिंकुर्यात् ॥ मूर्द्धानमितिमंत्रस्यभरद्वाजऋषिर्वैश्वानरोदेवतात्रिष्टुप्छंदःपूर्णाहुतिहोमेविनियोगः ॥

यजु अ० ७ मं० २४

ॐमूर्द्धानंदिवोऽअंरतिम्पृंथिव्या वैश्वानुरमृतऽआजातमुग्निम् । कुविꣳसुम्राजुमतिंथिजनांनामासन्नापात्रंजनयन्तदेवाःस्वाहा ॥

इदमग्नये० ॥ ततउपविश्यस्रुवेणभस्मानीयदक्षिणानामिकाग्रेण ।

य०अ० ३ मं० ६२

त्र्यायुषंजुमदंग्नेःइतिललाटे । कुश्यपंस्य त्र्यायुषम् इतिग्रीवायां । यद्देवेषुंत्र्यायुषं इतिदक्षिणबाहुमूले ॥

तन्नोऽअस्तुत्र्यायुषम् इतिहृदये॥

अनेनैवक्रमेणवध्वाअपित्र्यायुषंकुर्य्यात् । तत्रतन्नो इत्यत्रतत्तेइतिविशेषः॥

भा०टी०नगरका आचार करे कुलटीति जैसे सुमित्रियान इस मंत्रका वामित्रऋषिअनुष्टुप् छंद मित्रदेवता मार्जनमे विनियुक्तहै ॥ [मंत्रार्थ] जल और औषधी हमारेको परमसुख देवे इस मंत्रसे शिरको जलसिञ्चन करै॥ और जो हमारे से द्वेष कर्ता जिसको हम शत्रु मानते है इस्को जल ओषधी दुःखको दे इस मंत्रसे साथ जलके प्रणीताको साथ जलसे न्युब्ज (पुठो) करे ईशानमे ॥ अनंतर पूर्वोक्त आस्तरण क्रमसे कुशाउठाय घृतसे युक्त कर देवागातु मंत्रपढ हाथसे हवन करे ॥ [देवागातु इस मंत्रका अर्थ] ॥ हेदेवता लोक तुम यज्ञके जाननेवाले है इस लिये विष्णुरूप यज्ञको जान कर सुखपूर्वक जाओ । हे अंतर्यामि ब्रह्मस्वरूप यह यज्ञफल तुमारे अर्पण किया जाताहै तुम वायुको अर्पण करो ॥ अनंतर उठकर वधूके दक्षिण हाथसे युक्त स्रुवपर घृत पुष्प फल रख मूर्द्धानं इस मंत्रसे पूर्णाहुति देवे । मूर्द्धानं इस मंत्रका भारद्वाजऋषि अग्निदेवता त्रिष्टुप्छंद पूर्णाहुति होममे विनियुक्त है ॥ [मंत्रार्थ] स्वर्गादि लोकसे ऊपर पृथीव्यादि पांचभूतोंसे विरिक्त ब्रह्माण्डको प्रकाश कर्नै वाला ईश्वर सत्यरूप जन्मादि षड्भाव रहित निर्विकार प्रकाशमान् सर्वज्ञ परमानंद तीन कालसे रहित सृष्टिलयसै प्राणियोंका पात्र भूत और जो देवताको उत्पन्न कर स्व स्वव्यापा-

रमें लगाताहै तिस परमेश्वरके लिये यह आहुति सुहुत हों ॥ बै-ठकर स्रुवसे भस्मको लै दक्षिण अनामिकासे ललाट ग्रीवा दक्षि-णबा हु ३ हृदयमे ४ यथाक्रम आयुषं इसमंत्रसे लगावे वर और वधूके लगानेमे तन्नो इस स्थान तत्ते यहपढे ॥

ततआचारात्शणशङ्खशमीपुष्पार्द्राक्षतारोपण सिंदूरकरणंवरःकुर्यात् ॥ अथवेदितोमण्डपमागत्य दूर्वाक्षतादिग्रहणं ॥ ततस्त्रिरात्रमक्षारालवणाशिनौ अधःशायिनौनिवृत्तमैथुनौभवतः। प्राङ्मुखौवधूवरौ स्थितौभवतः ॥ इति श्रीपदक्रमजटाघनाद्यखिलवे दवेदाङ्गन्यायमीमांसादिशास्त्रसंपन्नअपारमहिमावि राजितश्रीमच्छ्रीगणेशसूनुश्रीरामदत्तकृतावाजसने यीयजुर्वेदीयकात्यायनसूत्रवतांविवाहपद्धतिःसमा प्ता॥ शुभंभूयात् । श्री श्री श्रीः॥

भा०टी० आचारसे शण शंख शमी पुष्प भिंगेचावलका और सिंधूरका मस्तकपर कन्याके चढाना ॥ और ग्रामके वचनकोवर करे ॥ अनंतर वेदिसे मंडपको आकर दूर्वाक्षत ग्रहण कर्ने वाद तीनरात्र लवण क्षार भोजन मैथुन नहि कर्ना और भूमिशयन प्रा-ङ्मुख होकर बैठना होगा ॥ प्रमाण जैसे गृह्यसूत्रमे (त्रिरात्र मक्षा-रालवणशिनौस्यातामधःशयीता ँसंवत्सरंनमिथुनमुपेयातांद्वादशर त्र ५ षड्रात्रंत्रिरात्रमन्ततः) इति श्रीगुरुदेवद्विजगोचरणसेवक काव्यनाटक नीति साहित्यज्योतिष चिकित्सादि,प्रवीण शिक्षासू-

त्र व्याकरण छंदयुक्त शुक्लयजुर्वेदाध्यायी गौतमगोत्र (शोरि) ज्ञातिसम्भूत विपाशाशतद्रुरंतर्गत श्रीमहाराज जगज्जीत सिंहरक्षित राजधानी कर्पूरस्थला निवासी श्रीघनैयारामशर्मणः प्रपौत्रः श्रीतुलसीरामशर्मणः पौत्रः श्रीदैवज्ञदुनिचंद्रात्मज श्रीयुत करुणासिंधु सर्वबंधु श्रीपण्डित विष्णुदत्त वैदिक कृत विवाहपद्धति टीका विक्रमार्कात् ऋषिवेदांक भूमिते १९४७ वर्षे मधुमासे रामनवम्यांतिथौ रात्रौ समाप्तिमगात् तच्च शुभं भूयात् श्रीरामचंद्रप्रसादात् विप्राज्ञयाच॥

प्रार्थना

यदशुद्धमसम्बंद्धमज्ञानाच्चकृतंमया। विद्वद्भिःक्षम्यतांसर्वंबालत्वादयमञ्जलिः॥ सूर्या चन्द्रमसौ यावत् पृथ्वी विश्वस्य धारिणी॥विवाहपद्धते ष्टीकातावत्तिष्ठतुमेकृता॥ श्रीः नमोगणपतये॥ श्रीः॥

(इति षष्ठप्रकरणम्)

अथ सप्तमप्रकरणम्।

ॐस्वस्तिश्रीगणेशाय नमः॥ अथचतुर्थीकर्मप्रारभ्यते॥ तत्रचतुर्थ्यामपररात्रेचतुर्थीकर्मतच्चगृहाभ्यन्तरएवकार्य्यं। ततउद्वर्तनादिकृत्वायुगकाष्ठउपविश्यवधूवरौप्राङ्मुखौभवतः॥गणपत्यादिदेवतापूजनं॥ ततःकुशकण्डिकाप्रारम्भः॥तत्रक्रमः॥ जामातृहस्तपरिमितांवेदींकुशैःपरिसमूह्यतान्कुशानैशान्यांनिक्षिप्यगोमयोदकेनोपलिप्यस्फ्येनस्रुवेणवाप्रा

गग्रप्रादेशमात्रत्रिरुत्तरोत्तरक्रमेणोल्लीरूयउल्लेखनक्र मेणअनामिकाङ्गुष्ठाभ्यामृदमद्धृत्य । जलेनाभ्युक्ष्य तत्रतूष्णींकांस्यपात्रेणाग्निमानीयस्वाभिमुखंनिदध्यात्॥

टीका--विवाहके अनंतर चतुर्थीकर्म लिखते हैं। विवाहकी रात्रिसे चतुर्थरात्रमें चतुर्थीकर्म गृहके अंतरमे कर्ना चाहिये ॥ और उद्वर्तन (वटना) आदिकर्म कर युगकाष्ठ अर्थात् हलपजालिपर बैठ स्नान कर शुद्ध वस्त्रको शुभवस्त्र आदि धारण कर घरमें प्रवेश हो वधूवर पूर्वमुख होकर बैठे और गणपति षोडश १६ मात्रा नवग्रहादि विवाहवत् सर्वपूजा करे । अनंतर कुशकण्डिका कर्नी । तिसमें विधि यह है ॥ जामातृके हस्त ४ सदृशवेदि बनाय कुशोसे समूह न कर वह कुशा ईशानमे प्रक्षेप कर गोमय जलसे लेप देय स्फ्यवास्रुवसे प्रादेशमात्र उत्तर क्रमसे उल्लेखनत्रय रेखाकर इसी प्रकार मृत्तिका प्रक्षेपकर-जलसे अभ्युक्षण कर कांस्यपात्रमे तूष्णीं होय अग्निले अपने सन्मुख वेदिमें स्थित करे ॥

ततःपुष्पचन्दनतांबूलवस्त्राण्यादाय। ॐअस्यांरात्रौ कर्तव्यचतुर्थीकर्महोमकर्मणिकृताऽकृतावेक्षणरूप ब्रह्मकर्मकर्तुममुकगोत्रममुकशर्माणंब्राह्मणमेभिःपुष्पचंदनतांबूलवासोभिर्ब्रह्मत्वेनत्वामहंवृणे । इतिब्रह्माणंवृणुयात्। ॐवृतोस्मीतिप्रतिवचनं। यथाविहितंकर्मकुर्वितिवरेणोक्ते। करवाणीतिब्राह्मणोवदेत् ॥ ततोऽग्नेर्दक्षिणतःशुद्धमासनंदत्वातदुपरिप्रागग्रान्कु

शानास्तीर्य्यब्रह्माणमग्निप्रदक्षिणक्रमेणानीयॐअत्र त्वंमेब्रह्माभवइत्यभिधाय । ॐभवानीतिब्राह्मणेनोक्ते । कल्पितासनेउदङ्मुखंब्रह्माणमुपवेशयेत् ॥

भा०टी०अनंतर पुष्प चंदन तांबूल वस्त्रले । इस चतुर्थरात्रिमें कर्ता जो होम उस्की अशुद्धि शुद्धि साक्षीके लिये अमुकगोत्र ब्राह्मण तुमको ब्रह्मा समझकर वर्ण कर्ता हे । मैंने वर्णीली । फिर यथा विहितआप कर्म कीजिये यह वर कहे । करताहूं ब्रह्मा कहे । अनंतर दक्षिण अग्निसे शुद्ध आसन देकर ऊपर पूर्वाग्र कुशा विछाय अग्निकी प्रदक्षिणा कर इहाँ तुम ब्रह्मा होवे । हुआ यह ब्राह्मण कहे । फिर उत्तराभिमुख उस आसनपर ब्रह्माको स्थित करे ॥

ततःपृथूदकपात्रमग्नेरुत्तरतःप्रतिष्ठाप्यप्रणीतापात्रंपुरतःकृत्वावारिणापरिपूर्य्यकुशैराच्छाद्यब्रह्मणोमुखमवलोक्याग्नेरुत्तरतःकुशोपरिनिदध्यात् ॥ ततःपरिस्तरणं । बर्हिषश्चतुर्थभागमादायआग्नेयादीशानान्तंब्रह्मणोग्निपर्यन्तंनैर्ऋत्याद्वायव्यान्तंअग्नितःप्रणीतापर्यन्तं । ततोऽग्नेरुत्तरतःपश्चिमदिशिपवित्रछेदनार्थंकुशत्रयंपवित्रकरणार्थंसाग्रमनन्तर्गर्भकुशपत्रद्वयंप्रोक्षणीपात्रं । आज्यस्थाली ॥ सम्मार्जनार्थंकुशत्रयंउपयमनार्थंवेणीरूपकुशत्रयं । समिधस्तिस्रः । स्रुवः । आज्यं । षट्पञ्चाशदुत्तरवरमुष्टिशतद्वयावछिन्नतण्डुलपूर्णपात्रं । एतानिपवित्रछेदनकुशानां

पूर्वपूर्वदिशिक्रमेणासादनीयं ॥ ततःपवित्रछेदन कुशैःपवित्रेछित्वाप्रादेशमितपवित्रकरणम् ॥

भा०टी०—अग्निसे उत्तर जलसहित पितलका कुंभ स्थापनकर प्रणीतापात्रको सन्मुखकर जलसे भर कुशोसे आच्छादित कर ब्रह्माजीको देख अग्निसे उत्तर कुशामें स्थित करे ॥ अनंतर कुशोका चतुर्थभागले अग्निसे ईशान पर्यंत ब्रह्मासे अग्नि पर्यंत निर्ऋति कोणसे वायुकोण पर्यंत और समिद्धत अग्निसे प्रणीता पर्यंत पूर्वोत्तर क्रमसे आस्तरण करे फिर अग्निसे उत्तर पश्चिम दिशामें पवित्र छेदनार्थ कुशत्रय। और पवित्र करणके लिये गर्भपत्र रहित अग्रसहित दो कुशपत्र प्रोक्षणीपात्र आज्यस्थाली । संमार्जन शुद्धिके लिये तीन कुशा उपयम (हस्तग्रहण) के लिये वेणीरूप तीन कुशा । तीन समिधापालाशकी। स्रुव घृत ५६ मुष्टिमित तण्डुलयुक्त पूर्णपात्र । यह पवित्र छेदन कुशाके पूर्व २ स्थितकर्ने क्रमसे ॥ अनंतर पवित्र छेदन कुशोसे पवित्रे छेदन कर प्रादेशमात्र पवित्रा बनाये ॥

ततःसपवित्रकरेणप्रणीतोदकंत्रिःप्रोक्षणीपात्रेनिधायअनामिकाङ्गुष्ठाभ्यामुत्तराग्रेपवित्रेधृत्वात्रिरुत्पवनंततःप्रोक्षणीपात्रस्यसव्यहस्तकरणम्। पवित्रेगृहीत्वात्रिरुद्दिङ्गनं। प्रणीतोदकेनप्रोक्षणीप्रोक्षणं। ततःप्रोक्षणीजलेनयथासादितवस्तुसेचनम् ॥ ततोऽग्निप्रणीतयोर्मध्येप्रोक्षणीपात्रंनिधाय॥ आज्यस्थाल्यामाज्यनिर्वापः। ततोऽधिश्रयणं। ततोज्वलतृणादि

नाहविर्वेष्टयित्वाप्रदक्षिणक्रमेणपर्यग्निकरणम्। ततः स्रुवंप्रतप्यसम्मार्जनकुशानामग्रैरन्तरतोमूलैर्बाह्यतः स्रुवसंमार्जनम् ॥ प्रणीतोदकेनाभ्युक्ष्यपुनःप्रतप्यस्रुवं दक्षिणतोनिदध्यात् ॥

भा०टी–अनंतर सपवित्र हस्तसे प्रणीताके जलको तीनवार प्रोक्षणीपात्रमें प्रक्षेप कर अनामिका अंगुष्ठसे उत्तराग्र पवित्राधारण कर तीनवार ऊर्द्धको पवित्रेसे जल फैंकना फिर प्रोक्षणी पात्रको वाम हस्तमे स्थितकर पवित्रेग्रहण कर तीनवार उद्गिंगन करे ॥ और प्रणीताजलसे प्रोक्षणीपात्रको प्रोक्षण कर फिर प्रोक्षणी जलसे सर्ववस्तु सिंचन करे। अनंतर आग्नि प्रणीतामध्यमें प्रोक्षणीपात्र धरदे आज्यस्थालीमें घृतपाय अग्निमें रख ज्वलततृणसे हविर्वेष्टन कर प्रदक्षीण क्रमसे पर्यग्नि करण अर्थात् अग्निमें प्रक्षेप करे तृणको ॥ फिर स्रुवको तपाय सम्मार्जन कुशाके अग्रभागसे मध्यसे साफ करे और मूलसे ऊपर साफ कर फिर अग्निमें तपाय दक्षिणमें स्थित करे।

ततआज्यस्याग्नेरवतारणम्। ततआज्येप्रोक्षणीवदुत्पवनं। अवेक्ष्यसत्यपद्रव्येतन्निरसनं। पुनःपूर्ववत्प्रोक्षण्युत्पवनम्। उपयमनकुशान्वामहस्तेनादाय उत्तिष्ठन्प्रजापतिंमनसाध्यात्वातूष्णींघृताक्ताःसमिधस्तिस्रःक्षिपेत्॥ ततउपाविश्यप्रोक्षणीजलेनाग्निंप्रदक्षिणंपर्युक्ष्यपवित्रंप्रोक्षणीपात्रेधृत्वाब्रह्मणान्वारब्धः

पातितदक्षिणजानुर्जुहुयात् । तत्राघारादारभ्याहु तिचतुष्टयेतत्तदाहुत्यनन्तरंस्रुवावस्थिताज्यंप्रोक्षि ण्यांक्षिपेत् । ॐप्रजापतयेस्वाहाइदंप्रजापतये० । इ तिमनसा। ॐइन्द्रायस्वाहा। इदमिन्द्राय०। इत्याघा रौ । ॐअग्नयेस्वाहा । इदमग्नये० । ॐसोमायस्वाहा। इदंसोमाय० ॥ इत्याज्यभागौ ॥ ततआज्याहुतिपंच तयेस्थालीपाकाहुतौचप्रत्याहुत्यनन्तरंस्रुवावस्थि तहुतशेषघृतस्यप्रोक्षणीपात्रेप्रक्षेपः ॥

भा०टी०घृतको अग्निसेउतार घृतकोभी प्रोक्षणीवत् उत्पवन कर यदि कुत्सित द्रव्य घृतमें होय तो निकाल फिर पूर्ववत् प्रोक्ष णीका उत्पवन कर उपयमन कुशा वामहस्तमें ले उठकर प्रजाप-तिका मनमें ध्यान कर तूष्णी हो घृतयुक्त तीन समिधा अग्निमें प्रक्षेप करे फिर बैठकर प्रोक्षणीजलसे अग्निको प्रदक्षिण क्रमसे पर्युक्षण कर पवित्रा प्रोक्षणीपात्रमें रख ब्रह्मासे अन्वारब्ध अर्थात् कुशामिलाय दक्षिणगोढानिमाय स्रुवसे हवन करे और चार आहु-तिके अनंतर स्रुवमें ऽवशिष्ट घृतका प्रोक्षणीपात्रमें प्रक्षेप करे ॥ प्रजापतिकी आहुति मनसे कहे इंद्र अग्नि सोम यह क्रमसे चार आहुति हवन करे फिर घृतसे जो पंच आहुति और स्थालीपाक आहुतिमे आहुतिके अनंतर स्रुवमें अवशिष्ट घृतका प्रोक्षणीपात्रमें प्रक्षेप कर्नां ॥

ततोब्रह्मणान्वारब्धंविना । ॐअग्नेप्रायश्चित्तेत्वंदेवा नांप्रायश्चित्तिरसि । ब्राह्मणस्त्वानाथकामउपधावा

मियास्यैपतिघ्नीतनूस्तामस्यैनाशयस्वाहा ॥ इदम
ग्नयेनमम । ॐवायोप्रायश्चित्तेत्वंदेवानांप्रायश्चि
त्तिरसिब्राह्मणस्त्वानाथकामऽउपधावामियास्यैप्र
जाघ्नीतनूस्तामस्यैनाशयस्वाहा ॥ २ ॥ इदंवायवेन
मम ॥ ॐसूर्यप्रायश्चित्तेत्वदेवानांप्रायश्चित्तिरसिब्रा
ह्मणस्त्वानाथकामऽउपधावामियास्यैपशुघ्नीतनू
स्तामस्यैनाशयस्वाहा ॥ ३ ॥ इदंसूर्यायनमम ॥
ॐचन्द्रप्रायश्चित्तेत्वंदेवानांप्रायश्चित्तिरसिब्राह्मण
स्त्वानाथकामऽउपधावामियास्यैगृहघ्नीतनूस्ताम
स्यैनाशयस्वाहा ॥ ४ ॥ इदंचंद्रमसेनमम ॥ ॐगन्ध
र्वप्रायश्चित्तेत्वंदेवानांप्रायश्चित्तिरसिब्राह्मणस्त्वाना
थकामऽउपधावामियास्यैयशोघ्नीतनूस्तामस्यैनाश
यस्वाहा ॥ ५ ॥ इदंगन्धर्वायनमम ॥

१ भा०टी०[मंत्रार्थ—अग्नेप्रायश्चित्ते] हे अग्निदेव प्रायश्चित्तस्वरूप देवताओंके दोषनाशक तुमकोही स्तुतिपूर्वक मै ब्राह्मण प्राप्त होता है । की इस स्त्रीका पति विरोधिक अर्थात् पतिनाशक अंगलक्षण शरीरको नाश करो अस्यै यह चतुर्थ्यर्थमे षष्ठीविभक्ति है॥

२ [मंत्रार्थ—वायोप्रायश्चित्ते] हे वायुदेव इस स्त्रीका जो प्रजाघ्नी संतान विरोधि अर्थात् पुत्रनाशक शरीर (वा अंगविशेष) उस्का नाशकरो ॥

३ (मंत्रार्थ—सूर्यप्रायश्चित्ते) हे सूर्यदेव इस स्त्रीका जो पशु विरोधि अर्थात् पशुनाशक शरीर वह नाश करो ॥

४ (मंत्रार्थ—चंद्रप्रायश्चित्ते) हे चंद्रमादेव इस स्त्रीका जो गृह विरोधि अर्थात् गृहनाशक शरीरहै वह नाश करो ॥

५ (मंत्रार्थ—गन्धर्वप्रायश्चित्ते) हे यशकेप्रकाशक गन्धर्वदेव इस स्त्रीका जो यश विरोधि अर्थात् यशनाक शरीर उस्का नाश करो ।

चरुमभिघार्यततःस्थालीपाकेनजुहुयात् ॥ ॐप्रजापतयेस्वाहा—इदंप्रजापतये० ॥ इतिमनसा । अग्न्याहुतिनवकेहुतशेषघृतस्यप्रोक्षणीपात्रेप्रक्षेपः ॥ अयंचहोमोब्रह्मणान्वारब्धकर्तृकः ॥ ततआज्यस्थालीपाकाभ्यांस्विष्टकृद्धोमः ॥ ॐअग्नयेस्विष्टकृते स्वाहा—इदमग्नयेस्विष्टकृते० ॥ ततऽऽआज्येन । ॐ भूःस्वाहा—इदमग्नये० ॥ ॐ भुवःस्वाहा—इदंवायवे। ओंस्वःस्वाहाइदंसूर्याय० ॥ एतामहाव्याहृतयः ॥

भा०टी० चरुको तप्त कर स्थालीपाकसे हवन करे ॐ प्रजापतये स्वाहा यह मंत्र मनसे कहे ॥ अग्नये स्वाहा इस आहुतिसे नव आहुतिपर्यन्त हुतशेष घृतका प्रोक्षणोपात्रमे प्रक्षेप करे ॥ यह होम ब्रह्माके अन्वारब्ध कर्तृक होमहै ॥

(शुक्लयजुर्वेद अध्याय २१ मंत्र ३)

ॐत्वन्नोऽअग्नेवरुणस्यविद्वान्देवस्यहेडोऽअवयासिसीष्टाः ॥ यजिष्ठोवन्हितमःशोशुचानोविश्वाद्वे

षांॅसिप्रमुंमुग्ध्युस्म्मत्स्वाहा ॥ इदमग्नीवरुणाभ्याम्० ॥ १ ॥

(शुक्ल० यजु० अध्याय २१ मंत्र ४ ॥)

ॐसत्वन्नोऽअग्नेवुमोभंवोतीनोदिंष्ठोऽअस्याऽउषसोव्युंष्टौ ॥ अवंयक्ष्वनोवरुणॅरराणोवीहिमृंड्डीकॅंसुहवोंनऽएधिस्वाहा॥इदमग्नये० २

शुक्ल० यजु० अध्याय मंत्र

ॐअयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपाश्चसत्वामित्वमयाऽअसि । अयानोयज्ञंवहास्ययानोधेहिभेषजॅंस्वाहा ॥ इदमग्नये० ॥ ३ ॥

शुक्ल० यजुर्वेद अध्याय मंत्र

ॐयेतेशतम्वरुणयेसहस्त्रंयज्ञियाः

पाशाविततामहान्तः। तेभिर्न्नोऽअ द्यसवितोत्ताविष्णुर्विश्श्वेमुञ्चन्तुम रुतःस्वर्काःस्वाहा ॥ इदंवरुणायस वित्रेविष्णवेविश्श्वेभ्योदेवेभ्योम रुद्भ्यःस्वर्केभ्यः० ॥ ४ ॥

(शुक्ल यजुर्वेद अध्याय २१ मंत्र १२ ॥

ॐउदुत्तमम्वरुणपाशमस्म्मदवा धमँविमंध्यमश्र्रंथाय। अथाव्वय मादित्यव्रुतेतवानागसोऽअदितये स्यामस्वाहा ॥ इदंव्वरुणाय५एताः सर्वप्रायश्चित्तसंज्ञकाः ॥

भा०टी० त्वन्नो और सत्वन्नो इस मंत्रोका वामदेवऋषि त्रिष्टुपुछन्द अग्नि और वरुणदेवता सर्व प्रायश्चित्तमें विनियुक्तहै ॥ और (येतेशतं) इस मंत्रका शुनःशेपऋषि त्रिष्टुपूछंद वरुणदेवता वरुणसंबधि शापके मोचनमें विनियुक्तहै ॥ (मंत्रार्थत्वन्नोऽअग्नेइति)

हे अग्निदेव तुम इस कर्ममें वैगुण होनेसे वरुणदेवके क्रोधको दूर करो कैसे तुम सर्वकर्ममें साक्षी चतुर हो ॥ और सबसे उत्तम हो और सर्वदेवताओंको यज्ञका भाग देनेवाले हो प्रकाशमान हो इसलिये मंदबुद्धिवाले हमको जानकर हमारेसे कीहुई अवज्ञा (अनादर) को क्षमाकर सर्व प्रकारसे कल्याण देवो ॥ १ ॥ (मंत्रार्थ सत्वन्नइति) हेअग्ने तुम सर्वकी पालना कर्नेवाले है इस लिये आजदिनके प्रातःकालसे लेकर मुझकी रक्षा करो। नहीं केवल रक्षाही किन्तु हमारे कर बुलाये तुम सुखपूर्वक आकर सुख देने वाला चरुयज्ञके स्वामि वरुणदेवताको देकर पूजन करो। जिसवरुणदेवभी प्रसन्न हो हमारेको सुख दे॥ २॥ (मंत्रार्थ—अयाश्चाग्नइति) हे अग्ने तुम सर्वांतर्यामी और प्रायश्चित्तद्वारा सर्वप्राणिको शुद्धकर्नेवाले। और शुभके दाता हमारे किये हुए यज्ञको कृपाल होनेसे इंद्रादि देवताओंको देनेवाले इसलिये हमकोभी भेषज अर्थात् सुखके देनेवाला त्रिविध दुःख विनाशक अपूर्व सुख देवो ॥३॥

(मंत्रार्थ—येतेशतमिति) हे वरुणदेव यज्ञके विघ्नसे उत्पन्न हुए वडे २ भारी महान् कठिन जो तुमारे शतसंख्यक और सहस्रसंख्यक पाशहै। वह पाश पापरूप हमारे सवितासूर्य विष्णुरूप इंद्र और सर्वदेवता और वायुदेव ४९ सुंदर हृदयवाले आदित्य १२ हमारे पापोंको नष्ट करें ॥ ४ ॥ (मंत्रार्थ—उदुत्तममिति) उत्तम मध्यम अधम यह तीन वरुणजीके पाशहै ॥ हे वरुणदेव ज

(१)अध्यात्मक१आधिभौतिक २आधिदैविकभेदसेदुःखतीनप्रकारके हैइन्केभेदप्रत्युपभेदमत्कृतरामगीताविषमपदीटीकामेसाविस्तृत लिखे है ॥

तुम्हारा उत्तमपाशहै उससे हमारि रक्षा करो ।और जो मध्यम पाशहै उससेभी हमारी रक्षा करो पाशको शिथिल करो हे वरुणदेव हम ब्रह्मचर्यसे तुमारेसे निरपराध होकर दीनतासे रहित होते है ॥ (दीनतायांदितिःप्रोक्ता दितिःस्याद्दैत्यमातरि) इस वचनसे दितिनाम दीनताकाभी है ॥ ५ ॥ यह आहुति सर्व प्रायश्चित्त मेंहै ॥

ॐप्रजापतयेस्वाहा इदंप्रजापतये० । इतिमनसा ॥ इदंप्रजापत्यं ततःसंस्रवप्राशनम् । आचम्य । ॐअस्यांरात्रौकृतैतच्चतुर्थीहोमकर्मणिकृताऽकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्मप्रतिष्टार्थमिदंपूर्णपात्रंप्रजापतिदैवतंअमुकगोत्रायामुकशर्मणेब्राह्मणायदक्षिणांतुभ्यमहंसंप्रददे ॥ इतिदक्षिणांदद्यात् ॥ स्वस्तीतिप्रतिवचनम् ॥ ततोब्रह्मग्रंथिविमोकः । ततःसुमित्रियानऽआपऽओषधयःसन्तु । इतिपवित्राभ्यांशिरःसंमृज्य । ॐ दुर्म्मित्रियास्तस्म्मैसन्तुयोऽस्मान्द्वेष्टियञ्चवयंद्विष्मः । इत्यैशान्यांदिशिप्रणीतांन्युब्जीकुर्यात् । ततःस्तरणक्रमेणबर्हिरुत्थाप्यघृताक्तंहस्तेनैवजुहुयात्॥

शुक्ल यजुर्वेद अध्याय ८ मंत्र २१

ॐदेवागातुविदोगातुंवित्वागातुमित । मनसस्पतऽइमन्देवयज्ञꣳस्वाहावातेधाःस्वाहा ॥

भा०टी०प्रजापतये यह मनसे कह प्रजापति संबंधि हवनकर फिर संश्रव प्राशन करे ॥ इस रात्रिमें कृत चतुर्थीकर्मकी संगतासिद्धिके लिये अमुकगोत्र ब्राह्मणको दक्षिणा देताहै ब्राह्मण स्वस्ति कहै। फिर ब्रह्माकी ग्रंथि खोलदेवे। सुमित्रियानऽआप ओषधयः सन्तु इस मंत्रसे शिरको जलसे मार्जन करे। दुर्मित्रिया इस मंत्रसे प्रणीताको ईशान कोणमे न्युब्जकरे फिर आस्तरण क्रमसेही कुशा ले घृत लगाय देवागातु इस मंत्रसे हाथसेही हवन करे[मंत्रार्थ-देवागात्विति] हे देवतालोक तुम यज्ञके जाननेवाले है इसलिये विष्णुरूप यज्ञको जान कर सुखपूर्वक जाओ हेअन्तर्यामि ब्रह्मस्वरूप यह यज्ञका फल तुमारे अर्पण किया जाताहै ॥ तुम वायुको अर्पण करो ॥

आम्रपल्लवेनजलमादायमूर्द्धिवरोवधूमभिषिञ्चति । ॐयातेपतिघ्नीप्रजाघ्नीपशुघ्नीगृहघ्नीयशोघ्नीनिंदिता तनूजारघ्नीततएनांकरोमिसाजीर्यत्वंमयासहश्रीअमुकदेव्या । इतिमंत्रेण । ततोवधूंस्थालीपाकंप्राशयतिवरः। ॐप्राणैस्तेप्राणान्संदधामिॐअस्थिभिरस्थीनिसंदधामि ॥ ॐमाᳬसैस्तेमाᳬसानिसंदधामिॐत्वचातेत्वचंसंदधामि ॥ इतिमंत्रचतुष्टयेनप्रतिमंत्रांतेअन्नंप्राशयेत् ॥ ततोवधूहृदयंस्पृष्ट्वावरःपठेत् ॥ ॐयत्तेसुशीमेहृदयंदिविचन्द्रमसिश्रियं । वेदाहंतन्मांतद्विद्यात्पश्येमशरदःशतंजीवेमशरदःशतᳬशृणुयामशरदःशतमिति ॥

भा०टी०आम्रके पत्रसे जल ले वरवधूको यातेपातिघ्नी इस मं-त्रसे मार्जनकरे ॥ [मंत्रार्थ—याते] हेस्त्री जो तुमारापतिनाशक पुत्रनाशक पशुनाशक गृहनाशक यशनाशक निंदित शरीरहै सोजीर्णको (नाशको) प्राप्तहोय मुझकाभी जोस्त्री पुत्र पशु गृह यश नाशक शरीरहै उस्के साथ और मै तुमको जारके नाशकर्नेवाली अर्थात् पतिव्रता कर्त्ताहै ॥ अनंतर वधूकोवर प्राणैस्ते इन चतुरमंत्रोसे स्थालीपाक प्राशनकरवाये ॥ (मंत्रार्थ प्राणैस्ते) हे वधू तुह्मारे प्राणोंके साथ मैं अपने प्राण और अस्थियोंसे आपनि अस्थि मांससे मांस त्वचासे त्वचास्थित कर्ताहै अर्थात् तेरे और मेरेमें कुछभेद बुद्धि नहींहै अनन्तर वरवधूके हृदयको स्पर्शकर यत्ते सुशीमें यह मंत्रपढे ॥ (मंत्रार्थ यत्ते सुशीमें) हेवधू जो तुह्मारे हृदयमें चंद्रमासि शोभा लक्ष्मीमें जानताहै वह मुझको प्राप्तहो उसको मे शतवर्ष पर्यंतदेखा और शतवर्ष जीवतरहा और शतवर्षही श्रवणकरा ॥ भावार्थ यहहै कि तुमारेसाथ रोगरहित शतवर्षपर्यंत सुखपूर्वक प्राणाको धरणकरा ॥

अथकङ्कणमोक्षणादीनियुतग्रंथिविमोकादीनिआचारात्प्राप्तानिकर्तव्यानि ॥ मंत्रः॑कंकणंमोचयाम्यद्य रक्षांसिनकदाचनमयिरक्षांस्थिरांदत्वास्वस्थानंगच्छकंकण ॥ ततउत्थायवधूदक्षिणहस्तस्पृष्टस्त्रुवेण घृतफलपुष्पपूर्णेनपूर्णाहुतिंजुहुयात् ॥

(यजु० अध्याय ७ मंत्र २४)

ओ३म्मूर्द्धानंदिवोऽअंरतिम्पृंथिव्याव्वैं श्वानुरमृतऽआजातमग्निम् । कुविंᳬसम्म्राजमतिंथिञ्जनांनामासन्नापात्रंञ्जनयन्तदेवाःस्वाहा ॥ इदमग्नये० ॥

ततः स्रुवेणभस्मानीयदक्षिणानामिकयात्र्यायुषंकुर्य्यात् ।

यजु०अध्याय ३ मंत्र ६२

ओ३म्त्र्यायुषंजमदंग्ने÷॥ इति ललाटे। ओ३म्कुश्यपंस्यत्र्यायुषम् ॥ इति ग्रीवायांओ३म्यद्देवेषुंत्र्यायुषम् । इतिदक्षिणबाहुमूले ॥ ओ३म्तन्नोंअस्तुत्र्यायुषम् । इतिहृदये ॥

एवंवध्यापित्र्यायुषङ्कुर्य्यात् । तत्रतन्नोइत्यस्यस्थानेतत्तइतिविशेषः । ततआचार्यायदक्षिणांदद्यात् ॥

भूयसींदद्यात् ॥ इति श्रीचतुर्थीकर्म समाप्तम् ॥

भा०टी०कंकण मोक्षण और युतग्रंथि (खठचितावा) मोक्षण आचारसे (मंत्रार्थ) में आज कंकणको त्यागता है राक्षस दूर होये हेकंकण मेरे में दृढ रक्षादे अपने स्थानको यथा सुखजा ओ॥ फिर उठकरवधूका दक्षिण हाथ स्रुवके साथलगाय घृतफल पुष्पयुक्त पूर्णाहुति वर हवनकरें। मूर्द्धानं इस मंत्रसे (मंत्रार्थ मूर्द्धानमिति) स्वर्गादि सप्तलोकसे ऊपर पृथिव्यादिपांचभूतोंसेविरिक्त (रहित ब्रह्माण्डको प्रकाश कर्नेवाला ईश्वर सत्यरूप जन्म आदि षड्भाव रहित निर्विकार प्रकाशमान् सर्वज्ञ परमानंद तीन कालसे रहित सृ-ष्टि (उत्पत्ति) लय (नाश) से प्राणियोंका पात्र तथा आधार और जो देवताओंको उत्पन्नकर स्वरव्यापारमें लगाताहै तिस परमेश्वरके लिये यह आहुति सुहुतहो ॥ बैठकर स्रुवसे भस्मले द-क्षिण अनामिकासे ललाट १ ग्रीवा २ दक्षिण बाहुमूल ३ हृदयमे ४ यथाक्रम त्र्यायुषं इस मंत्रसे लगावे इसीप्रकार वधूकेभी लगा-वे तन्नोके स्थान तत्ते यह वधूको कहना ॥ इतना विशेषहैं ॥ अनंतर आचार्यको दक्षिणा भूयसी देवे ॥

इति श्रीकर्पूरस्थल निवासि गौतमगोत्र(शोरि)अन्वयालंकृत दैवज्ञ दुनिचंद्रात्मज पण्डित विष्णुदत्त वैदिककृत चतुर्थी कर्म टीका अ द्रिवेदांकभूमिते १९४७ मधुमासे कृष्णपञ्चम्यां गुरुदिने समाप्तिमगा त् । साचशुभावहीस्यात्कुलदेव्याः प्रसादात् देवगुरुद्विजाशीर्भिः

॥ श्रीः ॥ शुभम् ॥ समाप्तश्चेद सप्तमं प्रकरणम् ॥

अथ विवाहमंत्राणांसूचीपत्रम्

अथ चतुर्थीकर्ममंत्राः

इति विवाहमंत्राणांसूचीपत्रम्

अथ अष्टमप्रकरणम्।

(स्त्रीणामाचारे)

ॐस्वस्ति श्रीगणेशाय नमः॥ श्रीगुरुवेनमः॥

लोकानंत्यंदिवः प्राप्तिः पुत्रपौत्रप्रपौत्रकैः॥
यस्मात्तस्मात्स्त्रियःसेव्याःकर्तव्याश्चसुरक्षिताः॥

भा०टी०याज्ञवल्क्यस्मृति और मन्वादि धर्मशास्त्र और श्रुतियोंमे स्त्रियोंका स्वीकार रक्षा यह सिद्धहै इस लिये पुत्रपौत्र प्रपौत्रादिद्वारा स्वर्गादिप्राप्तिके लिये स्त्रीयोंका पाणिग्रहण कर्ना चाहिये और स्त्रीयोंको उपदेश कर्ना आचारका तथा भर्ताकी पूजन

अवश्य कर्तव्यहै और यहभी याज्ञवल्क्यस्मृति प्रथम अध्यायमेंभी लिखाहै की (पतिप्रियहितेयुक्तास्वाचाराविजितेन्द्रिया । सेहकीर्तिमवाप्नोतिप्रेत्यचानुत्तमांगतिम्)अर्थात् जो स्त्रीपतिके प्रियमें तत्पर और शुद्ध आचार युक्त और इंद्रियजित् ऐसी स्त्री इसलोकमें कीर्ति यश और परलोकमें उत्तमगतिको प्राप्त होतीहै और भी लिखाहै (स्त्रीभिर्भर्तृवचःकार्यमेषधर्मःपरःस्त्रियाः) अर्थात् भर्ताका वचन मानना यही स्त्रीका परम धर्महै ॥ अन्यच्च (गुरुरग्निर्द्विजातीनां वर्णानां ब्राह्मणो गुरुः । पतिरेको गुरुः स्त्रीणां सर्वस्याभ्यागतो गुरुः) अर्थात् ब्राह्मणोंका अग्नि गुरु वर्णोंका ब्राह्मण गुरु स्त्रीका एक पतिही गुरु होताहै अभ्यागत सर्वका गुरुहै इत्यादि अनेक प्रमाणोंसे स्त्रियोंका पतिही गुरुहै इसलियेपतिकी सेवा और आज्ञा कर्नी आचार शुद्ध रखना यही स्त्रीका मुख्य धर्महै इसलिये कुछ यत्किंचित् स्त्रीयोंका आचार धर्म शास्त्रोक्त लिखतेहै ॥ जो सौभाग्यवती स्त्री मात्रहै उन्को प्रातःकाल सूर्योदयके प्रथम चार घडीके तडके (प्रातःकाल) उठकर नेत्रोंको प्रथम जल स्पर्श करना अनंतर अपने पतिके चरणोंपर सिरको धर प्रणाम कर प्रथम पतिके मुखका दर्शन कर्ना पश्चात् शुद्ध (साफ) दर्पणमे अपना मुख देखना पीछेसे भूमीको प्रोक्षण (छिडकन) सम्मार्जन (वहारी) लेपनादिसे घरको शुद्ध करे और पृथिवीकी पूजा कर फिर शूद्रकमलाकरोक्त मंगलपाठ पढकर पतिकी सेवा पाद प्रक्षालन आदिकर फिर वेणी (गूत) को कंकपत्र (कंगी) से शुद्धकर और पुष्पादिक धारण कर भाल (मस्तक) में तिलक लगाय

हस्त कर्ण बाहुके भूषणादि धारण कर फिर जिस प्रकार केशादिक जलसे क्लिन्न (गिले) ना होवे तद्वत् स्नान करे इस्में प्रमाणभी जैसे सौभाग्यकल्पद्रुममें लिखाहै ॥

यथा—बुद्ध्वाब्राह्मेमुहूर्तेनिजपतिचरणौसंप्रणम्यास्य
मस्यप्रेक्ष्यप्रेम्णाथनैजंशुभमुकुरतलेभूमिमभ्यर्च्यप
त्नी । प्रातःस्मृत्यादिकृत्वापतिपरिचरणंसंविधायै
ववेणीं संरच्याधायभालेतिलकमथगलाधोनिम
ज्जेत्सभूषा ॥

और स्कांदमेंभी लिखाहै (प्रसुप्तश्च सुखासीनं रममाणं यदृच्छया । आतुरेष्वपि कालेषु पतिंनोत्थापये त्कचित्) अर्थात् पति शयनअवस्थामें हो वा सुखपूर्वक आराममें होय । वा स्वेच्छापूर्वक आनंद लेताहो ॥ अर्थात् अपनी तखलीफमेंभी होय तदभी पतिको ना उठावे ॥ और पतिको सर्व प्रकारसे प्रसन्न करें ॥ और हरिद्रा (हलदी) का मर्दन केशरका स्वीकार सिंदूर कज्जल कूर्पासक (बहुदेवाकंगण) ताम्बूल यह स्त्रियोंको मंगलदायक भूषणहै । और केशोंका संस्कार कर्णके भूषण तथा हस्तोंके भूषण भर्त्ताकी आयुकी वृद्धिकी इच्छावाली स्त्री इन्को मत त्यागे ॥

प्रमाणं । हरिद्राकुंकमञ्चैवकस्तूरीकज्जलंतथा । कू
र्पासकञ्चतांबूलंमांगल्याभरणंस्त्रियाः ॥ केशसंस्का
रकबरीकरकर्णविभूषणं । भर्तुरायुष्यमिच्छंतीदूर
येन्नक्वचित्सती ॥

और नियम का जल और पत्रपुष्प आदिजो आज्ञा करे पति वह आगेरखदे॥ और भर्ताका उच्छिष्ट सेवन करे ॥ और तीर्थ स्नानकी इच्छावाली स्त्री पतिका पादोदकपान करे और शंकर विष्णुसे अधिक स्त्रीको पति होताहे ॥

प्रमाणं।प्रसुप्तञ्चसुखासीनंरममाणंयदृच्छया।आतुरेष्व पिकालेषुपतिंनोत्थापयेत्क्वचित् ॥ हरिद्राकुंकमञ्चै वसिंदूरंकज्जलंतथा । कूर्पासकञ्चताम्बूलंमाङ्गल्या भरणंस्त्रियः ॥ केशसंस्कारकवरीकरकर्णविभूषण म् । भर्तुरायुष्यमिच्छन्तीदूरयेन्नक्वचित्सती ॥ निय मोदकवह्निञ्चपत्रपुष्पादिकञ्चयत् । सेवेतभर्तुरु च्छिष्टमिष्टमन्नंचफलादिकम्॥ तीर्थस्नानार्थिनीनारी पतिपादोदकंपिबेत् । शंकरादपिविष्णोर्वापतिरेको ऽधिकःस्त्रियाः ॥

श्रीमद्भागवते

स्त्रीणाञ्चपतिदेवानांतच्छुश्रूषानुकूलता ॥तद्बन्धुष्व नुवृत्तिश्चनित्यंतद्व्रतधारणम् ॥ सम्मार्जनोपलेपा भ्यांसेकमण्डलवर्तते ॥ स्वयञ्चमण्डितानित्यंप रिमृष्टपरिच्छदा ॥ कामैरुच्चावचैः साध्वीप्रश्रयेण दमेनच ॥वाक्यैःसत्यैःप्रियैःप्रेम्णाकालेकालेभजेत्प तिम् ॥ संतुष्टालोलुपादक्षाधर्मज्ञाप्रियसत्यवाक् ॥ अप्रमत्ताशुचिःस्निग्धापतिंत्वपतितंभजेत् ॥

यापतिंहरिभावेनभजेच्छ्रीरिवतत्परा॥ हर्यात्मनाहरे लोंकेपत्याश्रीरिवमोदते॥ दुःशीलोदुर्भगोवृद्धोजडो रोग्यधनोपिवा। पतिःस्त्रीभिर्नहातव्योलोकेप्सुभिर पातकी॥ अस्वर्ग्यमयशस्यंचफल्गुकृच्छ्रभयावह म्। जुगुप्सितञ्चसर्वत्रऔपपत्यंकुलस्त्रियाः॥

भावार्थ

स्त्रीलोगोका पतिही परम देवहै इस्काही पूजन कर्ना और आज्ञामें रहना और पतिके बंधु माता पिता इन्की सेवा कर्नी पति-व्रत धारण कर्ना और पृथिवीकी शुद्धि संस्कार पूजन और अपने शरीरमें भूषण पुष्प धारण कर्ने श्रेष्ठ कार्यों और वचनोसे प्रतिव्रताश्री पतिकी सेवा करे और काल अर्थात् ऋतुकालमेंही पतिसे संभोग करे अन्यथा अतिविषयासक्त नाहोवे। और सदैव संतुष्टहे और सावधान पवित्र स्नेहवती रहै॥ यो स्त्री हरिभावसे लक्ष्मीवत् पूजन कर्तीहै विष्णुलोकमें वह स्त्री पतिके साथ विष्णुजीवत् आनंद भोगतीहै॥ यदि पति दुष्ट निर्द्धन वृद्ध मूर्ख जडरोगीभी होय वह लोकपरलोकमें सुख इच्छावती स्त्री न तिरस्कार करे॥ और स्वर्गके ना देनेवाली यशके नाश कर्ने वाला संपूर्ण शास्त्र वेदोंमे निंदित उपपति अर्थात् राज स्त्रीको होताहै इसलिये स्त्रियोंको परपुरुषसे एकांत भाषण हास्यविहार अतिनिषिद्धहै। और इसमें याज्ञवल्क्यजीभी लिखते है॥

पितृ मातृ श्वशुर्भ्रातृजामि सम्बंध मातुलैः॥ हीनानस्याद्विनाभर्त्रा गर्हणीयान्यथा भवेत्। पतिप्रिय

हितेयुक्तास्वाचाराविजितेन्द्रिया ॥ सेहकीर्तिमवाप्नो
तिमोदतेचोमयासह ॥ रक्षेत्कन्यांपिताविन्नांपतिपुत्रा
स्तुवार्द्धके। अभावेज्ञातयस्तेषांनस्वातंत्र्यंक्वचित्स्त्रियाः॥

अर्थ—पिता माता सास भ्राता बंधुओंकी स्त्री संबंधि मातुल इन्से रहित विना भर्त्ताके स्त्री ना होवे यदि होय तो निंदित होतीहै विना भर्ताके ॥

और जो स्त्री पतिके प्रियमें हित आचार शुद्ध विजित इंद्रिय सो इस लोकमें सुखको प्राप्त होतीहै मरनेवाद पार्वतीके लोकमे आनंद पार्वतीसे कर्तीहै ॥ और कन्याको पिता रक्षा करे विवाहीकी पति रक्षा करे वृद्धकी पुत्र रक्षा करे इन्के अभावमे ज्ञाति रक्षा करे अर्थात् स्वतंत्र स्त्री नाहो।और वसिष्ठ संहितामे लिखाहै।

पितारक्षतिकौमारेभर्त्तारक्षतियौवने। पुत्राश्चस्थावि
रेभावेनस्त्रीस्वातंत्र्यमर्हति॥असत्यंसाहसंमायामात्स
र्यंचलचित्तता।निर्गुणत्वमशौचत्वंस्त्रीणांदोषाःस्वभा
वजाः॥अर्थात्झूठबोलनासाहसमायाक्रोधचंचलता
निर्गुणअपवित्ररहनायहस्त्रियोंकेस्वाभाविकदोषहै ॥
अन्यच्च। पानंदुर्जनसंसर्गःपत्त्याचविरहोटनं । स्वप्न
श्चान्यगृहेवासोनारीणांदूषणानिषट् ॥

अर्थ—मद्यका पीना १ बुरी सोभत कुसंगत २ पतिसे वियोग कलह ३ भ्रमण देश स्थानोमें४और के गृहमें शयन५ अन्य गृहमें वास ६ यह षट् दोषोंसे स्त्री दुष्ट हो जाती है कारण इस्में स्वतन्त्रता इस लिये स्त्रियोंको अपने वश्यमें रखना उचितहै ॥ और मांस

का भक्षण स्त्रीको बडे रोगादि कर्नेवाला होनेसे वर्जनीयहै जैसे चिकित्सा शास्त्र भावप्रकाशमें लिखाहै (आमिषस्याशनंयत्नात्प्रमदापरिवर्जयेत्) अर्थ मांसका भक्षण स्त्री अवश्य छोडदे ॥ और द्वारदेशमे बैठना अर्थात् प्रति दिन अपने द्वारपर बैठ और सर्व बातमें हास्य हसना और गवाक्ष (झरोखे) से देखना बहुत प्रलाप (वृथा वाद कर्ना) यह कुलस्त्रियोंके दोषहै इस्को व्यास जी लिखतेहै ॥

द्वारोपवेशनंनित्यंगवाक्षेणनिरीक्षणम् । असत्प्रलापोहास्यश्चदूषणंकुलयोषिताम्॥

अन्यच्च

स्त्रीशूद्रोऽनुपनीतश्चवेदमंत्रान्विवर्जयेत्॥अर्थस्त्रीशूद्रयहवेदमंत्रोंकोत्यागदे ॥ इससेपुराणश्रवणाध्ययनतुलसीपूजनहरितालिकाव्रतगौरीपूजनयहशूद्रकमलाकरसेदेखेअवश्यकर्तव्यहै॥औरभगवानपराशरजीलिखतेहै।ऋतुस्नातांतुयोभार्य्यांसन्निधौनोपगच्छति । घोरायांभ्रूणहत्यायांयुज्यतेनात्रसंशयः॥ ऋतुस्नातातुयानारीभर्तारंनोपसर्पति । सामृतानरकंयातिविधवाचपुनःपुनः॥

अर्थ–जो स्त्री ऋतु स्नानके अनन्तर अपने भर्तासे संभोग नही कर्ती वह मरनेबाद नरकको प्राप्त होतीहै और वारंवार विधवा होतीहै इस प्रकार ऋतुकालमे स्वस्थ हो जो पुरुष स्त्री को नहीं प्राप्त होता वहभी घोर जो भ्रूण हत्या अथवा गर्भ हत्या उस्को

प्राप्त होताहै यदि रोगयुक्त हो तो ना जानेसे दोष नहीं होता अन्यथा प्रमादसे जो ना प्राप्त होवे वह पापका अधिकारी अवश्यहै इस लिये ऋतुकालमे स्त्रीको भर्तासे संभोग आवश्यकहै अन्यथा स्वेच्छासे है ॥

पराशरः

दरिद्रंव्याधितंधूर्तंभर्तारंयावमन्यते । साशुनीजाय तेमृत्वासूकरीचपुनःपुनः ॥

जो स्त्री निर्धन वा रोगयुक्त वा मूर्ख भर्ता का प्रमादसे तिरस्कार कर्तीहै वह स्त्री मरकर शुनी (कुत्ती) सूकरी का वारंवार जन्मको प्राप्त होतीहै ॥ इस लिये भर्ताका अपमान स्त्री मात्रको कदाचित् ना कर्ना चाहिये ॥

स्मृतिपाराशरः

पत्यौजीवतियानारीउपोष्यव्रतमाचरेत् । आयुष्यं हरतेपत्युःसानारीनरकंव्रजेत् ॥

अर्थ जो सौभाग्यवती अर्थात् पतिवती स्त्री उपवास व्रत आचरण कर्तीहै वह पतिकीआयुको नष्ट कर मरकर नरकको प्राप्त होतीहै ।

मनुः

अपृष्टाचैवभर्तारंयानारीकुरतेव्रतम् । सर्वंतद्राक्षसान् गच्छेदित्येवंमनुरब्रवीत् ॥

जो स्त्री भर्ताकी आज्ञा विन व्रत नियम दानादि कर्तीहै उसका फल राक्षसोको मिलताहे ऐसे मनुजी कहतेहै इस स्मृतिमे मनुजीका आशय है ॥

पाराशरी

नष्टेमृतेप्रव्रजितेक्लीवेचपतितेऽपतौ । पंचस्वापत्सु नारीणांपतिरन्योविधीयते ॥

नष्ट मृत संन्यस्त क्लीव पतित इन पंच आपतमे स्त्रीको अन्य पति विधान कियाहे॥शंकाहे कि एक पतिके मरने पर द्वितीयपति उस्के मरनेपे तृतीय चतुर्थ आदि असंख्य स्त्रीको पति कर्तव्य हे क्योंकी पराशरजी स्वयं लिखतेहे नष्टे मृते इत्यादि उत्तर यहहे की पति शब्दका क्या अर्थहे यदि तुम कहो की पति अर्थात् पाणिग्रहण जिससे कराहोतो हम कहते यहहै की (पतौ) यह रूप सिद्ध केसे होताहे यदि कहै की पति शब्दकी विभक्तिमे (अच्चघे) इस सूत्रसेघि संज्ञकाङ्को (औत घिको अत्) होकर पतौ सिद्ध भया तो हम कहते है की (पतिसमासे एवधीसंज्ञा) अर्थात् पतिशब्दकी समासमेघी संज्ञाहोतीहे तो इहा समास नही एकही शब्दहै ॥ और केवल पति शब्दका सप्तमी विभक्तिमे (पत्यौ) यह शब्द वनताहे ॥ इस लिये इहा असिद्ध असंस्कृत पति शब्दके प्रयोगसे भगवान् पराशर का यही आशयहे । की असंस्कृत अर्थात् जिस्का पाणिग्रहण नाहो केवल वाङ्मात्र से पतिहो अर्थात् वाग्दान मात्र कियाहो उस पतिको नष्ट मृत संन्यस्तक्लीव होनेपर और पति स्त्रीको कर्तव्यहे ॥ और यह बात आचारसेभि सनातन सिद्धहे ॥ यदि आप यह शंका करे की भगवान् पराशरजीने यह अशुद्ध (पतौ) प्रयोग लिखाक्या वह

हमारे तुमारे सदृशथे वह तो आचार्य धर्मशास्त्रके मुख्य है तो इस्का उत्तर देतेहै कि यह जो आपको पूर्वोक्त कहाहै सो उन्का आशय इस (पतौ) शब्दसे ही मालुम होताहै । महाशय वह भगवान् पराशर जीतो ठीक २ लिखगये परंतु आपकी समझमे ही गडवड है । पराशरजीने अनञ तत्पुरुष समासान्त पति शब्द की संज्ञाकर (अपतौ) यह शब्द सिद्ध संस्कृत लिखाहै ॥ यथा न पतिः अपति तस्मिन् अपतौ पतिभिन्न पतिसदृशे ईषत्पतावित्यर्थः॥ तस्यच नष्टे मृते सति स्त्रियामन्यो पतिर्विधेय इति ॥ ऐसे पराशरजी अपने आशय को लिखते है ॥ यदि तुम कहो कि यहा तो क्लीबेचपतितेऽपतौ ऐसे लिखाहै अपतितो लिखा नहि उत्तरमहात्मन् यहां पररूप एङः पदान्तादिति इस सूत्रसे पतितेअपतौ) अकारका पररूप भयाहै ॥ और आगे द्वितीयाश्लोकमे भी इस स्मृतिश्लोकके प्रगट कर्ते है ॥

मृतेभर्तरियानारीब्रह्मचर्यव्रतेस्थिता ॥
सामृतालभतेस्वर्गेयथातेब्रह्मचारिणः ॥

अर्थ जो स्त्री पतिकी मृत्युपर ब्रह्मचर्य व्रतको धारण कर्ती है वहमृत्युहोनेपर ब्रह्मचारीवत् स्वर्गको प्राप्त होती है इस लिये पतिशब्दसे असंस्कृत अर्थात् वाग्दान मात्र कहाहै॥ तो उक्तदोषना भया ॥ नहि तो पूर्वोक्त व्यर्थहोताहै ॥और इस वाक्यकी दृढताकेधिये और भी प्रमाण देते है॥

तिस्रःकोट्योर्धकोटीचयानिलोमानिमानवे॥
तावत्कालंवसेत्स्वर्गेभर्तारंयानुगच्छति ॥

व्यालग्राहीयथाव्यालंबलादुद्धरतेबिलात् ॥
तद्वद्धर्तारमादायतेनैवसहमोदते ॥
पुरुषेणापिचोक्तायादृष्टावाक्रुद्धचक्षुषा ॥
सुप्रसन्नमुखीभर्तुःसानारीधर्मभाजनम् ॥
चितौपरिष्वज्यविचेतनंपतिं
प्रियाहियामुञ्चतिदेहमात्मनः ।
कृत्वापिपापंशतलक्षमप्यसौ ।
पतिंगृहीत्वासुरलोकमाप्नुयात् ॥

इत्यादि अनेक प्रमाण सतीविधानके व्यर्थ होते है और दरिद्रं व्याधितंधूर्तं । (पत्यौजीवति)इत्यादि (इमानारीरविधवा ऋ० मंडल १० सू०८५)इत्यादि अनेक वेदमंत्रोंसे विधवा विवाह औ उपपति स्वीकार (जारसे मैत्री) निषिद्ध है । यह मैंने विवाहका अंग समझकर साथ प्रमाणोंके स्पष्ट भाषामे सर्वोपकारके लिये स्त्रियोंका आचार दिङ्मात्र लिखाहै जिन महाशयोंको विशेष आकांक्षाहो वह मन्वादि धर्मशास्त्र ऋग्वेदादिमे अच्छीतरह देखले ॥ विस्तार भयसे बहुत नही लिखा ॥ इस्का प्रचार अवश्य धर्माभिलाषी पुरुषोंको उचितहै॥इतिश्री कर्पूरस्थल निवासी गौतमगोत्र (शोरि (अन्वयालंकृत दैवज्ञ दुनिचन्द्रात्मज पण्डित विष्णुदत्त वैदिककृत स्त्रीणामाचरःसमाप्तः ॥ शुभम् ॥ इत्यष्टमंप्रकरणंसमाप्तम् ॥

श्रीः।

अथ नवमंप्रकरणम्

(रजस्वलाकृत्यम्)

अथ रजस्वलास्वरूपम्

भावप्रकाशे—द्वादशाद्वत्सरादूर्द्ध्वमापंचाशत्समाःस्त्रियाः। मासिमासिभगद्वाराप्रकृत्यैवार्तवंस्रवेत्॥ आर्तवस्रावदिवसादृतुःषोडशरात्रयः। गर्भग्रहणयोग्यस्तु सएवसमयःस्मृतः॥

याज्ञवल्क्येनाप्युक्तम्

षोडशर्तुनिशास्त्रीणांतस्मिन्युग्मासुसंविशेत्। ब्रह्मचार्येवपर्वण्याद्याश्चतस्रश्चवर्जयेत्।एवंगच्छन्स्त्रियंक्षामांमघामूलंचवर्जयेत्।सुस्थइन्दौसकृत्पुत्रंसक्षण्यंजनयेत्पुमान्॥ सर्वासामेवचतुर्वर्णस्त्रीणांलर्ववादिसम्मतःपूर्वोक्तःसमयः। ग्रंथांतरेतुविशेषः। तद्यथा। स्नानदिवसादूर्द्ध्वंद्वादशपरिमितरात्रावधिर्ब्राह्मण्याः। दशरात्रावधिःक्षत्रियायाः। अष्टरात्रावधिर्वैश्यायाः।षड्रात्रावधिशूद्रायागर्भधारणेशक्तिरिति॥ रजस्वलास्वरूपमुक्त्वानियमानाहभावमिश्रप्रकाशे॥आर्तवस्रावदिवसादहिंसाब्रह्मचारिणी।शयीतदर्भशय्यायांपश्येदपिपतिंनच।करेशरावेपर्णेवाहविष्यंत्र्यहमाचरेत्। अश्रुपातंनखच्छेदमभ्यंगमनुलेपनम्॥ नेत्रयोरञ्जनंस्नानंदिवास्वापंप्रधावनम्। अत्युच्चशब्दश्रवणंहसनंबहुभाषणम्। आयासंभूमिखननंप्रवातञ्चविवर्जयेत्॥

अयमेवाशयंयथाहभगवान्धन्वन्तरिःसुश्रुते। (ऋतौ प्रथमदिवसात्प्रभृतिब्रह्मचारिणीदिवास्वप्नाश्रुपातस्ना नानुलेपनाभ्यङ्गालङ्कारमाल्यनखच्छेदनप्रधावनहस नकथनातिशब्दश्रवणांवरलेखनायासान्परिहरेत् । दर्भसंस्तरशायिनींकरतलशरावपर्णान्यतमशरावभो जिनींहविष्याशिनींत्र्यहंचभर्तासंरक्षेदिति ॥ एतान्नि यमानुल्लंघ्ययावर्ततेताम्प्रतिदोषमाहभावप्रकाशेभा वमिश्रः ॥ यथा

अज्ञानाद्वाप्रमादाद्वालोभाद्वादैवतश्चवा।साचेत्कुर्य्या न्निषिद्धानिगर्भोदोषाँस्तदाप्नुयात् ॥ एतस्यारोदना द्गर्भोभवेद्विविकृतलोचनः। नखच्छेदनकुनखीकुष्ठी त्वभ्यंगतोभवेत्॥अनुलेपात्तथास्नानाद्दुःखशीलोऽभ्य ञ्जानादहृक्। स्वापशीलोदिवास्वापाच्चञ्चलःस्यात्प्र धावनात् ॥ अत्युच्चशब्दश्रवणाद्बधिरःखलुजायते। तालुदन्तोष्ठजिव्हासुश्यावोहसनतोभवेत् ॥ प्रलापी भूरिकथनादुन्मत्तस्तुपरिश्रमात् ॥ स्खलतेभूमिखन नादुन्मत्तोवातसेवनात्॥अथचतुर्थदिवसान्तरवहति रक्तेगच्छतःपुरुषस्यदोषमावहतिभगवान्सुश्रुतः ॥ किञ्चतत्रप्रथमदिवसेऋतुमत्यांमैथुनगमनमनायुष्यं पुसांभवति।यश्चतत्राधीयतेगर्भःसोऽप्रसवमानोविमु च्यतेप्राणैः ॥ द्वितीयेप्येवं (सूतिकागृहेवा) तृतीये प्येवमसम्पूर्णाङ्गोऽल्पायुश्चभवाति ॥ यथानद्यांप्रति

स्रोतःह्यविद्रव्यंप्रक्षिप्तंप्रतिनिवर्ततेनोर्ध्वंगच्छतितद्ब
देवद्रष्टव्यम् । तस्मान्नियमवतींत्रिरात्रंपरिहरेत् ॥
चतुर्थेतुसम्पूर्णाङ्गोदीर्घायुश्चभवति ॥ अयमेवाशयं
भावप्रकाशेभावमिश्रोपिभर्तृकृत्येविशिनष्टि द
ष्टान्तेन ॥ यथा॥प्रवहत्सलिलेक्षिप्तंद्रव्यंगच्छत्यधोय
था॥तथावहतिरक्तेतुक्षिप्तंवीर्य्यमधोव्रजेत्॥(अतः)
आयुःक्षयभयाद्भर्ताप्रथमेदिवसेस्त्रियम् । द्वितीयेपि
दिनेरत्यैत्यजेदृतुमतींतथा ॥ तत्रयश्चाहितोगर्भोजा
यमानोनजीवति। आहितोयस्तृतीयेन्हिस्वल्पायुर्वि
कलाङ्गकः ॥ अतश्चतुर्थींषष्ठीस्यादष्टमीदशमीत
था । द्वादशीवापियारात्रिस्तस्यास्तांविधिनाभजेत्।
विधिनाकोर्थोगर्भाधानोक्तविधानेन॥अत्रोत्तरंविद्यादा
युरारोग्यमेवच । प्रजासौभाग्यमैश्वर्य्यंबलञ्चाभिगमा
त्फलं । धर्मशास्त्रेप्रथमरात्रिचतुष्टयगमनेनिषेधमाह
पाराशरः ॥ प्रथमेऽहनिचाण्डालीद्वितीयेब्रह्म
घातनी । तृतीयेरजकीपुंसायथावर्ज्यातथाङ्गना ॥
व्याधिमतोचवर्ज्या ॥ तत्रस्त्रीणांव्याधयःप्रदरादय
स्तदयुक्तानिषिद्धा । तत्रापिविशेषात्योनिरोगिणी
अशुद्धगर्भदोषमाविष्करोतिप्रकाशेभावमिश्रः ॥
दम्पत्योःकुष्ठबाहुल्याद्दुष्टशोणितशुक्रयोः । यदप
त्यंतयोर्जातंज्ञेयंतदपिकुष्ठितमिति ॥ गर्भाधानेऽ

योग्यंपुरुषंस्त्रियश्चाहसएव ॥ अत्याशितोऽधृतिःक्षुद्वान्सव्यथाङ्गःपिपासितः।बालोवृद्धोऽन्यवेगार्तस्त्यजेद्रोगीचमैथुनम् ॥ रजस्वलाव्याधिमतीविशेषात् योनिरोगिणी ॥ वयोधिकाचनिष्कामामलिनागर्भणीतथा ॥एतासांसङ्गमात्पुंसांवैगुण्यानिभवन्तिहि ॥

युग्मरात्रीणांफलमाह

युग्मासुपुत्राजायन्तेस्त्रियोऽयुग्मासुरात्रिषु॥तत्रस्त्रीपुरुषयोःसंभोगेयादृगुक्तस्तादृगुच्यते॥स्नातश्चंदनलिप्ताङ्गःसुगन्धिःसुमनोर्च्चितः। मुक्तवृष्यःसुवसनःसुवेषःसमलङ्कृतः।ताम्बूलवदनस्तस्यामनुरक्तोऽधिकस्मरः।पुत्रार्थीपुरुषोनारीमुपेयाच्छयनेशुभे॥भार्य्यापि॥पुरुषस्यगुणैर्युक्ताविहितान्यूनभोजना।नारीऋतुमतीपुंसासङ्गच्छेत्तुसुतार्थिनी॥ पूर्वंपश्येदृतुस्नातायादृशंनरमङ्गना॥तादृशञ्जनयेत्पुत्रंततःपश्येत् पतिंप्रियम्।प्रियमितिभर्तर्य्यासन्नेपुत्रादिकमपिपश्येत् ॥ अतःकिंसिद्धम् ॥ पतिंस्नेहदृष्ट्यातथापुत्रंपश्येत्असमीपेएषांभास्करंपश्येत् । एवंमंगलशब्दश्चाश्रौषीत् । मधुरान्नंभक्षयेत् ॥भूषणवस्त्रादिकंसंधार्य्यरात्रौविहितान्यूनभोजनासुतार्थिनीस्त्रीसुमुहूर्तेसंगच्छेत् ॥ एतेनदिवसगमननिषिद्धंकर्मकाण्डचिकित्साशास्त्रे ॥ यथाचगृह्यसूत्रेभगवान्पारस्करः ॥ (यदिदिवामै

थुनंव्रजेत्क्लीबाऽअल्पवीर्याअल्पायुषश्चप्रसूयन्तेत स्मादेतद्वर्जयेत्प्रजाकामोगृहीति) भावप्रकाशचिकि त्साशास्त्रेभावमिश्रोप्याह । आयुःक्षयभयाद्विद्वान्ना न्हिसेवेतकामिनीं । अवशोयदिसेवेततदाग्रीष्मवस न्तयोः । ग्रीष्मवंसन्तयोरित्यत्रभोगार्थसेवेन्नतुसुता र्थंअन्यथातस्मादेतद्वर्जयेत्प्रजाकामइतिव्यर्थस्या त् ॥ आवश्यकेभोगमपि ॥ गर्भाधानोक्तविधिनास ङ्गच्छेदित्युक्तेगर्भाधानमुहूर्तमाहमुहूर्तचिंतामणौरा मः ॥ यथा ॥

हस्तानिलाश्विमृगमैत्रवसुध्रुवाख्यैःशक्रान्वितैःशुभ तिथौशुभवासरेच॥स्नायादथार्तववतीमृगपौष्णवायु हस्ताश्विधातृभिरलंलभतेचगर्भम् ॥ यथाहस्तस्वा तीअश्विनीमृगशिरअनुराधाउत्तरभाद्रपदारोहिणीज्ये ष्ठाशुभतिथिरिक्तावर्जितशुभवारसौरारार्किविनैषुर जस्वलायास्नानंविधेयं॥ सुस्नातावस्त्रभूषणसंयुतारा त्रौमृगशिररेवतीस्वातिहस्तअश्विनीरोहिणीएषुभे षुगमनात्स्त्रीगर्भंलभते ॥

(गमनेनिषेधमाहसएव)

गण्डान्तंत्रिविधंत्यजेन्निधनजन्मर्क्षेचमूलान्तकंदास्रं पौष्णमथोपरागदिवसंपातंतथावैधृतिं । पित्रोःश्राद्ध दिनंदिवाचपरिघाद्यर्द्धंस्वपत्नीगमे भान्युत्पातहता निमृत्युभवनंजन्मर्क्षतःपापभम् ॥

तद्यथा

गण्डान्तंचतुर्घटिकात्मकंज्येष्ठाशतभिपारेवतीएषां तथातिथगण्डान्तद्विघटिकात्मकंतथालग्नगण्डान्त नवांशार्द्धघटयात्मकं ॥ जन्मर्क्षतअष्टमनक्षत्रंनिधन संज्ञकंमूलांत्यंअश्विनीरेवतीतथोपरागःसूर्यचन्द्रग्रह णं । उपरागोग्रहोराहुग्रस्तेत्विन्दौचपूष्णिच) व्य तीपातवैधृतयोगौपितुःश्राद्धदिनंतथादिनेपरिघार्द्ध एतानिनक्षत्रयोगदिवसानिस्वस्त्रियंसंतानार्यंगच्छ च्छतापुरुषेणअवश्यंवर्जनीयानि ॥ ऋतुमतीस्त्री मनसापिमैथुनचिंतनंनकुर्यात् । उक्तश्चबृहन्नारदीये॥ मैथुनंमानसंवापिवाचिकंदेवतार्चनं । वर्जयेच्चनम स्कारंदेवतानांरजस्वलेति ।

अथरजस्वलायाऋतुशुद्ध्यनंतरंपतिरेवद्रष्टव्यःअस समीपेपत्युःपुत्रमुखंद्रष्टव्यंवासूर्यदर्शनंविधेयंनान्यत् पुरुषंमनसावाचास्मरेत्चक्षुषानपश्येत् ॥ उक्तमिदं बृहन्नारदीये-स्नात्वान्यंपुरुषंनारीनपश्येच्चरजस्वला। ईक्षेतभास्करंदेवंब्रह्मकूर्चंततःपिबेत् ॥ ब्रह्मकूर्चंपंच गव्यंस्नानानन्तरंशुद्ध्यर्थंपातव्यम्।।इतिश्रीकर्पूरस्थ लनिवासिगौतमगोत्र (शोरि) अन्वयालंकृतदैवज्ञ ढुनिचंद्रात्मजश्रीमच्छ्रीपण्डितविष्णुदत्तवैदिककृतं रजस्वलाकृत्यंसमाप्तम् ॥ शुभमस्तुश्रीरामचंद्रप्र सादात् ॥ (समाप्तंचेदंनवमंप्रकरणम् ॥)

अथ प्रकीर्णाध्यायःप्रारभ्यते

अथविवाहेलग्नादिद्वादशस्थानेसूर्यादीनांफलमाह॥
अथसूर्यस्य ॥ मृति १ र्विधनता २ धनं ३ सहजसं
क्षयः ४ पुत्रसूः ५ प्रियस्यपरमोन्नति ६ र्विधवता ७
चिरंजीविता ८ ॥ शुभाकृति९रशीलता१०विविधल
ब्धि११रर्थक्षयः१२ । तनुप्रभृतिभास्करेसतिफलंभ
वद्योषिताम् ॥ अथ चंद्रस्य॥प्राणस्यच्युति१रर्थसंप
२ दुभयप्रीतिश्च ३ बंधून्नति ४ र्वैपुत्र्यंच ५ सवैरता
च ६ नियतंसापत्न्य ७ मात्मव्यथा ८ । स्त्रीसूतिः
९ परकर्मकृत् १० स्वमधिका ११ लब्धिक्षयः १२
संपदां स्यादिंदावुदयात्सुखेतुकथितोबंधुक्षयःकै
श्चन ॥ २ ॥ अथभौमस्यफ० पंचत्वञ्च १ दरिद्रता
२ सधनता ३ सुभ्रातृवैरं ४ सुतानुत्पत्ति ५ र्दयितो
न्नतिः ६ कुचरिता ७ सक्तिश्चरक्तश्रुतिः८॥स्याद्भर्तृ
प्रतिकूलता ९ ऽऽमिषरुचि१०र्वित्ताप्ति११ रर्थक्षयो
१२ नारीणामुदयादिवर्तिनिमहीपुत्रोविवाहोत्सवे ३
अथबुधस्यफलं॥सौम्येभर्तृपरायणा १ स्वगृहणी २
स्यात्स्वामिपक्षार्चिता ३ बंधुत्वंच ४ सुतान्विताच
५ विगत ६ प्रद्वेषिपक्षातथा। बंध्याचा ७ स्वभिरु
ज्झितास्तुकृतिनोमाया ९ विनीचक्रमात्१०भूरिद्र
व्य ११ वती बहुव्यय १२ परालग्नादिभावस्थिते॥

अथ गुरुफलम् ॥

स्वाभीष्टा १ धनभागिनी २ प्रमुदिता ३ द्रव्यान्विता ४ स्वात्मजा ५ नष्टारि ६ र्दयितोज्झिता ७ च विगतप्राणा ८ रताश्रेयसि ९॥सिद्धार्था १० विभवान्विता ११ चविधना १२ भावेषुमूर्त्यादिषु

अथ शुक्रफलम्

मनोभीष्टाभर्तु १ र्धनचयपरा २ देवररता ३ कुलेष्टा ४ सत्पुत्रा ५ विहितबहुवैरा ६ न्यनिरता ७ ॥ व्यसु ८ र्धर्मेष्टास्या ९ त्कुशलनिरता१०भूरिविभवा११निरर्था१२शुक्रेस्याद्भवतिखलुलग्नप्रभृतिषु ॥

अथ शनिफलम्

स्यात्पुंश्चल्य १ धना २ ऽर्थवत्य ३ थयशोहीना ४ चहृद्रोगिणी ५ शत्रुघ्ना ६ निजगर्भपाटनरता ७ नीरुक्च८ भग्नव्रता ९॥दुःशीला १० बहुवित्तसंग्रहपरा ११ पानप्रसक्तांगना १२ स्याल्लग्नाद्रविनंदनेन शिखिनास्वर्भानुनाचक्रमात् ॥ शनिवत्राहुकेत्वोरपिफलंज्ञेयम् ॥

इति श्रीकर्पूरस्थलीयदैवज्ञदुनिचंद्रात्मज (शौरि) पण्डितविष्णुदत्तवैदिकसंगृहीतंविवाहकुंडलीस्थितग्रहफलंसमाप्तम् ॥ समाप्तश्चायंप्रकीर्णोध्यायः ॥ शुभमस्तु श्रीरामचंद्रप्रसादात्॥

वंशवर्णनम्

अस्तिमहात्माकिलगौतमोमुनिः ।
कर्तास्मृतिशास्त्रपरम्पराणाम् ॥
षड्दर्शनेदर्शनमेवपूर्वं ।
यस्तर्कशास्त्रेऽकरोन्महर्षिः ॥ १ ॥
तस्यान्वयेरत्नविशुद्धवर्णे ।
कर्णेश्रुतोनांतद्धर्मतत्परे ॥
महत्परेसम्प्रतिसंबभूव
कन्हैयारामात्मजतुलसीरामः ॥ २ ॥
महाप्रभावश्चहिसमहात्मा ।
गंगातटेनिर्मलवारिराशे ॥
एह्येहिपुत्रेतिहिवत्सलत्वा
दाहूतऽएवाऽविशताहिअङ्के ॥ ३ ॥
स्थित्वाक्षणंतत्राहिअङ्कमध्ये ।
ध्यात्वाशिवंशङ्करमप्रमेयम् ॥
संपश्यतांतत्रहिसाधवानां ।
त्यक्त्वातनुंज्योतिरिवाबभूव ॥ ४ ॥
तत्सूनुपश्चाद्धिहतत्प्रभावात् ।
संप्राप्तविद्योगरवेसकाशात् ॥
संशोभतेदैवविदांहिमध्ये ।
दैवज्ञविद्वान्दुानचन्द्रनाम्ना ॥ ५ ॥
तदात्मजेनापिहिवैदिकेन ।

अधीतवेदाङ्गचदर्शनेन ॥
श्रीविष्णुदत्तेनसुदर्शनेन ।
कृताहिटीकासर्वोपकारिणी ॥ ६ ॥
नत्वागुरुंशास्त्रनिविष्टचक्षुं ।
दत्तान्वयेरत्नमिवावभूतम् ॥
अभूतपूर्वंश्च हिसंप्रभूतं ॥
श्रीरामनाथंसंशास्त्रिणंहि ॥ ७ ॥
श्रीकाशीजन्माद्रिहलब्धवर्णं ।
विद्यासमूहस्याद्वितीयमोकम् ॥
अधीतयेभ्यश्चहिवेदसर्वं ।
गोपालशास्त्रिस्वगुरुन्मुहुःप्रणौमि ॥ ८ ॥
श्रीहरिभक्तंमहात्मानंशास्त्रिणंप्रणमाम्यहम् ।
यस्यसङ्गात्समालब्धंज्ञानंविज्ञानमेवच ॥ ९ ॥
मित्रंहिसाधुरामञ्चविष्णुदासंतथैव च ।
अन्यान्स्वाध्यायवर्गान्स्वान्नमस्कृत्यपुनःपुनः ॥१०
कर्पूरस्थलेरम्येअद्रिवेदांकभूमिते ।
वैक्रमेमधुमासेचकृताटीकामनोरमा ॥ ११ ॥

श्रीः ।

अथार्कविवाहः ॥

प्रयोगरत्नेमात्स्ये ।

ॐस्वस्तिश्रीगणेशायनमः ॥ तृतीयांमानुषींनैवच तुर्थीयःसमुद्वहेत्। पुत्रपौत्रादिसंपन्नःकुटुंबीसाग्निकोवरः उद्वहेद्द्रतिसिद्ध्यर्थंतृतीयांनकदाचन ॥मोहादज्ञानतोवा ऽपियदिगच्छेत्तुमानुषीं ॥ नश्यत्येवनसंदेहोगर्गस्य वचनंयथा ॥

तत्रैवसंग्रहे—

तृतीयांयदिचोद्वाहेत्तर्हिसाविधवाभवेत्। चतुर्थ्यादिविवाहार्थंतृतीयेऽर्कंसमुद्वहेत् ॥ आदित्यदिवसेवापिहस्तर्क्षेवा शनैश्चरे। शुभेदिनेवापूर्वाह्णेकुर्यादर्कविवाहकम् ॥

व्यासः—स्नात्वालंकृतवासास्तुरक्तगंधादिभूषितम्। सपुष्पफलशाखैकमर्कगुल्मंसमाश्रयेत् ॥ सलक्षणेनसंयुक्तमर्कं संस्थाप्ययत्नतः।अर्ककन्याप्रदानार्थमाचार्यंकल्पयेत्पुरा॥ अर्कसन्निधिमागत्यतत्रस्वस्त्यादिवाचयेत्। नांदीश्राद्धेहिरण्येनअष्टवर्गान्प्रपूजयेत्। पूजयेन्मधुपर्केणवरंविप्रस्यहस्ततः। यज्ञोपवीतंवस्त्रंचहस्तकर्णादिभूषणम् । उष्णीषगंधमाल्यादिवरायास्मैप्रदापयेत् । स्वशाखोक्तप्रकारेणमधुपर्कंसमाचरेत् ॥

ब्राह्मे—ग्रामात्प्राच्यामुदीच्यांवासपुष्पफलसंयुतं। परीक्ष्य

यत्नतोधस्तात्स्थण्डिलादियथाविधि ॥ कुर्यादितिशेषः ॥ कृत्वार्कपुरतस्तिष्ठन्प्रार्थयेतद्विजोत्तमः । त्रिलोकवासिन्स प्ताश्वच्छाययासहितोरवे ॥ तृतीयोद्वाहजंदोषंनिवारयसुखंकुरु ।तत्राध्यारोप्यदेवेशंछाययासहितंरविं ॥ वस्त्रैर्माल्यैस्तथा गन्धैस्तन्मंत्रेणैवपूजयेत् । तत्रैवश्वेतवर्णेनतथाकार्पासतंतुभिः । गन्धपुष्पैःसमभ्यर्च्यअर्कलिंगैरभिषिच्यच ॥ गुडौदनं तुनैवेद्यंताम्बूलंचसमर्पयेत् ।

व्यासः—अर्कप्रदक्षिणीकुर्वन्जपेन्मंत्रमिमंबुधः।ममप्रीतिकरायेयंमयासृष्टापुरातनी ॥ अर्कजाब्रह्मणासृष्टाअस्माकंप्रति रक्षतु ॥ पुनःप्रदक्षिणीकुर्यान्मंत्रेणानेनधर्मवित् ।नमस्तेमंगलेदेवि नमःसवितुरात्मजे । त्राहिमांकृपयादेविपत्नीत्वंमेइहागता । अर्कत्वंब्रह्मणासृष्टःसर्वप्राणिहितायच । वृक्षाणामादिभूतस्त्वंदेवानांप्रीतिवर्द्धनः ॥ तृतीयोद्वाहजंपापंमृत्युंचाशुविनाशय । ततश्चकन्यावरणंत्रिपुरुषंकुलमुद्धरेत् । आदित्यःसविताचार्कपुत्रीपौत्रीचनप्त्रिका ॥ गोत्रंकाश्यपइत्युक्तंलोकेलौकिकमाचरेत् । सुमुहूर्तंनिरीक्षेतस्वस्तिसूक्तमुदीरयन् । आशिर्भिःसहितैःकुर्यादाचार्यप्रमुखैर्द्विजैः ॥ अथाचार्यंसमाहूयविधिनातन्मुखाच्चतां । प्रतिगृह्यततोहोमंगृह्योक्तविधिनाचरेत् ।

व्यासः—अर्ककन्यामिमांविप्रयथाशक्तिविभूषितां। गोत्राय

---

१ आपो हिष्ठेत्यादिभिः ऋग्भिः ॥

शर्म्मणेतुभ्यंदत्तांविप्रसमाश्रय। अंजल्यक्षतकर्म्माणिकृत्वा कंकणपूर्वकं ॥ यावत्पंचवृतासूत्रंतावदर्कंप्रवेष्टयेत्। स्वशाखोक्तेनमंत्रेणगायत्र्यावाथवाजपेत् ॥ पंचीकृत्यपुनःसूत्रंस्कंधेबध्नातिमंतत्रः ॥ बृहत्सामेतिमंत्रेणसूत्ररक्षांप्रकल्पयेत्।अर्कस्यपुरतःपश्चाद्दक्षिणोत्तरतस्तथा। कुम्भांश्चनिक्षिपेत्पश्चादाग्नेयादिचतुष्टये । सवस्त्रंप्रतिकुम्भंचत्रिसूत्रेणैववेष्टयेत् ॥ हरिद्रागन्धसंयुक्तंपूरयेच्छीतलंजलं । प्रतिकुंभंमहाविष्णुंसंपूज्यपरमेश्वरं । पाद्यार्घादिनिवेद्यान्तंकुर्यान्नाम्नैवमंत्रवित् ॥

अत्रशौनकोक्तोहोमप्रकारः

तृतीयेस्त्रीविवाहेतुसंप्राप्तेपुरुषस्यतु।आर्कंविवाहंवक्ष्यामिशौनकोहंविधानतः ॥ अर्कसन्निधिमागत्यतत्रस्वस्त्यादिवाचयेत् । नान्दीश्राद्धंप्रकुर्वीतस्थंडिलंचप्रकल्पयेत् ॥ अर्कमभ्यर्च्यसौर्य्याचगंधपुष्पाक्षताभिः ॥ सौर्यासूर्यदैवत्यया ॥ आकृष्णेनेत्यनया । स्वयंवालंकृतस्तद्वद्वस्त्रमाल्यादिभिः शुभैः। अर्कस्योत्तरदेशेतुसमन्वारब्धएतया ॥ एतयार्ककन्यया ॥ उल्लेखनादिकंकुर्यादाघारांतमतःपरम् । आज्याहुतिंचजुहुयात्संगोभिरनयैकया। यस्मैत्वाकामकामायेत्येतयर्चाततःपरं । व्यस्ताभिश्चसमस्ताभिस्ततश्चस्विष्टकृद्भवेत्। परिषेचनपर्यंतमयाश्चेत्यादिकंक्रमात् ।प्रार्थनामंत्रादिविशेषमाहव्यासः ॥ पुनःप्रदक्षिणंकृत्वामंत्रमेतमुदीरयेत् । मयाकृतमिदंकर्मस्थावरेषुजरायुणा। अर्कापत्या

निनोदेहितत्सर्वंक्षंतुमर्हसि । इत्युक्त्वाशांतिसूक्तानिज
प्त्वातांविसृजेत्पुनः ॥ गोयुग्मंदक्षिणांदद्यादाचार्यायचभक्ति
तः ॥ इतरेभ्योपिविप्रेभ्योदक्षिणांचापिशक्तितः । तत्सर्वंगु-
रवेदद्याद्दंतेपुण्याहमाचरेत् ॥

॥ अथप्रयोगविधिः ॥

तृतीयोद्वाहात्प्राग्दिनचतुष्टयाधिकव्यवहितेरविवारेश
निवारेहस्तनक्षत्रेशुभदिनांतरेवाग्रामात्प्राच्यामुदीच्यांवापु
ष्पफलयुतार्काधस्तात्स्थण्डिलंकृत्वाऽर्कपश्चिमतउपवि
श्यमासपक्षाद्युल्लिख्यममतृतीयमानुषीविवाहजदोषापनुत्य
र्थमर्कविवाहंकरिष्येइतिसंकल्प्यगणेशपूजास्वस्तिवाचन-
मातृपूजनवृद्धिश्राद्धाचार्यवरणानिकुर्यात् । तत्रवृद्धिश्राद्धं
सुवर्णेन ॥ अथाचार्येणपूजितोवरः ॥ त्रिलोकवासिन्सप्ता
श्वच्छाययासहितोरवे । तृतीयोद्वाहजंदोषंनिवारयसुखंकुरु ।
इत्यर्कंसंप्रार्थ्याऽर्कं ॥आकृष्णेनेतिच्छाययासहितंरविमावाह्य
श्वेतवस्त्रसूत्राभ्यामावेष्ट्यसंपूज्यापोहिष्ठेत्यादिभिरभिषि
च्यगुडौदनतांबूलादिसमर्प्यप्रदक्षिणीकुर्वन्ममप्रीतिकराये
यंमयासृष्टापुरातनी ।अर्कजाब्रह्मणासृष्टाअस्माकंप्रतिरक्षतु
इतिपठेत् ॥ द्वितीयप्रदक्षिणायांतु । नमस्तेमंगलेदेवि न
मःसवितुरात्मजे । त्राहिमांकृपयादेविपत्नीत्वंमेइहागता ।
अर्कत्वंब्रह्मणासृष्टःसर्वप्राणिहितायच । वृक्षाणामादिभूत
स्त्वंदेवानांप्रीतिवर्द्धनः ।तृतीयोद्वाहजंपापंमृत्युंचाशुविना-
शयेति ॥ ततआचार्येणमासपक्षाद्युल्लिख्यकाश्यपगोत्रामा

दित्यपुत्रींसवितुःपौत्रीमर्कस्यप्रपौत्रीमिमांमर्ककन्यामित्यु क्तेवरःस्वस्तिनइंद्रोवृद्धश्रवाइतिसूक्तंपठन्नर्कंनिरीक्षेत। तत आचार्योविप्रैःसहाशिषोदत्वामुकगोत्रामुकशर्म्मणेसंप्रददेइ- इत्यर्ककन्यांदत्वा ॥

अर्ककन्यामिमांविप्रयथाशक्तिविभूषितां। गोत्रायशर्म्मणे तुभ्यंदत्तांविप्रसमाश्रयेतिपठेत्।वरस्तुयज्ञोमेकामःसमृद्ध्य तामितिप्रथमांधर्मोमेइतिद्वितीयांयशोमेतृतीयामितित्रीन क्षतांजलीनर्कोपरिक्षिप्त्वागायत्र्यापरित्वेत्यादिनावापंचावृ त्तासूत्रेणार्कमावेष्ट्यतत्सूत्रंपुनःपंचगुणंकृत्वार्कस्यस्कंधेब ध्वाबृहत्सामेतिरक्षांपरिकल्प्यार्कस्यदिग्विदिक्ष्वष्टौकुंभान् संस्थाप्यवस्त्रेणत्रिसूत्रेणचावेष्ट्यहरिद्रागंधाद्यंतःक्षिप्त्वातेषु नाम्नामहाविष्णुमावाह्यषोडशोपचारैःसंपूज्यस्थंडिलेग्निंप्र तिष्ठाप्यआघारावाज्येनेत्यंतमुक्त्वात्रप्रधानंबृहस्पतिमग्निं वायुंसूर्यंप्रजापतिंचाज्येनशेषेणेत्याद्युक्त्वाघारांतेसंगोभिरां गिरसोबृहस्पतिस्त्रिष्टुप्॥अर्कविवाहहोमेविनियोगः॥ॐसंगो भिराङ्गिरसोनक्षमाणोभगइवेदर्यमणंनिनाय। जनेमित्रोनदंप तीअनक्तिबृहस्पतेवाजयाशूँरिवाजौस्वाहाबृहस्पतयइदंनम मेतित्यजेत्। यस्मैत्वाकामदेवोग्निस्त्रिष्टुप्विनियोगःप्राग्वत्।

ॐयस्मैत्वाकामकामायवयंसम्राडयजामहे॥तमस्मभ्यं कामंदत्वाथेदंत्वंघृतंपिबस्वाहाअग्नयइदं० ॥

ततोऽन्यस्तसमस्तव्याहृतिभिर्हुत्वास्विष्टकृदादिकर्मशे

षंसमाप्यार्कंप्रदक्षिणीकृत्य ॥ मयाकृतमिदंकर्मस्थावरेणज रायुणा । अर्कापत्यानिनोदेहितत्सर्वंक्षन्तुमर्हसि ॥ इति प्रार्थ्याचार्य्यायगोयुग्ममन्येभ्यश्चविप्रेभ्योयथाशक्तिदक्षिणां दत्वाशांतिसूक्तंजप्त्वापूजोपस्करानाचार्यायदत्वादिनचतु ष्टयमग्निंकुंभांश्चरक्षेत् ॥ कुंभेषुमहाविष्णुंपूजयेच्च ॥

पंचमदिनकृत्यं॥ब्राह्मे—चतुर्थेदिवसेतीतेपूर्ववत्तांप्रपूज्य च ॥ विसृज्यहोममग्निश्चविधिनामानुषींपरां ॥ उद्वहेदन्यथा नैवपुत्रपौत्रसमृद्धिमान् ॥ इत्यर्कविवाहःसमाप्तः ॥

श्रीहरिशरणम्

अथ विवाहनिर्णयः ॥

श्रीतारानाथतर्कवाचस्पतिभट्टाचार्य्यसंग्रहीतवादार्थ सारांशमादायनिश्चयार्थंप्रमाणानिप्रदर्श्यंते ।

तद्यथा॥ईशंनत्वादर्श्यतेऽत्रवेदादिशास्त्रमानतः॥एकस्य कामतोऽनेकसवर्णापाणिपीडनम् ॥ धर्म्मतत्त्वंबुभुत्सूनांबो धनायैवमत्कृतिः । तेनैवकृतकृत्योऽस्मिनजिगीषास्तिलेश तः ॥ पाणिग्रहणिकामंत्रानियतंदारलक्षणम् । तेषांनिष्ठातु विज्ञेयाविद्वद्भिःसप्तमेपदे॥ मनुः—पाणिग्रहणसंस्कारःसवर्णा सूपदिश्यते।मनुः-विवाहमात्रंसंस्कारंशूद्रोपिलभतेसदेति॥

छांदोगपरिशिष्टे-स्वपितृभ्यःपितादद्यात्सुतसंस्कारकर्म्म णि ॥ पिण्डानोद्वहनात्तेषांतदभावेपितत्क्रमादिति ॥विवाह स्यसंस्कारत्वेसतितत्रविशेषोवक्ष्यते । बलादपहृताकन्याम

न्त्रैर्यदिनसंस्कृता ॥ अन्यस्मैविधिवद्देयायथाकन्यातथैवसे तिपराशरभाष्यादिधृतकात्यायनवचनेनराक्षसादावपहरण मात्रेकन्यैव ।

यथावा—अद्भिर्व्वाचाप्रदत्तायांम्रियेतोर्द्धंवरोयदि॥ नचमं त्रोपनीतातुकुमारीपितुरेवसेति ॥

विवा० -उद्वाहतत्वधृतवशिष्ठवचनेनवाङ्मात्रदानेउदक पूर्वदानेवामंत्रसंस्काराभावेअन्यस्मैदेयेतिगम्यते ॥

मंत्रसंस्कृतातुसा—शरीरार्द्धंस्मृताजायापुण्यापुण्यफले समेति ॥ अस्थिभिरस्थीनिमाꣳसैर्माꣳसानित्वचात्वचमि त्यादिभिःशरीरार्द्धहराअर्द्धफलभाग्भवतीत्याशयः ॥

पतिलक्षणंनिर्णयसिंधौ—यथा-नोदकेनचवाचाचकन्यायाः पतिरुच्यते । पाणिग्रहणसंस्कारात्पतित्वंसप्तमेपदेइति॥ त थाचहारीतः—पाणिग्रहणेनजायात्वंकृत्स्नंहिजायापतित्वंसप्त मेपदेइति ॥

अथकाभार्य्याकार्य्या—अत्रपैठीनसिः—भार्य्याकार्य्यास जातीयाःसर्वेषांश्रेयस्यःस्युरिति ॥

केनविवाहेन—गंधर्वादिविवाहेषुशुभोवैवाहिकोविधिः।क र्तव्यश्चत्रिभिर्वर्णैःसमर्थैश्चाग्निसाक्षिकः ॥ अत्रत्रिभिरितिवि शेषणात्विप्रस्यात्रनाधिकारइतिविशेषः ॥

कोविधिस्तेष्वित्यपेक्षायाम् ॥ गांधर्वासुरपैशाचाविवा हाराक्षसश्चयः । पूर्वंपरिश्रयस्तत्रपश्चाद्धोमोविधीयते ॥

सवर्णासु—पाणिग्रहणसंस्कारःसवर्णासूपदिश्यतइति

विप्रेणक्षत्रियादिपरिणयने—शरःक्षत्रिययाग्राह्यःप्रतोदो वैश्यकन्यया ॥मनुः ॥तथाचयाज्ञवल्क्यः—पाणिर्ग्राह्यःसवर्णासुगृह्णीयात्क्षत्रियाशरं । वैश्याप्रतोदमादद्याद्वेदनेत्वग्रजन्मनः॥वस्तुतस्तु-स्वदारनिरतःसदेतिमानववचनस्यपरदारान्नगच्छेदितिपरिसंख्यापरतायाःसर्व्वैःस्वीकारेणपरदारगमननिषेधात्तद्व्युदासेनअनिषिद्धस्त्रीगमनंशास्त्रविहितस्त्रीसंस्कारंविनानुपपन्नमितिसंस्कारआक्षिप्यते ॥सवर्णायांसंस्कृतायांस्वयमुत्पादयेत्तुयं । औरसंतंविजानीयादिति ॥ औरसोधर्म्मपत्नीजः । इति याज्ञवल्क्यस्मृतिः

स्त्रीपरिणयनफलम्—अपत्यंधर्म्मकार्य्याणिशुश्रूषारतिरुत्तमा । दाराधीनस्तथास्वर्गःपितॄणामात्मनश्चह॥ मनुः ॥ लोकानंत्यंदिवःप्राप्तिःपुत्रपौत्रप्रपौत्रकैः । यस्मात्तस्मात्स्त्रियःसेव्याःकार्तव्याश्चसुरक्षिताः ॥ याज्ञ स्मृ॰ पुन्नाम्नोनरकाद्यस्मात्पितरंत्रायतेसुतः ॥ तस्मात्पुत्रइतिप्रोक्तइत्यादि पुत्रःपुरुत्रायतेनिपरणाद्वापुंनरकंततस्त्रायतइतिनिरुक्तम् ॥ पुत्रेणलोकांजयतिपौत्रेणानंत्यमश्नुतेइत्यादि ॥

कीदृशीस्त्रीस्यादित्याकांक्षायाम्—मनुः ॥असपिण्डाचयामातुरसगोत्राचयापितुः । साप्रशस्ताद्विजातीनांदारकर्म्मणिमैथुनेइति ॥

तयाहिसहितःसर्वान्पुरुषार्थान्समश्नुते ॥ अनाश्रमीनतिष्ठेत्तुदिनमेकमपिद्विजः॥आश्रमेणविनातिष्ठन्प्रायश्चित्ती

यतेहिसः॥दक्षः ॥ नगृहंगृहमित्याहुर्गृहिणीगृहमुच्यते॥तया हिसहितःसर्वान्पुरुषार्थान्समश्नुते ॥ द्वितीयमायुषोभागंकृ तेदारोगृहंवसेदितिमनुः।अथनापुत्रस्यलोकोऽस्तीति॥नैमि त्तिकानिकाम्यानिनिपतन्तियथातथा ॥ तथातथैवका र्य्याणिनकालस्तुविधीयते॥ अथप्रथमभार्यायांसत्यामन्या धिवेतव्येतिनवेतिकांक्षायांमनुः ॥ वन्ध्याष्टमेधिवेतव्यादश मेस्त्रीमृतप्रजा॥एकादशेस्त्रीजननीइत्यादि॥ स्त्रीप्रसूश्चाधिवे तव्यापुरुषद्वेषणीतथाइतियाज्ञवल्क्यः ॥ अधिविन्नातुभर्त व्यामहदेनोन्यथाभवेदित्युक्तेवंध्यादीनामपिभूषणवस्त्रादि भिर्भरणंनतुत्यागःपापभयात् अधिविन्नातुयानारीनिर्गच्छे द्रोषितागृहात् ॥ सासद्यस्तुनिरोद्धव्यात्याज्यावाकुलसन्नि धौ ॥ एकामूढ्वातुकामार्थमन्यांवोढुंयइच्छति । समर्थस्तो षयित्वार्थैःपूर्वोढामपरांवहेत् ॥ अप्रजांदशमेवर्षेस्त्रीप्रजांद्वा दशेत्यजेत् ॥ मृतप्रजांपंचदशेसद्यस्त्वप्रियवादिनीम् ॥

अन्यच्च--अथयदिगृहस्थोद्वेभार्य्येविन्देतकथंकुर्य्यादि तिबौधायनमाशंक्ययस्मिन्कालेविन्देतोभावग्नीपरिचरेदि त्युपक्रम्यद्वयोर्भार्य्ययोरन्वारब्धयोर्यजमानइति ॥

तथाचकात्यायनः--नैकयापिविनाकार्य्यमाधानंभार्य्य याद्विजैः। अकृतंतद्विजानीयात्सर्वाभिर्नारभेद्यदि ॥ एकै कामेवासांसंनह्यादेकैकांगार्हपत्यमीक्षयेत्। एकैकामाज्यम वेक्षयेदिति ॥ यदेकस्मिन्यूपेद्वेरशनेपरिव्ययाति । तस्मादे

कोद्वेभार्य्येविन्देतेति । श्रुतिः ॥ श्रुतिस्मृतिपुराणानांविरोधोयत्रविद्यते ॥तत्रश्रौतंप्रमाणंस्यात्तयोर्द्वैधेस्मृतिर्वरा । व्यासः—विरोधेत्वनपेक्षंस्यादसतिह्यनुमानमितिजैमिनिसूत्रं ॥

तथाचमहाभारते—एकस्यबह्व्योविहितामहिष्यःकुरुनन्दन । नैकस्याबहवःपुंसःश्रूयन्तेपतयःक्वचित् ॥ भार्य्याःकार्य्याःसजातीयाःसर्वेषांश्रेयस्यःस्युरित्यत्रापिबहुवचनम् ।

तथाचकात्यायनः—अग्निहोत्रादिशुश्रूषांबहुभार्य्यःसवर्णया ॥कारयेत्तद्बहुत्वेचज्येष्ठयागर्हितानचेत् ॥ सवर्णासुविधौधर्म्येज्येष्ठयानविनेतरेतियाज्ञवल्क्यः ॥

तथाचमहाभारते—ददौसदशधर्मायकश्यपायत्रयोदश॥ एकैवभार्य्यास्वीकार्य्याधर्म्मकर्म्मोपयोगिनी । प्रार्थनेचातिरागेचग्राह्यानेकापिचद्विज ॥ आद्यायांविद्यमानायांद्वितीयामुद्वहेद्यदि । तदावैवाहिकंकर्मकुर्यादावसथेऽग्निमान्॥ नि०सिं०सदारोऽन्यान्पुनर्दारानुद्वोढुंकारणांतरात् । यदीच्छेदग्निमान्कश्चित्क्वहोमोस्यविधीयते ॥ स्वेग्नावेवभवेद्धोमोलौकिकेनकदाचन ॥ कात्यायनः ॥

मात्स्येयथा—उद्वहेद्रतिसिद्ध्यर्थंतृतीयांनकदाचन॥मोहादज्ञानतोवापियदिगच्छेत्तुमानुषीम् । नश्यत्येवनसंदेहोगर्गस्यवचनंयथेति ॥ तृतीयस्त्रीविवाहेतुसंप्राप्तेपुरुषस्यतु । अर्कविवाहंवक्ष्यामिशौनकोऽहंविधानतः॥ इत्युपक्रम्य । विसृज्यहोम्यमाग्निंचविधिनामानुषींपराम् । उद्वहेदन्यथानैवपुत्रपौत्रादिवृद्धिमान् ॥ विसृज्याग्निंकङ्कणञ्चमानुषीमुद्वहेत्परा

म् । अनेनविधिनायस्तुकुर्यादर्कविवाहकम् ॥ पुत्रपौत्रादि संपत्तिश्चतुर्थ्यांलभतेनरः । चतुर्थादिविवाथंतुतीयेऽर्कंसमुद्वहेत् । ऋणत्रयमपाकृत्यमनोमोक्षेनिवेशयेत् ॥ जायमानोवैपुरुषस्त्रिभिर्ऋणैर्ऋणीभवतिब्रह्मचर्येणऋषिभ्यःयज्ञेनदेवेभ्यःप्रजयापितृभ्यइति॥एतदुक्तंभवतिनि ।दर्शितबहुप्रमाणैरेकपुरुषस्यबहुभार्य्याकरणंसिद्धम् ॥ एतद्विषयेकिंस्ववर्णाउतब्राह्मणादिभिरसवर्णाःकार्य्याअत्रकोमुख्यकल्पःकश्चगौणः ॥

अत्रोच्यते।यथाहमनुः—सवर्णाग्रेद्विजातीनांप्रशस्तादारकर्म्मणि । कामतस्तुप्रवृत्तानामिमाःस्युःक्रमशोवराः ॥ शूद्रैवभार्य्याशूद्रस्यसाचस्वाचविशःस्मृते । तेचस्वाचैवराज्ञश्चताश्चस्वाचाग्रजन्मनः ॥

तथाहयाज्ञवल्क्यः-तिस्रोवर्णानुपूर्व्येणद्वेतथैकायथाक्रमम् ब्रह्मक्षत्रयविशांभार्य्यास्वाचैवशूद्रजन्मनः॥भार्य्याःकार्य्याः स्वजातीयाःसर्वेषांश्रेयस्यःस्युरितिमुख्यःकल्पस्तदनुचतस्रोब्राह्मणस्यतिस्रोराजन्यस्यद्वेवैश्यस्येति ॥ सवर्णायांसवर्णासुजायन्तेहिसजातयः । अनिन्द्येषुविवाहेषुपुत्राःसन्तानवर्द्धनाइतियाज्ञवल्क्यपैठीनसिमन्वादिवचनैःस्वजातीयविवाहेषुविशेषफलप्रतिपादनात्मुख्योऽयंकल्पःसर्वैरभिवंद्यः ॥ कामतस्तुप्रवृत्तानामिमाःस्युःक्रमशोवराः । यदिकामात्रागात्लोभात्क्रमशःप्रवर्ततेतदाचेमंपक्षमाश्रयेदितिनिष्कर्षः

याज्ञ० स्मृ० अथविवाहभेदानिरूप्यन्ते—ब्राह्मोविवाह

आहूयदीयतेशक्त्यलंकृता । तज्जःपुनात्युभयतःपुरुषानेक विंशतिं॥ यज्ञस्थऋत्विजेचैवआदायार्षस्तुगोद्वयं।चतुर्दशप्र थमजःपुनात्युत्तरजश्चषट् ॥ इत्युक्त्वाचरतांधर्मंसहयादीय तेऽर्थिने । सकायःपावयेतज्ज्ञषट्षड्वंश्यान्सहात्मना ॥ आ सुरोद्रविणादानात्गांधर्वःसमयान्मिथः ॥ राक्षसोयुद्धहरणा त्पैशाचःकन्यकाछलात् ॥ पाणिग्राह्यःसवर्णासुगृह्णीयात्क्ष त्रियाशरम्। वैश्याप्रतोदमादद्याद्वेदनेत्वग्रजन्मनः ॥

अधिकारिणःकन्यादानस्य ॥ पितापितामहोभ्रातास कुल्योजननीतथा । कन्याप्रदःपूर्वनाशेप्रकृस्थःपरःपरः ॥

अथकतिविधाःपुत्राः—औरसोधर्मपत्नीजस्तत्समःपुत्रि कासुतः । क्षेत्रजःक्षेत्रजातस्तुसगोत्रेणेतरेणवा ॥ गृहेप्रच्छन्न उत्पन्नोगूढजस्तुसुतःस्मृतः।दद्यान्मातापितावायंसपुत्रोदत्त कोभवेत् ॥ क्रीतश्चताभ्यांविक्रीतःकृत्रिमःस्यात्स्वयंकृतः । दत्तात्मातुस्वयंदत्तोगर्भेविन्नःसहोढजः ॥ उत्क्षिप्तोगृह्यतेय स्तुसोऽपविद्धोभवेत्सुतः ।इत्याद्युपक्रम्यांते॥ पिण्डदोंशहर श्चैषांपूर्वाभावेपरःपरः ॥ इत्यादिप्रमाणैःपुरुषस्यबहुस्त्रीत्वं सिद्ध्यते ॥अत्राशंक्यतेयथाबहवःपुरुषस्यास्त्रियएवंस्त्रीणाम पिबहवःपुरुषाःस्युः ॥ अत्रकिंमानं येनपुरुषेणबहवःस्त्रियः कार्य्याः ॥ नतुस्त्रियाबहुपुरुषाइतिशङ्क्यमानंप्रत्याह ॥ श्रूयतांभोः ॥

तथाचश्रुतिः—यदेकस्मिन्यूपेद्वेरशनेपरिव्ययति । त स्मादेकोद्वेभार्य्योविन्दते ॥ इतिश्रुतिःतस्मादेकोबह्वीर्विन्द

तेतिश्रुतिः ॥ तस्मादेकस्यबह्वोजायाभवन्तिनैकस्यैबह्वः सहपतयइतिश्रुतिः ॥

तथाचस्मृतिः । याज्ञवल्क्यः ॥ सकृत्प्रदीयतेकन्याहरंस्तांचोरदण्डभाक् ॥ मृतेजीवतिवापत्यौयानान्यमुपगच्छति॥सेहकीर्तिमवाप्नोतिमोदतेचोमयासह ॥इत्यादिश्रुतिस्मृतिनिष्पन्नत्वात्पुरुषस्यैवबहवस्त्रियोनतुस्त्रीणांबहुपुरुषाअन्यथाव्यभिचारप्रसङ्गःस्यात् ॥

यथाहमनुः—आर्षंधर्म्मोपदेशंचवेदशास्त्राविरोधिना॥ यस्तर्केणानुसंधत्तेतद्धर्मवेदनेतरः । नतुस्वकपोलकल्पितयुक्तयः ॥ इतिश्रुतिस्मृतिपुराणनिष्पन्नंविवाहस्यसंक्षेपतोनिर्णयःकृत । विस्तरस्तुतत्तद्ग्रंथेभ्योज्ञेयइतिशम् ॥

इति श्रीकपूरस्थलनिवासीगोतमगोत्र (शोरि) जात्यालंकृतदैवज्ञदुनिचन्द्रात्मज॰पं॰ विष्णुदत्तवैदिककृतविवाहनिर्णयःसमाप्तःशुभमस्तु ॥

मुद्रितमेतत्स्वकीये श्रीवेङ्कटेश्वरमुद्रालये श्रीकृष्णदासात्मज—
गङ्गाविष्णुना खेमराजेन च ।

पुस्तकमिलनेका ठिकाना—
गङ्गाविष्णुश्रीकृष्णदास—श्रीवेङ्कटेश्वर छापाखाना
खेमराज श्रीकृष्णदास—श्रीवेङ्कटेश्वर छापाखाना
मुंबई.